जमनालाल बजाज की डायरी

१९३७-१९३८

ये डायरियां

श्री जमनालालजी की ये जो डायरियां हैं, इनमें केवल याददाश्त के लिए आवश्यक सूचनाएं लिखी गई हैं।

२२ से २५ वर्ष की उम्र में उन्होंने कितने लोगों से सम्पर्क सा
कर सचमुच आश्चर्य

तरह-तरह के र
के लोग, राष्ट्रीय संस
नाइयां, सबके साथ
हो सकते थे,
गांधीजी और
ताएं जिन्होंने ध
उनकी डायरिय
प्रतीत होते हैं।

गांधीजी के
महत्व जाननेव
लालजी का स्थ
लालजी की डा
रचनात्मक प्रवृ
सकेंगे।

गांधीजी के
लालजी का स
उसका प्रतिवि
मिलेगा।...

जमनालाल बजाज
की
डायरी

•

पांचवां खण्ड

सात्विक जीवन के प्रतीक

जमनालाल बजाज ग्रंथमाला : उन्नीसवां ग्रंथ

जमनालाल बजाज
की
डायरी

(१९३७ से १९३९ तक)

पांचवां खंड

•

भूमिका-लेखक

काकासाहेब कालेलकर

•

संपादक

रामकृष्ण बजाज

•

१९७८

सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन

प्रकाशक
यशपाल जैन
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

•

पहली बार : १९७८
मूल्य : रु० १०.००

•

मुद्रक
रूपक प्रिन्टर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

सम्पादकीय

पूज्य काकाजी की डायरियों का यह पांचवां भाग पाठकों की सेवा में कुछ देरी से पहुंच रहा है। चौथा भाग सन् १९७२ में प्रकाशित हुआ था।

चौथे भाग में सन् १९३६ के अंत तक की डायरी आ गई है। तब फैजपुर (महाराष्ट्र) में कांग्रेस का अधिवेशन पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में सम्पन्न हो चुका था। उसी अधिवेशन में सर्वप्रथम ग्रामों तथा घरों में बनी ग्रामोद्योगों की वस्तुओं का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया गया था और वह अपनी तरह की पहली प्रदर्शिनी थी।

डायरी के संपादन में नित्यकर्म की कई बातें, जैसे प्रार्थना, भजन, घूमना, चर्खा कातना, आराम, स्वास्थ्य-संबंधी जानकारी, घर के लोगों से हुई साधारण तथा ऐसी ही अन्य गौण बातें; जो नित्य व्यवहार की हुआ करती थीं, विस्तार कम करने के खयाल से, कम कर दी गई हैं।

किसी दिन कोई महत्व की बात; घटना या विचार का निर्देश डायरी में नहीं रहा तो वह पूरा ही दिन काट दिया गया है। इसका यह अर्थ नहीं कि उस दिन की डायरी लिखी ही नहीं गई थी।

डायरी हाथ की लिखी तथा कभी-कभी पेंसिल की लिखी होने से तथा अक्सर रेलयात्रा में लिखी होने के कारण अक्षर कहीं-कहीं बहुत ही छोटे व अस्पष्ट हो गये हैं, जो पढ़े नहीं जा सके। इस कारण कई जगह व्यक्तियों व स्थानों के नामों में तथा कहीं-कहीं विवरणों में समझ की भूलें रह जाने की संभावना है। इसमें पाठकों को कोई दुरुस्त करने योग्य जानकारी हो तो वह स्वयं तो अपनी प्रति में सुधार ही लें, साथ ही हमें भी सूचना देने की कृपा करें ताकि नये संस्करण में उनका सुधार किया जा सके।

डायरी के इस खंड के संग्रह, संपादन आदि में हमें जिन-जिन की मदद मिली तथा इसकी पृष्ठभूमि लिखने में श्री मार्तण्ड उपाध्याय ने जो परिश्रम किया, उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

—संपादक

भूमिका

सूक्ष्म रूप से देखा जाय तो पता चलेगा कि साहित्य का प्रादुर्भाव संभाषण से हुआ है। वाद में आई लेखन-कला। मनुष्य की वाणी पहले तो वोलने के लिए ही होती है। भाषा का अर्थ ही है वोलने का साधन। लेकिन मनुष्य कितनी चीजें कंठ करे? अपनी स्मरण-शक्ति पर वोझा भी कितना डाले? और जहां आवाज पहुंच नहीं सकती, वहां अपनी सूचनाएं भी जैसी-की-तैसी कैसे भेजें? तो मनुष्य ने भाषा को लिपिबद्ध करने की कला ढूंढ़ निकाली। मानवीय संस्कृति की प्रगति में लिपि का आविष्कार एक महत्व की चीज है। लिपि की कला हाथ में आते ही मनुष्य खत लिखने लगा और हिसाव के आंकड़े भी लिखकर रखने लगा। कभी-कभी याददाश्त के लिए थोड़े वचन भी लिखकर रखने लगा। इससे लिखित साहित्य के दो रूप हुए—एक खत (पत्र) और दूसरा स्मरण के लिए लिखी हुई 'यादियां'।

विदेशों में दैनंदिनी लिखने का रिवाज शायद ज्यादा होगा। हमारे यहां जो पठान और मुगल राज्यकर्त्ता हुए, वे अपनी रोजनिशी लिखते थे। इसके लिए आजकल हम अंग्रेजी शब्द 'डायरी' चलाते हैं। अंग्रेजी शब्द 'डे' पर से डायरी शब्द आ गया है। दैनंदिनी शब्द है तो अच्छा, लेकिन कुछ वड़ा और भारी है। हमारे यहां दिन को 'वासर' कहते हैं। रविवासरे, सोमवासरे इत्यादि शब्द वोलते हैं। इस 'वासर' शब्द पर से दैनंदिनी के लिए 'वासरी' शब्द वनाया गया। वासरी अथवा वासरिका शब्द अव चलने लगा है।

डायरी या वासरी लिखने वाले लोगों के दो प्रकार होते हैं। एक में सारे दिन में किन-किन लोगों से मिले, किन-किन लोगों से क्या-क्या बातें हुईं, लोगों को कौन-से वचन दिये, जो लोग मिले, उनके बारे में अपना अभिप्राय क्या हुआ, इत्यादि विस्तार से लिखा जाता है। इनमें लोग वौद्धिक, हार्दिक और चर्चात्मक बातें भी लिखते हैं। ऐसी वासरियां लोगों

के पढ़ने के लिए नहीं होतीं। वे होती हैं आत्मनेपदी—अपने ही लिए। इनका उपयोग आत्म-चरित लिखने में अथवा समकालीन इतिहास लिखने में अत्यन्त महत्व का होता है।

जो दूसरे प्रकार के वासरी लिखनेवाले लोग होते हैं, वे महत्व की चर्चा या घटना कौन-सी हुई, उसका जिक्र तो करते हैं, लेकिन क्या वातचीत हुई, उसमें अपना अभिप्राय क्या था और आगे स्वयं क्या करने का सोचा है, इत्यादि कुछ भी नहीं लिखते। सिर्फ कोई घटना आदि ही लिखते हैं।

महात्मा गांधी इसी तरह की वासरियां लिखते थे। उसमें तो वहुत ही कम शब्दों में अत्यन्त जरूरी वातों का ही जिक्र होता है। अमुक दिन गांधीजी कौन-से शहर में थे, किससे मिले और उस दिन क्या किया, इसका जरा-सा जिक्र ही उसमें मिलता है। गांधीजी की जीवनी लिखने वालों के लिए ऐसी वासरी काम की चीज है सही, लेकिन गांधीजी की ओर से उसमें कुछ भी नहीं मिला।

श्री जमनालालजी की ये जो वासरियां हैं, इनमें भी केवल याददाश्त के लिए आवश्यक सूचनाएं ही लिखी हैं। इनमें न उनका हृदय पाया जाता है और न उनके अभिप्राय।

अगर किसी अच्छे प्रभावशाली नाटक का पहला ही अंक पढ़ा हो तो उसपर से उस समस्त नाटक की कल्पना तो क्या, पहले अंक की खूबियां भी ध्यान में नहीं आ सकेंगी। समस्त नाटक पढ़ने के वाद ही प्रथम अंक में वर्णित छोटी-मोटी घटनाओं और संभावनाओं का रहस्य ध्यान में आता है। इसी तरह जमनालालजी के जीवन का प्रथम भाग ही जानने वाले व्यक्ति को पता नहीं चलेगा कि प्रारंभ के दिनों में कौन-सी सूक्ष्म शक्तियां आगे जाकर विकसित रूप धारण करने वाली हैं। पूरा जीवन जानने वाले आज के लोग ही उनके प्राथमिक जीवन के संस्कारों की सूक्ष्मातिसूक्ष्म खूबियां समझ सकेंगे और उनकी कद्र कर सकेंगे।

धार्मिक प्रवचन सुनना, नाटक देखने जाना, संगीत के जलसे का आनंद लेना, टेनिस खेलना, ब्रिज खेलना, वन-भोजन आदि विशुद्ध आनंद को प्रोत्साहन देना, नेताओं के व्याख्यान सुनना, इस तरह की जीवन की सव प्रवृत्तियां उनमें पाई जाती हैं। सवमें संस्कारिता, जीवनशुद्धि, सेवाभाव

और दिल की उदारता पाई जाती है। २२ से २५ वर्ष की उम्र में कितने लोगों से उन्होंने संपर्क साधा था, इसकी सूची देखकर सचमुच आश्चर्य होता है।

जमनालालजी के स्वभाव में जैसी विशेष आतिथ्यशीलता थी वैसा ही साथी, संबंधी और राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं के व्यक्तिगत जीवन में भी प्रवेश करके उनके सुख-दुख के साथ एकरूप होने का माद्दा था। एक तरह से हम कह सकते हैं कि स्वभाव से ही वह विश्व-कुटुम्बी थे। इसीलिए आगे जाकर जब उन्होंने गांधीजी से प्रेरणा प्राप्त की और उनके 'पांचवें पुत्र' बने, तब समूचे विशाल गांधी-परिवार को अपनाना उनके लिए आसान और स्वाभाविक बन गया। बचपन से सबको अपनाने का स्वभाव न होता तो आगे जाकर वह इतना काम नहीं कर सकते थे। तरह-तरह के राष्ट्र-सेवक, उनके परिवार के लोग, राष्ट्रीय संस्थाएं और उनकी कठिनाइयां सबके साथ जमनालालजी एक-हृदय हो सकते थे, यह थी उनकी विभूति की विशेषता। गांधीजी में भी ये गुण थे। इसीलिए तो गांधीजी को जमनालाल-जी का इतना बड़ा सार्वभौम सहारा मिल सका। गांधीजी का विस्तार चाहे जितना बड़ा और जटिल हो, उसे संभालने की हिम्मत और कुशलता जमनालालजी में थी, और इस दिशा में जमनालालजी गांधीजी को सब तरह से निश्चिंत कर सके थे। जमनालालजी की और गांधीजी की ऐसी विशेषता जिन्होंने ध्यान से देखी है, उनके लिए तो उनकी वासरी के छोटे-छोटे पन्ने और उनके पत्र भी विशेष महत्व के प्रतीत होते हैं।

केवल अपने को और अपनी धन-संपत्ति व कौशल-शक्ति को ही नहीं, बल्कि अपने परिवार के सब लोगों को राष्ट्रसेवा में अर्पित करने की उनकी तैयारी थी। केवल तैयारी ही नहीं, उत्साह था। उसीमें वह अपने जीवन की कृतार्थता मानते थे। लेकिन यह सब होते हुए भी उनकी श्रेयार्थी आत्म-साधना ही सर्वोपरि थी। उसीका थोड़ा चिंतन करना आवश्यक है।

जब कभी कोई 'श्रेयार्थी' आत्म-साधना शुरू करता है, तब कुटुम्ब-कबीला, आजीविका का व्यवसाय और सार्वजनिक-सेवा सब कुछ झंझट समझकर, सबको त्याग देने की कोशिश करने लगता है। हमारे देश में ऐसे ही आत्मार्थी अधिक पाये जाते हैं। ऐसे ही लोगों ने संन्यास-आश्रम

को सबसे प्रधान माना है।

हमारी संस्कृति में शुरू में संन्यास का महत्व नहीं था। संन्यास आश्रम का पुनरुज्जीवन शंकराचार्य ने बड़े उत्साह के साथ किया। पर हमारे जमाने में संन्यास-आश्रम को बढ़ावा दिया स्वामी विवेकानन्द और स्वामी दयानन्द ने। गांधीजी ने संन्यास-आश्रम के प्रति पूरा आदर दिखाकर उसे एक बाजू रखा और गीता में बताये हुए संन्यास-योग को पसन्द किया है। मनुष्य गृहस्थ-आश्रम में प्रवेश करे या न करे, ब्रह्मचर्य-पालन का महत्व वह समझे और संयम बढ़ाते हुए गृहस्थ-आश्रम को कृतार्थ बनावे, यही था गांधीजी का आदर्श। मनुष्य ब्रह्मचर्य का पालन करके कौटुम्बिक जीवन की एकांगिता और संकुचितता छोड़ दे और जीवन में कर्मयोग को ही प्रधान बनाकर सेवामय जीवन व्यतीत करते-करते समस्त मानव-जाति के साथ अपने ऐक्य का अनुभव करे और, वहां भी न रुककर, समस्त जीव-सृष्टि के साथ तादात्म्य का अनुभव कर विश्वात्मैक्य की साधना चलावे, यही है गांधीजी का मार्ग। इस मार्ग को युगानुकूल समझकर जमनालालजी ने भी उसे पसन्द किया था। अपनी मर्यादा को पहचानकर वह यथाशक्ति 'जनक-मार्ग' का अनुसरण करते रहे। उस जीवन-साधना का प्रारंभ अगर कोई ढूंढ़ना चाहे, तो इन वासरियों में कुछ-न-कुछ मसाला उसे मिलेगा ही।

एक बात खास ध्यान में लेने की है। भारत के लोगों को स्वराज्य चाहिए था। योग्य नेता मिले और सफलता की आशा हो तो लोग लड़ने के लिए भी तैयार थे। लेकिन लोग नहीं जानते थे कि स्वराज्य को चलाने के लिए जिस तरह पूर्व-तैयारी की जरूरत होती है, वैसे ही संगठित रूप से स्वराज्य की लड़ाई लड़ने के लिए पूर्व-तैयारी की जरूरत होती है।

इस तरह की पूर्व-तैयारी को गांधीजी ने नाम दिया—रचनात्मक कार्यक्रम। ऐसे रचनात्मक काम के लिए निष्ठा और धैर्य की आवश्यकता होती है, जो सामान्य जनता में नहीं होती। लोग पुण्य का फल प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं जरूर, लेकिन जरूरी पुण्य या तपश्चर्या नहीं करना चाहते।

आज मैं वर्ण-व्यवस्था का अभिमानी या प्रोत्साहक नहीं रहा, लेकिन उस व्यवस्था की सुन्दरता मैं जानता हूं। लोगों के सामने सुन्दर-सुन्दर

आध्यात्मिक आदर्श रखना ब्राह्मणों का काम है, विचारों को प्रेरक और रोचक रूप देना भी उन्हीं का काम है। क्षत्रिय पूरी बहादुरी से लड़ने के लिए तैयार होते हैं। जान-माल को न्यौछावर करने की तैयारी उनमें बहुत ज्यादा होती है। लेकिन समाज का संगठन करना, खेती, पशु-पालन, उद्योग, हुनर और तिजारत आदि के द्वारा समाज को सम्हालना, समर्थ बनाना और भिन्न-भिन्न वर्गों के बीच सामंजस्य स्थापित करके सहयोग को सार्वभौम बनाना, यह काम तो बनिये का ही है। गांधीजी में बनिये के ये सब गुण थे। इसके अलावा वह लोकोत्तर तेजस्विता और चातुर्य से भरे हुए सेनापति भी थे। क्षत्रिय तभी लड़ सकता है, जब बनिया उसे पूर्व-तैयारी कर देता है। यूरोप के लोकोत्तर सेनापति नेपोलियन ने कहा था— "सेना चलती है पेट पर।" गांधीजी ने कहा था कि सत्याग्रह की सफलता का आधार रहता है रचनात्मक कार्यक्रम पर। उन्होंने यहां तक कहा था कि मेरा "रचनात्मक कार्यक्रम अगर सारा राष्ट्र पूरी तरह से सफल कर दे, तो सत्याग्रह के बिना ही मैं आपको स्वराज्य ला दूंगा।"

गांधीजी के इस रचनात्मक कार्य का पूरा महत्व जाननेवाले इने-गिने लोगों में भी जमनालालजी का स्थान बहुत ऊंचा था। यह गुण तो मनुष्य की आस्तिकता में से ही प्रकट होता है। क्षत्रिय भले ही लड़कर राज्य प्राप्त कर ले, राज्य चलाने का काम भले ही क्षत्रियों का माना जाय, पर दर-असल वह है बनिये का ही काम। चार आश्रमों में जिस तरह अनुभव से सिद्ध हुआ है कि गृहस्थाश्रम ही सर्वश्रेष्ठ है, उसी तरह हमें समझना चाहिए कि चार वर्णों में भी श्रेष्ठता कबूल करनी चाहिए वैश्य-वर्ण की। वैश्य-धर्म की सार्वभौमता के नीचे ही ब्राह्मण-धर्म और क्षात्र-धर्म अपने-अपने काम में कृतार्थ हो सकते हैं। 'बनिया गांधीजी' का सामर्थ्य किसमें है, यह अचूक देख सके थे 'बनिया-शिरोमणि जमनालालजी' ही।

यह सब जाननेवाले लोग जमनालालजी की डायरियों के प्राथमिक वर्षों में भी रचनात्मक प्रवृत्ति की ओर उनका झुकाव देख सकेंगे। इस प्रेरणा को समझने के बाद ही हम खयाल कर सकते हैं कि जमनालालजी सारे देश में इतनी तेजी से क्यों घूमते थे? देश के छोटे-बड़े सब कार्यकर्ताओं का संपर्क साधकर उनके साथ हृदय की आत्मीयता कैसे स्थापित करते थे।

जमनालालजी की यह विशेषता और उनका हृदय सामर्थ्य देखकर ही मैंने उन्हें 'सर्वों के स्वजन' कहा था।

आज देश के हितचिंतक एक आवाज से रो रहे हैं कि देश की एकता कहां गई? क्यों सर्वत्र फूट-ही-फूट बढ़ रही है? क्या इसका कोई इलाज नहीं हो सकता?

इलाज हमें गांधीजी के और जमनालालजी के जीवन में ही मिलता है। छोटे-बड़े सब भेदों को भूलकर सबको अपनाने के लिए हृदय की जो विशालता और प्रेम की संजीवनी चाहिए, वह जमनालालजी में पूरी मात्रा में थी। इसलिए वह सारे देश के, सब धर्मों के, सब क्षेत्रों के और तरह-तरह के विचारों के लोगों को अपना सके थे। संत तुकाराम ने कहा है, "आप जो प्रेम अपने लड़के-लड़कियों और रिश्तेदारों के प्रति बताते हैं, वही यदि आप अपने दास-दासियों के प्रति, नजदीक के लोगों के प्रति और पड़ोसियों के प्रति बता सकें, तो आपके अंदर दैवी शक्ति अवश्यमेव प्रकट होगी।"

जमनालालजी जहां-जहां जाते थे, वहां के कार्यकर्ताओं के साथ और उनके परिवार के साथ एकरूप होते थे। व्यवहार-चतुर जमनालालजी लोगों के दोष और उनकी खामियां नहीं देख सकते थे, सो नहीं। किन्तु उनका हृदय क्षमाशील और उदार था। उनका अनुकरण करनेवाले उनकी निःस्पृह भाषा का प्रयोग कर देते हैं, किन्तु उनकी उदारता कहां से लावें? और उनके प्रेम की निःस्वार्थता भी कहां से प्रकट करें? जिनमें ऐसी उदारता है, उनको जमनालालजी के जैसी सिद्धि भी मिल रही है। अध्यात्म के नियम अटल और सार्वभौम होते हैं।

एक-एक व्यक्ति मिलकर राष्ट्र बनता है, इसलिए हरेक में हमें दिलचस्पी होनी चाहिए और हरेक के यथाशक्ति सहायक होने की हमारी तत्परता भी होनी चाहिए। जमनालालजी की यह कार्यकारी आत्मीयता जिनमें होगी, वे ही सच्चे राष्ट्र-पुरुष बनेंगे।

सन् १९१५ से १९२९ तक जो कार्य गांधीजी ने और उनके साथियों ने धैर्य के साथ किया, उसी का शुभ परिणाम सन् १९३० से शुरू होने वाली और सन् १९४५ से सफल होने वाली क्रांति में हम देख सकते हैं।

इस क्रांति के राजनैतिक क्षेत्र में जवाहरलालजी ने अपना बल जगाया। किन्तु जीवन-परिवर्तन के और राष्ट्र के नव-निर्माण के क्रांतिकारी क्षेत्र में अपना पूरा-पूरा बल जगाया जमनालालजी ने और उनके छोटे-बड़े सब साथियों ने।

मैं साथियों का नाम इसलिए लेता हूं कि लोग सारा ध्यान मुख्य-मुख्य नेताओं के नाम पर ही लगाते हैं। राष्ट्रजीवन को सजीवन करनेवाली क्रांति एक आदमी से कभी नहीं होती। जिस तरह व्यक्ति का कुटुंब-कबीला और वंश-विस्तार होता है, वैसे ही संन्यासियों की शिष्य-शाखाएं और भक्त-परिवार भी होते हैं और राष्ट्रपुरुष के पुरुषार्थों में शरीक होनेवाले और उसे सिद्ध करने में अपना हिस्सा अदा करनेवाले साथियों की भी संख्या कम नहीं होती। सबके पुरुषार्थ का सम्मिलित फल ही राष्ट्र का उत्थान है। इसलिए जमनालालजी के जीवन-कार्य का जिक्र या चिंतन करते समय उनके सब साथियों का भी स्मरण करना चाहिए। जमनालालजी कभी अकेले थे ही नहीं। जितने लोगों को उन्होंने अपनाया है, वे सब उनकी विभूति में सम्मिलित हैं।

अगर देवों में नये अवतार को पहचानने की शक्ति होती है तो अवतार में भी अपने साथियों को पहचानने की शक्ति होनी ही चाहिए। हम इसे 'तारा-मैत्रक' कह सकते हैं। गांधीजी के पास असंख्य लोग आये। चंद लोगों को गांधीजी ने स्वयं बुलाया। चंद अपने-आप आकर गांधीजी से चिपक गये। लेकिन दो आदमियों के बारे में मैं जानता हूं, जिन्हें देखते ही गांधीजी ने पहचान लिया कि इनके साथ अभेद-भक्ति का संबंध बंधनेवाला है। एक थे महादेव देसाई और दूसरे थे जमनालालजी। और खूबी यह कि इन दोनों ने जैसे ही गांधीजी को पहचाना, वैसे ही एक-दूसरे को भी तुरंत पहचान लिया। महादेवभाई ने जमनालालजी को जो खत लिखे थे, उसमें से चंद खत मैंने पढ़े हैं। उसपर से कह सकता हूं कि दोनों का परस्पर आकर्षण भी कम अद्भुत नहीं था। गांधीजी के आश्रमियों में से श्री विनोबा भावे का वर्धा जाना भी मैं इसी तरह का ईश्वरीय संकेत या युगरचना या व्यवस्था मानता हूं।

अन्योन्य संबंध की यह प्रेम-शृंखला कैसे बढ़ती गई, यह देखने का

आनंद जैसे गांधीजी के चरित्रकार को मिलता है, वैसे ही जमनालालजी के चरित्रकार को भी मिलेगा। परस्पर मिलन, परस्पर सहयोग, यह कोई आकस्मिक घटना नहीं होती। सृष्टि में परस्पर संबंध का विशाल जाल फैला हुआ रहता है। उसी के अनुसार सबकुछ होता है। कोई भी घटना अकस्मात नहीं होती। हरेक घटना का 'कस्मात्' हम जानें या न जानें, होता ही है। जब मनुष्य-जाति की ज्ञान-शक्ति बढ़ेगी, तब मनुष्य, ऐसे संबंध को पहचानकर ही इतिहास लिखने बैठेगा। आजकल के इतिहास अंधों के प्रयास हैं। ज्ञानमय प्रदीप प्राप्त होने के बाद ही मानव-जाति की सच्ची जीवन-गाथा लिखी जायगी। गांधी-कार्य का प्रयोग, रहस्य और उसकी कृतार्थता तभी दुनिया के सामने पूर्ण रूप से प्रकट होगी।

गांधीजी के संपर्क में आने के बाद जमनालालजी का सारा जीवन ही बदल गया था। उसका प्रतिबिंब उनकी वासरियों में जरूर मिलेगा। ऐसी वासरियों के लगभग कई खंड प्रकाशित होने वाले हैं। इन सब खंडों को पढ़ने के बाद ही जमनालालजी की इन अंतर्मुखी आत्मनेपदी प्रवृत्तियों के लिए योग्य भूमिका लिखी जा सकती है। इन प्रथम खंडों में तो उनकी पूर्व-तैयारी की थोड़ी कल्पना ही आ सकती है।

गांधीजी ने हिन्दू-धर्म में और हिन्दू-समाज में जो महान परिवर्तन किये, उसमें संन्यस्त जीवन को नया रूप दिया, जिसका महत्व कम नहीं है। उसका प्रत्यक्ष उदाहरण जमनालालजी के जीवन में चरितार्थ होता पाया जाता है। यह समझकर ही जमनालालजी की ये वासरियां पढ़नी चाहिए।

सन्निधि, राजघाट,
नई दिल्ली

—काका कालेलकर

पृष्ठ-भूमि

जमनालालजी की डायरी के इस पांचवें भाग में सन् १९३७,३८,३९—इन तीन वर्षों की डायरियों को लिया गया है। यह काल देश में बहुत महत्वपूर्ण रचनात्मक एवं राजनैतिक कार्यों एवं घटनाओं से भरपूर था।

सन् १९३७ में जमनालालजी का अधिकतर समय वर्धा की संस्थाओं, जैसे मारवाड़ी शिक्षा मंडल, नवभारत विद्यालय, सेगांव आश्रम, मगन संग्रहालय, नालवाड़ी चर्मालय, महिलाश्रम, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिन्दी प्रचार विद्यालय के साथ-साथ नागपुर में अभ्यंकर स्मारक एवं नागपुर जिला कांग्रेस कमेटी के कार्यों की देखभाल एवं संचालन में गया।

सन् १९३७ के मार्च के महीने में ही मद्रास में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन उनके ही सभापतित्व में हुआ और उसके परिणाम-स्वरूप हिन्दी प्रचार व प्रसार के कार्य में उनका अधिक समय गया।

इसी साल ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा पास किये गए 'गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट १९३५' के अन्तर्गत देशभर में प्रांतीय असेंबलियों के चुनाव हुए। कांग्रेस ने भी चुनाव लड़ा और भारत के प्रमुख प्रांतों में कांग्रेस बहुमत से चुनकर आई। चुनाव अभियान के बीच ही यह प्रश्न पैदा हो गया था कि बहुमत आ जाने पर प्रांतों में कांग्रेस को पद-ग्रहण करना चाहिए या नहीं ?

चुनाव खत्म होने के बाद ही मार्च के तीसरे सप्ताह में कांग्रेस के टिकिट पर चुने गये असेंबली के सदस्यों तथा अ० भा० कांग्रेस महासमिति के सदस्यों का दिल्ली में एक कन्वेंशन हुआ। उसमें सब सदस्यों से कांग्रेस अध्यक्ष पंडित जवाहरलाल नेहरू ने हिन्दी में प्रतिज्ञा लिवाई कि हम सब भारत की एकता और स्वराज्य के लिए प्रयत्न करेंगे और अगर असेंबलियों में पदग्रहण करना पड़ा तो असेंबली के अंदर औरबाहर भारत की आजादी जल्दी-से-जल्दी मिले, इसके लिए काम करेंगे और नये विधान का विरोध

करके अपना विधान हम स्वयं बना सकें, इसकी ब्रिटिश सरकार से मांग करेंगे। उसी कन्वेंशन में यह भी निश्चय किया गया कि १ अप्रैल को ब्रिटिश पार्लियामेंट द्वारा पास किये गए विधान 'गवर्नमेंट आफ इंडिया एक्ट १९३५" के लागू किये जाने के विरोध में सारे भारत में हड़ताल की जाय। परिणाम-स्वरूप उस दिन भारत-भर में शांतिपूर्ण पूरी हड़ताल रही।

इसी वर्ष चर्खा संघ के सभापतित्व का काम भी जमनालालजी पर आ गया और उनको चर्खा संघ के कार्य को सुदृढ़ करने तथा व्यावहारिक पद्धति पर खादी की अधिकतम उत्पत्ति एवं बिक्री का संगठन करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी लेनी पड़ी। इसके लिए उन्होंने सारे देश का दौरा किया।

वर्धा के दो समाचार-पत्रों 'चित्र' तथा 'सावधान' में सन् १९२० में महात्मा गांधीजी द्वारा एकत्र किये गए 'तिलक स्वराज्य कोष' के हिसाब के संबंध में जमनालालजी, चूंकि वे कांग्रेस के कोषाध्यक्ष भी थे, तथा गांधीजी पर दुर्भावनापूर्ण एवं अपमानजनक लांछन लगाये गये थे। जमनालालजी ने गांधीजी व कांग्रेस के प्रमुख सदस्यों की स्वीकृति से उन दोनों पत्रों पर मानहानि के दावे दायर किये। भारत की कानून-संहिता में मानहानि का दावा जीतना बड़ा कठिन एवं दुष्कर कार्य माना गया है। अक्सर लोग इससे बचते हैं। पर जमनालालजी ने बड़े परिश्रम, अध्ययन और लगन से इसे लड़ा। उसमें उन्हें जीत हासिल हुई। दोनों पत्रों के संपादकों, मुद्रक व प्रकाशकों को कैद की सजा हुई तथा जुर्माना और मुकद्दमे का खर्चा अदा करना पड़ा।

असहयोगी होने के कारण जमनालालजी सरकारी अदालतों में जाने से बचते थे। पर जहां कांग्रेस, गांधीजी तथा राष्ट्रीय इज्जत पर प्रहार होने लगा, असत्य का प्रचार किया जाने लगा तथा चरित्र-हनन का प्रयत्न होने लगा तो अदालत में जाने से भी वह नहीं रुके।

इसी वर्ष गांधीजी की प्रेरणा से एक 'राष्ट्रीय शिक्षा परिषद' का अधिवेशन वर्धा के 'मारवाड़ी शिक्षा मंडल' ने वर्धा में बुलाया। जिसके परिणाम-स्वरूप 'शिक्षा में बुनियादी तालीम' का उद्गम हुआ और कांग्रेस-

शासित प्रांतों में उसके सफल प्रयोग भी किये गए।

इन सब हलचलों के मध्य घर-गृहस्थी की देखभाल, व्यावसायिक कार्यों में सलाह-मशविरा और मित्रों के परिवारों के नाजुक, कठिन तथा उलझे हुए पारस्परिक मतभेदों तथा विग्रहों को सुलझाने में भी उनका काफी समय लगता रहा।

परिवार में इसी वर्ष जमनालालजी के बड़े पुत्र भाई कमलनयन का विवाह कलकत्ता के सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्री लक्ष्मणप्रसाद पोद्दार की पुत्री सावित्रीदेवी के साथ तथा दूसरी पुत्री मदालसा का विवाह मैनपुरी के प्रसिद्ध धर्मनिष्ठ वकील एवं थियासोफिस्ट तथा चिंतक श्री धर्मनारायण अग्रवाल के पुत्र श्री श्रीमन्नारायण के साथ संपन्न हुआ। उनकी भानजी नर्मदा का विवाह कलकत्ता के सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका के बड़े पुत्र श्री गजानन हिम्मतसिंहका के साथ तथा भांजे प्रह्लाद पोद्दार का कलकत्ता के प्रसिद्ध तथा सर्वमान्य, समाजसेवी, कांग्रेसी तथा रचनात्मक कार्यकर्त्ता श्री सीताराम सेक्सरिया की बड़ी पुत्री पन्ना के साथ इसी वर्ष संपन्न हुआ। इन विवाहों में अनेक महत्वपूर्ण सामाजिक सुधारों का आधार लिया गया और कई मामलों में ये आदर्श विवाह भी माने गये। ये चारों विवाह तो मारवाड़ी अग्रवाल समाज में ही हुए, पर अपने भतीजे श्री राधाकृष्ण बजाज का विवाह उन्होंने श्री कृष्णदास जाजू की, जो कि माहेश्वरी समाज के जाने-माने अग्रणी थे, पुत्री अनसूयादेवी से किया, जो अग्रवाल-माहेश्वरी का उप-जातीय विवाह था और समाज-सुधार की दिशा में उस समय एक महत्वपूर्ण कदम था।

इतना सब करते हुए उनका मनोमंथन तथा आध्यात्मिकता की ओर उनकी रुचि पहले की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ती ही जाती थी। १९३७ में उसके स्पष्ट दर्शन उनके पत्रों और डायरियों में जगह-जगह मिलते हैं। इन उल्लेखों से प्रतीत होता है कि इस संबंध में वह पूज्य बापूजी तथा श्री किशोरलालभाई जैसे गुरुजनों के साथ तथा अपने परिवार के लोगों से भी अपने मनोभावों एवं मनोमंथन की चर्चा किया करते थे और उनको भी पूरे विश्वास में लिया करते थे।

सन् १९३८ का वर्ष सुभाषचन्द्र बोस के सभापतित्व में हरिपुरा कांग्रेस

अधिवेशन से प्रारंभ हुआ। सुभाषचन्द्र बोस स्वास्थ्य-सुधार के वाद १९३५ में ही विदेश से लौटे थे और भारत में आते ही नजरबन्द कर दिये गए थे। मार्च १९३७ में भारत सरकार ने उनको बिना शर्त जेल से रिहा कर दिया। एक वर्ष तक वह कांग्रेस की गतिविधियों को देखते रहे और उन्होंने इस बीच महात्माजी का भी विश्वास प्राप्त कर लिया। फलस्वरूप १९३८ में हरिपुरा कांग्रेस के लिए वह सर्वानुमति से राष्ट्रपति चुने गये थे।

हरिपुरा-कांग्रेस कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण रही। सरदार पटेल के निर्देशन में गुजरात प्रदेश में हुई यह कांग्रेस अपनी व्यवस्था, सुघड़ता, अनुशासन तथा उसमें हुए निर्णयों के कारण बहुत ही ज्यादा प्रभावकारी हुई।

नये शासन विधान के अंतर्गत पदग्रहण करने से पूर्व कांग्रेस ने प्रांतों के गवर्नरों के जरिये ब्रिटिश सरकार से यह आश्वासन मांगा था कि गवर्नर मंत्रिमंडल के वैधानिक कार्यों में अपने विशेषाधिकारों का उपयोग करके उनके कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करेंगे। दुनिया में यह शायद पहली मिसाल थी कि एक 'विद्रोही' संस्था ने शासन से इस प्रकार आश्वासन लेकर शासन में पदग्रहण करके सत्ता सम्हाली हो।

यों तो कांग्रेस के लोग असेंवलियों में पूर्ण स्वराज्य की मांग करने और उसे प्राप्त करने की इच्छा से गये थे। पर वाहर आम सभाओं में कुछ इस प्रकार के धुंआधार भाषण भी हुए कि अंदर से हम लोग लेजिस्लेटिव कौंसिलों (विधान सभाओं) में "नये विधान को नष्ट करने के लिए" (टु रैक दी कांस्टीट्यूशन) जा रहे हैं। इसका ब्रिटिश सरकार पर यह असर पड़ा कि कांग्रेसी मेंबरों की नीयत साफ नहीं है। वे अड़ंगा-नीति अपनायेंगे। अतः परस्पर विश्वास के वजाय अविश्वास के वातावरण में नये कार्य की शुरुआत हुई। कई छोटी-मोटी वातों में गर्वनरों, सेक्रेटरियों तथा मंत्रियों में अक्सर मतभेद होने शुरू हो गये। पर बड़ा मतभेद तो उत्तर-प्रदेश के मंत्रिमंडल और गर्वनर के बीच 'काकोरी षड्यंत्र केस' के कैदियों की रिहाई को लेकर पैदा हो गया और ऐन हरिपुरा-कांग्रेस के अवसर पर उत्तरप्रदेश तथा बिहार के मंत्रिमंडल ने त्यागपत्र दे दिया। बाद में महात्मा गांधी और वायसराय के हस्तक्षेप के फलस्वरूप समझौता हो गया और मंत्रिमंडल ने अपने त्यागपत्र वापस ले लिये, गवर्नरों ने अपना हस्तक्षेप

वापस ले लिया और कैदी छोड़ दिये गए।

प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बनने के सिलसिले में तथा बनने के बाद उसके परिणामस्वरूप 'नरीमान-प्रकरण' का भी बहुत शोर-मचा। कांग्रेस पार्लियामेंट्री बोर्ड ने बंबई प्रांत के नेतापद के लिए श्री के० एफ० नरीमन को चुनकर श्री बाला साहेब खेर को चुना। इस पर बंबई में खास-कर पारसी लोगों में बड़ा तूफान उठ खड़ा हुआ। पर कांग्रेस पार्लमिंटरी बोर्ड की दृढ़ता से तथा जमनालालजी की कुशल और व्यावहारिक सूझ-बूझ से अप्रिय प्रसंग आने पर भी मामला सुलझा और कटुता कम हुई।

इस तरह एक तरफ तो उन पर काम का बोझा बढ़ता जाता था, उधर उनका स्वास्थ्य भी कमजोर होता जाता था। उनके कान में तकलीफ बनी रहती थी। फिर आध्यात्मिकता और अंतर्मंथन की ओर बढ़ती हुई उनकी रुचि को देखकर उन्होंने कांग्रेस कार्य समिति की सदस्यता से तथा 'गांधी सेवा संघ' की अध्यक्षता से त्यागपत्र देने का भी निश्चय किया। साथ ही १९३८ में उन्होंने महर्षि रमण के आश्रम की तथा पांडीचेरी के श्रीअर-विंदाश्रम की भी यात्रा की, जहां से उन्होंने मानसिक संतोष व समाधान का प्रयत्न किया। बापूजी के सामने अनेक बार वह अपना मनोमंथन प्रकट कर समाधान प्राप्त करने गये भी पर अवकाश न मिल पाने के कारण वह उन्हें अधिक समय दे नहीं पाये। इसका जमनालालजी के मन पर बहुत असर हुआ।

इधर एक बात और हो गई। जमनालालजी और सरदार पटेल दोनों ही स्पष्टवादी व्यक्ति थे। कुछ बातों को लेकर दोनों में एक समय तीव्र मतभेद भी हो गये थे। जमनालालजी का कार्य-समिति से त्यागपत्र देने का यह भी, एक कारण रहा होगा। पर बाद के दिनों में आपसी बात-चीत द्वारा ही ये मतभेद मिट गये थे या बहुत घट गये थे।

इसी वर्ष मध्यप्रांत के मंत्रिमंडल के विवादों व मतभेदों ने उग्र रूप धारण कर लिया। कांग्रेस कार्य समिति की कई बैठकें हुईं, पर बापूजी के व्यक्तिगत प्रयत्नों के बावजूद मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डाक्टर नारायण भास्कर खरे अपनी जिद पर अटल रहे और परिणामस्वरूप डा० खरे के मंत्रिमंडल के अधिकांश मंत्रियों को इस्तीफे देने के बाद अंत में पंडित

रविशंकर शुक्ल के नेतृत्व में नया मंत्रिमंडल बना। बाद में डा० खरे की उग्र कार्रवाइयों के कारण उनको कांग्रेस का अनुशासन भंग के कारण से खेदपूर्वक निष्कासित करना पड़ा।

खरे-प्रकरण में तो जमनालालजी ने सक्रिय भाग लिया, क्योंकि यह मध्यप्रांत का प्रश्न था और तब वर्धा इसी प्रांत का भाग था, और जमनालालजी का विशेष क्षेत्र में प्रभाव भी था। इस कारण उसमें अंत में सफलता भी मिली।

ब्रिटिश भारत की जनता की जागृति का असर देशी रियासतों की प्रजा पर भी पड़ने लगा था और वहां भी लोक जागरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो गई थी। यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि क्या कांग्रेस के लोग जब ब्रिटिश भारत में उग्र स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रयत्न करते हों तब क्या अपने पड़ोसी देशी रियासतों की जनता को वहां के निरंकुश राजाओं द्वारा दबाया जाना चुपचाप देखते रहें? इस विषय पर बहुत विचार-मंथन के बाद हरि-पुरा कांग्रेस अधिवेशन (१९३८) में ही देशी रियासतों के संबंध में एक विशेष प्रस्ताव पास किया गया, जिसमें कहा गया कि ब्रिटिश भारत के राजनैतिक कार्यकर्ता देशी राज्यों की प्रजा के राजनीतिक जन-आंदोलनों में तो कोई प्रत्यक्ष भाग न लें, पर उनके नागरिक अधिकारों व सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों में वे मददगार अवश्य हो सकते हैं। इसका असर यह हुआ कि अनेक देशी रियासतों में नागरिक अधिकारों तथा रचनात्मक कार्यों की तरफ स्थानीय लोगों की दिलचस्पी बढ़ी और उसके साथ ही कांग्रेस के कार्यकर्ताओं से सहयोग प्राप्त करने की मांग भी। जमनालालजी मूलत: राजस्थान के, उसमें भी जयपुर रियासत के ठिकाने अर्थात् रजवाड़े के निवासी थे। अत: राजस्थान, खासकर जयपुर के रियासती-कार्यकर्ताओं का जमनालालजी से आग्रह करना स्वाभाविक ही था कि वह अपना ध्यान राजस्थान खासकर जयपुर की ओर भी दें और अपने सुझाव, सलाह तथा दर्शन वहां के रचनात्मक तथा सामाजिक कार्यों में दें।

इस कारण जमनालालजी को अधिकांश समय (१९३८) राजस्थान की जयपुर रियासत की और सीकर ठिकाने के बीच हुए विवाद को हल करने में देना पड़ा। आगे जाकर जमनालालजी की मध्यस्थता से सीकर दरबार

और जयपुर शासन के बीच समझौता हो गया। इसी बीच जयपुर प्रजा-मंडल का भी गठन हुआ और राज्य में नागरिक स्वतंत्रता, अकाल सहायता आदि का रचनात्मक कार्य प्रजामंडल ने अपने हाथ में पहले लेना उचित समझा। सर्वश्री हीरालाल शास्त्री, कपूरचन्दजी पाटनी, चिरंजीलाल मिश्र, चिरंजीलाल अग्रवाल तथा, वावा हरिश्चंद्र आदि के आग्रह से जमनालालजी ने जयपुर प्रजामंडल के कार्य में अपना समय दिया। जयपुर में उसके पहले अधिवेशन के अध्यक्ष भी वही हुए। उसी अधिवेशन में जयपुर राज्य में अकाल पीड़ितों सहायता का रचनात्मक कार्य एवं नागरिक स्वतंत्रता प्राप्त करने का एक कार्यक्रम वनाया गया।

जमनालालजी की मध्यप्रांत से वाहर की, खासकर जयपुर की प्रवृत्तियां वढ़ जाने तथा नागपुर कांग्रेस में मतभेद उत्पन्न हो जाने के कारण भी महात्माजी ने उनको यह सलाह दी कि "अगर नागपुर कांग्रेस के लोग तुम्हारी सलाह के अनुसार कार्य न करें तो तुम उससे हट जाओ।" परि-णाम-स्वरूप जमनालालजी ने नागपुर जिला कांग्रेस की कमेटियों से त्याग-पत्र दे दिया। इस प्रकार उनको राजस्थान, विशेषकर जयपुर प्रजामंडल के कार्य के लिए अधिक समय मिलने की संभावना हो गई।

इन कार्यों के साथ जमनालालजी के आत्मचिंतन और मनोमंथन की प्रक्रिया, जो वहुत समय से चलीं आ रही थी, अब और जोर पकड़ गयी। वे अपने दोषों पर ज्यादा निगाह रखने लगे और वे उन्हें वहुत वड़े व गंभीर लगने लगे। वापू से मिलकर वह अपना मन खोलकर उनके सामने रख देना चाहते थे। पर देश इन दिनों जिन विकट समस्याओं से घिरा हुआ था और उसमें बापूजी का चर्चा, पत्र-व्यवहार, 'हरिजन' के लिए लेख लिखने-लिखाने में इतना समय, चला जाता था कि जमनालालजी को उनका समय लेना उनके प्रति निर्दयता-सी लगी। अतः उन्होंने ४ नवम्बर १९३८ को एक विस्तृत पत्र अपने मनोभावों का विश्लेषण करते हुए लिखा। २९ नवम्बर को जब वापू से उनका मिलना हुआ तो उन्हें पता चला कि वापू को पत्र नहीं मिला। तब जमनालालजी ने बापू से कोई १। घण्टे दिल खोलकर वातें कीं। वातें बापू ने शान्ति से सुनीं और जमनालाल-जी का समाधान करने का प्रयत्न किया। लेकिन उन्हें उससे पूरा संतोष

नहीं हुआ।

इधर जयपुर प्रजामंडल और राज्य सरकार के बीच स्थिति विस्फोटक हो गयी थी और प्रजामंडल तथा सरकार का तनाव यहां तक वढ़ गया कि जयपुर-शासन ने जमनालालजी को १२ दिसम्बर १९३८ को जयपुर राज्य मेंप्र वेश-निषेध का नोटिस दे दिया। इस कारण जयपुर के मित्रों का जमनालालजी पर उनका जयपुर पहुंचने का व सही मार्ग-दर्शन करने का आग्रह वढ़ने लगा।

इस वीच २६ दिसम्बर को जमनालालजी का बापूजी से मिलना हुआ। तब उन्होंने अपने वापू के नाम लिखे ४ नवम्बर के पत्र की नकल वापू को दिखाई और जयपुर की परिस्थिति भी बताई। उस दिन वापू का मौन दिन था। अतः बापूजी ने उनको अपने ये विचार लिखकर प्रकट किये :

"कल हम कुछ देर वात कर लेंगे, अयवा एक-दो दिन रहा जा सके तो रह जाओ। तुम्हारी बीमारी की दवा मुझे आसान लगती है। घवड़ाने का कोई कारण नहीं है। तुम्हारा विनाश है ही नहीं। पर तुम्हारे दोषों को मैं स्वीकार करता हूं, क्योंकि मुझे तो ऐसे अनुभव हो चुके हैं। यहां गांठ सुलझाकर जाना; अभी तो इतना ही कहता हूं।"

इस पर जमनालालजी ने कहा कि जयपुर-सरकार ने उनको अपने राज्य में प्रवेश करने की जो मनाई की है, उसका विरोध करके वे जयपुर जाना आवश्यक समझते हैं। अतः रुक सकना सम्भव नहीं है। वे उसी दिन (२२-१२-३८ को) वर्धा से बम्बई होते हुए जयपुर के लिए रवाना हो गये। उसी दिन बापू ने जमनालालजी का समाधान करते हुए एक लम्बा पत्र लिखा।

२७ और २८ को बम्वई के अपने जरूरी काम निवटाकर व मित्रों आदि से मिल-मिलाकर जमनालालजी २८ की रात को जयपुर के लिए रवाना हुए। जब वे २९ ता० को तीसरे पहर सवाई माधोपुर स्टेशन पर जयपुर के लिए गाड़ी बदलने के लिए उतरे तो जयपुर पुलिस अधिकारियों ने उनको उनके जयपुर राज्य प्रवेश-निषेध की आज्ञा सुना दी और लिखित आदेश भी दे दिया।

इस समय तो स्टेशन पर उपस्थित जयपुर के मित्रों तथा पुलिस अधि-

कारियों से उन सबकी जो कुछ बातचीत हुई, उससे समझौते का कोई मार्ग निकल आने की सम्भावना नजर न आने के कारण वह निषेधाज्ञा भंग न करके दिल्ली चले गये। वहां सर्वश्री घनश्यामदास बिड़ला, हरिभाऊ उपाध्याय तथा हीरालाल शास्त्री आदि मित्रों से विचार-विनिमय करके जमनालालजी महात्माजी से सलाह करने बारडोली गये। बापूजी उन दिनों विश्राम के लिए बारडोली गये हुए थे।

पूरा जनवरी महीना जयपुर, प्रजामंडल के मित्रों, जयपुर सरकार तथा बापूजी एवं सरदार पटेल आदि से पत्र-व्यवहार तथा मंत्रणा आदि में बीता। जब समझौते की सारी आशा धूमिल हो गयी तो अन्त में यही तय रहा कि निषेधाज्ञा भंग करनी चाहिए। तदनुसार वे वर्धा से दिल्ली आये और वहां से १ फरवरी १९३९ को सुबह की गाड़ी से जयपुर के लिए रवाना हो गये। उसी दिन शाम को जयपुर स्टेशन पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और १२ ता० को उन्हें मोरांसागर गांव में नजरबंद कर दिया गया। गांव के आस-पास उन्हें घूमने, वहां के लोगों से मिलने-जुलने की छूट थी। पर बाहर के और लोगों से बिना सरकार की इजाजत के वे नहीं मिल सकते थे।

इस गिरफ्तारी व नजरबन्दी की प्रक्रिया में १ फरवरी की संध्या से १२ ता० को ११ बजे मोरांसागर पहुंचने तक उनको जिस कदर परेशान किया गया वह उनकी उन तारीखों की डायरी पढ़ने से पता चलता है।

मोरांसागर के एकांतवास का जीवन उन्होंने गांव के आसपास के इलाके में घूमने, वहां की हालत का अध्ययन करने, चिंतन-मनन करने, अपने निरीक्षक के साथ शतरंज खेलने तथा पठन-पाठन, चिंतन आदि में बिताया। वहीं उनके घुटने में दर्द शुरू हुआ और जब वह अधिक बढ़ गया और वहां के इलाज से लाभ न हुआ तो सरकार ने उनको इलाज के निमित्त जयपुर के नजदीक कनवितों के बाग में नजरबंद करके रखा, ताकि वहां रहते उनका इलाज जयपुर के अस्पताल में किया जा सके। वहां इलाज का ठीक प्रबन्ध तो हुआ, पर उससे भी उसमें विशेष लाभ नहीं हुआ।

वहीं पर नजरबन्दी की अवस्था में ही राज्य-वर्ग के मित्रों द्वारा प्रजामंडल और जयपुर-सरकार में समझौते के प्रयत्न तथा वार्त्ताएं शुरू हुईं।

उनमें जमनालालजी की सहनशीलता, सूझबूझ एवं प्रत्युत्पन्नमति के कारण अन्त में जयपुर के गृह सचिव श्री हरिसिंह के माध्यम से तथा बाद में स्वयं महाराजा से हुई प्रत्यक्ष अनेक चर्चा व वार्ताओं आदि के परिणामस्वरूप एक समझौता हुआ। उसके फलस्वरूप जमनालालजी को ता० ६-८-३६ के दिन नजरबन्दी से मुक्त कर दिया गया और गांधीजी की सलाह से ११ अगस्त १६३६ को जयपुर का सत्याग्रह बन्द कर दिया गया।

१२ फरवरी से ६ अगस्त की नजरबन्दी के काल में उन्होंने अपना चिंतन, मनन तथा आध्यात्मिक पठन-पाठन जारी रखा। नियमित घूमना प्रार्थना करना तथा आसपास के दुःखी जनों के साथ सम्पर्क करके उनके दुःख-दर्द जानना व यथाशक्ति उनको सहायता पहुंचाने आदि का कार्य वे करते रहे। इस प्रकार वे दो प्रकार की लड़ाई एक समय में ही लड़ रहे थे। अन्दर से अपने को निष्कलुष बनाने की तथा बाहर से जयपुर-राज्य के राजनैतिक आन्दोलन का नेतृत्व यानी कार्यकर्त्ताओं, मित्रों, साथियों को सलाह-मशविरे से मार्ग-दर्शन देने की।

६ फरवरी को मुक्त होने के बाद वे १२ फरवरी को बापूजी से मिलने वर्धा चले गये।

बापूजी के सामने उन्होंने जयपुर सत्याग्रह तथा प्रजामंडल की गति-विधियों की सारी परिस्थिति रखी। बापूजी ने उनको जयपुर में हुए सम-झौते के अनुसार आगे प्रत्यक्ष कार्य करने की जिम्मेदारी जयपुर के मित्रों व कार्यकर्त्ताओं पर डालकर कुछ समय अपने स्वास्थ्य सुधार पर अधिक ध्यान देने का आग्रह किया। इसके फलस्वरूप उनका कुछ समय पूना के नेचर क्योर क्लीनिक में डा० मेहता की चिकित्सा में बीता।

इसी बीच जयपुर महाराज का बम्बई में एक्सीडेंट हो गया। जमना-लालजी उनके स्वास्थ्य के समाचार जानने को अस्पताल में जाकर उनसे मिले। उस मुलाकात का अच्छा असर पड़ा और उसके बाद हुई चर्चाओं के परिणाम-स्वरूप अन्त में सीकर के प्रकरण का तथा जयपुर-समस्या का सुखद हल निकला।

जयपुर सत्याग्रह के दिनों में सत्याग्रह का संचालन प्रायः आगरा से होता रहा और वहां इस कार्य में जयपुर के मित्रों-कार्यकर्ताओं व साथियों

के अलावा सर्वश्री घनश्यामदास विड़ला, हरिभाऊ उपाध्याय, श्रीकृष्ण-दत्त पालीवाल, राधाकृष्ण वजाज, अचलेश्वरप्रसाद शर्मा आदि मित्रों व स्नेहियों की भी उनको अत्यधिक सक्रिय सहायता व सहयोग मिला।

इसी वर्ष (१९३९) में जमनालालजी के प्रयत्नों तथा बम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति एवं व्यापारी श्री गोविन्दराम सेकसरिया की उदारता-पूर्ण सहायता से वर्धा में सेकसरिया वाणिज्य महाविद्यालय की १९-१० ३९ को स्थापना हुई। जमनालालजी की रुचि शुरू से ही युवकों को व्यावसायिक शिक्षा दिये जाने में रही है और वर्धा में इस प्रकार के महा-विद्यालय की स्थापना उनके एक उद्देश्य की पूर्ति थी।

कांग्रेस की राजनैतिक एवं राष्ट्रीय दृष्टि से तो यह वर्ष वहुत ही घटनापूर्ण रहा। महात्मा गांधी की इच्छा के विरुद्ध, जबलपुर में होने वाली १९३९ की कांग्रेस के सभापति-पद के लिए श्री सुभाषचन्द्र बोस पुनः खड़े हुए। गांधीजी के विचारों और सुभाषवाबू के विचारों में हिंसा-अहिंसा तथा सत्याग्रह करने न करने आदि के प्रश्न को लेकर मतभेद उत्पन्न हो गये। परिणाम यह हुआ कि गांधीजी ने राष्ट्रपति पद के लिये सुभाषवाबू और पट्टाभि के चुनाव में पट्टाभि की हार को अपनी हार माना। इससे गांधी-समर्थक कांग्रेसी हलकों में इस चुनाव-परिणाम को बड़ी गम्भीरता से लिया गया और बड़ी हलचल मच गई। इस बीच सुभाषवाबू बीमार हो गये। अपनी बीमारी की अवस्था में ही उन्हें त्रिपुरी (जबलपुर) कांग्रेस की अध्यक्षता करनी पड़ी। कांग्रेस में गांधीजी व सुभाषवाबू के समर्थकों के बीच बड़ा गम्भीर विरोधी वातावरण पैदा हो गया। समझौते के कई प्रयत्न हुए, पर अन्त में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी तथा विषय समिति में महात्मा गांधी के नेतृत्व में पूर्ण विश्वास प्रकट करते हुए पंडित्त गोविंद-वल्लभ पंत का यह प्रस्ताव, कि "कांग्रेस के अध्यक्ष महात्मा गांधी की सलाह से अपनी कार्यकारिणी का संगठन करें," सर्वसम्मति से पास हो गया।

इधर यह सब हो रहा था, उधर उन्हीं दिनों गांधीजी राजकोट के सत्या-ग्रह आन्दोलन में पूरी तरह उलझे हुए थे। सत्याग्रह शुरू हो गया था और पूज्य कस्तूरबा और मणिबेन पटेल को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया

गया था। महात्माजी को आमरण अनशन करने तक का भी निर्णय करना पड़ा था। अन्त में भारत के वायसराय लार्ड लिनलिथगो के बीच में पड़ने से विवाद का निपटारा हुआ और तय हुआ कि भारत के 'संघ न्यायाधीश' सर मॉरिस ग्वायर को पंच मानकर वे जो फैसला कर दें, उसे दोनों पक्ष मानेंगे। पंच के निर्णय ने महात्माजी की मान्यता को सही माना। इसपर राजकोट के दरबार के क्षेत्र में पुनः असन्तोष उमड़ा। तब गांधीजी ने यह कहकर कि मेरे अनशन के दबाव के कारण वायसराय के द्वारा राजकोट-दरबार पर शायद अनावश्यक दबाव पड़ा हो और यह एक प्रकार की हिंसा ही है, अतः 'ग्वायर अवार्ड' को कार्यान्वित न करके जनता के दिल को जीतने का कार्य महात्माजी ने राजकोट दरबार की अपनी सदिच्छा पर छोड़ दिया और इस प्रकार पूर्ण अहिंसात्मक तथा हृदय-परिवर्तन-कारी रुख अपनाकर अपने-आपको राजकोट-प्रकरण से एकदम अलग कर लिया।

इधर कांग्रेस अधिवेशन के बाद सुभाषबाबू का स्वास्थ्य अधिक खराब हो गया और अपने स्वास्थ्य सुधारने व कुछ दिन विश्राम करने के लिए वे एकांत स्थान पर चले गये और २-३ मास तक नई कार्य समिति नहीं बनाई जा सकी। नेताओं ने इस बीच काफी दौड़धूप, सलाह-मशविरा और पत्र-व्यवहार किये, ताकि महात्माजी और सुभाषबाबू के बीच समन्वय की स्थिति बन सके, पर परिणाम नहीं निकला। अन्त में सुभाषबाबू ने कांग्रेस की अध्यक्षता से त्यागपत्र दे दिया। इस परिस्थिति से निबटने और अन्तिम निर्णय लेने के लिए कांग्रेस कार्य समिति ने कलकत्ता में कांग्रेस महासमिति का विशेष अधिवेशन करने का निश्चय किया गया और श्री राजेन्द्रबाबू को उसका अध्यक्ष बनाया गया। इस निर्णय पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए सुभाषबाबू ने एक विवादास्पद वक्तव्य प्रकाशित किया। उस पर कांग्रेस के नये अध्यक्ष श्री राजेन्द्रबाबू ने सुभाषबाबू से उस बारे में अपना स्पष्टी-करण मांगा। सुभाषबाबू ने जो स्पष्टीकरण दिया वह कार्य समिति को स्वी-कार नहीं हुआ और अंततः सुभाषबाबू को कांग्रेस का अनुशासन भंग करने के आरोप में छः वर्ष के लिए कांग्रेस से निलंबित कर दिया गया।

सुभाषबाबू ने फार्वर्ड ब्लाक के नाम से एक नई संस्था बनाई और उस-

के अन्तर्गत अपना कार्यक्रम वनाकर काम करने लगे।

यह वर्ष (१९३९) विश्व राजनैतिक दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण एवं घटनापूर्ण रहा। यूरोप में हिटलर का असामान्य रूप से एक धूमकेतु के जैसा उदय हुआ। उसने जर्मन देश को जगाकर और युद्धरत करके आसपास के देशों को हड़पना-शुरू कर दिया।

महात्मा गांधी ने २३ जुलाई को शान्ति और अहिंसा की अपील करते हुए एक खुला पत्र हिटलर को लिखा, जो अपने में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज वन गया है। पर युद्ध के मद से चूर हिटलर को गांधीजी की यह शान्त व अहिंसक वाणी कहां सुनाई देती! ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री चेम्बरलेन ने हिटलर से म्यूनिख में एक समझौता किया। समझौते की स्याही सूखने भी नहीं पाई थी कि हिटलर ने उसे तोड़कर अपना अग्रगामी अभियान जारी रखा और पोलैंड पर हमला कर दिया। परिणामस्वरूप १ सितम्वर १९३९ को विश्व का द्वितीय महायुद्ध छिड़ गया। इसमें एक ओर शुरू में ब्रिटेन, फ्रांस, अमरीका, चीन आदि देश थे और दूसरी ओर जर्मनी और रूस थे। बाद में इटली भी उसके साथ शामिल हो गया। बाद में जापान के जर्मनी के साथ शामिल हो जाने पर रूस ब्रिटेन आदि मित्र-राष्ट्रों के साथ हो गया और जर्मनी ने रूस पर भी हमला कर दिया।

इधर भारत के वायसराय ने भारत के नये विधान के अन्तर्गत निर्वाचित प्रतिनिधियों की राय लिये विना ही ३ सितम्वर १९३९ को भारत को ब्रिटेन के साथ युद्ध में शामिल घोषित कर दिया। इसकी कांग्रेस पर तथा देश-भर में बुरी प्रतिक्रिया हुई। वाइसराय ने भारतीय नेताओं को वार्ता के लिए बुलाया। उनसे चर्चाएं हुईं, पर कोई परिणाम नहीं निकला। अन्त में कांग्रेस मन्त्रिमंडलों ने २२ अक्तूबर १९३९ को त्यागपत्र दे दिये और यह मांग पेश की कि ब्रिटेन अपने युद्ध के उद्देश्यों को स्पष्ट घोषित करे और भारत के भविष्य का निर्णय करने के लिए एक कांस्टीट्यूएट असेम्बली (राष्ट्रीय पंचायत) बुलाई जाय।

इसी वर्ष २ अक्तूबर को महात्मा गांधी की ७१वीं वर्षगांठ विश्व-भर में और खासकर भारतवर्ष में मनाई गई। उस अवसर पर डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा संपादित ग्रन्थ निकाला गया, जिसे आक्सफोर्ड

यूनिवर्सिटी प्रेस, लन्दन ने प्रकाशित किया। इसमें संसार-भर के लेखकों, विचारकों व चिंतकों के महात्माजी के जीवन विषयक तथा उनकी विचार-धारा के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण लेख थे।

इन तीन वर्षों की देश की उपरोक्त परिस्थिति में अति परिश्रम के कारण तथा लम्बे अर्से तक जेल में रहने के कारण जमनालालजी को स्वास्थ्य-सुधार के लिए नेचर क्योर क्लीनिक पूना, नासिक आदि जगहों में रहना पड़ा। शारीरिक स्वास्थ्य तो ठीक होने लगा, पर उनका मनो-मंथन तो बढ़ता ही गया। उन्होंने बापूजी को कई पत्र लिखे, चर्चाएं कीं, किशोरलालभाई से परामर्श किया। अपने परिवार के सदस्यों से भी दिल की बातें कहीं व समाधान खोजने का प्रयत्न किया, पर ऐसा लगता है कि शारीरिक अस्वास्थ्य के साथ ही उनकी आत्मा की विफलता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। उनको अपनी छोटी-छोटी त्रुटियां भी बहुत बड़ी दिखने लगी थीं और वे अन्तर में बड़ी छटपटाहट अनुभव कर रहे थे। वे आत्मिक उन्नति व आध्यात्मिक उत्थान की ओर बहुत तेजी से अग्रसर होना चाहते थे और उसमें अपनी धीमी गति के प्रति वे बड़े दुःखी व व्याकुल थे।

तीन वर्षों की इन डायरियों में उनके इस प्रकार के दुतरफा संघर्ष की झांकी मिलेगी। वे अपने को कार्यों में व्यस्त रखते हैं। बापूजी के कार्य की, कार्यकर्त्ताओं की, रचनात्मक संस्थाओं की, परिवार की, आत्मीयजनों की अपने मित्रों तथा स्नेहियों की खैर-खबर, पत्र-व्यवहार, बातचीत, विचार-विनिमय आदि से जानकारी रखते हैं। समस्याओं का समाधान खोजते हैं। परिवार के तथा समाज के कार्यों में सम्मिलित होते हैं—हंसी-मजाक भी करते हैं, पर हर दिन एक क्षण को भी वह अपने अन्दर झांकने से नहीं चूकते थे। यह प्रक्रिया आगे के बरसों से और जोर पकड़ गयी और इसका परिणाम क्या निकला, यह पाठकों को उनकी आगे की, १९४०-४१-४२ की डायरियों को पढ़ने से ज्ञात होगा।

—मार्तण्ड उपाध्याय

जमनालाल बजाज
की
डायरी

•

१९३७

वर्धा, १-१-१९३७

देर से उठा। कई लोग मिलने आ गये। उनसे बातें कीं।
प्रार्थना व गीता पाठ।
महिला आश्रम में भागीरथी बहिन, रतन बहन आदि से मिलना।
काका साहब व नरहरि भाई से बातचीत।
बैतूल के बिहारीलाल आदि कई लोग आ गये थे। श्री तुकड़ोजी के साथ भी बहुत से लोग थे। श्रीमती अप्पास्वामी व कुमारप्पा आदि भी भोजन को आये। २०-२५ जनों की पंगत हुई।
श्रीमन्नारायण व आर्यनायकम से मारवाड़ी शिक्षा मण्डल, नूतन भारत विद्यालय की मराठी, उर्दू शाखा आदि के बारे में देर तक विचार-विनिमय। इमारतों के बारे में भी।
मार्तण्ड उपाध्याय व बैजनाथजी से 'सस्ता साहित्य मण्डल' के बारे में विचार-विनिमय।
चि० लक्ष्मी की चिन्ता।

वर्धा, नागपुर २-१-३७

प्रार्थना के बाद गीता पाठ। 'मधुकर' में से 'कृष्ण भक्ति का रोग' पढ़ा।
जल्दी तैयार होकर स्टेशन।
चि० रामनिवास रुइया मेल से कलकत्ता गया। उसके साथ फर्स्ट क्लास का टिकिट लेकर नागपुर तक उससे बातचीत करते हुए गये।
नागपुर में डा० खरे से 'अभ्यंकर स्मारक' के बारे में बातचीत। आज 'अभ्यंकर-दिवस' था।
पूनमचन्द रांका से वहां की स्थिति पर विचार-विनिमय तथा समझना। उनके वहीं भोजन।
गोपीजी व सोनीबाई को लेकर महाराजबाग, स्त्रियों के अस्पताल में, गये।

डा० मार्टिन नहीं मिली। चि० शान्ता भी नहीं मिली। दाण्डेकर के घर गये।

दाण्डेकर व सहस्त्रबुद्धे के आग्रह के कारण डा० खरे से देर तक आपस के समझौते के बारे में बातचीत। पूनमचन्द को भी बुलाया। उसे भी समझाया।

'अभ्यंकर स्मारक' सभा हुई। व्याख्यान हुए।

रात २।। बजे तक पूनमचन्द व उनके मित्र व खरे व उनके दल के लोगों से बातचीत। आखिर समझौते की आशा हुई।

मोटर से वर्धा।

वर्धा, ३-१-३७

रात को ४।। बजे मोटर से वर्धा आया। इस कारण देर से उठना हुआ।

पोलक व अगाथा हेरिसन से बातचीत।

सत्यनारायणजी व श्रीमन् से हिन्दी प्रचार के बारे में देर तक बातचीत होती रही। उन्होंने टण्डनजी के मन में जो डर है, वह कहा।

सरलावाला व सिलहट-आश्रम के बारे में बातें।

श्री भिड़े व दामले से मराठी ब्रान्च के बारे में चर्चा हुई।

३ से ६ तक मारवाड़ी शिक्षा मण्डल की साधारण सभा। कार्यकारिणी मीटिंग हुई तथा विधान कान्फ्रेंस भी हुई। नई गवर्निंग कमेटी ने आज से काम शुरू किया। महत्व के काम का फैसला हुआ। मराठी शाखा व उर्दू शाखा रखने का निश्चय हुआ।

श्री मथुरादासजी मोहता से थोड़ी बातें।

चिरंजीलाल बड़जाते से बैंक वगैरा की बातें।

४-१-३७

श्रीमती अगाथा हेरिसन के साथ में सेगांव जाने की तैयारी। रास्ते में रतन शास्त्री साथ हो गई। रास्ते में राजकुमारी अमृत कुंवर वर्धा आती हुई मिली। उनके साथ वापस आ गये।

मारवाड़ी विद्यालय (अब नूतन भारत विद्यालय) में राजकुमारी अमृत कौर का व्याख्यान हुआ।

'क्रानीकल' में जवाहरलाल के विवाह की खबर पढ़कर थोड़ा आश्चर्य

हुआ।
डां० खान साहब निर्विरोध चुने गये।
अब्दुल गफ्फ़ार खान व उनके लड़के लाली व मेहर से उनकी पढ़ाई आदि के बारे में विचार।
राजकुमारी अमृत कुंवर के साथ सेगांव जाकर आया। बापू का मौन था।
डा० ज़ाकिर हुसैन (ज़ामिया वाले) दिल्ली से आये।
नागपुर से सोनू बाई व छोटी बाई आपरेशन के लिए आए।

५-१-३७

चि० राधाकृष्ण के साथ महिला आश्रम विद्यालय का स्थान निश्चित किया। भागीरथी बहन से मिला। चि० सज्जन नीमच से आई; उसे सान्त्वना दी।
महादेवीअम्मा ने मंदिर व घासीराम पुजारी का खुलासा किया। उससे एक प्रकार से समाधान मालूम हुआ।
डा० जाकिर हुसैन, खान साहब व मैंने मिलकर जामिया ट्रस्ट, उसकी सहायता तथा खजानची पद के बारे में स्पष्ट व खुलासेवार चर्चा।
'नूतन भारत विद्यालय' व महिला आश्रम में डा० जाकिर के सुन्दर भाषण हुए।
डा० जाकिर व खान साहब के साथ सेगांव जाकर आया। बापू का विचार पूना व त्रावणकोर जाने का है।
पुखराज घटबाई वगैरा आये थे।
सोलह हजार रुपये, जो मुस्लिम छात्रवृत्ति के लिए रखे थे, वे जामिया को देने का निश्चय हुआ।

वर्धा-नागपुर ६-१-३७

विचार व आत्म-निरीक्षण।
पत्र-व्यवहार।
डॉ० जाकिर हुसैन को पत्र व १६ हजार की हुंडी जामिया के लिए दी।
सोनूबाई बजाज, गंगाबिसन, पूनमचन्द, चिरंजीलाल के साथ नागपुर गये। सोनूबाई को आपरेशन व भावी जीवन रहन-सहन आदि के बारे में समझाया।

नागपुर में पूनमचन्द रांका, छगनलाल भारुका, बजरंग ठेकेदार से बातें। बाद में डा० खरे से मिले। उनकी मनःस्थिति व विचार-पद्धति सन्तोषजनक मालूम हुई। पूनमचन्द का व्यवहार सन्तोषजनक मालूम हुआ। उसका व घनीवाई का फार्म भरवाया। अवारी का व्यवहार ठीक नहीं मालूम हुआ। आशा है वह समझ जायेगा। डा० खरे से नगर कमेटी, अभ्यंकर ट्रस्ट कमेटी व असेम्वली सीट का साफ खुलासा।

ग्रान्ट ट्रंक से वर्धा। बापूजी पूना त्रावणकोर गये।

परमेश्वरी व ईश्वरदयाल, (देहली वाले) से डेअरी की बातें।

वर्धा, ७-१-३७

कु० अगाथा हेरिसन कलकत्ता गई।

महादेवी अम्मा, प्रकाशवती व चि० सज्जन से बातचीत। प्रकाश व सज्जन को भली प्रकार समझाया। उसके ध्यान में आया।

चि० मदालसा का स्वास्थ्य आज ठीक मालूम हुआ।

बच्छराज-जमनालाल दुकान के काम की सभा। चि० गंगाबिसन व लक्ष्मी से चि० पार्वती की सगाई की बातचीत। उनकी स्वीकृति।

जे० सी० कुमारप्पा के पांव का एक्सरे लिया। डा० शहानी से बातें।

श्री कु० शान्तादेवी (अंग्रेज) के टांसिल का आपरेशन शहानी ने किया। उसे खूब कष्ट हुआ। आपरेशन के समय खड़ा रहना पड़ा।

श्री राजकुमारी अमृत कुंवर से बातें। वह तथा श्री पोलक ग्रान्ड ट्रंक से गये। श्री जैनेन्द्र (देहली वालों) से बातचीत।

काका साहब, सत्यनारायण, श्रीमन् से, प्रचारक विद्यालय के बारे में विचार-विनिमय।

बापूराव खरे, नाना के गहाण (गिरवी) के बारे में गंगाबिसन से बातचीत।

शिक्षा मण्डल के मराठी विभाग के मास्टरों से दामले व भिड़े के सामने बातचीत, स्पष्ट खुलासा किया।

चतुर्भुजभाई, चापसी, जोगलेकर से अवारी व चुनाव की बातें।

श्री थत्ते आदि से आर्वी चुनाव की बातें।

रात को ११ बजे गये सोने को।

८-१-३७

चतुर्भुजभाई के साथ ७।। बजे मोटर से नागपुर रवाना। ६ बजे डा० खरे के यहां पहुंचे। वहां डा० खरे, गणपतराव पाण्डे, पूनमचन्द, अवारी, ओगले, डा० परांजपे, वजरंग ठेकेदार, डांगरे आदि से बातें। वहां की परिस्थिति पूरी तौर से समझ में आई। श्री ओगले का व्यवहार व बातचीत सन्तोष कारक रही। डा० परांजपे ने भी अपनी स्थिति कही।

श्री साखरदाण्डे से नहीं, पर ओगले से दो बार मिलना। आखिर परिश्रम बारह आने सफल हुआ—श्री पूनमचन्द व घनीबाई का तो प्रश्न ही नहीं था, अवारी ने भी नाम वापस ले लिया। विद्यादेवी, पन्नालाल भी मान जाते तो सोलह आने सफलता मिलती।

दाण्डेकर-लक्ष्मी से भागीरथी बहन, सज्जन व पूनमचन्द के साथ मिले। नगर कांग्रेस कमेटी के बारे में विचार-विनिमय।

वेंकटराव गोडसे से बातचीत।

९-१-३७

दुकान पर वच्छराज की सभा। खेती की कम्पनी का काम देर तक हुआ। अस्पताल में जाकर शान्ताबाई, रामदेवजी, रामदास को देखा। जगदीश अग्रवाल से बातें। दामोदर व राधाकृष्ण को समझाया।

खान साहब, मेहर, लाली से बातचीत।

गांधी सेवा संघ का देर तक कार्य हुआ। किशोरलालभाई, जाजूजी, धोत्रे, महोदयजी के साथ नोट करवाये।

अप्पा सवाने, गोडे, बाबा साहब से चुनाव सम्बन्ध में बातचीत। उन्हें समझाया।

तिलक-हाल में चुनाव के सम्बन्ध में सार्वजनिक सभा। आज से वर्धा में चुनाव आन्दोलन शुरू किया। मैंने अपने विचार स्पष्ट भाषा में कहे।

रात को हरिजन कार्य की सहायता के लिए प्रो० अमर का जादू का खेल।

रात को एक्सप्रेस से इन्टर में धुलिया रवाना।

चालीसगांव-धुलिया, १०-१-३७

चालीसगांव में गाड़ी बदली।

श्री गजेटिया मिलने आये। धुलिया तक साथ रहा। काणे मास्तर के बारे

में कहा।
धुलिया में प्रताप सेठ से रामेश्वर की बहन मांगीबाई के फैसले का विचार।
कन्हैयालालजी, चन्दुलालजी आदि से बातें। उन्हें खूब साफ-साफ कहा।
प्रताप सेठ पर उसका असर हुआ।
कापडणें में प्रताप सेठ व शालिग्रामजी के साथ वहां की प्रदर्शनी में। वहां मैं और प्रताप सेठ बोले। अण्णा साहब सहस्रबुद्धे सभापति थे।
रामेश्वर के घर गऊशाला के बारे में रणदिवेजी से बातें। योगाबाई व गंगूबाई से बातचीत।
जाहिर सभा ९ बजे शुरू हुई १०॥ तक चली। ठीक भाषण हुए।
प्रताप सेठ के यहां फिर निपटारे की बातें। रास्ता नहीं बैठा। रात के १२ बज गये।
प्रताप सेठ से चुनाव-कार्य के बारे में बातें।

धुलिया-बम्बई, ११-१-३७

शिवाजी से श्रीराम की मनोदशा का पता लगा। वह सगाई रखना नहीं चाहता है। दो वर्ष का तो बहाना था। उसे समझाने का प्रयत्न, कोई फल नहीं।
रामेश्वर की बहिन मांगीबाई का चन्दूलालजी व कन्हैयालाल के साथ फैसला, प्रताप सेठ और मैंने मिलकर किया। शालिगरामजी (रामेश्वर के काका), वरवे, जोगिलाल आदि के सामने मामला निपट गया। झगड़ा व बरबादी से ये लोग बचे।
प्रताप सेठ व कन्हैयालालजी से 'गो सेवा मण्डल' के बारे में देर तक विचार-विनिमय।
भोजन के बाद धुलिया से मनमाड तक मोटर से। रामेश्वरजी, गंगा व श्रीराम साथ में। रास्ते में उनकी घरेलू बातें—श्रीराम, गंगा व रामेश्वरजी को समझाना।
मनमाड से थर्ड में बम्बई रवाना। गाड़ी में खूब भीड़ थी। श्रीराम से बातें। उसे विचार करने को कहा।
साढ़े आठ बजे रात को दादर। वहां से सीतारामजी को लेकर जुहू पहुंचे।

जुहू-बम्बई, १२-१-३७

जानकी देवी से चि० लक्ष्मी व श्रीराम की सगाई के सम्बन्ध में जो नई परिस्थिति पैदा हुई वह सब समझाकर कही। श्रीराम से बात करने व पुरुषोत्तम को समझाकर कहने को कही।

श्री सीतारामजी सेकसरिया आज कलकत्ता गये। उनसे सुबह और शाम को भी नर्मदा की सगाई आदि के वारे में बातचीत।

हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी, रतन वहन से देर तक बातें। रामसिंह, माघेलाल चौधरी (जयपुर), उनकी स्त्री, कन्या बालिका आश्रम आदि की चर्चा।

महाकौशल के कौंसिल उम्मीदवार आये, उनकी जो भूल हुई, वह बतलाई। सरदार से देर तक पोलीक्लीनिक में बातचीत।

आफिस में पत्र-व्यवहार, जीवनलाल भाई, जमनादास गांधी, आविद अली आदि से बातें। श्री जौहरी को पत्र लिखने को कहा।

९।। करीव जुहू पहुंचा।

जुहू-पूना, १३-१-३७

'हरिजन बन्धु' पूरा पढ़ लिया। जानकी देवी से विस्तार-पूर्वक स्पष्ट खुलासेवार बातचीत। मन हलका हुआ। आगे के मार्ग का विचार। देवा नौकरी छोड़कर जाने लगा। उसपर क्रोध व विचार। उसे समझाना। जानकी को भी।

भाग्यवती दानी के घर जानकी, कमला व नर्मदा के साथ गये। उसने पन्नू के विवाह पर आने का बहुत आग्रह किया।

सरदार वल्लभ भाई से मिलना। देर तक विनोद व काम की बातें। गोविन्दलालजी के यहां गया। वह नहीं मिले। श्री शान्ता बहन से बातें। आफिस तथा खादी भण्डार गये। ५।। बजे की गाड़ी से पूना रवाना। चि० नर्मदा व मोहन साथ में। पूना में सुव्रता वहिन के यहां ठहरे।

१४-१-३७

श्री सुव्रता बहिन के साथ घूमना। ९।। से ११।। तक उसका उत्साह बढ़ाना। प्रत्येक तहसील में एक कार्यकर्ता की योजना समझाना। मेरी ओर से संभव हुआ तो पांच लाख व वे दस लाख देवें तो योजना सफल हो

सकती है।
श्री रा० व० हनुमतरामजी राठी से दो घंटे तक विचार-विनिमय । सर गोविन्दराव मडगांवकर से मिलना। अवार्ड-पत्र दिखाया। उनके यहां के कांग्रेसी कार्यकर्ता—खासकर गुप्ते-जोशी के व्यवहार आदि से निराशा प्रकट करना। अन्य बातें।
सुव्रता वहिन के साथ शाम को घूमने जाना । चि० कमला रुइया भी साथ थी।
सोमेश्वर के मंदिर में व्यापारियों की जाहिर सभा हुई। हरिजनों को नहीं आने दिया। दूसरा दुःख। माफी मांगनी पड़ी। दादा धर्माधिकारी भी बोले। ठीक सभा हुई। बाद में मदनलाल जालान व प्रहलाद से बातें।

१५-१-३७

सुव्रता वहन के साथ दादा की बातचीत।
कैंट में भगवानदास एण्ड कं० के मोहनलालजी से मिलकर आये। शाम के भोजन की तथा अन्य व्यवस्था।
श्री शंकरराव देव, गुप्तेजी, हरिभाऊ जोशी आदि मिलने आये। बाद में वासू काका जोशी भी आ गये।
दयाशंकर बी० ए० (राजवंशी अग्रवाल) से देर तक बातचीत। उसके सम्बन्ध के बारे में।
लोक शक्ति प्रेस की व्यवस्था का निरीक्षण। वहां फोटो ली गईं।
शनिवार वाड़ा में जाहिर सभा ठीक हुई। मैं व दादा धर्माधिकारी बोले। बाद में छावनी में भी सभा हुई। वहां भी दोनों जने बोले।
भगवानदास कं० के यहां औरों ने भोजन किया। वहां रतन, चंद्रभान, सूर्यभान आदि से बातें।

पूना-संगमनेर, १६-१-३७

सुव्रता वहिन, रामनिवास से। रामनारायण रुइया कालेज, दादर व कार्यकर्ताओं की मिशनरी पद्धति की सेवा संस्था के संबंध में विचार। मेरा पांच लाख लगाने का विचार कहा।
श्री करंदीकर 'त्रीकाल' के संपादक मिलने आये। देर तक बातचीत।
२।। बजे मोटरसे संगमनेर रवाना—दादा, नर्मदा, मोहन साथ में। साढ़े तीन

घंटे लगे। ६ बजे संगमनेर पहुंचे।
संगमनेर में पन्नालाल लाहोटी के यहां ठहरे। स्थानिक कार्यकर्ताओं के मतभेद तथा लोकल परिस्थिति समझी। विचार-विनिमय, रात ११ तक। श्री भाऊ साहब फिरोदिया, अच्युत पटवर्द्धन आदि थे।
जाहिर सभा में देर हो गई। दादा ठीक बोले। मैं नहीं बोला।

देहू, आलंदी, संगमनेर-पूना, १७-१-३७

पन्नालाल लाहोटी, पन्ना लाल लोहिया वगैरा संगमनेर रवाना। रास्ते में सुबह का समय था, दृश्य ठीक मालूम होते थे।
इन्द्रायणी नदी के रम्यस्थान पर नाश्ता किया।
देहू-तुकाराम का स्थान, मंदिर, वैकुंठवास, इंद्रायनी का डोह, बड़ी मच्छियां आदि देखीं।
आलन्दी—ज्ञानेश्वर महाराज का स्थान देखा। श्री हरिभाऊ तलफुले मिले।
पूना —थोड़ा आराम।
श्री श्यामसुन्दरजी अग्रवाल मिलने आये। विवाह, सगाई व रोजगार की बातें।
संत तुकाराम सिनेमा—रामनिवास, कमला, नर्मदा के साथ देखा। ठीक मालूम हुआ।

पूना, १८-१-३७

श्री हरिभाऊ फाटक सुबह मिलने आये। देर तक बातचीत।
श्री दयाशंकर, चन्द्रभान (चन्दू), सूर्यभान मिलने आये। करीब पौन घंटा तक उनके विचार जाने। उन्हें सलाह दी।
श्री अन्ना साहब भोपटकर से मिला। देर तक बातचीत। उन्होंने अपना दर्द व स्थिति समझाई। व्यक्तिगत टीका के बारे में विचार। तात्या साहेब केलकर यहां नहीं। बम्बई गये हुये हैं। लोकशक्ति-कार्यालय में गये। वहां उन्होंने, श्री भोपटकर की ओर से किस प्रकार टीका वाले लेख लिखे जाते हैं, यह बतलाया। श्री खाडिलकर व उनकी स्त्री से मिलना। वह वर्धा नहीं आ सकेगी। श्री डा० पाठक मिले। उनका लड़का भास्कर भी मिला।
दयाशंकर भास्कर व गोपाल बजाज (बनारस वाले) से बात।

पूना-बम्बई-जुहू, १९-१-३७

श्री प्रेमा कंटक आई। उससे बातचीत। बापू से, कल्याण से पूना तक, जो बात हुई वह प्रेमा ने सविस्तार कही। बा के विचारों में परिवर्तन। अपनी स्थिति कही, ग्राम-कार्य आदि की। श्री हरिभाऊ फाटक, बालू काका मिलने आये।

सुव्रता वहिन से घूमते समय प्रेमा का परिचय।

चि० मोहन की माता व गंगाधर राव की लड़की से मिलना। योग्य बाई मालूम हुई।

मदनलाल जालान से मिलना।

३-२५ की गाड़ी से बम्बई रवाना। स्टेशन पर अण्णा साहब भोपटकर मिले।

जुहू,बम्बई, २०-१-३७

धर्मानन्द कौसम्बी, जमनादास गांधी व जबलपुर अनाथालय वालों से बातचीत।

सरदार से मिलना। उनसे बहुत देर तक बातचीत। आफिस में नरीमान वगैरा कई लोग मिलने आये। श्रीनिवासजी बगडवाले से सम्मेलन-कार्य। भूलाभाई, बाला साहब खेर से, गाडगे महाराज की धर्मशाला, नासिक के मंदिर में लेने का निश्चय।

जुहू में जगदभानु से देर तक बातचीत।

जुहू-बम्बई, २१-१-३७

८॥ बजे नरीमान के यहां पहुंचे।

श्री पीरामलजी, चतुर्भुज, विश्वंभर महेश्वरी, सूरजमल नेमाणी, जुहार मलजी, शिवनारायणजी रुंगटा, गोविन्दरामजी सेकसरिया से बम्बई चुनाव फण्ड के लिए मिलना, सन्तोषजनक व्यवहार।

सरदार वल्लभ भाई के साथ भोजन। बातचीत डाह्या भाई के बारे में भी।

सर नौरोजी से मरचेन्ट चेम्बर आदि की बातचीत।

इन्द्र मोहन गोयल के साथ बातें।

नर्मदा, बालासाहब खेर, गोकुलभाई, बान्द्रेकर के साथ कुर्ला-घाटको पर।

कुर्ला की सभा में चुनाव भाषण ।
घाटकोपर की सभा में भाषण ।

२२-१-३७

श्री मोती बहन, जीवनदास भाई व सुलोचना आये । डा० सरदेसाई के यहां जानकी देवी व उमा के साथ गये । वहां चि० लक्ष्मी, पुरुषोत्तम जाजोदिया आपा साहब रणदिवे भी आये थे ।
ऑफिस में मथुरादास त्रीकमजी, सर नौरोजी शकलतवाला आदि से बातें ।

२३-१-३७

जीवनलाल भाई, रामजीभाई, पूनमचन्द । आबिदअली, मूलजी, लुकमानी आये ।
चि० श्रीकृष्ण नेवटिया की भावी योजना व विचार समझे ।

२४-१-३७

श्री डा० पटेल, उनकी स्त्री व गुप्ता कान्ट्रेक्टर के मिलने व जमीन देखने आये ।
शफिया मरियम भी मिलने आये । बम्बई से और भी कई जने मिलने आये । माटुंगा में गोविन्दलालजी के यहां व शान्ता के घर होते हुए दुकान । बाद में मारवाड़ी विद्यालय में श्री गोविन्दलालजी का सम्मान छह संस्थाओं की ओर से । सभापति बनना पड़ा, व्याख्यान । वहीं पर भोजन । स्टेशन । नवलकिशोर भरतिया आदि से बातें । ६-१० की गाड़ी से वर्धा रवाना ।

भुसावल, अकोला, वर्धा, २५-१-३७

अकोला में ब्रिजलालजी बियानी, चि० तारा, निर्मला, सुशीला मिले ।
रास्ते में गोवर्धन, रमाकान्त व पुरुषोत्तम से बातें ।
वर्धा पहुंचे । स्नान वगैरा के बाद अस्पताल । ३-१० को वहां लक्ष्मी (गंगाबिसन) को लड़का हुआ । वजन साढ़े सात रत्तल । उसे घूंटी दी । दुकान पर कांग्रेस चुनाव के बारे में ४ घंटे तक विचार-विनिमय । हालत समझी ।

२६-१-३७

राधाकृष्ण से बातचीत—चुनाव के सम्बन्ध में ।

श्री माधोराव (अप्पाजी सबाने) वेंकटराव गोडे से भी चुनाव सम्बन्ध में देर तक बातचीत।
गांधी चौक में झंडा वंदन। आज स्वतंत्रता दिन निमित्त झण्डा फहराया। राष्ट्रगीत के वाद थोड़ा व्याख्यान। पुलिस वालों की तैयारी।
चुनाव-कार्य श्री तुकाराम (रोहणी वालों) ने सही की, देर तक वातचीत। काका कालेलकर के साथ सेगांव जाते-आते वातचीत। बापू से आज के दिन के वारे में बातें। जल्दी वापस। खान साहव ने पेशावर के मीठे निंबू दिये।
गांधी चौक-जाहिर सभा। पहली सभा स्वतंत्रता दिन निमित्त।
काका साहब कालेलकर मुख्य वक्ता थे। मैं सभापति की हैसियत से थोड़ा बोला। तेजराम, धोत्रे ने ठहराव रखा।
दूसरी सभा—कांग्रेस चुनाव के सम्बन्ध में कांग्रेस उम्मीदवार को मत देने के वारे में कहा।
कमला लेले, ठाकुर किसनसिंह व भीड़े बोले।

वर्धा, अकोला, २७-१-३७

भजन। अकोला जाने की तैयारी।
वर्धा स्टेशन पर व्रिजमोहन विड़ला मिले। वम्बई से कलकत्ता गये। उनसे बातचीत की।
श्री आर्यनायकम व श्रीमन्नारायण के साथ पैदल स्टेशन। मूर्तजापुर तक मारवाड़ी शिक्षा मण्डल, हिन्दी विद्यालय, मराठी विद्यालय, उर्दू विभाग आदि की चर्चा व विचार ठीक तौर से किया गया।
मूर्तिजापुर से अकोला तक श्रीमन्नारायण से बातें। उसके विचार जाने। सगाई-विवाह के सम्बन्ध में खुलासेवार बातें। उसकी मन:स्थिति समझी। अकोला-व्रिजलाल वियाणी से बरार की परिस्थिति समझी। सरदार को मदद के लिए तार भेजा। शाम को व रात को देर तक बातचीत।
नानाभाई, विजया भाभी, तारा, शान्ति, निर्मला से नानाभाई की स्थिति समझी। स्टेशन आये। गोपालदास मोहता मिले।
पैसेंजर से वर्धा रवाना।

वर्धा, हिंगनघाट-वर्धा, २८-१-३७

वर्धा ४।। बजे करीब पहुंचे। वंगले में मुंह-हाथ धोकर प्रार्थना, गीताई, भजन।

चि० राधाकृष्ण व शिवराजजी, तेजराम आदि से कांग्रेस चुनाव के बारे में देर तक बातचीत। चि० गंगाबिसन से भी इस सम्बन्ध में बातचीत।

चि० मदालसा से उसके भावी जीवन, सगाई आदि के बारे में विचार-विनिमय।

चि० वासंती ने अपनी थोड़ी स्थिति कही।

हिंगनघाट में डा० मजूमदार के घर कार्यकर्ताओं से वातचीत विचार-विनिमय, परिस्थिति समझी।

कांग्रेस चुनाव की जाहिर सभा ठीक हुई। जनता भी ठीक जमी थी। १२ बजे वर्धा पहुंचे।

वर्धा-पुलगांव-वर्धा, २९-१-३७

जानकी देवी, कमला बम्बई से आये। सत्यप्रभा से दवाखाने आदि की बातें।

श्री चतुर्भुज वैद्य के स्वभाव रहन-सहन के बारे में स्थिति समझी।

श्री वेंकटराव घोडे व अप्पा साहब सबाने से कांग्रेस-चुनाव के सम्बन्ध में देर तक विचार-विनिमय। पंजाबराव सालवे से भी बातें, जिले की दृष्टि से विचार-विनिमय।

तालुका के मुख्य-मुख्य कार्यकर्ताओं से विचार-विनिमय।

मेल से पुलगांव। शिवराम टालवाले के यहां बातचीत। उन्होंने यादवराव को मदद करने को कहा। कारण बतलाये।

जाहिर सभा में श्री करंदीकर व मेरा भाषण हुआ।

मोटर से वर्धा।

३०-१-३७

चि० शांति बम्बई से आई, उसकी मां व सुशीला साथ में।

महिला मण्डल की सभा ६।। से ११ तक हुई। मारवाड़ी शिक्षा मण्डल की सभा ३-५ तक हुई।

चुनाव-सम्बन्ध में बातचीत। दिन में व रात २।।। बजे तक कोशिश होती

रही; वेंकटराव, अप्पाजी, पंजाबराव, अमृतराव, आदि से तथा अपने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से भी।

नवलकिशोर भरतिया आये।

वर्धा, आर्वी ३१-१-३७

जल्दी तैयार होकर वर्धा से मोटर से आर्वी रवाना हुए। रास्ते में खरांगणा की सभा में भाषण।

आर्वी में गोपालदास के यहां उतरना।

रात को आष्ठी में भाषण हुआ। ठीक सभा हुई। वहीं पर देशपाण्डे के घर पर सोये।

आष्टी-आर्वी, वर्धा १-२-३७

आष्टी से छोटी आर्वी, लींगपुर आदि १० गांवों में गये। कई जगह बात-चीत, व्याख्यान व समझाना। कांग्रेस उम्मीदवार श्री केदार की परिस्थिति ठीक मालूम हुई। तलेगांव व आर्वी में जोरदार भाषा में स्पष्ट भाषण देना पड़ा। श्री केदार, गोपालदास, बाबा साहब, थत्तेजी आदि साथ में थे।

वर्धा रात को १२॥ बजे करीव पहुंचे।

वर्धा, पवनार, सेलू, सालोडी, सिंदी २-२-३७

गजराजजी (झुनझुनवालों) से बातचीत।

बाबा साहव देशमुख, शिवराजजी, तेजराम के साथ सालोड गये। वहां राव साहेब, विट्ठलराव देशमुख से देर तक वातचीत हुई। आखिर हरिजन वोट सालोड सर्कल में दोनों विश्वनाथ को मिलें, ऐसा ये प्रयत्न करेंगे। घर साथ में भोजन। देर तक बातचीत। रामराव के वारे की परिस्थिति समझी।

बाबा साहव, वेंकटराव व गोडे के साथ पवनार गये। दोनों देशमुख व विश्वनाथ से मिलना। विश्वनाथ की हालत खराब, वीमार था। उसने कुछ भी काम नहीं किया।

सेलू के कार्यकर्ताओं से मिले। स्थिति समझी।

सिन्दी में जाहिर सभा। बाबा साहब देशमुख सभापति। अमृतराव का लम्बा चौड़ा भाषण, जवाब। रात को २ वजे वर्धा पहुंचे।

वर्धा, ३-२-३७

लावण्यलता कलकत्ता गई ।

वायगांव व देवली सेन्टर की व्यवस्था देखकर आये। देवली में अधिक समय लगा।

दोपहर में आंजी व एकलाकेली की व्यवस्था देखी। एकलाकेली में भाषण भी हुआ।

४-२-३७

सेलू, हिंगणी, वर्धा, वायगांव, देवली, पुलगांव, फिर वर्धा पवनार व सेलू का पोलिंग घूम कर देखा। यहां के पोलिंग का परिणाम ठीक आने की आशा। विश्वनाथ के बारे में थोड़ा विचार।

डा० बारलिंगे से बातें। पुखराज के चुनकर आने की पूरी आशा।

वर्धा-सेगांव, ५-२-३७

हरिभाऊजी, भागीरथी बहन व शान्ता से थोड़ी बातें।

श्री केदार से आर्वी चुनाव-व्यवस्था की बातें।

मगनवाड़ी में इमारत सब कमेटी की सभा। जाजूजी व कुमारप्पा का मतभेद देख दुःख हुआ। यहां भी केदार आये। आर्वी के सम्बन्ध में बातचीत, व्यवस्था।

सेगांव में बापूजी से जवाहरलाल के पत्र व मालवीयजी के सम्बन्ध में विचार। देहली डेरी के बारे में स्वीकृति। बालकोबा को देखा, प्रार्थना। वर्धा में कालूराम से बातें।

वर्धा-आर्वी, ६-२-३७

जल्दी तैयार होकर आर्वी ८।। बजे पहुंचे। गोपालदासजी के यहां भोजन, वहां से बाबासाहब को साथ लेकर ऑफिस। केदार से बातें, व्यवस्था, आष्टी गये।

वापस आर्वी। थोड़ी देर ऑफिस-व्यवस्था देखकर घनोड़ी, देर हो गई थी। डा० अभ्यंकर के घर पर घनोडी में नाश्ता। विरुल ११ बजे रात पहुंचे।

विरुल, वर्धा, आर्वी-चान्दा, ७-२-३७

बाबा साहब की स्त्री श्री सौ० बाई से घरेलू बातें।

विरुल में सभा ठीक हुई। भाषण भी अच्छा हुआ।

रसूलाबाद में भी भाषण ठीक हुआ।

रोहणा में सभा तो नहीं हुई। लड़कों से बातचीत। विनायक राव की जबर्दस्त तैयारी, नायडू की ओर से।

घनोड़ी में भी सभा ठीक हुई। आर्वी होकर वर्धा।

वहां से चान्दा।

चान्दा में सभा ठीक हुई। लोग खूब जमे थे। मैंने व रिषभदास ने भाषण दिये। रिषभदास ठीक बोलता है। मेरा भाषण भी ठीक हुआ। स्टेशन पर सोये।

वर्धा-नागपुर, ८-२-३७

प्रार्थना, गीताई। चान्दा से सुबह वापस आये। आते समय गंगाबिसन के घर होकर आये। घूमना, महिला आश्रम, जानकी, कमला, गोवर्धन साथ में। हरिभाऊ, भागीरथी बहन आदि से बातें, उत्सव की तैयारी।

२॥ बजे की एक्सप्रेस से नागपुर। पूनमचन्द, बजरंग, खरे वगैरा नहीं मिले।

अवारी, छगनलाल, आकरे मिले। उद्धोजी, भिकूलाल, बजरंग, चतुर्भुज भाई, छगनलाल, खरे की सफलता की पूरी आशा, जगातदार की भी। पलसुले तथा अनुसूया बहन व नायडू के बारे में थोड़ा डर।

वर्धा, ९-२-३७

किशोरलाल भाई, गोमती बहन से मिलना। महिला-आश्रम रास्ते में खान साहब से बातचीत। हरिभाऊ उपाध्याय व भागीरथी बहन से बातें।

दुकान पर ३ से ५॥ तक खुशाल चन्द के चुनाव की व्यवस्था। काम बांटना। ८॥ से १॥। तक सार्वजनिक सभा बालाजी मंदिर के सामने। १२ से ज्यादा वक्ता दोनों पक्ष के बोले। भाषण, कई बातें छूट गईं—देर के कारण।

वर्धा-बम्बई रवाना, १०-२-३७

पैदल दुकान। खुशालचन्द के चुनाव की व्यवस्था। बाबा साहब वाढोणा आदि से बातचीत।

नागपुर मेल से बम्बई रवाना तीसरे दर्जे में। साथ में जानकी [illegible]। जगह ठीक थी। पर गाड़ी हिलती थी।

बम्बई में हंसा व रतीलाल को वोट देना तथा कांग्रेस व दानी का भी काम था।

बम्बई, जुहू, ११-२-३७

दादर उतरे। सामान पहले तुलाया हुआ न होने के कारण ७ रुपये ६ आने देना पड़ा। बुरा लगा। क्रोध भी आया।

केशवदेवजी से रास्ते में शक्कर मिल के नुकसान के बारे में बातें। देसाई व त्रिवेदी को बदलने का विचार।

टाउन हाल में श्रीमती हंसा मेहता व रतीलाल गांधी (कांग्रेसी उम्मीदवार) को चेम्बर के दोनों वोट, मेरे व जानकी के, दिये। वहां खड़े रहे।

रामेश्वरदासजी व जुगुल किशोरजी बिड़ला से मिलना, बातचीत।

बम्बई हाउस में सर नौरोजी से मिलना।

जुहू-बम्बई, १२-२-३७

केशवदेवजी, आबिद अली, मूलजी मिलने आये। हाउसिंग आदि की बातें। केशर के यहां भोजन।

सरदार से बातचीत।

बम्बई हाउस में सर नौरोजी से बातचीत व फैसला, रसीद आदि। मूलजी सिक्का से मिले। परिणाम नहीं आया।

पेरीन बेन व झाबिर अली से मिले।

हिंदुस्तान शुगर की सभा, विचार। भावी प्रबन्ध।

जुहू-बम्बई-पूना, १३-२-३७

गोषीबहन मिलने आई, जाजूजी के तार व पत्र से दुःख पहुंचा, अन्य बातें। श्री एम० एन० राय व मणीबहन, मूलजी मिले। उन्होंने देर तक पत्र की सहायता व भारत बीमा कम्पनी के बारे में बातें कीं। वर्धा आवेंगे, पेपर की मदद का नहीं हुआ। ११-४५ की गाड़ी से पूना रवाना, जनेत के साथ। रिजर्व डब्बा, विनोद, आराम। पूना में मोटर से लश्कर जनवासा। वहां आईसक्रीम, नाश्ता, दूध। पूना मिल में सभा में बोले, कांग्रेस को वोट देने को कहा।

पूना-कल्याण, १४-२-३७

चि० पन्नू-रत्न के विवाह में गये। ४ से ७ तक विवाह में रहे। बम्बई

का पंडित विनोदी था।
श्री देव व धर्माधिकारी से मिलकर खादी भण्डार देखा।
मोहनलालजी व लड़की रत्न, उसकी दोनों बहनों व भुवा से मिलना।
दयाशंकर अग्रवाल से सगाई के बारे की बातचीत।
डा० दिनशा मेहता से बातचीत।
३-२५ की गाड़ी से वर्धा के लिए रवाना। रास्ते में भाई परमानन्द से मिलना। बात।
श्री केशवदेवजी से कल्याण तक बहुत सी बातें। केशव पोद्दार से बातें।

वर्धा, १५-२-३७

नागपुर मेल से वर्धा पहुंचे; स्टेशन पर ही श्री आनन्दशंकर ध्रुव से मिलना हुआ, माणकजी कैप्टन से भी।
किशोरलाल भाई से प्रत्येक तालुका कार्यकर्ता योजना के बारे में बातचीत।
मेटरनिटी होम खुला। वहां गये। वहां से मंदिर, दुकान, महिला आश्रम। बहनों से थोड़ी बातें।
महानन्द स्वामी के कीर्तन में गये।

वर्धा-नागपुर, १६-२-३७

जल्दी तैयार होकर भाड़े की मोटर से नागपुर—जानकी, गोपालदास राठी, दामोदर साथ में।
नागपुर में कई पोलिंग स्टेशन, कोई १७-१८ जगह गये। खातरी हो गई। डा० खरे व अनुसूया बाई आवेंगे।
पोद्दारों के यहां बैठने—जीवराजजी का स्वर्गवास हो गया था। देर तक बातचीत।
वर्धा वापस। मंदिर में गाडगे महाराज की पंगत देखी। वर्षा आई। इससे लोगों को कष्ट हुआ।
रात गाडगे महाराज का कीर्तन पौन घंटे सुना। १।। बजे बंद हुआ।

वर्धा-सेगांव, १७-२-३७

सोनीबाई बजाज से आपरेशन आदि की थोड़ी बातें। अस्पताल में खोली नं० ९ में व्यवस्था।
श्री गाडगे (गुदड़ी बुवा-पंढरपुर वाले) से मिलना। बातचीत।

सेगांव जाकर वापू से नालवाड़ी तक मोटर में बातचीत। कार्यकर्ता योजना; जाजूजी सम्मेलन के सभापति हुए। नालवाड़ी में चर्मालय व खेत देखे।
विनोवा से बहुत देर तक बातचीत—मदालसा की सगाई, कार्यकर्ता योजना, मानसिक स्थिति आदि।
खूब जोर की वर्षा, पुखराज कोचर मिले; वह चुने गये—पांच हजार चार सौ से ज्यादा से।
जाजूजी से बातचीत, ग्राम उद्योग संघ के बारे में।
जाजूजी के साथ अस्पताल जाकर आये।
रात को वर्षा, विजली खूब चमकी।

वर्धा, १८-२-३७

नालवाड़ी में पू० विनोवा से चि० मदालसा की सगाई, सम्वन्ध व मानसिक स्थिति कमजोर आदि पर विचार-विनिमय।
काका साहव से मद्रास हिन्दी सम्मेलन के सभापति के बारे में अखबारों में जो आया वह उनसे सुना-समझा। सभापति वनने में मेरी जो अड़चनें हैं वह मैंने उन्हें कहीं।
पू० वापूजी से सम्मेलन सभापति, कांग्रेस सभापति, जाजूजी, ग्राम उद्योग कार्य, मेरी मानसिक स्थिति व कमजोरी आदि के बारे में बातें। दुबारा फिर मिलकर खुलासेवार बातें करना। प्रभावती को रास्ते में कष्ट हुआ उस बारे में भी कहा।
महिला आश्रम में नीलम्मा बहन से थोड़ी बातें। हरिभाऊजी, भागीरथी वहन व चि० शान्ता से आश्रम आदि बातें।
वापू से जो बातें हुईं वे सब जाजूजी से कहीं।
चोरघड़े व उनकी डा० पत्नी से बातें।

१९-२-३७

राजेन्द्रबावू व मथुराबावू ग्रान्ड ट्रंक से आये। बातें।
सोनीवाई बजाज (गोपीजी की स्त्री) के ट्यूमर (पेट के गोले) का ऑपरेशन हुआ। डेढ़ घंटे से ज्यादा लगा। साढ़े तीन रत्तल का गोला पेट में से निकला। गर्भाशय खराब हो गया था। उसका वहुत-सा भाग भी निकालना पड़ा।

श्री केदार नौ सौ मत से चुने गये। श्री नायडू हार गये। श्री खुशालचन्द भी २७०० ज्यादा मतों से चुने गये। और भी सन्तोषजनक खबरें मिलीं। केदार वगैरा के साथ में भोजन।

सेगांव राजेन्द्रबाबू के साथ जाकर बापू व राजकुमारीजी से मामूली बातें।

बालाजी के मंदिर के सामने जाहिर सभा हुई। कांग्रेस की विजय पर श्री केदार ठीक बोले। मैंने भी सभापति के रूप में बातों का खुलासा किया।

२०-२-३७

महिला आश्रम में आशा बहन से खुलासेवार बातचीत। उन्हें सन्तोष। आर्यनायकम्, श्रीमन् व गंगाबिसन के साथ शिक्षा मण्डल सभा का काम देर तक होता रहा।

पत्र-व्यवहार—चि० कमल को भारत आने के बारे में लिखा।

सतीश के बारे का पत्र पढ़कर बुरा लगा। आखिर १२० पौंड भेजने का निश्चय करना पड़ा। कमल के आग्रह के कारण।

पुलगांव व आर्वी जाने की तैयारी थी, पर वर्षा का ज़ोर का रंग होने के कारण व सुबह सेगांव जाना जरूरी होने के कारण, जाना स्थगित रखा।

अस्पताल गया। सोनी बाई को कष्ट ज्यादा था। आज दूसरा रोज है।

राजेन्द्रबाबू से थोड़ी बातें।

रात को जर्मन बहन से बातें। वह आज गई।

२१-२-३७

बापू के पास सेगांव गया।

ग्राम उद्योग संघ के विद्यार्थियों के सामने बापू का प्रवचन सुना। बाद में बापू के साथ घूमते समय अपनी मनःस्थिति, मन की कमजोरी, ब्रह्मचर्य आदि सम्बन्ध में बात साफ तौर से कही। बापू ने स्थिति समझी व उपाय बतलाया और कहा कि फिर बातें होंगी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति, प्रदेश कांग्रेस के सभापति पद से अलग हो जाने के बारे में भी बातें हुईं। बापू ने पोलक को जो खत दिया वह समझाया। बराबर समझ में नहीं आया।

वर्धा में जुगलकिशोरज़ी बिड़ला, श्रीरामजी मास्टर, धर्मानन्द कौसम्बी,

फाटक आदि आये।
शाम को महिला आश्रम की प्रार्थना में जुगुल किशोरजी के साथ गये। प्रार्थना के वाद उन्होंने धुन के वारे में सुन्दर प्रवचन किया। उन्हें मंदिर दिखलाया।

२२-२-३७

सरदार, मणी वम्वई से आये।
जुगुल किशोर विड़ला को पवनार का स्थान व मारवाड़ी विद्यालय दिखलाया। उन्हें पवनार का स्थान पसंद आया।
दादा धर्माधिकारी, चोरघड़े, मिसेस वनिता चोरघड़े से बातें।
जुगुलकिशोरजी को महिला आश्रम दिखलाया।
घनश्यामदास विड़ला शाम को मेल से आये।
जुगुलकिशोरजी रात को एक्सप्रेस से गये।
नागपुर से डा० खरे मिलने आये। डेली न्यूज के वारे में वातें।
चीन्नया, लाल्या, कच्या से वातें।

२३-२-३७

महिला आश्रम की व्यवस्था; आशा देवी से बातें।
सरदार, राजेन्द्र वावू, घनश्यामदास, खान साहव व खुर्शेद वहन से बातें।
सुव्रता वहन का वम्वई बुलाने का आग्रह का पत्र। उसे व रामनिवास को जवाव भेजे, थोड़ी चिन्ता।
ड० खरे व वेंकटराव आये। देर तक डेली न्यूज के वारे में वातें कीं। मैंने उन्हें डा० खरे को तफसील देने के लिए नोट करवाया। पूरी विगत मिलने पर विचार हो सकेगा।
भोजन के समय खां साहव व खुर्शेद वहन तथा मथुरावावू से चर्चा; मिल मालिक व मजदूर आदि के सम्वन्ध में।
सरदार, जाजूजी, घनश्यामदासजी विड़ला से 'डेली न्यूज-कोष' के बारे में विचार-विनिमय। सरदार व घनश्यामदास को कहना पड़ा कि पत्र हाथ में लेना चाहिए।
मां का स्वास्थ्य ठीक नहीं। मन में चिन्ता व दुःख।

२४-२-३७

तीन बजे से उठकर मां के पास बैठना। प्रार्थना व पत्र-व्यवहार।

महिला आश्रम का व महिला-मण्डल का उत्सव आज सुबह ७॥ बजे प्रारंभ हुआ। श्री धोत्रे ने शुरू से आज तक की रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। नाना आठवले ने आश्रम का परिचय करवाया। श्री राजकुमारी अमृत कुंवर व राजेन्द्रवाबू व खान साहव के भाषण सुन्दर व मनन करने योग्य हुए। सुवह ७॥ से १२ व शाम को २॥ से ५॥ तक उत्सव का काम हुआ। सरदार, घनश्यामदासजी विड़ला आदि से कौंसिल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन आदि की चर्चा।

डा० खरे करीब उन्नीस हजार ज्यादा मत से डा० परांजपे के विरुद्ध चुनकर आये। श्री गुप्ते (पूनावाले) श्री भोपटकर के विरुद्ध चार हजार मत से चुनकर आये। सुख मिला।

२५-२-३७

महिलाश्रम, उत्सव—७॥ से १०॥, श्री खुर्शेद वहन ने सभानेत्री का काम किया। स्त्री-शिक्षा पर दादा धर्माधिकारी, काका साहव, आर्यनायकम् कुमारप्पा, मृदुला वहन अम्बालाल, आशा वहन आदि ने अपने विचार कहे।

कलकत्ता से—रामदेवजी चोखानी वगैरा बापूजी से मिलने आये। सेगांव जाकर बातें करके आये।

रात को सरदार, राजेन्द्रवाबू, घनश्यामदास सर्व साधारण बातचीत।

२६-२-३७

सस्ता साहित्य मंडल की सभा का काम हुआ—सुबह व दोपहर को।

महिला आश्रम का ८ से १०। तक। विचार-विनिमय। जाजूजी, काका, किशोरलाल भाई, आशा बहन, कमला, वासन्ती, पद्मा, सरोजनी नायडू, नाना आठवले, खुर्शेद बहन आदि ने व मैंने अपने विचार शिक्षण आदि के बारे में कहे।

सरोजनी नायडू, राजाजी सुबह आये। घनश्यामदास बिड़ला व ठक्कर बापा शाम को गये। पं० जवाहरलाल नेहरू, भूलाभाई, गोविंद वल्लभ पंत, डा० खान साहव, सरदार मंगलसिंह वगैरा शाम को आये। जवाहरलाल

बापू से मिलने सेगांव गये।
महिला आश्रम उत्सव रात को ७॥ से ११॥। तक। स्वागत गीत। 'वरगद' हिन्दी नाटक। सुन्दर दृश्य व एक्टिंग। भारत वन्दन (बंगला), राष्ट्रीय-गीत (कन्नड व तामिल), दुखी बुढ़िया (हिन्दी), कन्याओं की कवायद, विद्यारंभ नाटिका (कन्नड), कन्याओं का रास, अंग्रेजी नाटिका, वृन्दवादन, बहुओं का षड्यन्त्र (नाटक) सितार, गोप-रास आदि।

२७-२-३७

खुर्शेद बहन से कमला मेमोरियल की बातें।
वर्किंग कमेटी सुबह ९ से ११ तक, दोपहर को १॥ से ५ तक व रात ८ से १०। तक हुई। पूज्य बापूजी सुबह ९ से शाम को पांच तक रहे। वर्किंग कमेटी का काम ठीक हुआ।
शाम को महिला आश्रम में सब नेताओं का भोजन हुआ। व्यवस्था ठीक थी। वर्किंग कमेटी में श्री शरद बाबू को छोड़कर सब हाजिर थे, चौदह मेम्बर व चार निमंत्रित सज्जन।
मां का स्वास्थ्य खराब रहा। रात को जागना पड़ा।

२८-२-३७

अस्पताल जाकर भणसाली, सोनीबाई बजाज को देखा।
वर्किंग कमेटी सुबह ८॥ से ११॥ तक, दोपहर को १ से ५॥ तक व रात ६॥ से ७॥ हुई।
पू० बापूजी सुबह ८॥ से शाम के ५। तक वर्किंग कमेटी में रहे। उन्होंने अपनी राय व शर्तें ऑफिस लेने के बारे में कही। ठीक विचार-विनिमय हुआ।
मां का स्वास्थ्य आज थोड़ा ठीक रहा।

१-३-३७

डाक्टर खान, अब्दुल गफ्फ़ार खान, पंतजी, सरदार मंगलसिंह देहली गये। पहुंचाने स्टेशन गया।
वर्किंग कमेटी ९ से ११ तक हुई। साप्ताहिक वर्तमान पत्र निकालने का एक प्रकार से निश्चय हुआ। सन्तोष मिला।
गांधी सेवा संघ की सभा २ से ४। तक हुई।

राइटर का टेलीफोन आया—जवाहरलालजी की गिरफ्तारी के बारे में पूछ-ताछ। थोड़ा विचार व मन में चिन्ता हुई।
पू० बापूजी, मौलाना आजाद, जवाहरलाल, सरदार व मैं मिलकर करीब शाम को ६ से ८ तक बातचीत, सफाई, खुलासा।
जवाहरलाल, कृपलानी, नरेन्द्रदेव रात की गाड़ी से गये। शंकरराव देव, दास्ताने, पटवर्द्धन भी गये।

वर्धा, २-३-३७

मौलाना अबुल कलाम आजाद, काका साहब कलकत्ता गये। स्टेशन पर मिले।
सरदार पटेल व गंगाधर राव से बातचीत।
गंगाधर राव के हाथ से नवभारत विद्यालय की नई इमारत के पाये की क्रिया हुई—सभा।
टेनरी—नालवाड़ी का समारंभ बालुंजकर की रिपोर्ट मननीय थी। बापूजी ने भी कहा—गौरक्षा व हरिजन सेवा का टेनरी से सम्बन्ध।
सेगांव—बापू के साथ जाना, वहीं भोजन, घूमना, प्रार्थना, रामायण।
वर्धा—खरांगणा के असामियों के निकाल की बातें—बैंक की बातें।

वर्धा-नागपुर, वर्धा, ३-३-३७

फाटक व पंजाबी युवक से बातें। महिला आश्रम जाकर मीरा, हरिभाऊजी आदि को देखा।
लक्ष्मीनारायण मंदिर की महत्व की सभा हुई। नासिक मराठा धर्मशाला के गाडगे उर्फ गुदड़ी बुवा के बारे में ठहराव। किसान जिला संगठन के कार्य के बारे में विचार-विनिमय। वर्धा बैंक के बारे में पूनमचन्द से चर्चा। मगनवाड़ी का म्यूजियम-माडल देखा। म्हातरे से बातें। इजिप्शियन डेपुटेशन से मिलने डाक बंगले गये। वह अपने घर भोजन करने आये। तैयारी की।
आशा बहन से महिला आश्रम के बारे में बातचीत।
टागोर की पार्टी का 'चित्रांगदा' देखने नौ बजे नागपुर गये। रात को २॥ बजे वापस आये।

४-३-३७

गोपवन्धु चौधरी से उड़ीसा के काम के वारे में वातचीत।

महिला आश्रम की इमारत का निश्चय। श्री म्हाला, धामाजी, राधाकृष्ण व आश्रम वालों के साथ निश्चय।

महिला-मण्डल व महिला-आश्रम की सभायें ११।। वजे हुईं।

मथुरादास मोहता व पुखराज कोचर से वर्धा में वैंक खोलने का निश्चय।

पूनमचन्द, गंगाविसन, चिरंजीलाल आदि से बातें। अस्पताल जाकर सोनीवाई, सीताराम चौवे व भणसाली से मिलना।

१० वजे की एक्प्रेस से नासिक-वम्वई रवाना।

मुर्तिजापुर में व्रिजलाल वियाणी आये। अकोला तक वातें। नींद खूव आती थी। भीड़ हुई। आकोला में सेगांव से दो टिकिट इण्टर की करवाईं। नासिक तक के ९।। रु० लगे।

नासिक-वम्वई, ५-३-३७

जलगांव के वाद आंख खुली। निवृत्त हुए।

नासिक में सीताराम शास्त्री व देशपांडे स्टेशन आये। काका साहव गद्रे के घर डा० मुले (पुलगांव वाले) भागप्पा, पोतनीश आदि मिले। हनुमानगढ़ी में मराठा धर्मशाला देखी। गोदडेबुवा (गाडगे बुवा) आये। महानन्द स्वामी वम्बई से आये। धर्मशाला उत्तम मालूम हुई। भली प्रकार देखी। हरिजन छात्रालय देखा।

इलाहावाद एक्सप्रेस से बम्वई रवाना। फाटक वकील, महानन्द स्वामी, वातें। भीड़ ज्यादा थी।

दादर उतरे। केशवदेवजी, पन्ना, केशर, कमला से मिले।

जुहू में श्रीकृष्ण के साथ सरदार से मिले।

जुहू-वम्बई, ६-३-३७

अकेले वरसोवा तक गये।

वम्वई में सुव्रता वहन से मिलना। उसका घवराना आदि देखकर उसे आश्वासन व हिम्मत दी। प्रयत्न करने को कहा। विड़लों के घर भोजन। वृजमोहन व उनकी स्त्री रुकमणीवाई आज यूरोप रवाना हुए। उन्हें स्टीमर पर मिलना—वातें।

डा० मुडगांवकर व कांता मुडगांवकर से मिलना। बातचीत। कान्ता को स्थिति पूरी समझाई। कल फिर मिलने का निश्चय।
सुव्रतावाई, रामनिवास, कमला, राधाकृष्ण, कमल व नाथजी से बातचीत व विचार-विनिमय। मदन को तार भिजवाया।
जुहू में श्रीकृष्ण, केशव, नर्मदा से वातचीत घूमते समय देर तक।

७-३-३७

सुव्रता वहन से व रामनिवास से स्पष्ट खुलासेवार बातचीत। कान्ता मुडगांवकर से दो घंटा स्पष्ट वातें। फिर सुव्रता व रामनिवास से वातें।
नरीमान—ब्रेलवी, गोपी वहन, खुर्शेद वहन, जीवनलाल भाई से वातें।
जुहू में जीवनलाल भाई, केशवदेवजी आदि से बातें। मस्तक भारी था। आविदअली, मूलजी, उमा, नर्मदा से थोड़ी देर पत्ते खेले।

८-३-३७

रामनारायण चौधरी, अंजना, प्रताप, जयनारायण व्यास, ब्रिजमोहन, सरस्वती मिलने आये—वातें।
सुव्रता वहन, रामनिवास, मदन, वावू से वातें।
मदन के साथ कान्ता मुडगांवकर के यहां; उसे लेकर जुहू। दोनों से करीव चार घंटे तक, उनके निश्चय के कारण जो परिस्थिति पैदा होवेगी, उसका चित्र पूरी तौर से खींचकर समझाया।
रामनिवास, मदन व कान्ता के साथ फिर डेढ़-दो घंटे तक विचार-विनिमय।
एम० एन० राय व मणी वहन कारा आये। उनकी व्यवस्था का विचार।

जुहू-बम्बई, ९-३-३७

मथुरादास भाई, पेरीन वेन, गोषीबहन से बातचीत। सुव्रता वहन को समझाना।
ऑफिस में पत्र-व्यवहार, वातचीत।

१०-३-३७

केशवदेवजी आदि से बातें।
वम्वई में सुव्रता वहन, रामनिवास, नाथजी, मदन, राधाकृष्ण, कमला से बातें, विचार-विनिमय।
खेर से व स्वामी से वातचीत। लोहे की कम्पनी व बच्छराज कम्पनी की

सभा में।
डा० डोगरा की मृत्यु, उनके लड़के से मिलना।

माटुंगा-बम्बई, ११-३-३७

सरदार-वल्लभ भाई से नरीमान, ब्रेलवी, खरे आदि के बारे में मेरे विचार स्पष्ट तौर से कहे। उन्हें चीफ मिनिस्टर होने के लिए कहा।
सरदार को सुव्रता बहन व मदन की हालत कही। उन्होंने मेरी राय व योजना ही पसन्द की।
सुव्रता बहन व मदन से बातचीत। उसके दुःख व चिन्ता से मन को दुःख व विचार रहा। दूसरा रास्ता समझ में नहीं आया। देर तक समझाना व फैसला करना।
आर्यनायकम, श्रीमन् मिले। रामेश्वरदासजी बिड़ला से बातचीत।
नागपुर मेल से तीसरे वर्ग से वर्धा रवाना।

रेल में—वर्धा, १२-३-३७

हिन्दी सम्मेलन के भाषण वगैरा पढ़े। वर्धा पहुंचने पर अस्पताल होते हुए बंगले। श्री राजगोपालाचारी भी आज मद्रास से आये। काका साहब कालेलकर से सभापति होने के बारे में बातचीत। उन्हें व टण्डनजी के नाम पत्र लिखकर दिया। मेरा नाम वापस लेने का अधिकार दिया।
बापू सेठ रुकमानन्द (वर्धा वाले), गौरीलालजी, बाबा साहब (बांढोणे वाले) रामदेवजी आदि आये।
मोती बहन व आशा बहन से बातचीत। राधाकृष्ण से महिला आश्रम इमारतों की चर्चा।
राजाजी व किशोरलाल भाई आदि से बातें।
बम्बई की स्थिति के बारे में श्री जानकी से बातचीत।

१३-३-३७

महिला आश्रम की इमारत का निश्चय करने में करीब अढ़ाई घंटे खर्च हुए। जाजूजी, राधाकृष्ण, धामा, आशा बहन, भागीरथी बहन, सुन्दरलाल मिश्र आदि उपस्थित थे।
बम्बई से खेती काम के लिए जीवणलाल भाई, जाबरअली, रामजी भाई, पूनमचन्द आये। सेगांव, जामठा वगैरा देखने गये।

भारतन कुमारप्पा से उनके मकान के बारे में विचार-विनिमय। अपनी निजी जगह में बनाने का निश्चय करें तो अपन बना दें, एक हजार या ज्यादा से ज्यादा पन्द्रह सौ में।

वर्धा से दिल्ली रवाना, १४-३-३७

ग्रान्ड ट्रंक से बापू व राजाजी के साथ देहली रवाना। रास्ते में हिन्दी सम्मेलन के बारे में विचार-विनिमय। बापू व राजाजी से भाषण के बारे में परामर्श। बापू ने १२। बजे मौन लिया।

दिल्ली, १५-३-३७

राजाजी के साथ काफी ली व बातें।

निजामुद्दीन स्टेशन से उतरकर हरिजन कॉलोनी।

वर्किंग कमेटी सुबह ९-११।।।, दोपहर को १।। से ५।।, रात को ८ से १० तक हुई।

१६-३-३७

घूमते समय सुशीला नायर साथ में।

बापू से बातें। जवाहरलाल को बापू का दु:ख कहा।

वर्किंग कमेटी ९ से १२, शाम को २ से ६ तक हुई। आखिर में मुख्य ठहराव। आफिस लेने का ठीक तौर से मंजूर हुआ।

श्री टण्डनजी से दोपहर को सम्मेलन की चर्चा।

स्टेशन—चि० सावित्री व लक्ष्मण प्रसादजी पोद्दार आये।

बिड़ला हाउस में भोजन। बातें, वहीं पर सोने का निश्चय।

१७-३-३७

सावित्री, लक्ष्मणप्रसादजी के साथ ८।। बजे हरिजन कालोनी पहुंचे। उन्हें बापू व अन्य लोगों से मिलाया।

वर्किंग कमेटी ९ से ११ तक हुई। साम्यवादी मित्रों की दिक्कत का वर्णन, विचार-विनिमय।

आल इंडिया कांग्रेस कमेटी ११। से ८ तक हुई। मुख्य ठहराव, आफिस लेने का स्वीकार करने पर चर्चा कल पर स्थगित रही।

पूज्य मालवीयजी से बातें।

शाम प्रार्थना में सुचिता ने भजन, 'अन्तर मम विकसित करो, अन्तरतर

हे' सुन्दर गाया।
बिड़ला हाउस में सर पुरुषोत्तम, घनश्यामदासजी, लक्ष्मण प्रसादजी, सावित्री से बातें।

१८-३-३७

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नियमावली पढ़ी।
वर्किंग कमेटी ६ से १२ तक, गंभीर चर्चा। जवाहरलाल की मानसिक स्थिति के कारण समाधान।
आल इंडिया कमेटी की सभा २ से रात ६॥ तक हुई। मुख्य ठहराव आफिस लेने के बारे का स्वीकार हुआ। श्री जयप्रकाश की उपसूचना को, जिसके पक्ष में जोरों से पू० मालवीयजी, टण्डनजी, स्वरूप बहन, जयप्रकाश, एम० एन० राय के भाषण हुए थे, ७८ व उसके विरुद्ध १३५ मत मिले। मूल ठहराव के पक्ष में (१२७) व विरुद्ध में ७० याने ५७ के बहुमत से मुख्य ठहराव पास हुआ।
प्रस्ताव के पक्ष में सरदार का भाषण सुन्दर हुआ। वैसे भाषा की दृष्टि से थोड़े सुधार की आवश्यकता थी।
सावित्री से कमल को पत्र लिखवाया। मैंने भी लिखा। मृदुला साराभाई से बातें।

१९-३-३७

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भाषण की तैयारी।
हरिजन कालोनी में जलियां वाला मेमोरियल की सभा बापूजी (महात्मा-जी) के सभापतित्व में हुई। दो घंटे से ज्यादा सभा का काम चला। इस काम में नया जीवन डालने पर विचार-विनिमय। ट्रस्टी मंडल में शामिल होना पड़ा।
सावित्री व लक्ष्मणप्रसादजी से बातचीत की।
राजेन्द्रबाबू व रामकिसन डालमियां मिलने आये। खानगी व अन्य बातें।
पार्वती (डिडवानियां) के घर लक्ष्मणप्रसादजी, सावित्री के साथ गये।
कनवेन्शन की सभा। जवाहरलाल का भाषण पौने दो घंटे से ज्यादा हुआ और उसमें जहर तथा क्रोध था। भाषण अच्छा नहीं हुआ।
बापू से पौने दो घंटे तक विचार-विनिमय।

२०-३-३७

हिं० सा० सम्मेलन का भाषण छापने दिया।

राजनैतिक वन्दी संवंधी सभा में गये। एक घंटा करीव वहां रहे। शरद वोस सभापति थे।

वर्किंग कमेटी ११ से १ व रात ८ से ११।। तक हुई। पं० जवाहरलाल ने अपना खुलासा दिया व भूल की माफी अन्तःकरण से स्वीकार की। उसका मन पर असर पड़ा व उनके प्रति आदर व भक्ति परिमाण में बढ़ी।

जवाहरलाल से वर्किंग कमेटी के पहले व रात ११।। से १२ दिल खोलकर बातें हुईं। क्रोध प्रेम में परिवर्तन हुआ, आदर बढ़ा।

कन्वेन्शन में तीन-चार घंटे वैठे। कई लोगों से बातचीत।

चि० कमल का पत्र आया। लक्ष्मण प्रसादजी व सावित्री से थोड़ी बातें।

२१-३-३७

जलियांवाला कमेटी के वारे में श्री लाला गिरधारी लाल से बातचीत। योजना पर विचार।

वर्किंग कमेटी ८।। से ११, दोपहर को २ से ३।। तक रही। सरदार से थोड़ा मतभेद हुआ। उसका दुःख रहा, परन्तु उपाय नहीं था।

डा० अन्सारी के वंगले पार्टी जौहरा व शौकत ने जवाहरलाल को दी थी, वहां गये। चि० सावित्री, लक्ष्मणप्रसादजी भी साथ थे। कई लोगों से मिलना हुआ।

५-३५ वजे की ग्रान्ड ट्रंक से सेकंड क्लास में सावित्री व लक्ष्मण प्रसादजी के साथ वर्धा रवाना।

वर्धा २२-३-३७

नागपुर में अवारी, पूनमचन्दजी आदि मिले।

सावित्री-लक्ष्मणप्रसादजी से बातें। जगन्नाथ महोदय से भी बातें।

वल्लभदास कन्ट्राक्टर से बातचीत। केदार वकील से बातें।

श्री लक्ष्मण प्रसादजी के लड़के जगदीश को देहरादून में मम्स हो गये। चिन्ता। डा० सहानी को बुलाकर समझा। तार आदि दिये।

२३-३-३७

किशोरीलाल भाई, शंकरलाल बैंकर, कुमारप्पा, जेराजाणी, मुन्नाजी,

कृष्णदास आदि से बातें।

डा० सहानी, उनकी पत्नी, बच्चे चि० सावित्री को देखने व उसके साथ भोजन करने आये। कुटुम्ब की स्त्रियां आईं, कुछ गीत वगैरा भी। थोड़ी देर ब्रिज वगैरा, विनोद।

चर्खा संघ की सभा का कार्य ३ से ५। बजे तक।

शाम की गाड़ी से पू० बापूजी, सरदार, भूलाभाई आदि आये। बापूजी की अध्यक्षता में चर्खा-संघ की सभा का कार्य थोड़ा हुआ।

रात के भोजन के समय सरदार भूलाभाई, आदि तथा बाद में लक्ष्मणप्रसादजी व सावित्री से थोड़ी बातें।

२४-३-३७

लक्ष्मण प्रसादजी व सावित्री को लेकर सेगांव गये। सब दिखाया। चर्खा संघ की सभा का कार्य। मारवाड़ी शिक्षा मण्डल, मास्टरों की सभा। खुलासा, स्पष्ट स्थिति समझाई।

सेगांव जाते व वहां घूमते हुए बापू से बातचीत।

सरदार व खेर से गाड़ी लेट होने के कारण, स्टेशन पर साफ बातें।

वर्धा-नागपुर, २५-३-३७

श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार व चि० सावित्री आज कलकत्ता गये। नागपुर तक उनके साथ ठीक बातें। जानकी ने उन्हें जेवर (गहना) कमला नेहरू वाली पन्ने की चूड़ियां, मेरे लौंग, पू० बच्छराजजी की पन्ने की अंगूठी, जानकी के अपने हीरे के सुरलिये वगैरा दिये।

नागपुर में डा० खरे से बातचीत। पूनमचन्द रांका व असेम्बली। उनसे बातें। उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा पर कायम रहने का निश्चय कहा। अन्य बातें। अप्पाजी सबाने व वेंकटराव गोड़े से डि० कां० के बारे में बातचीत। पुखराज से भी हिंगणघाट स्टेशन पर बातें। उसने स्वीकार किया।

ग्राम उद्योग संघ ट्रस्ट की सभा हुई।

ग्रान्ड ट्रंक से मद्रास रवाना।

रेल-मद्रास, २६-३-३७

विजयवाड़ा में इडली वगैरा का नाश्ता।

बापू से भाषण की थोड़ी चर्चा, अंग्रेजी में थोड़ा सुधार।

मद्रास सेन्ट्रल स्टेशन पर ठीक लोग जमा थे, स्वागत। थोड़ी दूर तक प्रोसेशन में, पू० बा० व लेडी रमन भी थे।
हिन्दी प्रचार कालोनी पहुंचे।
दीक्षांत समारंभ। बापू का भाषण उत्तम हुआ। टण्डनजी का भाषण भी मननीय था, पर थोड़ा लम्बा हुआ।
स्वागत समिति की सभा का कार्य ११॥ तक रात को हुआ।

मद्रास, २७-३-३७

प्रदर्शनी का उद्‌घाटन लीलावती मुंशी ने कियां। भाषण आदि हुए।
इतिहास परिषद के अध्यक्ष जयचन्दजी का भाषण।
भारतीय परिषद में बाबूजी व काका का भाषण।
साहित्य-परिषद का कार्य १२ बजे शुरू होकर तीन बजे तक चला।

२८-३-३७

विज्ञान सभा का कार्य। श्री रामनारायण मिश्र ने भूगोल पर ठीक विचार प्रगट किये; अच्छा लगा।
प्रचारकों की सभा, सभापति बनना पड़ा।
विषय निर्वाचिनी सभा का कार्य ११ वजे तक हुआ।
दोपहर को हिन्दी साहित्य सम्मेलन का कार्य। बापू का राजाजी वगैरा दक्षिण प्रान्त के मित्रों से खूब विचार-विनिमय। बाद में राजाजी ने कांग्रेस-संबंधी ठहराव रखा। टी० प्रकाशम, साम्ब मूर्ति, कालेश्वरराव, याकुब हुसेन ने ठहराव पर अपने विचार प्रगट किये। ठीक वातावरण पैदा हुआ।
भारतीय परिषद में बापूजी ने प्रस्ताव का परिचय दिया—हिन्दी हिन्दुस्थानी के भेद पर खुलासा स्पष्ट किया। बाद में सभापति के नाते काम करना पड़ा।
बापू ने हरिहर शर्मा (अन्ना) की भूल बताई; दुःख हुआ। रात को प्रचारक सभा का कार्य १२ बजे तक।

२९-३-३७

प्रार्थना, गीताई। काका साहब व हरिहर शर्मा की बातें। बापू ने कल कही थीं। दुःख व विचार। सत्यनारायणजी को अब मद्रास रखना पड़ेगा।

चि० मित्तू (आशावहन की लड़की) का टांसिल का आपरेशन कराया।
दर्शन शास्त्र-साहित्य की सभा (परिषद) हुई। श्री टण्डनजी का भाषण सुन्दर हुआ। काका, दादा भी बोले।
विषय निर्वाचिनी व प्रतिनिधि सभा के कार्य के बाद सम्मेलन का कार्य हुआ। ठीक प्रकार से कार्य संपन्न हुआ।
रामनाथ गोयनका ने बड़ी पार्टी दी।
चि० मित्तू को देखा। रात को कवि सम्मेलन हुआ।

३०-३-३७

श्री टण्डनजी व पू० बापूजी से बातें। वे आज ग्रान्ड ट्रंक से वर्धा के लिए रवाना हुए।
आशा देवी व मित्तू से मिलना। हिन्दी प्रचार की सभा का कार्य हुआ।
कांजीवरम, शिवकांची, विष्णु कांची व महामलेश्वर देखने गये, तीन मोटरें साथ थीं। शाम को ६॥ बजे वापस।
जाहिर सभा मान पत्र मिला। भाषण, हिन्दी प्रचार व कांग्रेस सन्देश। श्री राजाजी सभापति थे। श्री टी० प्रकाशम, साम्वमूर्ति, काका साहब व कमलाबाई किवे बोले।

३१-३-३७

काकासाहेब, श्री गणेश व रामनाथ गोयनका से बातें।
अस्पताल में आशावहन व चि० मित्तू को देखा। व्यवस्था समझी। ७-४५ की ग्रान्ड ट्रंक से वर्धा रवाना, थर्ड क्लास में। रास्ते में जानकी से ठीक बातचीत, विचार-विनिमय, भोजन, आराम।
शाम को शांति व मन्नू ने भजन गाये।
रात को गाड़ी में भीड़ ज्यादा थी तो भी सोने को प्रायः सभी को मिला।

वर्धा, १-४-३७

मोहन बजाज (चान्दावाले) से बातचीत।
वर्धा पहुंचे। गाड़ी लेट थी। पैदल बंगले।
नन्दलाल बोस व उनके विद्यार्थी मिले। मंदिर देखा। विचार किया, चित्र-कला-प्रदर्शनी के सम्बन्ध का।
आज गांव में ठीक हड़ताल हुई बतलाई। सभा भी गांधी चौक में ६ बजे

ठीक हुई। सभापति की हैसियत से आज की सभा के और कारण कांस्टीट्यूशन—विधान का खुलासा किया।

२-४-३७

महिला आश्रम विद्यालय के प्लान पर देर तक विचार-विनिमय। आखिर धामोजी व राधाकृष्ण के सुपुर्द किया।

बापूजी से मिलने सेगांव। खान साहब को वहां छोड़ा। नन्दलाल बोस को वहां से साथ लाये।

महिला आश्रम में भागीरथी बहन, हरिभाऊजी, लक्ष्मी अम्मा से बातें। नन्दलाल बोस, उनके विद्यार्थी, आर्यनायकम आदि के साथ अपने यहां भोजन-बातें। नन्दलाल बोस को पवनार का स्थान व समाधि की जगह दिखायी। बापू ने समाधि के स्थान के बारे में अपनी इच्छा कही।

वर्किंग कमेटी स्थगित होने के कारण आज बम्बई जाना स्थगित रखा। जानकी देवी, श्रीराम, रमाकान्त धुलिया होकर बम्बई जाने के लिए रात को एक्सप्रेस से रवाना।

३-४-३७

चि० मोहन देशपाण्डे, हरिभाऊजी व बैजनाथजी से बातें। श्री नन्दलाल बोस को समाधि व छत्री का स्थान दिखाया, उन्हें पसन्द आया।

बच्छराज की मीटिंग का काम बंगले पर किया।

आर्यनायकम् व श्रीमन् के साथ मारवाड़ी विद्यालय के काम का निर्णय। नाना आठवले के साथ महिला आश्रम के बारे में बातचीत, विचार-विनिमय।

किशोलालभाई, मोती, सरोजनी, शान्ता, जगन्नाथ महोदय आदि मिले। खादी यात्रा स्थगित की गई, इसलिये बम्बई जाने की तैयारी, नागपुर-मेल से बम्बई रवाना। थर्ड में बिलकुल जगह नहीं, इण्टर की टिकिट ली। चि० रामकृष्ण साथ में। चालिसगांव से जानकी देवी साथ हुई। रास्ते में भीड़ थी।

बम्बई, जुहू, ४-४-३७

सुव्रता बाई के यहां गये। चि०मदन मिला। बाद में कमला, रुइया व सुव्रता बाई से मिलना। रामनिवास व श्रीनाथजी से मदन के मामले में बातचीत।

स्थिति समझी।
रामेश्वरजी बिड़ला से बातें। रामेश्वर की माता से बातें।

जुहू-५-४-३७

सरदार का टेलीफोन आया। उन्होंने भोजन को बुलाया।
केशवदेवजी व रामेश्वर से गोला मिल के सम्बन्ध में देर तक बातें।
सरदार, महादेवभाई,मणी, डाह्याभाई के साथ भोजन, बातचीत—राजनैतिक व खानगी।
आफिस करीब ६ घंटे रहे। वहां से दानीजी के यहां होकर सुव्रता बाई के यहां सुव्रता बाई, कमला रुइया, मदन व कान्ता से देर तक अलग-अलग बातें।
कोई दूसरा मार्ग निकालना असम्भव मालूम दिया।

१-४-३७

श्री पेरीनबहन, बहादुरजी बैरिस्टर, काकूभाई, योगी, डाह्याभाई, पालीरामजी, फतेचन्द वगैरा मिलने आये। पालीरामजी से देर तक मदन के बारे में बातचीत, खुलासा, भावी तैयारी वगैरा।
श्रद्धानन्द विधवा आश्रम, माटुंगा तथा रामनारायण रुइया कालेज माटुंगा देखी। सोफिया व सादुल्ला से मिले।

७-४-३७

समुद्र स्नान। नर्मदा व सौभाग्यवती से बातचीत।
केशवदेवजी व रामेश्वर से गोला-मिल की बातचीत।
रामेश्वर से श्रीकृष्ण की सगाई, विवाह, कमला व उसकी बीमारी, रामेश्वर के स्वास्थ्य आदि की देर तक चर्चा।
केशवदेवजी, जीवनलालभाई, आबिदअली के साथ माहिम व अंधेरी की जमीन देखी।

८-४-३७

आबिदअली, जोहरी, मूलजी से हाउसिंग कम्पनी के बारे में बातें
परेल अस्पताल में शंकरराव देव को देखा।
हाउसिंग कम्पनी व बच्छराज फैक्टरीज की सभा।
रामदास गांधी, निर्मला से बातें।

लोहा कम्पनी के बारे में दामोदर को पत्र लिखवाये।

९-४-३७

चि० मदन रुइया व कान्ता मुंडगांवकर मिलने आये। देर तक बातचीत, समझाना, कोई परिणाम की आशा नहीं।
श्री धीरजलाल मोदी व उनके लड़के से प्रेस सम्बन्ध में बातचीत।
चि० रमाकान्त व श्रीराम पोद्दार (हाथरस वाले) से बातचीत।
के० एम० अस्पताल में डा० जीवराज मेहता से शंकरराव देव के बारे में बातें। अभी अधिक समय लगेगा। वहां डा० काजी से परिचय, बातचीत।
मटूभाई जमीयतराम के ऑफिस में श्रीनिवास ट्रस्ट की सभा।
हिन्दुस्तान शुगर मिल की सभा।
चि० रामनिवास, कमला रुइया, सुव्रता व चि० शान्ता से बातचीत। सुव्रता बाई से साफ-साफ कह दिया।
रामेश्वरजी बिड़ला से देर तक शक्कर मिल की बातें। ब्रेलवी से उर्दू पत्र के बारे में बातें।

१०-४-३७

सरदार व मथुरादास आये। उन्हें सब जमीन दिखाई। कन्हैयालाल मुंशी व लीलावती आये।
मधुरी—(चिनुभाई लालभाई त्रीकमलाल, न्यू माणिक चौक मिल अहमदाबाद वाली) व दूसरे लोग, चि० रन्ना वगैरा आये। मधुरी सरल लड़की मालूम हुई।
मिसेस लुकमानी व लतीफ वगैरा आये।
श्री जौहरी से देर तक हाउसिंग कम्पनी के बारे में खूब साफ बातचीत हुई।

११-४-३७

जीवनलाल सम्पत के साथ हिम्मतलाल त्रिवेदी (किलाचन्द) वाले आये।
मथुरादास त्रीकमजी व उनका भानजा आया।
विलेपारले छावणी में वहां के कार्यकर्ताओं के साथ बातचीत।
शाम को माटुंगा। वहां से कांग्रेस हाउस। ग्राम्य उद्योग संस्था की प्रदर्शिनी का उद्घाटन। श्री जे० सी० कुमारप्पा का भाषण हुआ, झीना हाल में।

मुझे सभापति बनना पड़ा। वहां ग्राम उद्योग की चीजों का प्रीतिभोज हुआ।
जुहू में चि० मधुरी व उसकी भाभी शान्ता देवी से बातें। मोतीबहन, भक्तिबहन आदि आये।
रामेश्वरदासजी बिड़ला से बातें।

१२-४-३७

केशवदेवजी व पूनमचन्द बांठिया के साथ तलपट देखा। विचार-विनिमय देर तक होता रहा।
बम्बई आकर सरदार के साथ देसाई डाक्टर के यहां गया। उन्होंने ऊपर के दांत का चौखटा बैठाया।
सुव्रताबहन से बातें। आज उनमें हिम्मत मालूम हुई। वहीं भोजन, पालीरामजी से बातें।
जुहू—हीरालालभाई व शान्ती शाह के साथ आये। उनसे देर तक बात-चीत। आबिदअली, मूलजीभाई रात को देर तक बातें करते रहे।

१३-४-३७

जानकी ने अपनी बनाई हुई कविता सुनाई। ठीक बुद्धि चलाई है। मौका मिलता रहे तो ठीक कविता बना सकेगी।
आबिदअली, मूलजीभाई के साथ विलेपारले। डा० वसन्त, काशी से मिले, शान्ताक्रूज में जो मकान बना है उसे देखा। फिर अंधेरी जमीन देखते हुए बाद में जुहू। आज बम्बई न जाकर जुहू रहे। समुद्र स्नान। राधाकृष्ण रुइया से बातें।
मधुरी—(चिनूभाई लालभाई वाली), शांता आदि आये, देर तक रहे। केशवदेवजी, प्रो० जयचन्दजी, राजा, चि० शान्ता, मनु आदि आये। देर तक बातचीत, समुद्र किनारे घूमना।
बान्द्रा में जाहिर सभा। ब्रेलवी सभापति थे। वहां कांग्रेस की स्थापना।

१४-४-३७

जेठालालभाई, जीवनदास मिलने आये।
सरदार से मिलकर रजिस्ट्रार ऑफिस। रामनारायण रुइया कालेज के दस्तावेज स्टाम्प का झगड़ा, सही नहीं हुई।

रामेश्वरजी बिड़ला से देर तक बातचीत।
ऑफिस में, गोला का पत्र व्यवहार। रामेश्वर वहां जावेगा।
जुहू। हीरालालभाई, शान्तीलाल, मोतीबहन व शान्ता, मधुरी वगैरा मिले। वेंकटलाल से बातें।

जुहू, पूना, १५-४-३७

इन्दौर वाले सर बापना मिले। उनसे देर तक बातचीत। उनका स्वास्थ्य सुधरता देख खुशी हुई।
सालेवट्टी (डॉन पेपर वाले) को अपना साफ अभिप्राय दिया।
आज रामेश्वरजी बिड़ला की दो मोटरें खरीदी, १५०० व ६५० रु० में।
केशर, सुव्रताबाई से मिलकर स्टेशन।
५-३० मेल से हुदली के लिए थर्ड से पूना रवाना। गाड़ी में भीड़ थी।
दामोदर, मीरा, नर्मदा, लीला साथ में।
पूना में बापू के साथ १०॥ बजे तक। बाद में थर्ड में सोना।

हुदली (बेलगांव), १६-४-३७

रात को गाड़ी में भीड़ भी थी व रास्ते में बापूजी की जय होती जाती थी।
स्टेशन उतरे। वहां से पैदल १।-१॥ मील हुदली गांव के पास कैम्प में आये। बापू से बातें।
१२॥ से १ चर्खा-यज्ञ। बापू भी कातने आये थे।
१। से ३ गांधी सेवा संघ की कार्यकारिणी सभा व बाद में कांफ्रेंस।
शाम को प्रार्थना।
कांफ्रेंस ८ से ९ तक ठीक हुई। महत्व की चर्चा, कौंसिल के सम्बन्ध की।

हुदली, १७-४-३७

'हुदली' शहर में ६॥ से ९ तक मजदूरी का काम किया। सुख व आनन्द मिला।
१२॥ से १ चर्खा यज्ञ। गांधी सेवा संघ, कांफ्रेंस १। से ५ बजे तक हुई।
वर्षा आई, भीग गये। टेकड़ी के ऊपर जाकर आये। वहां से सुन्दर दृश्य देखने में आया, नीचे आये।
प्रार्थना के बाद वर्षा जोर से शुरू हुई।
हिन्दी प्रचार की सभा बापूजी के डेरे में हुई।

वर्षा के कारण धूपगांव में प्राय: सबों को भेजना। रात को वहीं सोने का निश्चय।

१८-४-३७

प्रार्थना, गीताई। सुवह जोर की वर्षा में भीग गये। झोंपड़ी चारों तरफ से टपकती थी। पलंग के नीचे लाला सोया। विचित्र व सुन्दर दृश्य, पानी में ही निपटना।
हुवली से कुमारी मंदिर पैदल चलकर आये। रास्ते में पानी, कांटे, दृश्य अच्छा था। वालासाहव खेर, स्वामी आनन्द से वातचीत।
कुमारी मंदिर (गांधी सेवा-संघ-आश्रम) में उतारा। वर्षा तथा भीड़ आदि का दृश्य देखने योग्य था।
कातना। चर्चा। शाम को गांधी सेवा संघ का कार्य। धोत्रे का विरोध। वापू का खुलासा। विचार-विनिमय। सभापति के नाते किशोरलालभाई की कठिनाई।
कौंसिल, आर्यनायकम आदि की चर्चा।

हुदली, कुमारी मंदिर, १९-४-३७

वर्षा। जंगल में निपटना। प्रार्थना, गीताई।
गांधी सेवा संघ की कार्यकारिणी की सभा ७॥ से १० तक हुई। बाद में १२॥-१ चर्खा-यज्ञ।
गांधी सेवा संघ कांफ्रेंस का कार्य होता रहा। रात को फिर प्रार्थना के वाद कार्यकारिणी की सभा करीव १० वजे तक होती रही।
दोपहर को चि० यशोदा मिल गई। थोड़े में उसने अपनी हालत कही।
श्री किशोरलालभाई के मन में सभापति की हैसियत से गांधी सेवा संघ का काम करने में कठिनाई; उस बारे में विचार-विनिमय।

२०-४-३७

गांधी सेवा संघ कांफ्रेंस ७ से ११ तक हुई। उसके पहले बापू के पास थोड़ी देर किशोरलालभाई व बापू की वातचीत सुनी। नाथजी भी वहां थे। आखिर वापू ने किशोरलालभाई को सभापति बने रहने की आज्ञा दी।
वापूजी ने आज सभापति का काम किया।
खूब देर तक समझाते रहे। गो सेवा के महत्व का ठहराव पास हुआ।

अक्षयचन्दजी, माणक, प्रभावती व यशोदा से बातें; यशोदा की हालत दयाजनक। बहुत से कार्यकर्ताओं से बातें।
दादा से मदालसा, नर्मदा, ऊषा, गप्पू आदि की बातें। दामोदर व मीरा से भी।

कुमारी मंदिर, हुदली, हुकेरी रोड, २१-४-३७

कुमारी मंदिर से पैदल हुदली। खादी प्रदर्शनी का उद्घाटन। व्याख्यान। कैम्प में यशोदा, अक्षयचन्दजी से देर तक बातचीत, समझाना। लीलावती वगैरा को।
पैदल, स्टेशन। भीड़ खूब थी।
हुकेरी रोड उतरकर अस्पताल देखा। ठीक मालूम हुआ। मेल से बापू के डब्बे में बैठकर पूना।

पूना-जुहू, २२-४-३७

बापू से प्रयाग का प्रोग्राम जाना।
पूना गाड़ी बदली। दयाशंकर अग्रवाल व पाठक से बातें। रेल में शंकरलाल बैंकर, काकी की बहिन, गोकुलभाई, नर्मदा आदि से बातें।
हीरालाल शाह, शान्ती, माँधीबहन आये।
केशवदेवजी, आबिदअली वगैरा से बातें।

जुहू-बम्बई, २३-४-३७

दयाशंकर (पूना वाले) से उसके सम्बन्ध के बारे में बातचीत।
शंकरलाल बैंकर, गुलजारीलाल नन्दा, खांडूभाई देसाई, प्रबोध, चि० शान्ता, श्रीनिवास, मन्जू, सुशीला, इन्द्रमोहन, बाल आदि आये।
बाल के मामा के विवाह में गये।
विलेपार्ले में वकील के स्कूल का उत्सव, गायन, नृत्य, विनोद आदि ९॥ से ११॥ तक देखना पड़ा।
१२ बजे करीब जुहू पहुंचे।

२४-४-३७

इन्दौर के मुख्य दीवाण सर बापना से देर तक बातचीत, विचार-विनमिय। राजनैतिक, सामाजिक, हिन्दी प्रचार, कार्यकर्ता, दिनेशनन्दिनी, मोहन सिंहजी आदि के बारे में बातें।

बम्बई हिन्दी प्रचार की वार्षिक सभा में गये। नया चुनाव।
श्री सुव्रतावहन से देर तक बातचीत।
केशवदेवजी व जमनादास के साथ देर तक जुहू में बातें।

२५-४-३७

रात को कम सोने को मिला। पड़ोस में अंग्रेज लोग खेल-कूद नाच-तमाशे करते थे। जानकी देवी को भी दुःख रहा। सुबह जल्दी प्रार्थना, गीताई। जानकी से चिंता-ग्रस्त स्थिति में बातचीत।
७-१५ की इलाहाबाद एक्सप्रेस से थर्ड में दादर से रवाना। साथ में चि० रामकृष्ण, मजूमदार, लाला, दयाशंकर (पूनावाला) कल्याण तक व चालिसगांव तक दामोदर साथ था। सुबह दयाशंकर से व नर्मदा से भी बातचीत हुई। दोनों को वर्धा बुलाया।
रेलवे में बाला साहब खेर से ठीक-ठीक बातचीत, विचार-विनिमय होता रहा। रामकृष्ण के साथ शतरंज भी थोड़ी देर खेली।
इटारसी में—बापू, महादेवभाई व प्यारेलाल आये। डब्बे की व्यवस्था पहले से ही कर ली गई थी।

इलाहाबाद, २६-४-३७

बापू को कई पत्र दिखाये। बापू ने भी एन्ड्रूज, सर पी० सी० राय व घनश्यामदास का देहली डेअरी के बारे के पत्र दिखाये।
इलाहाबाद सुबह ९ बजे पहुंचे। बापू चि० इंदिरा व रणजीत के साथ आनन्दभवन। पं० जवाहरलाल, मम्मा, स्वरूप आदि से मिलना।
वर्किंग कमेटी—२।। से ५।। बजे बाद तक। प्रार्थना के बाद फिर रात में ९।। तक होती रही।
जौहरी, गिरधारी आदि से हाउसिंग के बारे में बातें।
राजेन्द्र बाबू से बिजली कारखाना संबंधी चर्चा।

२७-४-३७

'अभ्युदय' को लेख दिया। कई लोग मिलने आये।
वर्किंग कमेटी—सुबह ८ से ११।।, २ से ५ व ५।। से ७। और रात ८ से ९। तक होती रही। कौंसिल-डेडलाक। बटलर, लोथियन आदि के वक्तव्यों पर विचार-विनिमय। प्रान्तों के नेताओं के विचार जाने, खासकर राजाजी

व पंतजी के। बापू के मसौदे पर विचार-विनिमय।
चि० इन्दू व स्वरूप से बातें।
जवाहरलाल व सरदार से आगामी कांग्रेस के बारे में विचार-विनिमय। बाद में जवाहरलाल से रात देर तक बातें। बलदेवजी चौबे व उनके घर के लोग मिले। उड़ीसा के मित्र मिले।

२८-४-३७

बापू के साथ घूमते हुए जवाहरलाल से जो बातें हुईं, वह उन्हें बता दीं। सुभाष की कांग्रेस प्रेसीडेंट होने की बहुत ज्यादा इच्छा होने के कारण और उसे बनाने से उसके स्वास्थ्य पर भी ठीक परिणाम होना संभव होने से उसे ही बनाने का विचार ठहरा।
वर्किंग कमेटी से पहले हिन्दी प्रचार के बारे में बापूजी व टण्डनजी से बातचीत। खासकर भ्रमण के बारे में।
कमला मेमोरियल की मीटिंग का कार्य।
वर्किंग कमेटी सुबह ८। से ११॥। दोपहर को मैं ३॥ से ४॥ तक बैठा। बाद में चि० इन्दू से अलग उसके भावी कार्यक्रम पर चर्चा। उसे समझाया। स्टेशन जाने से पहले चि० कृष्णा से बातें।
५-५० की गाड़ी से वर्धा रवाना।

इटारसी-वर्धा, २९-४-३७

प्रार्थना, गीताई। इटारसी में स्नान व ब्राह्मण के ढाबे में भोजन। बिना घी-शक्कर के पांच आने फी आदमी देना पड़ा।
ग्रान्ड ट्रंक से वर्धा रवाना। गाड़ी में भीड़ खूब थी। रामगोपाल केजड़ीवाल (देहलीवाला) भी उसी गाड़ी में था। उससे बातचीत। चि० रामकृष्ण के साथ शतरंज। बनारसी व शान्ता से बातचीत।
नागपुर से वर्धा तक श्रीमन्नारायण ने मारवाड़ी शिक्षा मण्डल के बारे में बातचीत की। वर्धा पहुंचने पर मारवाड़ी शिक्षा मंड़ल की कार्यकारिणी की सभा का कार्य किया।

वर्धा, ३०-४-३७

प्रार्थना, गीताई। राधाकृष्ण ने, पवनूर खादी-यात्रा के समय आश्रम की कुछ बहनों के व्यवहार के सम्बन्ध में गुलाब (दवाखानेवाले) ने कुछ

चर्चा की, वह हकीकत कही। गुलाब, सरोजनी, बुद्धसेन से बातें करने पर ये बातें बिल्कुल झूठ और किसी ने द्वेष के कारण उठाईं ऐसा मालूम हुआ। आश्रम की बहनों का कोई कोष नहीं साबित हुआ। इसमें आज ठीक समय चला गया।
चि० बनारसी, शान्ता व रामगोपाल केजड़ीवाल से बातें।
दोनों विवाहों के लोगों से मिलना व व्यवस्था देखना। धुलिया वाले श्रीराम के बराती व (एलीचपुर वाले) रामेश्वर के बराती अपने यहां बंगले पर भोजन करने आये। १।। बजे तक भोजन।
ब्रिजलालजी वियाणी व श्रीराम मास्टर से बातें।
चि० लक्ष्मी—श्रीराम के विवाह में पहले गये। विवाह हो जाने के बाद प्रेस में चि० शान्ता व रामेश्वर के विवाह में। यह जोड़ी बहुत ही सुन्दर मालूम होती थी। वहीं बातें, भोजन। श्रीनारायण मुरारका से परिचय।

१-५-३७

घूमते हुए आश्रम। वहां लक्ष्मीअम्मा (आंध्रवासी विधवा बहन) से बातें। उसके सम्बन्ध की मुश्किल उसे बतलाई।
रामेश्वर (एलीचपुरवाला) व श्रीनारायण मुरारका (अमरावती वाले) से बातचीत।
पूज्य बापूजी व राजाजी प्रयाग से आये। बापूजी ने मेहताब बाबू, डा० काजी, सुभाषबाबू, कांग्रेस प्रेसीडेण्ट, आदि के बारे में बातें कीं।
विवाह के लोगों से मिलना-जुलना, बातचीत।
पुरुषोत्तम जाजोदिया के घर लक्ष्मी के विवाह निमित्त भोजन।
धुलियावालों को रात को एक्सप्रेस से पहुंचाया।

२-५-३७

श्री जानकीदेवी ने अपनी चिन्ता, दुःख बयान किया। मुझे भी दुःख हुआ। करीब दो-अढ़ाई घंटे इसमें चले गये। आखिर ठीक विचार-विनिमय हुआ। पत्र वगैरा लिखे। चि० बनारसी व शान्ता से सम्बन्ध की बातचीत। रामगोपाल केजड़ीवाल से बातें।
सरोजनी नायडू व पद्मजा से ग्रान्ड ट्रंक पर मिलना, बातचीत।
रात को गोविन्द प्रसाद गनेड़ीवाल से देर तक बातचीत। उसे समझाना।

श्रीनारायणजी को जो पत्र लिखा, वह उसे बतलाया। उसने भेजना पसन्द नहीं किया। उसके कहने पर पत्र नहीं भेजा।

श्री बडकस व कालूराम के साथ 'सावधान-केस' के कागजात देखे।

३-५-३७

चि० राधाकृष्ण, गंगाबिसन व जानकी देवी से मकानात की बातचीत।

श्री करंदीकर से 'सावधान'-केस के बारे में विचार-विनिमय।

'सावधान'—केस आज शुरू हुआ। १२-१।। तक चला। अपनी ओर से गवाही पूरी हुई। क्रास एक्जामिनेशन कल से चलने का निश्चय हुआ। 'सावधान' वालों को मदद करने वाले श्री बारलिंगे, पाध्ये, बोवड़े, केलकर वाल आदि नागपुर के व मनोहर पन्त व पार्टी वर्धा के थे। अपनी ओर से बडकस व करन्दीकर थे। रात को कागजात, लेख आदि पढ़े, विचार-विनिमय।

४-५-३७

बाबा साहब धर्माधिकारी, तात्याजी करंदीकर से 'सावधान'-केस पर विचार-विनिमय। शेतकरी संघ के बारे में विचार-विनिमय। बाबा साहब (विरुल वालों) को दुःख पहुंचा। मालूम हुआ।

११।। से २ व २।। से ४।। तक सावधान-केस का क्रास एक्जामिनेशन चला।

सेगांव जाकर बापू से मिलना, प्रार्थना।

चि० शान्ता, (बनारस) की सगाई रामगोपाल केजड़ीवाल से की।

५-५-३७

'सावधान' केस के बारे में विचार-विनिमय, पढ़ना आदि।

कोर्ट में केस, ११।।—२ तक चला। बाद में क्रास एक्जामिनेशन करने वालों में मतभेद हुआ। उन्होंने, बारलिंगे बीमार पड़ गये, कहकर आज केस मुल्तवी करने को कहा। कोर्ट ने उनकी अर्जी मान ली।

बाद में बडकस, करंदीकर, कालूराम के साथ 'चित्रा' के कागजात देखे। लेख पढ़ा। विचार।

डा० मजूमदार (हिंगणघाट वाले) व पटेल से बातें।

जानकी देवी दरबारीलाल के विवाह में नागपुर गई।

६-५-३७

जयवन्त 'लालबावटा' ने 'चित्रा' २६-७-३६ के अंक में 'चालीस हजार का सेगांव चार हजार में कैसे पचाया' व 'जमनालाल बजाज नीं जिकलेला यूरोप' लेख के बारे में आज मेरा बयान हुआ। जयवन्त की ओर से पाठक व नागले वकील थे। अपनी ओर से बडकस व करंदीकर थे। कोर्ट में ११॥ से २ तक स्टेटमेन्ट चला।

रामेश्वर व श्रीनारायण से बातें।

जानकीदेवी, रामकृष्ण बम्बई गये, कमला को अस्पताल से घर लाना था इसलिए।

रात को सावधान-केस के बारे में विचार-विनिमय हुआ।

७-५-३७

चि० उमा व नर्मदा से घूमते समय बातें, उनके रहन-सहन, सगाई आदि के बारे में विचार-विनिमय।

कोर्ट में ११॥ से २ व २॥ से ४॥ तक क्रास एक्जामिनेशन, श्री बारलिंगे व पाध्ये। श्री बांवड़े का नाम आया तब व अन्य समय का दृश्य देखने योग्य था।

काकासाहेब कालेलकर व हिन्दी प्रचार के बारे में सुबह व शाम को बातें।

रात को सावधान तथा जयवन्त (चित्रा केस) के बारे में विचार-विनिमय।

८-५-३७

चि० उमा से उसके सम्बन्ध के बारे में बातचीत। आश्रम से वापस आते समय भागीरथी बहन, नाथूराम प्रेमी, जैनेन्द कुमार से प्रेमचन्द्र स्मारक आदि की बातें। सावधान केस के कागजात देखे।

सावधान-केस ११॥ से २ व २॥ से ३॥ तक चला।

पवनार का मकान देखा। नदी में नाव में बैठकर घूमे। जाजूजी, बडकस, करंदीकर साथ में थे। फालतू प्रश्नों की चर्चा क्रास एक्जामिनेशन में करते हैं, उसका विचार-चर्चा थोड़ी देर।

घर पहुंचने पर हरिभाऊजी से बातें।

९-५-३७

सेगांव जाकर पू० बापू से देर तक बातें। लार्ड जेटलेंन्ड के भाषण, किशोर-लालभाई का पत्र, मेरा राजीनामा व ट्रेजरार के बारे में बापू ने अपने विचार कहे। मंदिर की सभा हुई।

चि० शकुन्तला (हरिभाऊजी की पुत्री) का जन्मदिन। वहां शाम का भोजन, गाय का घी नहीं था। गैरसमझ हुई।

बापू सेगांव से आये। बंगले पर ही प्रार्थना, भजन। रामायण हुई।

मोहनलाल नायर से बातें।

जयवन्त ने सेगांव जाकर जो उपद्रव मचाया, वह मालूम हुआ।

बापूजी एक्सप्रेस से तीथल के लिए रवाना।

मारवाड़ी शिक्षा मंडल की संचालक मंडल की सभा हुई।

रेल में कलकत्ता के लिए, १०-५-३७

नागपुर मेल से कलकत्ता के लिए रवाना हुए। साथ में चि० रामेश्वर नेवटिया, चि०उमा, लाला जाट। इन्टर की तीन टिकिटें लीं।

नागपुर में पूनमचन्दजी रांका, वृद्धिचन्द्रजी पोद्दार मिलने आये, नागपुर से इण्टर रिटर्न की ली ३२।) लगे।

रास्ते में कागजात पढ़े। चि० रामेश्वर से गोला मिल की बातें, विचार-विनिमय। शतरंज की एक बाजी। रायपुर के नजदीक गरमी ज्यादा पड़ी, भीड़ भी थी।

कलकत्ता, ११-५-३७

करीब ७ बजे हावड़ा पहुंचे। श्री उर्मिलादेवी, चि० सावित्री, सीतारामजी, भागीरथजी, दुर्गाप्रसाद, रामकुमारजी आदि स्टेशन आये। नेवटियों से व खेतानों से मिलते हुए श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार के यहां आये, स्नान आदि।

लक्ष्मण प्रसादजी व उर्मिला बहन से सावित्री के साथ विवाह के बारे में निश्चय।

विवाह कलकत्ता में होना तय हुआ। हम लोग ता० ३० को वहां पहुंचे। विवाह, जैसा चि० पन्ना का हुआ था, उस मुजब करना। विवाह-पद्धति वर्धा से भेजना, पत्रिका में दोनों के नाम छपाना, विवाह में ज्यादा बराती

नहीं लाना, कपड़े, जेवर, सावित्नी-ट्रस्ट आदि पर विचार। विवाह रजिस्टर नहीं करना।

शाम को व रात को त्रिवेणी-गौरीशंकर के विवाह में गये। कई मित्र मिले। विवाह में पर्दा नहीं किया।

सीतारामजी के यहां सुशीला नायर आई।

१२-५-३७

लक्ष्मण प्रसादजी व सीतारामजी के साथ विवाह के समय ठहरने के मकानात देखे।

केशवदेवजी, रामेश्वर, श्रीगोपाल, नर्मदाप्रसादजी से सुबह व दोपहर को लक्ष्मणप्रसादजी के घर पर गोला मिल की व्यवस्था के बारे में विचार-विनिमय देर तक होता रहा।

रघुनाथप्रसादजी पोद्दार, मणीवाई, दीपचन्दजी पोद्दार आदि से विवाह किस माफक करना, उसका विचार-विनिमय।

श्यामसुन्दर व उसके पिता से बातें। गौरीशंकरजी गोयनका के देर तक बातचीत।

रामकुमार केजड़ीवाल के साथ बिड़ला पार्क व लेक पर जाना। मोटर की भयंकर दुर्घटना होते-होते बची।

१३-५-३७

महादेवलाल सराफ, रामकुमारजी केजड़ीवाल, उनकी लड़की सावित्नी, माधव बिड़ला, सीतारामजी खेमका वगैरा मिलने आये।

सीने की मशीन व टाइपराइटर वालों से मिले, उनका काम देखा।

रामानंद चटर्जी से बनारसीदास चतुर्वेदी व सीतारामजी के साथ मिले। रामरिखदास के घर उसके पुत्र से मिले। बिड़ला पार्क में भोजन। बाजरे की खिचड़ी बनी थी।

शाम को मणीबहन पोद्दार मिले। फिर बिड़ला हाउस जाकर चन्द्रकला व उसके गीगले को देखा।

भगवान देवी के घर भोजन, बातें, पन्ना आदि भी थे। मित्रों के साथ कटक रवाना, सुशीला मिली।

कटक, १४-५-३७

सुबह कटक उतरे। वहां बसन्तलालजी के तार के कारण गड़बड़ रही। रंगलालजी मोदी के यहां उतरे। ठीक व्यवस्था।
हिन्दी प्रचार कार्यालय में गये, ठहराव वगैरा। दैनिक पत्र 'समाज' के दफ्तर में गये। लिंगराज मिश्र ने सब स्थिति समझाई। कांग्रेस कार्यालय में वहां की स्थिति समझी। अपनी ओर से एक सौ की मदद व अन्य चार मित्रों ने दो सौ की मदद की। भोजन, आराम, प्रभुदयालजी ने केस के कागजात देखे। शाम को गोपबन्धु चौधरी आये। हरिजन बोर्डिंग देखी। मारवाड़ी भाइयों से बातें। कांग्रेस में शामिल होने को कहा। बाद में हिन्दी कान्फ्रेंस में गये। ठीक व्यवस्था। एक ठहराव पर थोड़ा बोलना पड़ा।
कटक से पुरी एक्सप्रेस से कलकत्ता रवाना।
गाड़ी में भीड़ थी, अलग-अलग बैठे।

कलकत्ता, १५-५-३७

खड़गपुर के बाद उठे, सीतारामजी, भागीरथजी से बातें।
हावड़ा से लक्ष्मणप्रसादजी के घर स्नान आदि।
खद्दर भण्डार, भागीरथजी के घर शांति स्वरूप गुप्ता, यज्ञदत्त गुप्ता, हाउस सर्जन मेडीकल कालेज, लखनऊ तथा हरदत्तराय बी० ए० से सम्बन्ध के बारे में बातचीत।
केशवदेवजी व रामेश्वर से जमनादास गांधी के पत्र के बारे में विचार-विनिमय।
उनका भी बम्बई-वर्धा का विचार रहा।
देवीप्रसादजी खेतान, दुर्गाप्रसाद व त्रिवेणी से बातें।
चि० सावित्री, लक्ष्मणप्रसादजी व उर्मिलाबहन से बातें। सुशीला नायर से भी।
नागपुर मेल से वर्धा रवाना हुए। साथ में केशवदेवीजी, श्रीकृष्ण, बालकृष्ण, तारा, इन्दु, उसकी माता, उमा, लाला वगैरा।

वर्धा, १६-५-३७

बिलासपुर में वल्लभदास अग्रवाल रेलवे कान्ट्रैक्टर का साथ हुआ। बातचीत।

केस के कागजात पढ़े।
नागपुर से वर्धा तक सेकण्ड क्लास का टिकिट लिया। पू० वृद्धिचन्दजी पोद्दार के साथ बैठे। उनकी स्थिति वगैरा समझी, विचार-विनिमय।
वर्धा के एक गुजराती मित्र के पिता का रेलवे के सेकण्ड क्लास में देहान्त हो गया।
उसी गाड़ी से वर्धा उतरे। केशवजी वगैरा भी वर्धा उतरे।
चित्रा जयवन्त-केस के कागजात देखे। विचार-विनिमय।

१७-५-३७

केस के कागजात देखे। जमनादास गांधी बम्बई से आये। करीमभाई मिल के बारे में केशवदेवजी के साथ बातचीत, विचार।
चित्रा जयवन्त केस ११॥ से २ व २॥ से ४॥ क्रास एक्जामिनेशन व साक्ष हुई।
श्री केशवदेवजी नेवटिया व उनके घर के लोग व चि० नर्मदा वगैरा आज मेल से बम्बई रवाना हुए।
रात को फिर केस के सम्बन्ध में विचार-विनिमय देर तक होता रहा।

१८-५-३७

चित्रा केस; कोर्ट में ११॥ बजे पहुंचना, मुकदमे का काम १२। से २। व २॥। से ४। तक हुआ। केस धीरे-धीरे चलता रहा।
डा० सोनक के व्यवहार व पूनमचन्द रांका के विरुद्ध की कार्यवाई का विचार कर दादा धर्माधिकारी, घटवाई के सलाह से उनके साथ मोटर से नागपुर जाना-आना। नागपुर में डा० खरे के यहां गये। वहां प्रान्तीय कमेटी की कार्यकारिणी की सभा थी। मैंने जो कुछ कहना था, बहुत ही स्पष्ट व साफ तौर से कहा। इन लोगों ने मेरा कहना स्वीकार किया, तथापि उनका व्यवहार दुःखदायी कहा। चोट लगी। पूनमचन्द से मिलकर उसे दर्खास्त वापस लेने को कहकर वापस वर्धा रात ११॥ बजे पहुंचना।

वर्धा, १९-५-३७

हरिभाऊजी से बातें।
चित्रा के कागजात, बच्छराज जमनादास की आर्थिक स्थिति व तिलक स्वराज्य कोष की स्थिति समझी।

पूनमचन्द व गंगाविसन से मांडवा स्टेट, द्वारकादास भइया आदि की बातें। कोर्ट १२। से २—३ से ४। तक जयवन्त के मुकदमे की क्रास साक्षी होती रही। गवाहियां ठीक चलीं।

दरबारीलालजी, रामेश्वर, शान्ता, लक्ष्मी, पुरुषोत्तम आदि मिलने आये।

जाजूजी से गांधी-सेवा-संघ व कांग्रेस के बारे में बातचीत।

बालासाहब से नागपुर कांग्रेस, डा० खरे वगैरा के बारे में बातें।

बडकस, आपाजी, मांडगांव मालगुजार, नायडू वगैरा से बातें।

नागपुर एक्सप्रेस से थर्ड क्लास में चि० उमा, ऊषा, लाला के साथ बम्बई रवाना।

बम्बई, जुहू, २०-५-३७

माटुंगा-केशवदेवजी, जमनादास भाई, आबिदअली साथ में। चि० कमला का लड़का देखा, ठीक मालूम हुआ।

खान अब्दुल ग़फार खान से मिलना। उनका स्वास्थ्य थोड़ा खराब था, ज्वर वगैरा।

महात्माजी के सबसे पुराने जर्मन मित्र हेर केलनबेक आज 'मलोजा' नामक जहाज से पहुंचे।

भूलाभाई के घर मिलने दो बार गये। वह नहीं मिले। बिड़ला हाउस गये। श्री शारदा बहन व चि० गोपी मिली।

२२-५-३७

सुबह श्री मणीलाल नानावटी, चि० सुलोचना आदि से घूमते समय बातचीत।

भोजन, आराम के बाद चि० ज्योत्स्ना (पन्ना की लड़की) को देखते हुए बम्बई गये।

रामनारायण सन्स लिमिटेड की बोर्ड की जनरल सभा हुई।

रामनारायण ट्रस्ट की भी सभा हुई। कुछ बातों का विरोध; त्यागपत्र देने का विचार किया।

रामेश्वरजी बिड़ला ने हरगांव व गोला शक्कर मिल की बातें कीं, परन्तु वह श्रीगोपाल या रामेश्वर को कहने की मनाई की। उनकी यह पद्धति पसंद नहीं पड़ी।

चि० ज्योत्स्ना के पास गये। उसकी हालत चिंताजनक ही थी। रात को टेलीफोन करके उसके इलाज की व्यवस्था की।

२३-५-३७

सुबह चि० श्रीकृष्ण नेवटिया के साथ बातचीत करते हुए पैदल शान्ताक्रुज।

चि० प्रहलाद के यहां पहुंचे। श्रीकृष्ण से उसके भावी प्रोग्राम व सगाई क बारे में विचार-विनिमय हुआ।

चि० ज्योत्स्ना (पन्ना की लड़की) की हालत दयाजनक मालूम हुई। केसर से व नरीमान की माता से बातचीत।

चि० घनश्याम पोद्दार व केशव पोद्दार मिलने आये; दीक्षित वगैरा भी। आज से चर्खा शुरू किया।

श्री अडवाणी डायरेक्टर, रामेश्वरजी बिड़ला, गौरीशंकरभाई, हीरालाल, अमृतलाल शाह आदि से बातें।

२४-५-३७

चि० उमा के साथ शान्ताक्रुज चि० प्रह्लाद के घर तक पैदल घूमते हुए जाना। उमा से उसके सम्बन्ध के बारे में ठीक तौर से विचार-विनिमय हुआ।

चि० ज्योत्स्ना की हालत अभी तक सुधरी नहीं। मौत से लड़ाई कर रही है।

केशव के यहां जाकर जुहू। मनोहर सिंह मिला।

बद्रीदास (हरनंदराय सूरजमल), श्री निवास, मन्नू, सुशीला से बातचीत। खासकर बद्रीदासजी व मन्नू से।

शाम को रामकुमार भुवालका, माधो, कृष्ण, मोतीलालजी वगैरा आये, भोजन किया।

नवलकिशोर भरतिया व जगदभानु मिलने आये। भरतिया को शशी, विद्या, नर्मदा के बारे में कहा।

२५-५-३७

चि० ज्योत्स्ना को देखा, थोड़ा सुधार मालूम हुआ।

जीवनलाल भाई दो बार मिलने आये, कई बातें।

नर्मदा, गणेश, सुलोचना, राधा वगैरा से बातें—चर्खा।
शाम को घनश्यामदास बिड़ला पहले आये। घूमते समय राजनैतिक व अन्य बातें। बाद में उनके साथ का मित्र-मण्डल आया। देर तक बातचीत। अपने वहीं पर भोजन। स्त्री-पुरुष मिलाकर करीब चालीस लोग हो गये।
चि० बनारसी रुक्मिनी से बातें।

२६-५-३७

सुबह ४॥। बजे चि० श्रीराम का टेलीफोन आया, पन्ना की लड़की ज्योत्स्ना का सांस बन्द व शरीर गरम था। जल्दी निवृत्त होकर जानकी, मदालसा, उषा व नरीमान की मां को लेकर वहां पहुंचे। थोड़ी देर तपास वगैरा की। बाद में खातरी हुई कि छोकरी चली गई। दुःख तो हुआ परन्तु उपाय क्या! सबों को, खासकर पन्ना को, समझाया। देर तक वहां ठहरना पड़ा। उसकी क्रिया आदि होने के बाद जुहू, स्नान आदि। केशवदेवजी से बातें।
बाबासाहब सोमण, काकासाहेब कालेलकर आये, भोजन, बातें।
डा० काजी, नर्मदा भुस्कुटे, गणेश आदि से बातें।
शाम को पन्ना, प्रह्लाद, श्रीराम, नर्मदा, केशर यहां आये। यहीं भोजन व रहे।
श्री रामकुमारजी केजड़ीवाल व रामकुमारजी भुवालका आये। भोजन, बातचीत देर तक।

२७-५-३७

सुबह घूमते समय जानकी के साथ चि० मदालसा से उसके भावी जीवन व सम्बन्ध के बारे में बातचीत। उसे दुखी देख थोड़ा दुःख हुआ।
आबिद अली, कागजात पर सही की।
घनश्यामदासजी बिड़ला, रामकुमार केजड़ीवाल, देशपांडे, बजरंग यूरोप रवाना हुए। टेलीफोन से बातें।
चि० श्रीनिवास के साथ थोड़ा घूमना।

२८-५-३७

कैलाशपत सिंहानिया के यहां गये। वह उठे नहीं थे। स्त्रियां मिलीं। मदालसा, जानकी साथ थी।

धीरजलाल मोदी, जयसुखलाल मेहता, मोती वगैरा मिले। बातें।
केशवदेवजी, आबिद अली से बातें।
श्री किशोरलालभाई मश्रुवाले मिलने आये, बातें।
शशीबाला व महेन्द्र मिलने आये। यहीं भोजन, शशी के सम्बन्ध के बारे में विचार-विनिमय। माथेरान जाने का निश्चय।

२९-५-३७

घूमना—रामकुमारजी भुवालका, प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका मोतीलालजी झंवर के साथ वरसोवा दादाभाई के बंगले तक; सुबह व शाम को भी। वहां तक श्री केशवदेवजी, जमनादास गांधी व बालक भी साथ में रहे।
हिन्दुस्तान टायर फैक्टरी के बारे में श्री जोहरी से बातें। मेरी योजना उन्हें दी।
जमनादास गांधी आये। गोंडल महराज से करीमभाई मिल की बातचीत।
काकासाहेब आये।

३०-५-३७

काकासाहेब, स्वामी आनन्द, मणीभाई नानावटी, जानकी वगैरा घूमने वरसोवा तक जाकर आये। स्वामी को वर्धा का प्रेस बढ़ाने को कहा।
दामोदर, मीरा आये।
खान अब्दुल गफ्फार खान, सफिया, मेहर, मरियम, लाली, सादुल्ला आये।
आबिद के लड़के का नाम 'इक़बाल' रखा।
डा० महोदय, उसका भाई व मित्र, केशव गांधी, जीवनलाल भाई का पूरा कुटुम्ब, केशवदेवजी, जमनादास गांधी, श्रीकृष्ण वगैरा आये। दो जापानी भी मिलने आये।
जुहू-कैंप समारंभ में ६ से ८ तक। सभापति का काम करना पड़ा।

३१-५-३७

खान अब्दुल ग़फ्फार के साथ घूमना। वह आज दोपहर की गाड़ी से तीथल गये।
चि० शशी रहने आई। उससे थोड़ी बातें।
शाम को घूमना, वरसोवा तक शशी, नर्मदा, उषा वगैरा के साथ।
जयन्ती हीरालाल, अमृतलाल शाह आया। सब मिलकर भोजन-बातें।

रामेश्वरजी बिड़ला से बातें।

१-६-३७

आज बम्बई में रात को दंगे के समाचार, चिन्ता रही। कई जगह फोन किये। नरीमान व उसकी मां की फीस का बिल चुकाया। १५०) भेजे।
श्रीगोपाल नेवटिया, केशवदेव पोद्दार, हनुमान प्रसाद मिलने आये। केशवदेव से नागपुर जमीन की बात हुई। चार आना हिस्सा उसके नाम ऐसा हो, जिसमें अड़चन न आवे। पच्चीस हजार तक का लेना-बेचना फिलहाल में।
श्रीगोपाल केदारमलजी नेवटिया की माहिम की जमीन व मलाड की जमीन व बंगला बेचकर या गिरवी रखकर व्यवस्था करने का विचार।
काशीनाथ (मालेगांव वालों) से बातें। घूमने वरसोवा तक।
शशी व चन्द्रा के सम्बन्ध की—शशी से बातें।
ब्रिज थोड़ी देर, शशी की अंगूठी खो गई थी, वह मिली।
आज पत्र—शशीबाला, मदालसा, राधा व उषा से लिखवाये।

२-६-३७

रात को नानावटी की झोंपड़ी के पास आग लगी १२।।-१ बजे के अन्दाज। जानकी के साथ वहां जाना। वहां सुबह जाकर फिर देखा तो तीस झोंपड़ियां जल गई थीं। कई पेड़ व फर्नीचर तथा सामान जल गया।
वरसोवा तक घूमने; जानकी व राधा गांधी से बातें।
केशवदेवजी व फतेचन्द से वच्छराज फैक्टरी तथा वच्छराज कंपनी के बारे में देर तक बातें।
मरियम व महेरताज रहने आये।
शाम को घूमते समय शान्ता, बनारसी, दुर्गाप्रसाद खेतान, रसिक आदि से बातें।
फूलचन्दजी वैद्य, नरसिंहदास (जोधराज वालों) से बातें।
रामेश्वरजी बिड़ला के साथ बातें।

३-६-३७

चर्खा
श्री रामकृष्ण गूजर वैश्य (जिसने एम० बी० बी० एस० पास किया है व योग-मार्ग में लग गये हैं) से बातचीत।

हरजीवन भाई व श्रीमन्नारायण के नाम से दो तार किये।
नाना आठवले व देवकी आये।
विजयसिंह मोहता आया। उसे धमकाया व उसकी भूल बतलाई।

४-६-३७

सुबह घूमने न जाकर समुद्र में आज भरती थी, सो देर तक समुद्र-स्नान किया, दुर्गाप्रसाद खेतान वगैरा के साथ।
महेन्द्र आये। शशी के सम्बन्ध की बातें कर गये।
जौहर, हरमकलाल, आबिदअली, विश्वनाथ आये। रबर फैक्टरी का फैसला कर गये।
चि० पद्मा पित्ती के विवाह में घर के सब लोग गये।
इन्द्रमोहन गोयल का १ जून से दिसम्बर आखिर तक ७५ रु० मासिक निश्चित किया।
श्री खुशालचन्दजी गांधी का राजकोट में स्वर्गवास हुआ।
श्री गोविन्दलालजी पित्ती का आग्रह-पूर्वक आने के बारे में फोन आया। वहां जाना पड़ा। रास्ते में खुर्शेदबहन व पेरीनबहन से मिलना।

५-६-३७

श्रीमन्नारायण वर्धा से आये।
केशवदेवजी, श्रीगोपाल, जमनादास गांधी से लोहे के कारखाने तथा अन्य बातें।
हरजीवन कोटक से बातें।

जुहू-बम्बई, ६-६-३७

सुबह उठने पर मालूम हुआ कि रात को वर्धा से 'मां' की ज्यादा बीमारी का फोन आया था। चिंता हुई। वर्धा फोन किया। थोड़ा सन्तोष हुआ। दो बजे के करीब फिर वर्धा से फोन आया। उससे थोड़ी चिंता कम हुई। वर्धा जाने के लिए हवाई जहाज की तलाश की; व्यवस्था नहीं हो सकी। समुद्र-स्नान, भोजन, हरजीवन कोटक डेढ़ दो महीना बतावें सो काम। केशवदासजी, श्रीगोपाल, हनुमान प्रसाद वगैरा से बातें—खेलना। नागपुर मेल से वर्धा रवाना, रास्ते में केशर से मिलते हुए। जानकी व लाला साथ में; दो टिकट इण्टर व एक थर्ड का लिया। रेल में चश्मा व

टिकट खो गये, उसकी थोड़ी चिंता।

वर्धा, ७-६-३७

घामणगांव में मारवाड़ियों की भीड़। हो-हल्ला, गड़बड़। वहां भेरुलाल गोलेछा (उदयपुर वाले) से मां के स्वास्थ्य की खबर लगी।

वर्धा पहुंचकर बंगले पर मां से मिलना। उसके पास बैठना। शाम को भी दो घंटे से ज्यादा बैठना, वहीं कातना वगैरा।

जाजूजी, वृद्धिचन्दजी आदि सुबह व शाम को भी आये। गम्पू धर्माधिकारी व चोरघड़े से बातें।

८-६-३७

सुबह किशोरलालभाई व गोमतीबहन आये।

घूमते हुए आश्रम की इमारतें देखीं। भागीरथी बहन व नाना से बातें। वापस आते समय प्रार्थना।

सत्यनारायणजी, द्वारकानाथ, बाबा वकील द्वारकादास व रिषभदास से बातें।

'स्त्री-पुरुष मर्यादा' किशोरलाल मश्रूवाला के लेख का थोड़ा हिस्सा पढ़ा। ठीक मालूम हुआ। मां के पास बैठा। लक्ष्मण, मोती की स्त्री आई।

जाजूजी, किशोरलालभाई से देर तक बातचीत।

पार्वती, रमती व उसकी मां आई।

९-६-३७

पू० मां के पेट में सुबह काशी के साथ थोड़ी मालिश की।

पवनार का काम देखने जानकी व राधाकृष्ण के साथ गये। धामाजी व मोतीलाल वहां थे। रुपये तो ज्यादा लग जावेंगे, परन्तु मकान ठीक हो जायेगा।

क्रॉनीकल में सावधान केस के बारे में नागपुर का जो पत्र छपा, वह पढ़ा।

डेलीन्यूज में भारतन के विवाह के समाचार पढ़े।

भोजन, आराम। स्त्री-पुरुष मर्यादा का थोड़ा भाग पढ़ा।

कर्नाटक वाली लीलावती आज आई। इलाहाबाद जाने के सम्बन्ध में विचार।

नालवाड़ी जाकर कृष्णदास गांधी के साथ विनोबा से थोड़ी बातें। मनोज्ञा

के यहां भोजन, बातें।
हिंगणघाट से डा० सुराणा आये। आपबीती सुनाई। उन्हें धैर्य से काम लेने को समझाया।

१०-६-३७

मां के पेट में तेल की मालिश ४ से ४।। तक की।
चि० गंगाबिसन से बातें—सांवगी, पिपरी फाटक के बाहर की जमीन वगैरा।
यू० पी० के तीन विद्यार्थी मिलने आये, देर तक बातें।
रामेश्वर (एलिचपुरवालों) से बातचीत।
मि० जेटलण्ड का जवाब, खुलासा पढ़ा।
आराम के बाद वर्तमान पत्र, पत्र-व्यवहार, मन्नालालजी व चांदोर से आये हुए बोहरे से बातचीत। चान्दोर जीन बीस हजार में मिल सकेगी, ऐसा कहा।
श्रीमन् से मारवाड़ी शिक्षा मण्डल के बारे में बातें।
बाबासाहब देशमुख, दादाराव, कुमारप्पा, गंगाबिसन, भणसाली आदि से मिले।
पूनमचन्द से चांदा मैच फैक्टरी की बातें।

११-६-३७

मां की तेल मालिश। पूज्य बापूजी व कैलनबैक ४।।। की पैसेन्जर से आये। घर पर नींबू पानी वगैरा लेकर उनके साथ पैदल सेगांव, बालकोबा को देखते हुए, गये। सेगांव से बैलगाड़ी में वापस।
चि० रामेश्वर व शान्ता से बातें। उनका एक वर्ष का बजट व भावी जीवन का उद्देश्य वगैरा समझा।
बडकस वकील, कालूराम आये। बातचीत, विनोद, जाजूजी बम्बई गये।
गम्पू धर्माधिकारी से गोला मिल की व्यवस्था की तथा अन्य बातें।
किशोरलाल भाई से बातें।
लक्ष्मणप्रसादजी व सावित्री को कमल के पत्र के साथ पत्र भेजा।

१२-६-३७

श्री गंपू धर्माधिकारी से देर तक बातचीत। अपनी मां के आग्रह से उसने

अपनी जाति में ही सम्बन्ध करने का निश्चय किया।
डा० महोदय ने अपने विवाह-सम्बन्ध की चर्चा की।
जानकी आज नागपुर मेल से बम्बई गई।
श्री कन्हैयालाल मुंशी काश्मीर से आये।
श्री मीराबहन व महादेवभाई के साथ सेगांव। बापू के साथ सेगांव (गांव में) गये, सभा में बापू बोले। मराठी में मैंने भाषांतर किया।
श्री कन्हैयालाल मुंशी से देर तक बातचीत—भारतीय परिषद, हिन्दी प्रचार, पत्र वगैरा के बारे में।

१३-६-३७

कन्हैयालाल मुंशी रह गये—गाड़ी लेट होने के कारण। रात की एक्सप्रेस से जाने का रहा।
गुलाबबाई आई। मीराबहन गई।
सावधान केस की तैयारी—मुंशी, वडकस, करंदीकर, कालुराम वगैरा से दो से चार बजे तक विचार-विनिमय।
श्री गोपाल नेवटिया सुबह आया, मेल से बम्बई गया।
दाण्डेकर व लक्ष्मी (शारदा) से बातें। दाण्डेकर व कार्यकर्ताओं की योजना पर विचार-विनिमय।
किशोरलालभाई से केस व अन्य बातें-चर्चा।

१४-६-३७

मां को तेल मालिश, आश्रम गये। रुक्मिणी को वहां भरती कराया। राधाकृष्ण व धामाजी से बातें।
कल रात को नागपुर एक्सप्रेस के लेट होने के कारण मुंशी स्टेशन से वापस आये; यह सुबह मालूम हुआ।
श्री मुंशी, केदार, वडकस, करन्दीकर व अन्य मित्रों से केस के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।
१२ बजे कोर्ट गये। गोविंदराव पाण्डे ने बहीखातों के दिखाने के बारे में दरख्वास्त दी व बहस की।
के० एम० मुंशी ने सुन्दर जबाव दिया। बारलिंगे ने भी कहा। उसने कई प्रकार के अटैक किये। केदार ने उसे जवाब दिया।

बारलिंगे बीमार हो गये। केस मुलतवी रहा।

वर्धा, १६-६-३७

घूमते समय लक्ष्मी, श्रीमन, आर्यनायकम्, लक्ष्मण बजाज वगैरा से नूतन भारत विद्यालय के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

सावधान केस के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

कोर्ट—११।। से १।। तक २, से ४।। तक क्रास एक्जामिनेशन चला। आज बारलिंगे ने केस का काम छोड़ दिया। पाठक ने शुरू किया।

केदार, बडकस के साथ सेगांव। बापू से बातें। केस का थोड़ा हाल कहा। म्यूच्युअल बेनीफीट सोसायटी आदि बारलिंगे का बर्ताव, व्यवहार, विधवा-विवाह, शांता, मदन मोहन आदि के सम्बन्ध में बातें।

वर्धा, १७-६-३७

चि० शान्ता, धोत्रे, श्रीमन आदि से बातें।

केस के कागजात पढ़े। केस ११।। से ४।। तक चला।

अब्दुल गफार खान, लाली, मेहर आये।

देहरादून वाले चतुर्वेदी मिले। भोजन सबने साथ में किया।

शाम को बडकस वगैरा आये।

देहली से डा० सौन्दरम आईं, उनके साथ बातें।

जे० सी० व भारतन कुमारप्पा दोनों मिलने आये।

१८-६-३७

सौन्दरम व श्रीमन्नारायण के साथ आश्रम। भागीरथी बहन, नाना वगैरा से बातें।

चित्रा केस के कागजात पढ़े। कोर्ट में १२-२ व २।।-४। तक क्रास एक्जामिनेशन श्री पाठक ने किया।

दो खास मुखत्यार पत्र श्री केशवदेवजी के नाम रजिस्टर करके बम्बई भेजे।

डा० सौन्दरम, खानसाहब, लाली, मेहरताज वगैरा शाम को भोजन को आये। बाद में आश्रम तक घूमने गये। आशादेवी व आर्यनायकम भी साथ थे।

१९-६-३७

जल्दी तैयार होकर, किशोरलालभाई से मिलते हुए खानसाहब के साथ स्टेशन। खानसाहब से गनी के सम्बन्ध की बातें।

नागपुर मेल से कमल वगैरा आये। श्री रघुनाथ प्रसादजी पोद्दार से बातचीत, वह कलकत्ता गये। कमल से थोड़ी बातें। वह बापू से मिलने सेगांव गया।

कोर्ट—१२ से ३।। तक केस चला। पाठक की मदद से जयवन्त ने खुद क्रास किया।

नाना खरे की लड़कियों ने गायन सुनाया तथा डा० सौन्दरम ने वीणा।

२०-६-३७

सुबह पवनार का मकान देखने गये। साथ में कमल, राधाकृष्ण, डा० सौन्दरम, मदालसा आदि थे। मकान देखा।

डा० खरे बापूजी से मिलकर आये। उन्हें साफ-साफ स्थिति तथा जो बातें मन में थीं, वह समझाकर कह दिया।

अभ्यंकर मेमोरियल कमेटी का काम वर्धा में हुआ। बारह सदस्य हाजिर थे।

घटवाई, दाण्डेकर, पूनमचन्दजी, भीकूलाल से देर तक बातें। दाण्डेकर का व्यवहार बराबर समझ में नहीं आया।

२१-६-३७

गौरीलालजी के बारे में नर्मदाप्रसाद (सिविल सर्जन) से बातें। फोटो देखी। टी० वी० का प्रथम स्टेज है। उन्होंने समझकर बतलाया व उनके घर समझाकर कहा।

विद्याधर विद्यार्थी को आर्यनायकम लेकर आये। उससे पूछा। उसने अपना कसूर कहा। लड़की बिलकुल निर्दोष बतलाई।

ब्रिजलालजी बियाणी आकोला से एक्सप्रेस से आये। श्रीकृष्ण प्रेस वर्धा को बढ़ाने के बारे में देर तक विचार-विनिमय। कमल का विवाह व पत्रिका, राजस्थान प्रेस डिबेन्चर व सुगनचन्दजी की जमानत पर उन्हें पचीस हजार, पांच हजार की किस्त पांच वर्ष में छः टका ब्याज से, उन्हें चाहिए। राजनैतिक सम्बन्ध आदि की चर्चा।

२२-६-३७

सेगांव—जाजूजी, किशोरलालभाई, गोमती बहन साथ में। बापू से बातें। वर्धा में छापाखाना खोलने के बारे में पूना व देहली से भाव मंगाना। मदालसा के सम्बन्ध के बारे में उन्होंने व जाजूजी तथा किशोरलालभाई ने श्री श्रीमन को ही सब तरह से ठीक समझा।

गांधी सेवा संघ की रकम रोकने व व्याज उपजाने के बारे में भी ठीक विचार-विनिमय। भारतन् (असोसिएटेड प्रेस वाला) वाइसराय का भाषण लेकर आया। पढ़कर सुनाया। खूब लम्बा था व नरम भी था।

नवल किशोर भरतिया कानपुरवाले आये। विद्या, गोपाल, नर्मदा आदि के सम्बन्ध की बातें। वह मेल से बम्बई गये।

डा० सौन्दरम ग्रान्ट ट्रंक से मद्रास गई।

पत्रिका छपवाना व भेजना शुरू करना है।

२३-६-३७

चि० कमल से बातचीत, भविष्य के बारे में मेरे विचार उसे कहे।

चि० श्रीमन से बातें—सम्बन्ध के बारे में व मैनपुरी तथा कानपुर जाने के बारे में प्रोग्राम निश्चित किया।

पत्र-व्यवहार, विवाह-पत्रिका भेजी।

श्री गौरीशंकरजी झंवर मिलने आये।

भागवत शास्त्री (देवलीवालों) से बातचीत। विवाह का मुहूर्त ता० ३० जून १ या २ व ११ या १४ जुलाई के बताये, अषाढ़ सुदी ४ व ७ के मुहूर्त के बाद चार महीने मुहूर्त नहीं बताया।

शाम को घूमते समय सत्यनारायणजी से हिन्दी-प्रचार के बारे में बातचीत।

महिला-आश्रम में प्रार्थना। नाना, भागीरथी बहन, रामप्यारी से बातें।

२४-६-३७

जानकी देवी से मदालसा के सगाई व सम्बन्ध की बारे में विचार-विनिमय। शाम को महिला आश्रम में सभा। काकासाहब को साथ लेकर वहां गये। सभा का कार्य ४ से ६।। तक चला। छुट्टियों के नियम तथा बहनों को भर्ती करने आदि का मुख्य कार्य हुआ। आशाबहन को एक वर्ष की छुट्टी

आदि पर विचार।
रामप्यारी ने छुट्टी मांगी, स्वास्थ्य आदि के कारण। देने का तय किया।
दादा, गंगाबिसन आदि से मदालसा के सम्बन्ध के बारे में बातें।
रामेश्वर एचीलपुर वाले से बातें।

२५-६-३७

सुबह मां को समझाना; हाथ फेरना। घूमने जानकी के साथ। राधाकृष्ण, काकासाहेब भी साथ हो गये। विनोद, चर्चा।
विवाह-सम्बन्धी-विचार विनिमय।
हरिराम मुरारका की जो जगह अपन ने ली (बालाजी मंदिर के बगीचे के पास) वह पूनमचन्द के साथ देखी; बाजार की इमारत का नया मकान देखा। अन्य मकानात भी। गौरीलालजी को देखा।
दुकान पर ऊपर के मकान की सफाई कराई। मोटर ड्राइवर का फैसला सुना।
जाजूजी, किशोरलालभाई, सरस्वती देवी, मूलचन्द आदि कई मिलने आये; बातें।

वर्धा, नागपुर, इटारसी, झांसी (रेल में) २६-६-३७

जानकी से चि० मदालसा के सम्बन्ध में बातें।
ग्रान्ट ट्रंक से सुबह मैनपुरी के लिए रवाना। साथ में चि० मदालसा, श्रीमन्नारायण व लाला। थर्ड से रवाना हुए। वर्धा से नागपुर तक हरजीवन-भाई कोटक बातें करते रहे। उन्हें दो पत्र लिखकर दिये। जुलाई से डेढ़ सौ रुपये मासिक उन्हें नांवे मांडकर देना व उनसे पूरा काम लेने के बारे में केशवदेवजी को लिखा। दूसरा पत्र चर्खा संघ को।
नागपुर में वृद्धिचंद्रजी पोद्दार मिले। वह अगर घर छोड़कर तीर्थ, एकान्त स्थान जाकर रहें तो उन्हें, ज्यादा-से-ज्यादा तीन वर्ष तक, पचहत्तर रुपये मासिक सहायता भेजने का, उनके कहने से, कबूल किया।
दाण्डेकर काटोल तक साथ आया। उसे १ जुलाई से जून (३८) तक एक वर्ष के लिए पचास रुपये मासिक की आमदनी कराने की गारंटी दी।
चि० शान्ता को पत्र।

आगरा, मैनपुरी, २७-६-३७

आगरा ४ वजे पहुंचे। गोविन्द प्रसाद व महेन्द्र आये। रेल से ही आगे जाने का विचार रखा। श्री सर आनन्दस्वरूपजी (साहेबजी महाराज, उमर ५६, गद्दी पर १९१३ में बैठे) दयाल वाग वालों का मद्रास में ता० २४ की रात ८-३० वजे स्वर्गवास होने की खबर सुनी। आज ही सुवह ६।। बजे स्पेशल ट्रेन से उनकी शव-यात्रा जावेगी। दुःख हुआ।

मैनपुरी पहुंचे। श्री धर्मनारायणजी व हृदयनारायणजी तो स्टेशन पर ही आ गये थे। श्रीमन्नारायण के घर स्नान, भोजन, बातें, आराम। वातावरण सुखकारक मालूम हुआ। चर्खा।

श्रीमन् के पिता श्रीधर्मनारायणजी से सब बातें खूब स्पष्ट तौर से कर ली गईं। उन्होंने सब घर वालों की राय लेकर प्रसन्नतापूर्वक सम्बन्ध करना स्वीकार किया। उनके आग्रह के कारण श्रीमन की माता ने चि० मदालसा की गोद वगैरा भरी। श्रीमन् की माता, भाभियां आदि का स्वभाव ठीक मालूम हुआ।

मैनपुरी शहर के वाहर व गांव में घूमकर देखा। मदनमोहन का घर देखा। गोविन्द ने जलपान कराया।

चि० मदालसा की सगाई की बात निश्चित हुई।

मैनपुरी, शिकोहाबाद, कानपुर २८-६-३७

श्री धर्मनारायणजी एडवोकेट (श्रीमन् के पिता) से विवाह की रीति-रिवाज आदि पर ठीक विचार-विनिमय। पूरी तरह से उन्हें समझाया। एक वार तो विवाह ता० ११ जुलाई का रखने का विचार हुआ।

मैनपुरी से सुवह ७ बजे का गाड़ी से रवाना। शिकोहाबाद गाड़ी बदली। हृदयनारायणजी व गोविन्द प्रसाद चौवे वहां तक आये थे।

२-३५ की पैसेंजर से कानपुर पहुंचे। तार नहीं पहुंचने से थोड़ी देर स्टेशन पर ठहरना पड़ा। नवलकिशोर के घर होते हुए।

कमला रिट्रीट पहुंचे। वहां श्री पदमपतजी आ गये थे। उनसे बहुत देर तक वातचीत। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक पांच वर्ष तक पन्द्रह हजार सालाना मेरी देखरेख में अहिन्दीप्रान्तों में हिन्दी-प्रचार के लिए देना स्वीकार किया। और भी बातें हुईं।

रात को भोजन के समय डा० जवाहरलाल के सब घर के व जोग, बालकृष्ण आदि से विनोद बातें। चन्द्रा, शशी भी थे।

कानपुर रेल में (कलकत्ता के लिए) २९-६-३७

सुबह प्रार्थना। डा० चन्द्रकान्ता, डा० जवाहरलाल, शशी, सरोजनी, महेन्द्र आये। कमला रिट्रीट में घूमना। तालाब के आजू-बाजू का दृश्य बहुत ही सुन्दर, रमणीक व देखने योग्य था। बालकृष्ण शर्मा, हरि विद्यार्थी, उसकी स्त्री व दोनों बहनें आईं। ठीक बातें, परिचय।

डा० मुरारीलालजी वगैरा मिलने आये।

श्री पदमपतजी से मिलने मिल में गये। उनसे व कैलाशपत, लक्ष्मीपत, रामरतनजी आदि से परिचय, बातें। मिल में जो नई छपाई दाखिल की, वह दिखाई। अन्य व्यापार आदि की बातें।

पदमपतजी ने हिन्दी प्रचार के लिए जो सहायता देना स्वीकार किया उस बारे में पत्र दिया। वह उन्होंने मंजूर किया।

हिन्दी प्रचार के काम के लिए अपनी ओर से भी सब मिलकर पचीस हजार की सहायता का निश्चय।

डा० जवाहरलाल के घर, गीता के घर, गौरीशंकर हौजरी फैक्टरी व गंगा के घाट वगैरा देखते हुए कालका मेल से रवाना। खूब भीड़ थी। प्रयाग में पं० जवाहरलाल, इन्दु, कृपालानी आये। खाना लाये थे।

रास्ते में डा० चन्द्रा, गिरधारी, रामेश्वर आदि से बातें।

कलकत्ता, ३०-६-३७

चि० कमल वगैरा सब मिलकर पन्द्रह टिकट वर्धा से (नागपुर मेल से) पहुंचे। मैं, कानपुर से सुशीला भरतिया, चन्द्रकान्ता, मदालसा, रामेश्वर नेवटिया के साथ कालका मेल से पहुंचा।

लक्ष्मण प्रसादजी के घर अलीपुर होते हुए डेरे पर पहुंचे। स्नान आदि से निवृत्त। बातें, प्रोग्राम, टेलीफोन। भोजन में कच्ची रसोई थी।

थोड़ा आराम, बाद में मिलने वालों से बातचीत।

विवाह के लिए लक्ष्मण प्रसादजी के यहां गये। व्यवस्था ठीक थी। जगह थोड़ी कम पड़ी। आनेवाले बहुत लोग आये। सर बद्रीदास, सर छाजूराम, कई अंग्रेज व सनातनी लोग भी आये। लेडी जे० सी० बोस, सरलादेवी

चौधरानी, मौलाना आजाद, प्रफुल्ल घोष आदि भी आये। कलकत्ता के मित्र तो प्रायः सब ही उपस्थित थे। कमल-सावित्री का विवाह ठीक तौर से व सुखकारक सम्पन्न हुआ। भोजन, विनोद।
मदालसा की सगाई श्रीमन्नारायण से की, उसकी घोषणा व नेग।

कलकत्ता १-७-३७

बनारसी प्रसाद झुनझुनवालों से बातें—मिल, सगाई आदि के बारे में।
बालकृष्णजी पोद्दार, किशोरी केडिया आदि से मिलना।
बिड़लों के यहां सबों से मिलना, विनोद; पार्टी। थोड़ी देर शतरंज।
उर्मिला बहन पोद्दार, बाद में मणीबहन वगैरा से मिलना।
जगन्नाथ घाट रोड पर जानकी देवी ने मैटरनिटी होम का उद्घाटन किया। सभापति मुझे बनाया।
शक्कर मिल व बिहार राष्ट्रीय मदद की चर्चा—बनारसीलाल झुनझुनवाले, रामेश्वरजी नोपाणी, घनश्यामदासजी लोयलका आदि से।
प्रभुदयालजी व राजकुमारजी से बातें। तीन हजार की सहायता, तीन या चार संस्थाओं में देने को कहा। सीतारामजी के घर पर मिलना व भोजन।
हावड़ा-नागपुर मेल से वर्धा रवाना।

बिलासपुर, नागपुर, वर्धा, २-७-३७

बिलासपुर में कई लोग मिलने आये। कई मित्र—शुक्लाजी, डागाजी आदि मिलने आये। नागपुर में भी कई मित्र मिले।
वर्धा पहुंचे। चि० सावित्री व कमल को बंगले उतारकर फिर स्टेशन। ग्रान्ट ट्रंक से पं० जवाहरलाल व मौलाना आजाद आये। राधाकृष्ण से बातें।
विवाह निमित्त भोजन।
जवाहरलाल व मौलाना आजाद के साथ सेगांव गये। रात को १० बजे बाद वहां से वापस आये। सबों से मिलना-बातें।

वर्धा, ३-७-३७

दुकान पर चि० मदालसा के विवाह की व्यवस्था, विचार-विनिमय।
श्री शीतलप्रसाद श्रीवास्तव से कानपुर के सम्बन्ध के बारे में बातचीत।
पत्र-व्यवहार केशवदेवजी को श्रीकृष्ण के बारे में, दयाशंकर, नर्मदा को,

बालकृष्ण शर्मा को विमला के व धर्मनारायणजी को श्रीमन के बारे में खास लिखना पड़ा।

श्री जाजूजी व किशोरलाल भाई से जमनालाल सन्स के बारे में विचार-विनिमय। पं० जवाहरलालजी, मौलाना आजाद सेगांव से बैलगाड़ी व मोटर में आये। उनसे बातें।

चि० सावित्री का स्वास्थ्य थोड़ा ठीक नहीं था। ज्वर मालूम दिया। शाम को ठीक लगी। विवाह के तार-पत्र देखे।

चि० जयकृष्ण, रुक्मणी मिलने आये। लड़की अच्छी मालूम हुई।

४-७-३७

जवाहरलाल, मौलाना आजाद सेगांव गये। शाम को आये।

सरदार व भूलाभाई बम्बई से आये। शाम को सेगांव गये-आये।

राजेन्द्रबाबू आये, शरदबाबू भी।

शाम को भैया बन्धु के यहां मित्रों ने कमल, सावित्री, जयकृष्ण, रुक्मणी को भोज दिया। वहां गये। ठीक व्यवस्था थी। जवाहरलालजी, मौलाना आजाद, खान साहब आदि भी भोजन को गये थे।

५-७-३७

वर्किंग कमेटी का काम ९ से ११। व १।। से ६।। तक। रात में भी विचार-विनिमय।

आज बापू नहीं आये—सदस्य जवाहरलाल, मौलाना आजाद, राजेन्द्रबाबू, सरदार वल्लभभाई, खान अब्दुल गफार खां, सरोजनी, जमनालाल, नरेन्द्रदेव, शंकरराव देव, पटवर्द्धन, भूलाभाई, कृपलानी। दोपहर के बाद गोविन्द वल्लभ पन्त आये। निमंत्रण से राजाजी व शरदबाबू हाजिर थे।

६-७-३७

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११।। व १।। से ७ तक। रात को ८।। से १० तक फिर हुई। १०।। घंटे बैठक हुई। ऑफिस लेने आदि के बारे में ठीक चर्चा, विचार-विनिमय बापू के ठहराव पर। जवाहरलाल भी दूसरा ठहराव बनावेंगे।

७-७-३७

सुबह हिन्दी प्रचार संस्था की ओर से पू० बापूजी के हाथ से प्रचार-

विद्यालय खोला गया। राजेन्द्रबाबू, काकासाहब व बापू बोले। पदमपतजी व मेरी सहायता की घोषणा बापूजी ने की।
वर्किंग कमेटी ८-१२ व २ से ६ तक हुई—ग्यारह घंटे तक। जवाहरलालजी ने अपनी स्थिति कही। आखिर में बापू व जवाहरलाल दोनों का मिला हुआ प्रस्ताव मंजूर हुआ। नरीमान व वल्लभभाई प्रकरण। खरे के व्यवहार के बारे में थोड़े में सब स्थिति कही। पूनमचन्द प्रकरण तथा सोनक आदि के बारे में भी वर्किंग कमेटी के सामने कहा। मैं क्यों त्यागपत्र देना चाहता हूं, यह भी कहा। देर तक विचार-विनिमय।
वर्किंग कमेटी ने ऑफिस लेने का ठहराव मंजूर किया।
जलियानवाला बाग कमेटी की सभा हुई।
हिन्दी प्रचार की इनफार्मल सभा सुबह व रात देर तक हुई। राजेन्द्रबाबू, काकासाहब, सत्यनारायणजी, हरिहर शर्मा आदि थे।

८-७-३७

नर्मदा के सम्बन्ध के बारे में कलकत्ता टेलीफोन किया।
वर्किंग कमेटी। सुबह ८-१२ व १२ से ५॥ तक चलती रही।
जवाहरलालजी ७-५० की गाड़ी से प्रयाग रवाना हुए।
हिन्दीप्रचार सभा का कार्य श्री टण्डनजी, काकासाहब, सत्यनारायणजी, अण्णा के साथ १० बजे रात तक हुआ।

९-७-३७

किशोरीलाल भाई व जाजूजी से बातें करके भूलाभाई व सरदार से बातें। नागपुर प्रान्तीय कमेटी को जो पत्र भेजना था, उस पर दादा धर्माधिकारी के साथ विचार-विनिमय।
चि० अनसूया, नर्मदा आदि से बातें। थोड़ी मदालसा से भी।
सेगांव—हिन्दी प्रचार सभा का कार्य पू० बापूजी की उपस्थिति में पूरा हुआ। टण्डनजी हाजिर थे। टण्डनजी रात को प्रयाग गये।
मौलाना अबुल कलाम व नागपुर वाले रजाक व डा० हुसेन से बातें।
भूलाभाई व सरदार आज गये।

१०-७-३७

मौलाना अबुल कलाम मेल से गये।

दुकान पर विवाह की व्यवस्था का कार्य किया। काकासाहब आदि से विवाह-पद्धति की चर्चा।
भगनी सेवा मंदिर विलेपार्ले के ट्रस्ट की सभा। बापू सेगांव से आये, बम्बई से गोकुलभाई, चितलिया, मणीबेन, नानावटी, कुंवर बहन वकील, पेरीनबेन, देवयानी आदि आये।
चितलिया अव्यावहारिक मालूम हुए। उनको त्यागपत्र देना पड़ा। स्वीकार हुआ। मेरा त्यागपत्र कबूल नहीं हुआ।
शाम को ग्राण्ड ट्रंक से जनेत, श्रीमन्, उनके पिता, माता आदि आये।
रात को मदालसा देर तक रोती व हंसती रही।
चि० गजानन्द, हिम्मतसिंगका से बातें।

११-७-३७

रात को डेढ़ घंटे के करीब ही सोने को मिला। सुबह जल्दी उठना। प्रार्थना, मदालसा के साथ गीताई-पाठ। मदालसा को समझाना।
मदालसा के विवाह की तैयारी। ६। बजे दुकान पर (गांधी चौक) पहुंचे। सात बजे से विधि शुरू हुई।
पू० बापूजी, विनोबा की हाजिरी में विवाह सम्पन्न हुआ। ठीक समुदाय जमा था।
वहीं पर सबों ने एक पंगत में बैठकर भोजन किया।
चि० नर्मदा की सगाई, कलकत्ता वाले चि० गजानन्द (प्रभुदयालजी हिम्मतसिंगका के पुत्र) के साथ की। कलकत्ता टेलीफोन से प्रभुदयालजी की स्वीकृति ले ली थी।
विवाह सम्पन्न होने के बाद वर्षा आदि शुरू। बहुत जोर से पानी पड़ा। बरात के लोगों के जीमने में कष्ट पहुंचा। सब मकान पानी से भर गये। रामकिसन डालमिया से देर तक बातचीत। वह दोपहर की एक्सप्रेस से गये। शारदाबहन बिड़ला, वेंकट पित्ती, रमा जैन आदि भी आये थे।

१२-७-३७

प्रार्थना। चि० मदालसा को आज मैनपुरी विदा करने की तैयारी। उसको बरात के साथ ग्रान्ड ट्रंक से विदा किया। गाड़ी लेट आई। ठीक विनोद-प्रमोद रहा।

सीता देवी (भारतन की पत्नी) आई।
पवनार मोटर बस व मोटर से सब पार्टी मिलकर गये। नदी का दृश्य सुन्दर देखने योग्य था।
शारदाबहन बिड़ला, चम्पाबहन, वेंकटलाल, प्रह्लाद मेल से बम्बई गये।
रात को भोजन के बाद गिरधारी, नर्मदा, सावित्री केडिया के भजन वगैरा हुए। विनोद रहा।

१३-७-३७

चि० नर्मदा व गजानन्द हिम्मतसिंगका के साथ घूमने जाना। दोनों से विचार-विनिमय। नर्मदा को २२ वर्ष श्रावण में पूरे होवेंगे। गजानन्द का तीसवां वर्ष चल रहा है।
दोपहर को पत्र ठीक भेजे गये। चि० रामेश्वर नेवटिया का स्वास्थ्य खराब रहने के कारण उसे ४-६ रोज यहीं रहने को कहा।
डा० बतरा, बिजाणी, गांधी (नागपुरवाला), डा० महोदय आदि से बातचीत।
रात ९।। बजे तक गिरधारी, सावित्री केडिया, उमा, नर्मदा, रमा, प्रभा, बंगाली मित्र का गायन, विनोद हुआ। चर्खा।
आज का दिन व रात एक प्रकार से विचार-चिंता में बीता।

१४-७-३७

चि० नर्मदा व गजानन्द के साथ घूमना। महिला-आश्रम जाना। किशोरी, भागीरथी बहन आदि से मिलना।
चि० सावित्री व कमल से बातें।
सावधान केस—सुबह करन्दीकर ने पढ़कर सुनाया। शाम को बडकस, करंदीकर, कालूराम, पूनमचन्द वगैरा के साथ देर तक विचार-विनिमय।
भारतन व उनकी पत्नी सीतादेवी को भोजन के लिए बुलाया। भोजन के बाद गायन, विनोद, प्रमोद रात १० बजे तक चलता रहा।
आज नागपुर में कांग्रेस की मिनिस्ट्री ने चार्ज लिया।

१५-७-३७

सावधान केस में आरोपी की ओर से श्री गोविन्दराव पाण्डे ने जिरह की। उन्हें मनोहर पन्त व कोल्हे मदद करते थे। अपनी ओर से मि० सालवे,

बडकस, करन्दीकर थे।
गजानन्द, नन्दू, सावित्री, नर्मदा आदि से थोड़ी बातें।

१८-७-३७

४ बजे प्रार्थना। थोड़ा घूमना। गजानन्द से बातें। ग्रान्ड ट्रंक से वह गया।
श्री केशवदेवजी व आबिदअली बम्बई से आये। उनसे कार्य-व्यवहार तथा चि० श्रीकृष्ण वगैरा के सम्बन्ध में सुबह व शाम बातचीत। वह मेल से वापस बम्बई गये।
श्री ब्रिजराज नेहरू के साथ भोजन, बातचीत। ठक्कर बापा भी आज आ गये।
बिहटा व पटना के बीच पंजाब हावड़ा एक्सप्रेस की दुर्घटना की खबर सुनी, दु:ख व मन को झटका पहुंचा।

१९-७-३७

श्रीराम की पढ़ाई, बम्बई जाने के बारे में, जानकी देवी से मतभेद, मेरे व्यवहार आदि। केशर से बातें।
चित्रा केस ७। से ९।। तक पढ़ा, सुना, विचार किया।
नागपुर से दाण्डेकर आया, थोड़ी बातें।
१२ बजे कोर्ट गये। मि० जयवन्त व उसके वकीलों ने कहा कि वे केस ट्रांसफर करना चाहते हैं। कोर्ट ने उन्हें समय दिया और कहा स्टे आर्डर ले आओ। वह नहीं ला सके। बाद में कोर्ट ने कहा, केस चलाओ। उनके इन्कार करने पर मेरा क्रास पूरा समझा गया व छुट्टी दी गयी। दूसरे गवाह के लिए १६ अगस्त तारीख मुकर्रर हुई।
पूनमचन्द से जमनालाल सन्स कम्पनी के बारे में व अन्य विचार-विनिमय।
गांव के मकान में गये। जानकी का स्वास्थ्य देखा। थोड़ी देर बैठना।
बंगले पर गंगाबाई व दुबे रिटायर्ड तहसीलदार आदि से बातें।
आज मन दुखी व अशान्त रहा। केशर व जानकी के कारण।

२०-७-३७

आज देर से उठना हुआ। वल्लभ जाजू आदि से बातें। बिहार वालों से बातें। आश्रम गये।

किशोरी व चौथमल आज ग्राण्ड ट्रंक से गये। भागीरथीबहन से बातचीत।
बच्छराज सन्स व ज़मनालाल सन्स के बारे में विचार-विनिमय व निश्चय। जाजूजी, पूनमचन्द, कमलनयन व करंदीकर के साथ कम्पनी करने का निश्चय हुआ व नीचे मूजब शेअर देने का तय किया—
जमनालाल १।। लाख, कमलनयन १।। लाख व २५ हजार उसके शिक्षण निमित्त, सावित्री २५ हजार, रामकृष्ण १।। लाख व २५हजार उसके शिक्षा, विवाह तथा विवाह के बाद उसकी पत्नी के लिए २५ हजार, कमला २५ हजार, मदालसा ५० हजार, उमा ५० हजार।[1]
जानकी यदि लेना चाहे तो उसके पास जो दूसरे शेअर हैं, उनकी जगह ये शेअर देना। नानू को एक हजार के शेयर देने बाबत विचारना है। धर्मार्थ ट्रस्ट के लिए इस्टेट अलग निकालना है। जाजूजी व पूनमचन्द के जिम्मे यह काम किया गया।
पत्र-व्यवहार में चि० सावित्री व कमल से भी मदद ली।
मकान पर ज़ानकी व कमला से बातें। आज जो निश्चय हुआ, वह समझाकर कहा। वहीं भोजन, मन तो खास नहीं था।

२१-७-३७

विनोबा के पत्र के जवाब में उन्हें पत्र लिखा। गंगाबाई के बारे में ज्यादा गहराई में जाने की मेरी इच्छा व उत्साह नहीं। उनका पत्र आया कि मुझे जाना ही होगा।
मौलाना आजाद बम्बई से आये। उनसे मद्रास, बम्बई, नागपुर, यू० पी०

---

१. जमनालालजी ने जमनालाल संस प्राइवेट लि० घरू कम्पनी बनाई, जिसमें खुद होकर लड़कों के अलावा लड़कियों व बहुओं का भी हिस्सा रखा था। पिता की संपत्ति में लड़कियों का हिस्सा रहे, यह कानून तो स्वराज्य मिलने के बाद बना। पर जमनालालजी ने उसपर पहले से ही सोच-विचार कर अमल किया था। लड़कियों के अलावा उन्होंने बहुओं का भी हिस्सा रखा। वे चाहते थे कि स्त्रियां भी अपने पैरों पर खड़ी रह सकें और किसीकी मोहताज न रहें। नानू का भी, जो उनका व्यक्तिगत सेवक था, उनके मन में ख्याल था। उसे बाद में दूसरी कंपनी के शेयर दिये गए।

मिनिस्ट्री, एलाउन्स आदि की बातें।
सेगांव—मौलाना व मैं बैल गाड़ी से गये। वर्षा खूब जोर की पड़ चुकी थी और थोड़ी आ भी रही थी। रास्ते में गाड़ी का चाक निकल गया। पहुंचने में देर। वहां बापू से मौलाना की व मेरी बातचीत। बापू भी थके हुए मालूम हुए। बापू से किशोरलालभाई व पंडितजी के पत्रों पर विचार। योगा के सम्बन्ध के बारे में उन्होंने पत्र लिखकर दिया। गंगूबाई को भी पत्र लिखकर दिया। बंगले पर मौलाना से ठीक-ठीक बातें।
आखिर गंगूबाई ने भावी व्यवस्था के बारे में स्वीकार किया।

२२-७-३७

दादा धर्माधिकारी से अच्युत धर्माधिकारी की मृत्यु के बारे में बातें।
मौलाना आजाद से बातें। उन्हें स्टेशन छोड़ा। वह इलाहाबाद गये।
नालवाड़ी-विनोबा से गंगादेवी की हालत पर देर तक विचार-विनिमय। मेरी योजना उन्होंने पसन्द की। चि० योगा के बारे में बापू का पत्र भी उन्होंने पसन्द किया।
दुकान—बच्छराज जमनालाल के काम की सभा हुई। चि० कमल भी हाजिर था।
श्री जानकी देवी, केशर, नर्मदा से बातें। गंगादेवी से बातें हुईं। उसका खुलासा परिचय।
विश्वासराव मेघे, उसकी माता पार्वती बाई व वेंकटराव आये। उनका खाता मंदिर में डालने का विचार।
पत्र-व्यवहार—सावित्री से पत्र लिखवाये।
गंगादेवी को बापू के पास सेगांव भेजा।

नागपुर, २३-७-३७

मोटर से नागपुर जाना।
चि० सावित्री व कमल भी साथ थे। रास्ते में बालकपन की बातें।
पी० एस० पाठक का परिचय। दरबार, रायबहादुरी, पार्टी वगैरा का खुलासा।
अम्बाझरी तालाब, तैलनखेड़ी टैंक देखते हुए नागपुर पहुंचे।
पूनमचन्द रांका के घर भोजन। उन्होंने अपनी स्थिति कही।

राजनांदगांव की अग्रवाल बाल विधवा लड़की के भाई से मिलना हुआ। अवारी व घटवाई मिले।
आफिस की जगह देखी। वृद्धिचन्दजी पोद्दार से मिले। उनके साथ धर्मपेठ, अम्बाझरी (जहां वह रहते हैं) व कामठी के रास्ते की जगह देखी। उसपर विचार-विनिमय। कीमत, वह रहते हैं उस बंगले की जमीन-सहित पचास हजार-अन्दाज। धर्मपेठ की जगह ११ एकड़ का १० हजार। हाउसिंग कम्पनी की शाखा खोलने का निश्चय हुआ। गिरधारी, द्वारकादास, पूनमचन्द साथ थे।
अभ्यंकर मेमोरियल सभा का कार्य छगनलाल के घर पर हुआ। सदस्य व सेक्रेटरी ज्यादा उत्साह नहीं ले रहे हैं।
श्री पटवर्धन से वातचीत। परिणाम कुछ नहीं आया। मोटर से वापस वर्धा। केलझर के डाक बंगले में भोजन किया।

२४-७-३७

वालासाहव से नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस के सम्बन्ध में चर्चा। लक्ष्मीनारायण मंदिर की सभा।
शंकरराव वैंकर व रामनाथम् मिनिस्टर से बातें।
बम्बई जाने की तैयारी। एक्सप्रेस से रवाना।

२६-७-३७

सुव्रता बाई रुइया से २ घंटे बातें—मदन रुइया के बारे में, राधाकृष्ण की सगाई व अन्य।
सरदार वल्लभ भाई के यहां भोजन व बातें। सर चुन्नीलाल आ गये थे।
रजिस्ट्रार की कोर्ट में रुइया कालेज व वार्डन रोड बंगले के दो टायटल रजिस्टर किये।
ऑफिस में लाला मुकन्दलाल (लाहौर वाले) आदि से बातें।
अम्बालाल सॉलिसिटर (मणीलाल खेर) से बातें।
बच्छराज सन्स या जमनालाल सन्स के बारे में खुलासा बातें। चि० कमलनयन, केशवदेवजी, पूनमचन्द साथ थे। नासिक धर्मशाला के बारे में भी चर्चा।
बिड़ला आफिस में रामेश्वरदासजी से बातें।

गोविन्दलालजी के बंगले। वहीं भोजन व देर तक बातचीत। पद्मा से बातें, चि० शांति व मन्नू से भी।

२७-७-३७

नागरमलजी (बम्बई वाले), गिरधारीलाल (लाहौर वाले), मदन, वेंकट पित्ती वगैरा कई जने मिलने आये। सुलोचना भी साथ में थी।

हिन्दुस्तान आयरन कम्पनी के आफिस गये। वहीं शुगर कम्पनी की बोर्ड की मीटिंग हुई।

जमनादास गांधी से हिन्दुस्तान आयरन के बारे में बातचीत।

डा० पटेल से जुहू जमीन व अन्धेरी सिनेमा कम्पनी की जमीन के बारे में व नई क्लीनिक की बातें कीं।

रामेश्वरजी बिड़ला से गोपा-गजानन्द, लोहे की कम्पनी, जुहू जमीन, बच्छराज कम्पनी, शुगर कम्पनी आदि के बारे में बातें। उनके विचार जान लिये।

२८-७-३७

प्रार्थना, घूमना। नर्मद वैद्य से बातें। उसे ता० १ अगस्त से एक वर्ष के लिए पचास रुपये मासिक से वल्लभ दास की जगह रखने का निश्चय हुआ।

केशवदेवजी, श्रीगोपाल, रामेश्वर व जमनादासभाई से बातें—विशेषतया लोहे की कम्पनी के बारे में।

सर इब्राहीम रहीमतुल्ला से मिलना। कांग्रेस मिनिस्ट्री, हाउसिंग कम्पनी आदि के बारे में विचार-विनिमय।

हाउसिंग कंपनी के बोर्ड की मीटिंग हुई। ठीक महत्व का काम हुआ।

अग्रवाल कोष की मीटिंग। वातावरण ठीक किया।

२९-७-३७

लोहे की कम्पनी—केशवदेवजी, जमनादास गांधी, मुकन्दलाल (लाहौर वाले), मूलजी व केशव गांधी से देर तक बातचीत।

हाउसिंग कम्पनी—आबिद अली, मूलजी, केशवदेवजी से बातें।

बच्छराज जमनालाल या बच्छराज सन्स—केशवदेवजी, पूनमचन्द, कमलनयन से बातें।

जुहू जमीन वगैरा के बारे में रकम छुट्टी करने के बारे में भी विचार-

विनिमय।

चि० शान्ता, श्रीनिवास, ब्रिजमोहन मिलने आये। काशीनाथ, इन्द्रमोहन भी मिले।

रामरिछपाल श्रीया, धन्नू दानी मिले। केशवदेवजी से रामरिछपाल ने पन्द्रह हजार लेना है, उस बारे में बातें। उसने सोमवार तक केशवदेवजी का सन्तोष करने को कहा।

सफिया व गनी से मिलते हुए कलकत्ता मेल से सेकण्ड क्लास में मैं डा० जीवराज के साथ रवाना।

इलाहाबाद, ३०-७-३७

डा० जीवराज व मास्टर साठे, भूता कम्पनीवाले आर्किटैक्ट भूता साथ में। कमला मेमोरियल के नक्शे-एस्टीमेट तथा अन्य चर्चा, विचार-विनिमय देर तक होता रहा। इटारसी से डा० चन्द्रकान्त को जीवराज ने तार भेजा।

जबलपुर से कटनी तक आबिदअली से थर्ड क्लास में बातचीत—खासकर हाउसिंग के बारे में।

कटनी से सतना तक श्री माधवराव अणे (यवतमाल वालों) से बातचीत।

इलाहाबाद—जवाहरलालजी स्टेशन पर आये। उनके साथ आनन्द भवन। दूध, फल लिया, कमला मेमोरियल वगैरा के बारे में बातचीत।

इलाहाबाद, ३१-७-३७

चि० डा० चंद्रकान्ता कानपुर से आई। उससे थोड़ी बातें।

डा० जीवराज, भूता, जवाहरलाल आदि के साथ कमला मेमोरियल के बारे में देर तक विचार-विनिमय (प्लान आदि के बारे में) होता रहा।

आबिदअली, जौहरी, मंगलप्रसाद आदि मिलने आये। दोपहर को तीन बजे हाउसिंग कंपनी की ऑफिस की जो इमारत जवाहर स्क्वायर में बन रही है, उसे तथा कायस्थ सोसायटी की जगह वगैरा देखी।

रामनरेश त्रिपाठी के यहां शाम का भोजन, फल वगैरा। उनसे एक घंटे से ज्यादा बातें—उनके 'हिन्दी मंदिर' के बारे में।

साहित्य भवन—के बारे में बृजराजजी से व मार्तण्ड से बातें; परस्थिति समझी, कपिलदेव मालवीय से मामूली बातें।

डा० चन्द्रकान्त से डा० जीवराज से, उसके बारे में बातें, खुर्शेद से भी।

हाउसिंग कम्पनी, कमला मेमोरियल का काम करे या नहीं इसपर विचार-विनिमय।

१-८-३७

प्रार्थना। जवाहरलालजी से बातें—डा० महमूद के टेलीफोन के बारे में तथा मिनिस्ट्री की अन्य कार्य-पद्धति के बारे में।

झण्डावन्दन महम्मद अली पार्क, जवाहर स्क्वायर में राजेन्द्रबाबू के हाथ से हुआ। खादी भण्डार देखा।

कमला मेमोरियल ट्रस्ट की मीटिंग सुवह व रात को देर तक हुई। हिन्दी प्रचार कमेटी का काम १२ से १ तक हुआ। साहित्य सम्मेलन की कार्य-कारिणी १ से २। तक।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थाई समिति २। से ३।। तक। काम ठीक तौर से हुआ। श्री पं० अयोध्या सिंह जी उपाध्याय व रामदासजी गौड़ को मंगलाप्रसाद पुरस्कार, वारह सौ रुपया दिया गया।

जाहिर सभा में गये। ६।। से ८।। तक वहां वैठना पड़ा।

प्रयाग, बनारस, २-८-३७

प्रार्थना, थोड़ा घूमना। डा० चन्द्रकान्ता कानपुर गई।

सत्यवती, शिवमूर्तिसिंह, इनका जमाई तथा लीलावती रुइया वगैरा मिलने आये। डा० जीवराज व भूता वम्वई गये।

जवाहरलाल, राजेन्द्रबाबू व कृपलानी से विचार-विनिमय। वर्किंग कमेटी ता० १७-१ को वर्धा में रखना निश्चय हुआ।

म्युनिसिपल वोर्ड का म्यूजियम श्री व्यास ने दिलाया। ठीक था। जवाहरलालजी की सब चीजें यहां पर रखी हैं।

दीनानाथ तिवारी, सुरेन्द्रनारायण, मजुमदार आदि से मिलकर इलाहाबाद सिटी से १२-४० पर रामनरेशजी के साथ बनारस रवाना। पांच बजे के करीब पहुंचे। रास्ते में आविद अली साथ।

बनारस में हिन्दुस्तान हाउसिंग के वोर्ड की सभा। राजा ज्वाला प्रसाद व श्रीप्रकाशजी आये। देर तक भावी काम के बारे में विचार-विनिमय।

पू० मालवीयजी व गुप्तजी से देर तक बातें।

बनारस, ३-८-३७

रामकृष्ण डालमिया को गया टेलीफोन किया।

मिलने—सुचिता कृपलानी, सरोजनी रोहतगी, चि० कृष्णा, चन्द्रकला, किशोरी उसकी बहिन, महादेवलाल श्राफ, श्रीनाथ सिंहजी, चौथमल, गोपाल बजाज आदि आये। बातचीत।

१२-५८ की गाड़ी से दिल्ली के लिए रवाना। रास्ते में बाबू भगवानदासजी से मिले। जौहरी, आबिदअली, बनारसी आदि बनारस से मुगलसराय तक साथ आये। गाड़ी लेट थी।

प्रयाग में जवाहरलालजी मिले। उन्होंने बापू के नाम पत्र व सन्देश दिया। कृपलानी दिल्ली तक साथ आये। खाना-पीना तथा राजनैतिक व अन्य बातें।

कानपुर—डा० जवाहरलालजी, महेन्द्र, सिद्धगोपाल वगैरा मिले।

दिल्ली, ४-८-३७

दिल्ली पहुंचे। हरिजन कालोनी गये। बापू से बातें। बापू ११॥ से १ तक वायसराय से मिले।

श्री रघुवीरसिंह जी (दिल्ली कश्मीरी गेट) के घर भोजन, बातचीत। उनके पिता से ठीक परिचय।

५-३५ की ग्रान्ड ट्रंक से बापूजी के साथ थर्ड में वर्धा रवाना।

स्टेशन पर गाडोदियाजी व श्रीराम अग्रवाल वगैरा आये थे। उन्हें कृपलानी ने 'ये रास्कल्स क्यों आये' यह कहा, सो सुनकर बुरा लगा, दुःख हुआ।

बापू ने वायसराय से जो बातें हुईं व उनपर उसका जो असर हुआ, वह बताया।

सरदार नरीमान प्रकरण पर ठीक चर्चा। मैंने दूसरा पक्ष लेकर जो कहना था, सो कहा।

(रेल में), ५-८-३७

बापूजी से सुबह व शाम को बातचीत। विषय थे—

मदालसा, उमा सगाई, डा० बतरा व उनकी पत्नी सेगांव में दो छोटे घर, विनोबा सीकर या सेगांव, हरिहर शर्मा, पारनेरकर, सावित्री व विदेशी वस्त्र प्रयोग, कार्यकर्ताओं का अभाव, आश्रम के नियमों का परिणाम,

मनुष्य की कमजोरी, बापू का भावी प्रोग्राम, आदि-आदि।
नागपुर-वृद्धिचन्दजी पोद्दार, गिरधारी कृपलानी, द्वारकादास भय्या आदि आये।
जमीन मकानों आदि की वातें।
वर्धा पहुंचे। वर्षा थी। वंगले पर बापू थोड़ी देर ठहरे। बाद में सेगांव गये।
चि० नर्मदा का पत्र पढ़ा, विचार व दुःख हुआ। पत्र वम्बई जानकी देवी या कमल के पास भेजने का विचार।

वर्धा, ६-८-३७

प्रार्थना। आश्रम गये। हरिभाऊजी के स्वसुर (भगीरथी बहन के पिता) से मिलना, परिचय। साथ में भोजन।
चि० वासन्ती के स्वास्थ्य का प्रश्न, उससे बातचीत। मानसिक हालत समझी।
पत्र-व्यवहार। चर्खा।
ज्योत्सना व उसकी मित्र आई—भोजन, वातें।
जाजूजी से व बाद में चिरंजीलाल से वातें।

७-८-३७

पू० विनोबा से विचार-विनिमय देर तक। ठीक विचार।
राजकुमारी अमृतकौर भी बम्बई से आई और सेगांव गई।
सेनापति वापट मिले।
बाबा सा० देशमुख व दादा से नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के बारे में बातें।
बापूजी का व विनोवा का पत्र पारनेरकर-रामेश्वरदास के बारे में देखा।
वाद में बापू के नाम का पत्र लिखकर सेगांव भेजने को दिया।
जानकी देवी को बंगले पर रहने को समझाया। फिकर रही।

८-८-३७

श्री एन्ड्रूज वम्बई से आये, सेगाँव गये-आये।
अभ्यंकर मेमोरियल की सभा वर्धा में हुई। देर तक चर्चा, विचार-विनिमय-वगैरा होता रहा। डा० सोनक व ट्रस्ट डीड पर ही अधिक समय गया।
नागपुर प्रान्तीय सभा के बारे में कुछ सदस्यों ने अपने विचार कहे।

चतुर्भुजभाई जसानी आदि से बातें।

९-८-३७

घूमना, नालवाड़ी तक। जानकी साथ में। विनोवा के साथ बातें। डा० खरे आज नहीं आ सके।

दाण्डेकर, अंबुलकर अवारी से देर तक बातचीत। काकासाहब व राधाकृष्ण से बातें।

आन्डमन के राजनैतिक कैदियों के बारे में विरोध-सभा, टाउन हाल में, मेरे सभापतित्व में हुई।

श्री एन्ड्रूज मुख्य वक्ता थे। सेनापति बापट भी हाजिर थे।

चि० सावित्री का आज जन्म-दिन था। ये लोग पवनार हो आये। दालबाटी चूर्मा की रसोई घर पर बनी थी।

श्रीमन्नारायण ने अपनी कविता 'रोटी की राग' रात को थोड़ी देर पढ़कर सुनाई।

१०-८-३७

महिला आश्रम जाकर वासन्ती को देखा। उसे प्रयाग का पत्र दिखाया, समझाया। ज्वर कम होने पर नागपुर जाने का निश्चय। आशाबहन व भागीरथीबहन से वातें—वासन्ती के बारे में।

श्रीकृष्ण प्रेस को बढ़ाने के बारे में काकासाहब, जाजूजी, पूनमचन्द, कालूराम, आदि के साथ विचार-विनिमय।

पद्मावती (कर्नाटक) मिलने आई। भावी प्रोग्राम के बारे में विचार-विनिमय।

श्री रविशंकर शुक्ल मिनिस्टर, शिक्षा विभाग, बापूजी से मिलने आये, बातचीत, विचार-विनिमय, विनोद।

डा० खरे व पटवर्द्धन नागपुर से खास मिलने आये। डा० खरे का कहना हुआ कि मैंने जो पत्र लिखा है, उसे मैं वापस ले लूं। उन्होंने अपना दुःख व क्षमा आदि की बातें कीं, और कहा कि मुझे प्रान्त की जिम्मेदारी ले लेनी चाहिए, आदि। बहुत देर तक विचार व खुलासा। मैंने अपना दुःख फिर से कहा।

बाबा सा० देशमुख (विरुल वालों ने यह व्यवस्था सुझाई थी। सब मिलकर

भोजन, विनोद बातें।

११-८-३७

लाली की वर्षगांठ घर पर। सुबह उसे व कुछ और लोगों को भोजन करने बुलाया।

श्री आर्यनायकम्, श्रीमन, आशावहन से नवभारत विद्यालय के बारे में देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

बैरिस्टर गोविन्दराव देशमुख आये। अभ्यंकर मेमोरियल का ट्रस्ट डीड तैयार हुआ।

अभ्यंकर मेमोरियल की भी मीटिंग शाम को हुई। ट्रस्ट डीड पास हुआ। डा० सोनक ने अपना त्यागपत्र वापस लिया। सब लोगों के साथ भोजन।

नागपुर प्रान्तीय कमेटी के बारे में श्री दाण्डेकर, अंबुलकर, पूनमचन्द, छगनलाल से विचार-विनिमय।

१२-८-३७

पूनमचन्द रांका से घर-गृहस्थी की बातें।

गौरीलालजी को क्षय का दूसरा स्टेज हो गया, यह सुना। वहां गये, सब हालत जानी।

काकासाहब, सत्यनारायण, श्रीमन से हिन्दी-प्रचार के सम्बन्ध में बातचीत।

श्री दुर्गाशंकर मेहता (मिनिस्टर फायनन्स), श्री गोले (मिनिस्टर आबकारी व रेवेन्यू) आये। बातें।

शाम को 'सावधान-केस' के कागजात देखे, विचार-विनिमय।

१३-८-३७

सरदार वल्लभभाई, बी०एफ० भरुचा मेल से आये। सेगांव गये।

सरदार से भोजन के समय बातें।

'सावधान'-केस के कागजात सुबह पढ़े। १२ से ४।। तक सावधान का क्रास एक्जामिनेशन चला, पाण्डे ने क्रास किया।

डाह्याभाई व पसाभाई के साथ घूमते हुए बातें।

१४-८-३७

स्टेशन गये। जवाहरलाल वगैरा आदि आये।

वर्किंग कमेटी ९ से ११।। व शाम को १।। से ६।। तक हुई। बापू भी हाजिर

थे ।

अण्डमान दिन । गांधी चौक में सभा । जवाहरलाल नेहरू, पटवर्धन, जयप्रकाश, चौयथराम बोले ।

१५-८-३७

श्री खरे व गुलजारीलाल के साथ पैदल बातचीत करते हुए सेगांव के रास्ते जाना व वापस । पू० बापू से व खरे से बातचीत ।
वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११। व शाम को २-६।। तक हुई ।
श्रीकृष्णबाबू व खरे वगैरा आज गये ।

१६-८-३७

वर्किंग कमेटी सुबह ८ से ११। व दोपहर को २ से ७ तक हुई ।
भूलाभाई, दास, वगैरा आज सुबह गये ।
शाम को जवाहरलाल, मौलाना आजाद वगैरा के साथ पवनार घूमने गये । स्थान व मकान पसन्द आया ।
शांति प्रसाद जैन से बनारस बैंक, सीमेन्ट फैक्टरी, सी० पी० बच्छराज कम्पनी के शेयर, प्रभात की सगाई वगैरा के बारे में विचार-विनिमय । गन्ने के भाव व इण्डस्ट्री की चर्चा ।

१७-८-३७

बापू ७।। बजे आये । डा० चौयथराम से बातें खान साहब तथा सिन्ध योजना के बारे में । वर्किंग कमेटी का काम सुबह ८ से ११।। तक व २ से ६।। तक हुआ । बापू पांच बजे तक हाजिर रहे ।
शांति प्रसाद जैन से बातें । वह आज गया ।
नागपुर में आज रात्रि के १ बजे कुन्दनलाल गांधी की मृत्यु २३ वर्ष की उमर में हुई । उसकी मृत्यु के समाचार सुनकर दुःख हुआ । गौरी, मूलचन्दजी बागड़ी की लड़की से उसका विवाह हुआ था । इस लड़के से बहुत ज्यादा आशा की गयी थी ।

१८-८-३७

प्रार्थना । बापू आये । चवड़े महाराज से बातें ।
बापू से देव की सरदार-नरीमान प्रकरण के बारे में मेरे सामने बातें ।
महाराष्ट्र-हिन्दी-प्रचार योजना ।

बापू ने सरदार से व मुझसे नरीमान-प्रकरण के बारे में बात की। सरदार को बहुत चोट पहुंची, दुःख हुआ। रात को दो-अढ़ाई घंटे उनके पास रहे। देव के साथ बातचीत।

जवाहरलालजी वगैरा आज बम्बई गये। राजाजी मद्रास गये।

१९-८-३७

गंगाधरराव देशपाण्डे व स्वामी आनंद का आया पत्र व उन्हें लिखा हुआ जवाब दोनों सरदार वल्लभभाई को दिये—बापूजी को देने के लिए।

खान अब्दुल गफ्फार खान, डा० चौयथराम ग्राण्ड ट्रंक से करांची गये।

कमल मदालसा को लाने मैनपुरी गया। सावित्री आज ठीक मालूम हुई, बुखार नहीं आया।

सेगांव-बापू से बातें। सरदार बम्बई गये। वर्षा आदि जोरों की आई।

सावित्री के पास शंकरलाल बैंकर के साथ भोजन, बातें, ब्रिज।

२०-८-३७

शंकरलाल बैंकर आज लखनऊ गये।

बच्छराज जमनालाल की मीटिंग हुई।

खेती-कम्पनी के बोर्ड की व साधारण सभाएं हुईं।

पत्र-व्यवहार। मथुरादासजी मोहता से बातें।

नवभारत विद्यालय व मण्डल की कार्यकारिणी सभा, ब्रिजलालजी व मथुरादासजी मोहता से उस सम्बन्ध में बातचीत।

२१-८-३७

महिला आश्रम की सभा ८।। से १०।। तक हुई।

डा० गिल्डर व गुलजारीलाल नन्दा बम्बई से आये। बापू का ब्लड प्रेशर ज्यादा—२०० के करीब बताया। चिन्ता, विचार-विनिमय। डा० गिल्डर ने एक छोटा सा स्टेटमेन्ट दिया। वह बंबई गये।

महिला आश्रम में भोजन, भागीरथीबहन के घर, वहां राखी बंधवाई। आशाबहन, मीराबहन, गुलाबबाई ने भी राखी बांधी। सुव्रता बहन व भाग्यवती व केशर की राखी भी बांधी।

वर्धा-नागपुर-वर्धा, २२-८-३७

महिला आश्रम की बहनें व घर के लोग पवनार गये। वहीं दाल-बाटी,

चूरमा का भोजन; खेल वगैरा।

गिरधारी व जानकी देवी के साथ नागपुर। इंजीनियर अभ्यंकर से बात-चीत।

वर्धा आये। वर्षा हो रही थी। गुलाब, राधाकृष्ण, जानकी से वातचीत। जल्दी सोया।

२३-८-३७

चि० राधाकृष्ण रुइया वम्बई से आया।

शाम को ग्रान्ड ट्रंक से रघुवीर सिंहजी दिल्ली वाले सपरिवार आये। उनकी व्यवस्था।

२४-८-३७

मौलाना आजाद वम्बई से आये। निर्मला गांधी भी आयी। शंकरलाल बैंकर लखनऊ से आये और ग्रान्ड ट्रंक से मद्रास गये।

चि० राधाकृष्ण रुइया व रीता से करीब दो घंटे वातचीत, जान-पहिचान, रीता सुशील व प्रेमल लड़की मालूम हुई।

नवभारत विद्यालय में श्रीमन व मदालसा के विवाह-निमित्त सम्मेलन, भोज। वहां सब गये। मौलाना ठीक बोले।

चि० पन्ना कलकत्ता से वम्बई गई। यहां उतर नहीं सकी। विचार व दुःख हुआ।

रघुवीर सिंहजी (दिल्लीवाले) उनकी मौसी सुशीला देवी व उनकी स्त्री प्रेम से वातें।

खानचन्द व पूनमचन्द से चान्दा फैक्टरी के वारे में वातचीत।

२५-८-३७

मौलाना आजाद कलकत्ता गये।

वासन्ती के मित्र सुबोध कुमार राय भी आज इलाहाबाद गये। अरुण भी गया।

दामोदर को ज्वर कम हुआ। पत्र-व्यवहार देखा।

श्री रघुवीर सिंहजी, प्रेमदेवी व सुशीलादेवी से वातें।

नागपुर से सरदार भगवन्तसिंह, शोभासिंह श्रीरघुवीर सिंहजी से मिलने आये। उनकी पत्नी व साली साथ में थी।

चि० मदालसा व गोवर्धन से पत्र-व्यवहार का काम लिया।
चि० रीता व राधाकृष्ण के साथ घूमे। बातचीत।

२६-८-३७

आज मारवाड़ी शिक्षा मण्डल का चन्दा व मेम्बर बनाना शुरू किया। जानकी देवी से पांच सौ रुपये मंगवाये।
पत्र-व्यवहार, चिरंजीलाल बडजाते, पूनमचन्द रांका से बातें। चि० राधाकृष्ण रुइया के बारे में सुव्रता बहन को खुलासेवार पत्र।
चि० रीता व राधाकृष्ण के साथ पवनार गये। ठीक बातें। दोनों ने अपनी प्रसन्नतापूर्वक पूर्ण तैयारी दिसम्बर की बतलाई। श्री घनश्याम सिंहजी, सुशीला देवी, प्रेम देवी, उमा भी वहां आये। वहीं भोजन, बातचीत, विनोद। छगनलाल भारुका भी वहीं मिलने आया। तात्याजी देशमुख से मंदिर के बारे में व्यवस्था संबंधी बातें।
वापस रात में वर्धा आये।

२७-८-३७

सेगांव गये। बापूजी से हंसी व विनोद की बातें। बापू ने छोटे अंगूर खाना स्वीकार कर लिया। राधाकृष्ण रुइया व रीता का परिचय, विनोद। बापू ने शारदा की बात की। पूना व बम्बई जाने का प्रोग्राम बताया। भोजन, आराम, पत्र-व्यवहार।
शिवराजजी, तेजराम, भय्याजी, पूनमचन्द, चिरंजीलाल, देवचन्द वगैरा कांग्रेस के बारे में बात करने आये। विचार-विनिमय।
नालवाड़ी गये। विनोबा से उनके स्वास्थ्य के बारे में बातचीत। स्वास्थ्य ठीक नहीं मालूम हुआ। राधाकृष्ण रुइया व रीता का परिचय। वहां से टेकड़ी पर घूमने गये।
काकासाहब से हीरालालभाई, हिन्दी-प्रचार, भारतीय साहित्य आदि के बारे में देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

२८-८-३७

घूमते हुए मगनवाड़ी गये। रीता-राधाकृष्ण को सब दिखाया। महादेवभाई, दुर्गाबहन, जे० सी० कुमारप्पा, सीतादेवी आदि से मिले। भारतन् का घर देखकर खुशी हुई।

मेल से पूना के लिए रवाना-थर्ड में। श्री रघुवीर सिंह, प्रेमदेवी, सुशीलादेवी रीता, राधाकृष्ण रुइया साथ में।

दादर-पूना, २९-८-३७

कल्याण में श्री रघुवीरसिंहजी, राधाकृष्ण, रीता, सुशीलादेवी, प्रेमदेवी वगैरा उतर गये।

दादर में केशवदेवजी, मुकन्दलाल, जमनादासभाई, प्रह्लाद, फतेचन्द, गंगाबिसन, नर्मदा, राजकुमारजी वगैरा मिले। बातचीत।

दादर से पूना एक्सप्रेस से वापस पूना के लिए रवाना। केशवदेवजी साथ में। कल्याण में सब लोग साथ हो गये।

पूना-सुव्रताबहन से बातें। स्नान, भोजन।

रीता व कमला को साथ लेकर आये।

किकाभाई व लेडी लीली बहन आदि से देर तक बातचीत। माणकलाल व मीराबहन से मिलना। बातें, किशोर के बारे में व रमेश की मृत्यु के बारे में।

३०-८-३७

केशवदेवजी श्रीकृष्ण से मिले। खंडूभाई के साथ मंगलदास पकवासा व मावलंकर से मिलना।

रीता, रघुवीर सिंहजी, मदन, राधाकृष्ण, प्रेमबहन, सुशीलादेवी वगैरा से बातचीत। सुव्रतादेवी की शंकाओं का समाधान।

रीता व राधाकृष्ण की सगाई का नेगचार करके सगाई पक्की हुई।

गंगाधरराव देशपाण्डे के साथ कौंसिल में गये। कई मित्र मिले। कौंसिल की कार्यवाई देखी। शंकरलाल बैंकर से बातें।

पूना-घोंड नदी, ३१-८-३७

फिरोदिया व नगीनदास मास्टर मिले। बाद में मावलंकर व मंगलदास पकवासा मिलने आये। देर तक बातचीत।

घोंड़ नदी—पूना से ४२ मील पर सावरगांव के पास—गये। चि० राधाकृष्ण रीता साथ में। श्री मोतीलालजी सारडा के घर चि० मीरा व उसकी मां से मिले। वहीं पर भोजन। इकट्ठा हुए लोगों को कांग्रेस मेम्बर होने को कहा।

पेरीनबहन व नरगिस मिलने आई। नरीमान-प्रकरण के बारे में उन्हें बहुत समझाया।

गंगाधरराव देशपाण्डे, देव व श्रीगोपाल से मिले। श्री रघुवीर सिंहजी मद्रास गये।

कीकाभाई के घर फलाहार वगैरा।

पूना-बम्बई, १-९-३७

सुव्रतावहन से चि० मदनमोहन व कान्ता के सम्बन्ध में बातें। मैंने आखिर अपना फैसला दे दिया।

बालासाहब सोमण से स्टेशन तक बातचीत।

नरीमान मिलने आये। उन्होंने भाकरजी के बारे में राय पूछी। बापू को संदेश दिया।

गुलजारीलाल व अन्य मित्र मिले।

रेल में—मंगलदास पकवासा, मीट्ठूबहन पेटिट व शंकरलाल बैंकर से दादर तक बातचीत।

दादर उतरकर बम्बई में रामनिवास रुइया के पास ठहरे। रामेश्वरजी बिड़ला के साथ भोजन व बातचीत।

मटूभाई जमीयतराम के आफिस में जाकर हरनंदराय सूरजमल का अंधेरी वाला बंगला ईस्ट इंडिया को बेचा। उसपर सही की।

कम्पनी के आफिस में आबिदअली, मुकन्दलाल आदि से बातचीत।

मदनलाल पित्ती से देर तक उसके सम्बन्ध आदि के विचार जाने।

छोटेलालजी की मृत्यु का तार वर्धा से मिला। दुःख हुआ, विचार रहा।

बम्बई, २-९-३७

मंगलदास पकवासा व उनके बड़े लड़के अरविन्द से मिलना, बातचीत।

मंगलदास पकवासा के साथ मीट्ठू बहन, दिनशा पेटिट सालिसिटर व रुस्तमजी पाठक से मिलना-बातचीत।

आबिदअली से हाउसिंग कम्पनी के बारे में बातचीत।

चि० रामनिवास व मदनमोहन से बातचीत। बाद में चि० मदनमोहन के आग्रह से चि० कान्ता मुडगांवकर से मिलना। उन दोनों के हृदय की, व मानसिक हालत जानी। वह सब चि० रामनिवास से कह दिया।

कल उपवास करना भूल गये थे सो आज किया। फलाहार।

केशवदेवजी, मुकन्दलाल, जमनादास गांधी आदि से मुकन्द आयर्न व केस के वारे में बातचीत-खुलासा।

मदन पित्ती से अहमदावाद के वारे में खुलासा।

चि० नर्मदा, सफिया, शार्दुल्ला, मरियम से मिलना। शान्ताक्रूज का अपना नया मकान व शार्दुल्ला का बंगला देखा।

गौरीशंकरभाई, केशर, पन्ना, ब्रिजमोहन विड़ला आदि से भी मिले।

३-९-३७

चि० घन्नू से वातें, घूमना। मोंघी वहन हीरालाल शाह मिलने आई। उसने अपनी स्थिति कही। वाद में दिनशा पेटिट सालिसिटर व मिट्ठू-वहन पेटिट मिलने आये।

खुर्शेदवहन से कमला मेमोरियल के वारे में बातचीत। ब्रिजमोहन विड़ला व रामेश्वरदासजी से वातचीत—माणिकजी पेटिट की जमीन व अन्य बातें।

वच्छराज कंपनी व हाउसिंग के शेअर के वारे में भी वातें।

वच्छराज कम्पनी व वच्छराज फैक्टरी की वोर्ड मीटिंगें हुईं।

मंगलदास पकवासा, रामनारायण पोद्दार, अमोलकचन्द चतुर्भुजजी, रामेश्वर, सुशीला, शान्तावहन, भाग्यवती आदि से मिलना।

रात को ६-५ की नागपुर-एक्सप्रेस से वर्धा रवाना। चि० गंगाविसन व श्रीकृष्ण साथ में।

भुसावल-अकोला वर्धा, ४-९-३७

रास्ते में चि० श्रीकृष्ण नेवटिया से उसके भावी प्रोग्राम, व्यापार व सगाई-विवाह, गोद आदि के वारे में विचार जाने। मेरी राय कही। बनारस के सम्वन्ध का विचार।

चि० गंगाविसन बजाज से जीन प्रेस, वच्छराज फैक्ट्री, जावरा जीन व मोरशी प्रेस की जमीन बेचने के बारे में तथा लोकल कमेटी (बोर्ड) के जरिये फैक्ट्री का काम करने का निश्चय, विचार-विनिमय।

बडनेरा से चि० पार्वती, छुट्टी के कारण, विना सूचना के साथ आई। अकोला से कोटेपूर्णा स्टेशन तक चि० तारा व सुशीला साथ आईं। तारा

के स्वास्थ्य व सुशीला की घर की स्थिति समझी।
वर्धा पहुंचे।

वर्धा, ५-९-३७

चि० श्रीकृष्ण नेवटिया, मदालसा, श्रीमन, काकासाहब, नाना आठवले साथ में। बापू खूब थके हुए मालूम हुए।
ब्लड प्रेशर १६५-१०५ था। पल्स भी ठीक थी, तथापि थकावट खूब थी। आते समय रेंगी में आये।
सावधान केस के कागजात वगैरा देखे। आशाराम राठी यहां काम सीखने आया।

६-९-३७

सावधान केस के कागज देखे। कोर्ट में १२ बजे गये तो आरोपी की ओर से बीमारी का सार्टिफिकेट (प्रमाणपत्र) पेश हुआ। ता० २२ व २३ मुकर्रर हुई।
श्री मथुरादास मोहता से उनके कारखाने में मिले—चिरंजीलाल बड़जाते साथ में। खासकर मारवाड़ी शिक्षा मण्डल व नवभारत विद्यालय की सहायता के बारे में बहुत देर तक बातचीत। मैंने उन्हें कहा कि ५ वर्ष तक दस-दस हजार की जिम्मेवारी आप ले लें। जब उनका इतना उत्साह नहीं दिखा तो कहा कि पांच हजार साल की जिम्मेवारी आप ले लें व पांच की मैं लूं। आखिर फिलहाल तो उन्होंने इस वर्ष से दो हजार सालाना पांच वर्ष तक देने का निश्चय किया है, ज्यादा के लिए बाद में विचार करने का निश्चय हुआ।

७-९-३७

बहुत से पत्रों का जवाब आज चला गया।
अभ्यंकर ट्रस्ट डीड के लिए स्पेशल पावर रजिस्टर कराकर दाण्डेकर के नाम नागपुर भेजा।

वर्धा-नागपुर, ८-९-३७

चि० गंगाबिसन व श्रीकृष्ण वगैरा के साथ नागपुर वृद्धिचन्दजी पोद्दार, पुलगांव मिल, नागपुर-वर्धा जीन प्रेस व नागपुर जमीन वगैरा की बातचीत। मकान के लिए रुपयों की व्यवस्था नहीं हो सकेगी, यह कह दिया। छगनलाल

भारुका की जायदाद मार्टगेज रखने के बारे में बातचीत। कानूनी अड़चन न हो तो रखने का निश्चय। ६।।। टका ब्याज, साल में दो बार आठ किस्त आदि। गिरधारी के साथ हिन्दुस्तान हाउसिंग की ऑफिस देखी। काम थोड़ा समझा। खर्चा ज्यादा बढ़ा रहा है; उसे मामूली सूचना। रामेश्वर अग्रवाल के घर चि० शान्ता वगैरा से मिलना। डा० खरे से मिलना।
जवाहरलाल व इन्दिरा को लेकर मोटर से वर्धा रवाना। पवनार में यमुना कुटी इन्दिरा को दिखाई, व्याख्यान हुआ।
वर्धा—सबों के साथ भोजन हिन्दी, उर्दू, प्रायमर आदि पर विचार-विनिमय।
महादेवभाई ने सेगांव की चिंता दूर की। दूर की रिपोर्ट दी।

वर्धा-सेगांव, ९-९-३७

पं० जवाहरलाल नेहरू व चि० इन्दिरा के साथ नाश्ता। ७।। बजे सुबह त्र्यंबक की मोटर से सेगांव गये। वहीं २।।। बजे तक रहे। बापू कमजोर मालूम हुए। वहां का वातावरण ठीक करने का प्रयत्न। प्यारेलाल का आज सातवां उपवास था। उससे देर तक बात करके उपवास छुड़वाया। एक बार नानावटी को मैनेजर मुकर्रर किया। बापू से व अन्य लोगों से बातचीत।
जवाहरलाल व इन्दू वापस आते समय थोड़ी दूर तक बैलगाड़ी में घर वापस आये।
चाय-पार्टी में थोड़े मित्र भी आये थे। बिहार का फैसला उन्हें दिखाया। दोनों को ठीक नहीं मालूम हुआ।
जवाहरलाल, इन्दू को मगनवाड़ी दिखाते हुये स्टेशन। मेल से वे बम्बई गये, थर्ड क्लास से।
अवारी से देर तक बातचीत। उसे कह दिया, पचास की और सहायता देकर अब मेरा सम्बन्ध नहीं रहेगा।

१०-९-३७

चि० श्रीकृष्ण की सगाई के बारे में बातचीत, विचार-विनिमय।
श्री मोहनलाल टिबड़ेवाला व जबलपुरवाले आये। देर तक बातचीत करते रहे। उन्हें समझाया कि जब झूठा मुकदमा है, तो तुम्हें घबराने का

क्या कारण है। कागजात देखने से लगा कि केस खारिज होना चाहिए।
चांदा मैच फैक्टरी के बारे में कुमारप्पा की रिपोर्ट पढ़ी। थोड़ा दुःख हुआ—कालूराम के बर्ताव आदि के बारे में।
श्री कोटीजी से पवनार के बारे में व शिक्षण के बारे में बातचीत।
पू० विनोबा के पास, चि० श्रीकृष्ण नेवटिया व लाली साथ में। देर तक बातचीत।
चि० कमल व सावित्री कलकत्ता से मेल से आये। दादा के यहां गणपति के आगे बालकों का अभिनय।

११-९-३७

बच्छराज जमनालाल के काम की सभा दुकान पर ६ से ११ तक। पूनमचन्द, चिरंजीलाल, जगन्नाथ मिश्रा थे। जमनालाल सन्स का मेमोरण्डम व आर्टिकल्स देखे। काम ज्यादा किया।
हैदराबाद से अख्तर हुसैन व हरदोई से उनकी बीबी हमिदा आये।
सेगांव डा० नर्मदा प्रसाद श्रीवास्तव सिविल सर्जन साथ में। बापू का ब्लड प्रेशर १६५+११० था। तबीयत थोड़ी ठीक मालूम हुई।
श्री नानाभाई (भावनगर वालों) से बातचीत, वह मेल से गये।

१२-९-३७

बच्छराज जमनालाल की सभा। इस्टेट जमनालाल सन्स में ट्रांसफर करने के बारे में करीब अढ़ाई घंटे काम हुआ।
चि० कमल, जानकीदेवी, कमला, उमा वगैरा भी थे। चि० गंगाबिसन, पूनमचन्द व थोड़ी देर सावित्री भी थी।
भोजन, आराम, पत्र-व्यवहार। कुमारप्पा से चन्दा के बारे में देर तक बातचीत। उन्होंने खानचन्द की कमियां बताईं। वह पहले से जानते थे, यह भी उन्होंने कहा।
श्री गौरीलालजी बजाज को देखने गये। नर्मदाप्रसाद सिविल सर्जन भी आये थे। स्वास्थ्य की हालत ठीक नहीं मालूम हुई।
किशोरलाल भाई मश्रूवाला व गोमतीबहन से देर तक बातचीत। नरीमान-प्रकरण के बारे में उन्होंने पूछा।

वर्धा, १३-९-३७

बच्छराज कंपनी की सभा। जमनालाल सन्स के वारे में ठीक विचार-विनिमय व महत्व के निर्णय। कमल, जानकी, मदालसा, उमा, कमला, गंगाविसन, चिरंजीलाल, पूनमचन्द, सावित्री वगैरा थे।

पूना से चि० रामनिवास के दो टेलीफोन आये। आश्चर्य व दुःख हुआ। धक्का-सा लगा। चि० रामनिवास के आग्रह के कारण बम्बई मेल से जाने का निश्चय।

मन में दुःख व विचार। मेल से थर्ड में बम्बई रवाना। चि० दामोदर साथ में। पत्रों के जवाव लिखवाये।

बम्बई, १४-९-३७

दादर पहुंचे। केशवदेवजी से बातें। चि० रामनिवास के गया। वहां उससे सब स्थिति समझकर पूना जाने का निश्चय। गोविंद रामजी सेकसरिया मिले। केशवदेवजी व आविद अली से हाऊसिंग आदि की वातचीत।

पूना में सुव्रतावहन से देर तक बातचीत। देर से सोना हुआ।

पूना-कल्याण, १५-९-३७

चि० रामनिवास बम्बई गया। उससे स्टेशन तक वातें—चि० राधाकृष्ण व पुलगांव मिल के वारे में विशेष खुलासा।

श्री मंगलदास पकवासा व मावलंकर मिले, वातचीत। मंगलदासभाई से रीता के सम्बन्ध के बारे में तथा उनके लड़के के वारे में वातें हुईं। दोपहर को भी वह आये थे।

सर मडगांवकर मिलने आये। वापूजी से मिलने का प्रोग्राम वनाया, अन्य बातें।

श्री सुव्रतावहन से देर तक वातचीत। उसे खूब समझाया। हिम्मत व उत्साह दिलाया। बापू के पत्र पढ़ाये। पुलगांव मिल, राधाकृष्ण की सगाई, आदि की बातें।

३-२५ की गाड़ी से रवाना। गुलजारीलाल नन्दा व शंकरराव देव से बातें। कल्याण में नागपुर मेल पकड़ी। थर्ड में। शंकरलाल बैंकर साथ हुए।

वर्धा, १६-९-३७

वर्धा पहुंचे। पोस्ट पढ़ी। महादेव भाई ने स्टेशन पर बापू के स्वास्थ्य की

अच्छी खबर सुनाई।

शंकरलाल बैंकर बापू के पास सेगांव जाकर आये।

किशोरलालभाई मश्रूवाला से प्यारेलाल की स्थिति कही। कोई उपाय निकल सके तो निकालने को कहा। शंकरलाल बैंकर आदि से बातचीत। मन में दुःख व निरुत्साह था।

१७-९-३७

चर्खा संघ की सभा ८ से ११ व बाद में १ से २ व २ से ५ तक। चर्खा संघ व ग्राम उद्योग मण्डल दोनों की सम्मिलित सभा। पू० बापू सेगांव से आये। उन्होंने अपने विचार कहे। जिन प्रान्तों में कांग्रेस मिनिस्ट्री है, वहां रचनात्मक कार्य किस प्रकार करना, वह समझाया। जवाबदारी भी बतलाई। वह वापस ३। बजे सेगांव गये।

ग्राम उद्योग संघ के ट्रस्ट की सभा हुई।

मारवाड़ी बोर्डिंग में गणपति-उत्सव के निमित्त खेल-कूद वगैरा थे।

१८-९-३७

चर्खा संघ सभा ८-११ तक हुई।

कृपलानी, मसानी, शंकरलाल बैंकर की लेबर कमेटी के बारे में सभा हुई।

वर्षा आदि जोर से आई।

थत्ते, धोत्रे व दादा के घर गणपति-उत्सव के निमित्त गये। प्रसाद, विनोद, भाषण वगैरा।

१९-९-३७

चर्खा संघ की सभा ८ से ११ तक हुई। बैंड-डेट व घटना (विधान) पर विचार-विनिमय।

सेगांव—लक्ष्मीदास आसर (आश्रम वाले) के साथ बापूजी के पास गये। गांधी सेवा संघ व शिक्षण-सभा व चर्खा-संघ के बारे में थोड़ी बातें।

श्री मसानी के साथ वापस आये।

दाण्डी-मार्च की फिल्म देखी।

डा० प्रफुल्ल घोष व गोपबन्धुबाबू से बातचीत।

२०-९-३७

पत्र-व्यवहार। जयप्रकाशनारायण व शंकरलाल बैंकर से बातें।

वर्धा-नागपुर, २१-९-३७

६।। बजे मोटर से नागपुर रवाना। जयप्रकाशनारायण, करंदीकर, देवीदयाल तिवारी साथ में। डा० खरे के साथ गोंड हरिजन छात्रालय के समारंभ में गये। सभापति की हैसियत से उद्‌घाटन किया। डा० खरे से गवर्नर पार्टी, प्रान्तीय सभा, सरोजनी, अभ्यंकर आदि की बातें।

बाटलीवाला, मैनेजर एम्प्रेसमिल, से मिलना। बातचीत।

छगनलाल भारुका के घर भोजन। विद्यार्थियों से बातचीत। दाण्डेकर के घर शारदा से मिलना।

४।। बजे वापस वर्धा आये। सालवेजी साथ में। सावधान-केस की तैयारी।

वर्धा, २२-९-३७

सोनीबाई नागपुर मेल से गई। उसे मकान के बारे में कह दिया। हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी के कानून मुजब कर्ज लेकर बनाना हो तो बनाओ, परन्तु इतना कर्जा लेकर मकान बनाना ठीक नहीं रहेगा। आश्रम देखा। सोहनदेवी की मां की मृत्यु हुई। उससे मिलना। बीना को देखा। भागीरथी-बहन व आशाबहन से बातें।

बम्बई से—कु० हमीदा तैयबजी व प्रबोध आये। शंकरलाल बैंकर के सामने स्थिति समझी—सुबह व रात को भी।

नागपुर प्रांतीय कांग्रेस का सभापति मुझे सर्वानुमति से चुना, यह सूचना मिली।

सुबह सावधान-केस के थोड़े काग़जात देखे। चर्चा। कोर्ट में १२ से ४।। तक सावधान-केस में मेरी क्रास एक्जामिनेशन पूरी हुई। तारीख आगे की रखी गई। मुझे मुक्त किया गया।

सेगांव—डा० नर्मदा प्रसाद महादेवभाई के साथ पारनेकर व चिमनलाल भाई को टाइफाइड का सन्देह।

बापू से बातें—नागपुर प्रान्तीय सभापति बनाया गया। बापू ने झगड़े की तैयारी रखने को कहा, समग्र शिक्षण, क्रान्तिकारी लोगों की व्यवस्था, हमीदा का प्रश्न आदि बातें।

२३-९-३७

आश्रम। भागीरथीबहन, बीना, शरद आदि को देखा। श्रीमन, सरलाबहन

व बक्षी से शिशु-मंदिर की योजना समझी। श्रीमन से मारवाड़ी शिक्षा-मण्डल की बातें।

बंगले पर श्री गोविंदराव देशपाण्डे, मनोहर पन्त, कोलते 'सावरकर-पर्स-फण्ड' के लिए आये। उन्हें समझाकर कहा कि सावरकर की कांग्रेस के प्रति जो नीति है, उसे देखते हुए मैं उसमें भाग नहीं ले सकूंगा। शायद मुझे इस बारे में स्टेटमेन्ट भी निकालना पड़े।

सेगांव में बापू से देर तक हमीदा के सम्बन्ध के बारे में विचार-विनिमय। शंकरलाल बैंकर साथ में थे।

चि० उमा से बातें। दादा, बाबासाहब देशमुख, करंदीकर, किशोरलाल-भाई, काले, शिवराजजी, तेजराम आदि से बातें।

नागपुर मेल से थर्ड में बम्बई रवाना, पूनमचन्द, प्रबोध व हमीदा से बातें।

बम्बई-जुहू, २४-९-३७

प्रार्थना। पूनमचन्द बांठिया से जमनालाल सन्स व चांदा मैच फैक्टरी की बातें। शंकरलाल बैंकर, हमीदा, प्रबोध से कल्याण से दादर तक बातें।

दादर में उतरे। केशवदेवजी व आबिद के साथ जुहू आना। नई झोंपड़ी बनाने की जगह निश्चित करना।

जुहू गये। गोकुलभाई भट्ट मिलने आये।

२५-९-३७

जल्दी उठना। प्रार्थना, घूमना। कमल के यूरोप जाने की तैयारी। अरविंद पकवासा, शांति व उसकी माता मोंघीबहन मिलने आये। मोंघीबहन के साथ बेलार्ड पियर गये। जानकीदेवी, मदालसा, भाग्यवती के लिए तीन टिकिट नौ रुपयों की ली। श्री अम्बालाल साराभाई के लड़के गौतम व विक्रम भी इसी जहाज से गये। डा० गिल्डर की लड़की भी। कमल का स्टीमर 'स्टेटहार्ड' १ बजे रवाना हुआ। सावित्री ने हिम्मत रखी। दानीजी के घर आराम। बैंकर के यहां बालकों से मिलना, खेलना, घूमना। सावित्री, मदालसा को चाट खिलाना।

कांग्रेस हाउस में खादी-ग्राम-उद्योग, स्वदेशी प्रदर्शनी का उद्‌घाटन किया। ठीक समारंभ था।

गौरीशंकरभाई से शान्ताक्रूज में मिले। उन्होंने कहा कि सावित्री का वजन

जरूर बढ़ जावेगा डेढ़-दो महीने में। जुहू पहुंचे। फल, दूध लिये। सावित्री थोड़ी उदास हुई। उसे समझाया।

जुहू-पूना, २६-९-३७

सुलोचना व सोमेश्वर नानावटी से मिलना। लिखना-पढ़ना।
मूलजी सिक्का, जीवनलालभाई, शांति साह (हीरालाल अमृतलाल) आये। मूलजीभाई को गांधी सेवा संघ के लिए पांच वर्ष तक वीस हजार की हर वर्ष सहायता के बारे में समझाया। उन्होंने कलकत्ता में विचार करके सन्तोषकारक जवाव देने को कहा।
जीवनलालभाई से श्री जेठारामजी के बारे में बातचीत, मदद। शांति के बारे में भी बातें। केशवदेवजी से बातें।
पूना मेल से चि० सावित्री के साथ पूना रवाना। रास्ते में सावित्री से बातें। उसने चाय वगैरा ली। १ रु० ७ आने का बिल आया। मैंने चिवड़ा वगैरा लिया। उसका १२ आने आया।

२७-९-३७

प्रार्थना। चि० रामनिवास बम्बई गया। तीन लाख की लिमिट, बच्छराज जमनालाल में। सुव्रतावाई को समाज-सुधार की कसौटी व हिम्मत से दुःख सहने के बारे में समझाया। कई उदाहरण दिये।
रामनरेशजी त्रिपाठी व श्रीगोपाल मिलने आये। देर तक 'हिन्दी-मंदिर' के बारे में विचार।

२८-९-३७

डा० दिनशा मेहता के पास आज भी सावित्री को ले गये। कल सावित्री को जो तपासा, उसका खुलासा।
रामनरेशजी त्रिपाठी, श्रीगोपाल व सुभद्रा मिले। सावित्री साथ में।
श्री शंकरराव देव व जाईल मिलने आये।
सर गोविन्दराव मडगांवकर से मिले। सावित्री को पर्णकुटी व बापूजी का उपवास का स्थान दिखाया।
'मीरा' सिनेमा देखा। सुव्रताबाई, कमला, बाबू, सावित्री साथ में। ठीक मालूम हुआ। गायन अच्छे थे।

२९-९-३७

प्रार्थना। घूमना, गणेशखिंड तक सुब्रतावाई के साथ। रामनिरंजन झुनझुनवाला मिला। कमजोर हो गया। सुब्रतावाई ने राधाकृष्ण के विचार व हम लोगों के प्रति पूज्य भाव बताया। सगाई की व सार्वजनिक काम की चर्चा।

भगवानदासजी व रतन से मिलना। उनका स्वास्थ्य कमजोर लगा। रतन से बातें। डेरे पर भोजन। रागनरेशजी त्रिपाठी से देर तक खूब साफ-साफ बातें। मोहन देशपाण्डे मिला।

रामकुमारजी नेवटिया आदि से मिलकर घर पर आये।

पूना-जुहू, ३०-९-३७

७-१० की पूना मेल से चि० सावित्री के साथ बम्बई रवाना। दादर उतर-कर जुहू। टेकचन्द के साथ सुब्रतावाई के ट्रस्ट के काग़ज पढ़े व सूचना की। गोपीरामजी रुइया से मिले, बातें। सावित्री के साथ कॉफी ली।

पत्र पढ़े। थोड़ा आराम। वाद में सावित्री के इलाज के बारे में सूचना व्यवस्था।

वर्धा जाने की तैयारी। केशर वगैरा से मिलते हुए नागपुर मेल से, ५-५० पर थर्ड में चि० मदालसा, गजानन्द व नौकर के साथ वर्धा रवाना हुए।

वर्धा, १-१०-३७

वर्धा पहुंचे।

८॥ वजे सरकिट हाउस। वहां से मिनिस्टरों के साथ प्रोसेशन में। डा० खरे, शुक्ल, मिश्रा थे। बीमारी के कारण शरीफ प्रोसेशन में नहीं थे। ढोरों की अस्पताल से गांधी चौक तक पैदल जलूस निकला। ठीक लोग थे। मि० संजाना कमिश्नर भी साथ था। झंडा अभिवादन—गांधी चौक में। बाद में नवभारत विद्यालय, महिला आश्रम, हरिजन बोर्डिंग, चर्मालय आदि इनके साथ देखे। सव मिलकर अपने घर भोजन। सारी पार्टी ने दोपहर को मगनवाड़ी व मेटरनिटी होम देखा। डि० कौंसिल तथा व्यापारी मेंबर का मानपत्र हिन्दी मंदिर, खादी भण्डार, सत्यप्रभा औषधालय देखा। मैं साथ में रहा। रात को घर पर सब मिलकर भोजन। मि० संजाना भी थे। गांधी-चौक में जाहिर स्वागत। म्युनिसपल कमेटी की ओर से भी

मेरे सभापतित्व में सभा बड़ी व सुन्दर हुई। व्याख्यान अच्छे हुए। ११ बजे घर पर आये। कांग्रेस मिनिस्टरों का वर्धा में ठीक स्वागत हुआ।

२-१०-३७

तारीख से वापू का जन्मदिन। बापूजी को आज ६८ वर्ष पूरे होकर ६९ वां चालू हुआ।

पत्र लिखवाये।

श्री शुक्लाजी मंत्री, शिक्षा विभाग, का शिक्षा-सम्बन्धी योजना पर टाउन हाल में भाषण हुआ, करीब एक घंटे। सुना।

सेगांव गये। बापूजी लीलावती आसर को लेकर अस्पताल आये। लीलावती का टांसिल का आपरेशन हुआ। बापूजी ४।। वजे तक अस्पताल में रहे, बाद में उन्हें सेगांव छोड़कर आया। आते व जाते समय मोटर में बात-चीत।

विनोवा का नवभारत विद्यालय में बापू के जन्म-दिन निमित्त भाषण हुआ —एक घंटा करीब। सुना।

रविशंकर शुक्ल के साथ डा० जगन्नाथ महोदय के घर भोजन।

गांधी चौक में वर्षा आदि के कारण बरामदे में दादा धर्माधिकारी व बाबा सा० वाढोने का बापू के जन्मदिन पर भाषण हुआ।

वर्धा-नागपुर-वर्धा, ३-१०-३७

प्रार्थना। पूनमचन्द बांठिया से बच्छराज जमनालाल के काम तथा चान्दा मैच फैक्टरी आदि के वारे में विचार-विनिमय।

रामलाल व दादा महाजनी (अकोला वाले) आये।

नवभारत विद्यालय व मारवाड़ी शिक्षा मंडल के उत्सव और शिक्षण परिषद की व्यवस्था के बारे में आर्यनायकम्, श्रीमन, गंगाविसन, भिडे, कारन्दीकर आदि से विचार-विनिमय।

श्री सीतादेवी, भारतन् के घर भोजन करने गये। विनोद, बातचीत।

मोटर से रास्ते में पवनार का मकान (यमुना कुटी) देखते हुए नागपुर गये।

उमा, लाली, वावासाहब साथ में।

तिलक विद्यालय में अभ्यंकर ट्रस्ट कमेटी की सभा हुई। छगनलाल भारुका

मैनेजिंग ट्रस्टी व मंत्री मुकर्रर हुआ। मैं सभापति बना।
प्रां० कां० की कार्यकारिणी की सभा। डा० खरे भी आखिर तक ठहरे।
ठीक काम हुआ। थोड़ा परिचय भी हुआ।
वापस वर्धा।

४-१०-३७

श्री सत्यनारायणजी व लीलावती को दवाखाने में जाकर देखा। सत्य-नारायणजी को टाइफाइड हुआ। थोड़ी चिन्ता।
बच्छराज जमनालाल दुकान की सभा व जमनालाल सन्स का काम जो बाकी रहा, वह हुआ।
पूनमचंद बांठिया को दीवाली से बैंक के काम के लिए छुट्टा किया।
चिरंजीलाल बड़जाते को चार्ज दिया गया। द्वारकादास भइया मदद पर।
चांदा मैच फैक्टरी की व्यवस्था।
महिला सेवा मण्डल की ओर से नागपुर के मूलाजी के मकान पर ६।। टके व्याज से छगनलाल भारुका की जमानत से तीस हजार देने का निश्चय हुआ।
दो बार आश्रम गये।
अस्पताल में लीलावती व सत्यनारायणजी को देखना।
नागपुर मेल से बम्बई रवाना। शांती, रामेश्वर, अमतुल, शुक्ला नौकरानी, गोविन्द साथ में। थर्ड में भीड़ थी।

जुहू, ५-१०-३७

प्रार्थना। दादर उतरकर जुहू आते समय अमतुल को उसके घर छोड़ना।
गौरीशंकर भाई से सावित्री के इलाज के बारे में बातचीत।
जुहू में डा० विधान राय मिले। देर तक यूरोप व हिन्दुस्तान की परिस्थिति पर विचार-विनिमय।
केशवदेवजी व जमनादास गांधी से मुकन्द आयर्न वर्क्स के बारे में ठीक विचार-विनिमय, निश्चय। मसौदा तैयार करके जमनादासभाई के साथ भेजना तय किया।
आराम, ब्रिज वगैरा। सावित्री से बातचीत। उसके इलाज की व्यवस्था।
सावित्री को डा० काशीकर ने छठा इंजेक्शन दिया।

गौरीशंकर भाई भी आये। सफिया, शादुल्लाखां व मरियम आई।

६-१०-३७

रामकुमारजी विड़ला, सीतारामजी खेमका, भगवती खेतान वगैरा मिलने आये।

मेहरअली, आविदअली व दुकानदार लोग मिलने आये।

मि० बाकीखां, अमतुल सलाम व उसकी भतीजी मिलने आये।

मूलजीभाई से नई झोंपड़ी का निश्चय।

डा० काशी अवसरे, वसन्त अवसरे आये। समुद्रस्नान। देर से भोजन।

जीवनलालभाई मिलने आये।

केशवदेवजी, रामकुमारजी व श्रीगोपाल आये। वेंकटलाल पित्ती भी आया। यहीं पर भोजन—वातचीत। केदारमलजी लडीया की स्टेट के बारे में विचार-विनिमय।

७-१०-३७

शंकरलाल बैंकर, खण्डूभाई देसाई, चि० प्रबोध, हमीदा आये, बातचीत, ब्रिज।

सरदार वल्लभभाई से मिलना, वातचीत। गुमाश्तों की सभा के सभापति बनना स्वीकार करना पड़ा।

पेरीनबहन के यहां हिन्दी प्रचार की सभा। वहीं शाम का नाश्ता, दूध-रोटी खाई।

नरीमान मिलने आये। उसे बम्बई प्रान्त के एकाउन्ट के बारे में समझाया।

८-१०-३७

मि० बाकीखां व म्हात्रे (इंजीनियर) मिलने आये। श्री मौघी बहन व शान्ती मिलने आई।

श्री मंगलदास पकवासा व उनका लड़का भी आया। यहीं भोजन व बातचीत।

श्री सुन्दरलाल भूलेश्वर कांग्रेस वाले भी मिलने आये।

९-१०-३७

प्रार्थना। दादर गये। नागपुर मेल से सीतारामजी सेकसरिया, भगवान-

देवी व बालक आये। माटुंगा शान्ताक्रूज होते हुए जुहू आये। उनकी व्यवस्था की।

अरविंद पकवासा से बातचीत।

भोजन व आराम के बाद बम्बई। सावित्री भी साथ थी।

चि० श्रीमन्नारायण को ज्वर आने की खबर सीतारामजी लाये। वर्धा तार किया। वहां से टेलीफोन आया। जानकी देवी नागपुर मेल से गोविन्द के साथ वर्धा गईं। श्रीमन की ओर से थोड़ी चिन्ता।

भूलेश्वर जिला राजनैतिक सभा का उद्घाटन किया। दरबार साहब सभा-पति बने।

१८-१०-३७

प्रार्थना, घूमना। चि० शांती व रामेश्वर साथ में। वरसोवा तक गये।

बिड़ला परिवार मिलने आया। अरविन्द पकवासा से बातें। पत्र लिखे।

आज इतवार होने के कारण बहुत लोग मिलने आये। मदनलाल जालान व श्री निवास बगड़का से मारवाड़ी अस्पताल की चर्चा। सीतारामजी वगैरा से बातचीत।

गोविन्दलालजी पित्ती व शान्ताबाई आये। केशर, नर्मदा, पन्ना, वगैरा भी।

आबिद अली, मूलजी, राजा, प्रभावती, अमतुल आदि परिवार सहित आये-रहे।

११-१०-३७

प्रार्थना। घूमना—चि० शांती व रामेश्वर साथ में।

चि० सावित्री से करीब एक घंटा स्वभाव आदि के बारे में बातचीत।

जीवनलालभाई व नानाभाई (रंगूनवाले) मिलने आये।

केशवदेवजी व श्रीकृष्ण से बातें। श्रीकृष्ण ने गोला की हालत कही।

सरदार से व मूलाभाई से बातें। सरदार से ईश्वरभाई के बारे में मेरी राय, गांधीसेवा संघ, खासगी सम्बन्ध वगैरा की चर्चा। गंगाधर राव देश-पांडे से मिला।

आफिस में पेरीन बहन से बातें। वर्धा से टेलीफोन आया। ऐसा मालूम हुआ कि वहां जाना पड़ेगा।

श्री मणीलाल कोठारी की मृत्यु के समाचार सुने। दुःख हुआ।
श्रीमन की बीमारी की चिंता।
जुहू में सोशलिस्ट कैंप हुआ।

१२-१०-३७

प्रार्थना। समुद्र-स्नान। नर्मदा, शान्ता, वगैरा भी थे।
सोशलिस्ट कैंम्प में श्री मसानी का व्याख्यान ठीक मालूम हुआ।
श्रीमन की अस्वस्थता के कारण वर्धा जाने की तैयारी। सबों को पीछे का काम समझाया, सावित्री से बातचीत।
पत्र-व्यवहार। बम्बई रजिस्ट्रार के आफिस में। सूरजमलजी का अंधेरी वाला मकान बेचा, उसपर सही की।
वर्धा से फोन आया कि श्रीमन की तबीयत ठीक, मत आओ। इससे वर्धा जाना स्थगित रखा।
माटुंगा होते हुए जुहू।

१३-१०-३७

प्रार्थना, समुद्र-स्नान। भगवान देवीजी साथ में। थोड़ा घूमना।
सोशलिस्ट कैंप में श्री दांतवाला का 'फेडरेशन'-विधान के बारे में व्याख्यान।
डा० जवाहरलाल, शशिबाला, कंचन, नवनीतलाल, जयन्तीलाल, श्रीबहन आदि आये। शान्ती, अमृतलाल शाह भी। सब मिलकर भोजन, विनोद।
पत्र लिखना। सावित्री व शान्ता बम्बई गये। नर्मदा से मालूम हुआ कि सीतारामजी व भगवानदेवी से केशर के यहां भोजन करते समय नर्मदा से जो बात हुई उससे गैरसमझ व सबको दुःख पहुंचा। रात में सबों को समझाने का प्रयत्न किया गया।

१४-१०-३७

प्रार्थना, समुद्र-स्नान। भगवानदेवी, शान्ता, नर्मदा, दाई, वगैरा।
कृष्णा हठीसिंह व हठीसिंह-बालक वगैरा आये।
केशवदेवजी, श्रीगोपाल, श्रीकृष्ण मिलने आये। बातचीत। गुमाश्ता परिषद के बारे में नोट तैयार किये। काशीप्रसादजी आये। थोड़ी देर ब्रिज; पत्र लिखना।

रामेश्वरदासजी बिड़ला से देर तक बातचीत।
सीतारामजी, भगवानदेवी, नर्मदा, प्रह्लाद से बातें। इनकी आपसी गैर-समझ दूर करने का प्रयत्न।
रात को गौरीशंकरभाई वगैरा आये।

१५-१०-३७

प्रार्थना, समुद्र—स्नान। शान्ता, नर्मदा, भगवानदेवी, विजया के साथ घूमना।
मूलजी से जुहू जमीन के बारे में बातें। सावित्री से बातचीत।
शशिवाला मिलने आयी। हृषीकेश व वैद्यजी आये।
सावित्री, शशिवाला, शान्ता बम्बई गये। ज्ञानकुमारी (हैदराबाद वाली) आई। हीरालाल दवे आये।
हमीदा, प्रबोध, मंजू, उसका भावी वर आये। बातचीत, विनोद, भोजन।
हमीदा ने व प्रबोध ने सुन्दर गायन सुनाये।

१६-१०-३७

सावित्री से बातें। उसने अपनी कई प्रकार की कल्पनाएं कहीं, मैंने कई अनुभव बताये।
सीतारामजी, पन्ना, भगवानदेवी वगैरा शान्ताक्रूज रहने आज गये। सब व्यवस्था।
केशर, नर्मदा, प्रह्लाद से माटुंगा मिलना। बातचीत।
गुमाश्ता परिषद—९। से ११।। तक हुई। परिषद ठीक थी। लोग भी अच्छे आये थे।
जुहू आये। नर्मदा, शान्ता, नर्मद वैद्य, जाफर साथ में।
नींद कम आई।

१७-१०-३७

प्रार्थना, घूमना। नर्मदा व शान्ता के साथ। समुद्र—स्नान में लड़के लोग भी साथ में थे।
आज सावित्री ने अपने मित्रों को दावत दी थी। छः सात जने आये थे।
भोजन, बातचीत, विनोद।

सरदार से मिलकर गुमाश्ता कांफ्रेंस में जाना।[1]
गुमाश्ता कांफ्रेंस का काम शाम को ६ बजे से १०।। बजे तक चला।

१८-१०-३७

सीतारामजी सेकसरिया के साथ बम्बई। घनश्यामदासजी बिड़ला के साथ भोजन।
बातचीत। ये आज ही योरप से यहां पहुंचे। मंगलदास पकवासा व सरदार से मिलना।
पेरीनबेहन, खुर्शेद, व गोपीबहन से मिलना।
नागपुर मेल से वर्धा रवाना। कंचन रोहतगी, वीरेन्द्र, आबिदअली साथ में।

वर्धा, १९-१०-३७

मेल से वर्धा पहुंचे। आबिद अली नागपुर गया।
श्री हृदयनारायणजी मैनपुरी गये। उनसे स्टेशन पर बातें। श्रीमन् को देखा।
सेगांव गये। बापू थके हुए मालूम हुए। मौन में ही उनके प्रोग्राम वगैरा की थोड़ी बातें कर लीं।
जानकी देवी अचानक जयपुर से ११।। की गाड़ी से पहुंच गईं, यह जानकर खुशी हुई। आराम—पत्र व्यवहार।
शिक्षा मंडल की सभा।

२०-१०-३७

जल्दी तैयार होकर आचार्य पी० सी० रे को लेकर नवभारत विद्यालय गये।
मारवाड़ी शिक्षा मण्डल की रजत-जयन्ती थी। आचार्य रे का व्याख्यान हुआ। प्रदर्शनी-उद्घाटन आदि।
अनसूया बहन, इन्दूमति, शंकरलाल वगैरा आये।
महिला आश्रम—नवभारत विद्यालय के पारितोषिक वितरण, नाटक, आदि कार्यक्रम।

---

१. देखिये परिशिष्ट

लाली ने ठीक काम किया।

२१-१०-३७

प्रार्थना। अनसूयाबहन के साथ नाश्ता।
आचार्य रे के साथ नवभारत विद्यालय में साथ-साथ फोटो।
आचार्य रे के साथ सेगांव जाकर आना।
नवभारत विद्यालय में रात को उर्दू व हिन्दी में नाटक हुआ।

२२-१०-३७

राष्ट्रीय शिक्षण परिषद का काम ८।। से ११।। तक पू० बापूजी के सभापतित्व में हुआ। दोपहर को २।। से पांच वजे तक सभा चली।

२३-१०-३७

सुबह राष्ट्रीय शिक्षण परिषद का काम ८ से ११, २ से ५।। वजे तक हुआ। परिषद आज समाप्त हुई।
गांधी-सेवा-संघ की सभा रात को ७।। से १० वजे तक हुई।

२४-१०-३७

नार्मल स्कूल प्रदर्शनी देखी। पू० बापू भी आये थे।
शिक्षण-समिति की पहली बैठक पू० बापूजी की उपस्थिति में हुई। बापूजी ने कार्य-पद्धति समझाई।
शाम को पवनार गये—सरदार, मणी, मृदुला, डा० सुबारायन, अविनाशलिंगम् आदि के साथ। वहीं भोजन किया।

वर्धा, २५-१०-३७

नागपुर मेल से थर्ड में कलकत्ता रवाना।
बापूजी, सरदार वगैरा भी इसी गाड़ी से चले थे। रास्ते में व स्टेशनों पर भी खूब भीड़ थी।
आराम कम मिला। सिर में थोड़ी चोट आ गई। बिलासपुर में दरवाजा नहीं खोलने देने के कारण क्रोध भी आया। सुशीला ने सिर दबाया। रास्ते में अखबार तथा 'हरिजन' वगैरा पढ़े। सुशीला, वीणा, सेलीवटी, लाली आदि साथ में।

कलकत्ता, २६-१०-३७

बापू के पास रहा। उनसे उमा की सगाई, वल्लभभाई के साथ के मतभेद

सुशीला व प्यारेलाल, बापू के स्वास्थ्य व आराम व भावी प्रोग्राम के बारे में बातें।
सुभाष व शरद बोस बापू को स्टेशन से अपने घर पर ले गये।
लक्ष्मण प्रसादजी के यहां (२५ राजा सन्तोष रोड, अलीपुर) गये। यहां शंकरलाल बैंकर, जयरामदास, उनकी स्त्री व गुलजारीलाल मिले।
वर्किंग कमेटी १।। बजे शरदबाबू के घर पर हुई।
बिड़लों ने जो पार्टी दी, उसके बारे, में वर्किंग कमेटी में जो चर्चा हुई, वह ठीक नहीं मालूम हुई।

२७-१०-३७

प्रार्थना। प्रभुदयालजी हिम्मतसिंगका, गजानन्द, भागीरथजी, वसन्तलाल आदि कई मित्र मिलने आये।
प्रभुदयालजी से गजानन्द-नर्मदा के विवाह का फैसला। जन्मपत्नी की घटना का खुलासा आदि। विवाह २७ नवम्बर को। जनेत में २० से ज्यादा नहीं आये, समय एक रोज; प्रह्लाद को वर्धा पत्न व तार भेजा।
व कग कमेटी—८।। से ११।। व २ से ७।। तक। श्री खेर व जवाहरलाल के विवाद से दुःख हुआ। खेर की थोड़ी गलती थी, इससे जवाहरलाल को रोक नहीं सका। परन्तु जवाहरलाल का व्यवहार ठीक नहीं था।
रात में जयरामदास, शंकरलाल, गुलजारीलाल आदि से मजदूर-संगठन पर विचार-विनिमय।

२८-१०-३७

वर्किंग कमेटी—८।। से ११।। व २ से ५ तक हुई। आज मौलाना आजाद व जवाहरलाल पर क्रोध आया। जो कहना था सो साफ तौर से कहा। जवाहरलाल का व्यवहार मिनिस्टरों के साथ असभ्यता का था व उसकी हिदायतें वर्किंग कमेटी की मेजोरिटी की नहीं थीं।
बिड़ला पार्क में कांग्रेस के प्रीमियरों (मुख्य मंत्रियों) के सम्मान में पार्टी। वहां कई लोग मिले।
श्रद्धानन्द पार्क में सार्वजनिक सभा हुई। स्त्रियों की सभा में बोलना पड़ा।
लोगों को जापानी माल न लेने के बारे में समझाया। स्वदेशी प्रदर्शनी देखी।

थकावट मालूम हुई, तथापि जयरामदास व शंकरलाल से थोड़ी देर मजदूर संगठन के बारे में बातें।

२६-१०-३७

अतुलबाबू, गिरीशबाबू, आशालता (ढाका) सुरबाला, वासन्ती वगैरा मिलने आये।

वर्किंग कमेटी में गये। स्वास्थ्य नरम था। वहीं विधान राय ने तपासा; १०१।। डिग्री ज्वर था। खांसी का जोर था। दवा लिख दी। ११।। बजे वर्किंग कमेटी से घर आया। आज कुछ खाया नहीं। शाम को थोड़ी चाय व दवा। आराम। दो बजे के करीब १०४ डिग्री अन्दाज ज्वर हुआ। आल इंडिया कांग्रेस कमिटी की बैठक में जाना नहीं हुआ।

३०-१०-३७

डाक्टर ने आज वर्धा व मीटिंग में जाने की व वर्धा जाने की मनाही की। प्रभुदयालजी, रामेश्वरजी नोपाणी, बनारसी प्रसादजी, सरदार, भूलाभाई, घनश्यामदासजी बिड़ला, ब्रिजमोहन, गोविन्ददासजी मालपाणी, सुचेता कृपलानी, श्यामसुन्दर, धन्नू, धीरेन्द्र मजूमदार, सुवालालजी, रामजी का लड़का आदि मिलने आये। बातें।

थोड़ी देर ब्रिज, उर्मिला बहन, उमा, विमला, महावीर के साथ। विमला होशियार मालूम हुई।

शंकरलाल बैंकर, गुलजारीलाल व जयरामदास के साथ रात को १२।। बजे तक जवाहरलाल के व्यवहार व भावी स्थिति के बारे में विचार-विनिमय।

३१-१०-३७

कांग्रेस के काम व वर्किंग कमेटी से निकलने के बारे में विचार मन में चलते रहे।

वर्किंग कमेटी की मीटिंग में गया, ८।। से ११।। तक। आल इंडिया कमेटी में भी एक घंटा गया २ से ३ तक।

फिर वर्किंग कमेटी में ५ से ८ तक। रात में बापू से कहकर वर्किंग कमेटी से त्यागपत्र का मसौदा बनाया। मित्रों को दिखाया। उसे आज न देकर सोमवार कल देने का निश्चय रहा। कई मित्रों से विचार-विनिमय। लक्ष्मणप्रसादजी से बहुत देर तक उनकी घरेलू बातें, विचार-विनिमय।

१-११-३७

त्यागपत्र का मसविदा ठीक किया व जवाहरलाल को दिया। उनको समझाया।

वर्किंग कमेटी—८॥ से ११॥—१२॥ से पांच बजे तक हुई। गरमा-गरम चर्चा व विचार। मैंने तो उसमें नहीं रहने का ही निश्चय रखा।

बापू का स्वास्थ्य चिन्ताजनक लगा।

लक्ष्मणप्रसादजी व उर्मिला देवी से ठीक बातचीत।

नागपुर मेल से वर्धा रवाना। बापू का ब्लड प्रेशर खूब बढ़ गया। वह वर्धा को रवाना नहीं हो सके।

वर्धा, २-११-३७

सरदार वल्लभभाई व शंकरलाल मेरे डिब्बे में आये।

बातचीत, नाश्ता।

रायपुर, गोंदिया व नागपुर में मित्र लोग मिलने आये, बातचीत।

वर्धा पहुंचे। बंगले पर स्नान व भोजन—डा० जाकिर हुसैन आदि के साथ।

दीपावली-पूजन।

किशोरलालभाई से गांधी सेवा संघ के बारे में विचार-विनिमय।

३-११-३७

प्रार्थना। सेगांव जाकर आया। पू० बा वगैरा से मिला।

बम्बई जाने की तैयारी—श्रीमन्नारायण से बातचीत।

दीपावली के निमित्त कई लोग मिलने आये।

महिला-आश्रम व नवभारत विद्यालय गये।

चिरंजीलाल व द्वारकादास से दुकान की बातें पटवर्द्धन व तेजराम से नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस के बारे में विचार-विनिमय।

इण्टर में चि० विमला, शंकरलाल बैंकर, गंगाबिसन के साथ बम्बई रवाना।

जुहू, ४-११-३७

इगतपुरी के बाद विमला को घाट दिखाये। शंकरलाल बैंकर से बातें।

दादर में सावित्री आई। ठीक मालूम हुई।

दीपावली के निमित्त माधवबाग व मारवाड़ी चेम्बर में मिलन।

७-११-३७

गोविन्दरामजी लोया, डा० पुरुषोत्तम पटेल व बालक, भगवानदास कारी-वाला, गुप्ता, केशवदेवजी व पार्टी, मुकन्दलाल, रामेश्वरदासजी वगैरा, शान्ता, नर्मदा, पंडित सन्थानम (लाहौर वाले) आदि मिलने आये।

११-११-३७

वर्धा से—म्हात्रे ड्राइवर आया। उसने खामगांव व आकोला के बीच जो भयंकर मोटर दुर्घटना हुई, जिसमें चि० रामकृष्ण व श्रीराम थे, वह सब बताई। परमात्मा ने खैर की। बाघ, चीते आदि मिले, वह भी कहा।

सुबह श्री हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी, गोषीबहन, सीतारामजी आदि आये।

हीरालालजी ने प्रजामण्डल, जयपुर की स्थिति समझाई।

रात-जाल नौरोजी, खुर्शेदबहन, सुलोचना आये।

सन्तोकबहन, राधा व केशव आये।

१२-११-३७

मुकन्दलालजी के यहां से विमला को लिया। सफिया को अस्पताल में देखा। सीतारामजी से मिले।

डा० मेहता व प्रो० शाह वगैरा मिलने आये। देर तक बातचीत।

१५-११-३७

जानकी देवी व नर्मदा से विचार-विनिमय, व्रत, संयम के वातावरण, उपवास आदि पर।

मुझे आज ४८ वर्ष पूरे हुए, मिती के हिसाब से। जूना आकड़ा व नये वर्ष का बजट, विचार। मुझे कैसा वातावरण चाहिए वह केशर, शांता, भगवानदेवी, नर्मदा, मदालसा, श्रीमन्, सावित्री आदि को समझाया। साथ में भोजन।

सूरजमलजी ट्रस्ट की सभा हुई। केशवदेवजी, मुकन्दलाल वेद, प्रकाश वगैरा आये।

श्रीनिवास रुइया ट्रस्ट कमेटी जुहू में हुई। जसू भाई, शान्ता मेमराज, बद्री-दास, श्रीनिवास थे। देर तक काम हुआ।

काटन कमेटी भी जुहू में हुई, भूलाभाई व शंकरलाल बैंकर के साथ विचार-विनिमय।
चि० सावित्री से थोड़ी देर बातें। उसे समझाया। वह आज डा० कुमुद मेहता के यहां गई थी।

जुहू, बम्बई रेल, १६-११-३७

समुद्र-स्नान, पत्र-व्यवहार। घूमना, जानकी देवी व मदालसा से भावी प्रोग्राम, व्रत आदि की चर्चा।
सीतारामजी से मिले।
नागपुर मेल से रवाना।

वर्धा, १७-११-३७

वर्धा पहुंचे। नर्मदा के विवाह की तैयारी बड़े बंगले पर हो गई थी, पर आखिर केशर के आग्रह से राधाकृष्ण के यहां सामने मंडप बनाने का निश्चय करना पड़ा।
किशोरीलालभाई से मिलना। बच्छराज जमनालाल के काम की सभा हुई।
शाम को सेगांव गये। वहां बापू के रहने आदि की व्यवस्था देखी। रात वहीं सोया।

सेगांव, वर्धा, १८-११-३७

सुबह जल्दी उठा।
सेगांव से बालकोबा की झोंपड़ी तक पैदल। बाद में घोड़ा-गाड़ी में वर्धा आना।
गांधी सेवा संघ की सभा का कार्य हुआ। महत्त्व की सभा। ठीक विचार-विनिमय हुआ। सरदार, गंगाधरराव, जयरामदास, कृपलानी, शंकरराव देव, प्रफुल्ल बाबू आदि कार्यकर्ता हाजिर थे।
कलकत्ता से मेल से बापू आये। डाक्टर ने तपासा। बापू के साथ सेगांव जाना। बापू वहां थोड़ा बोले—व्यवस्था।

१९-११-३७

बापू के साथ पैदल घूमना, डेढ़ मील तक। बापू की व्यवस्था। डा० महोदय से बातें।

वर्धा-गांधी सेवा संघ की सभा में विचार-विनिमय।
बापू को देखने डाक्टर लोग गये।
महादेवभाई से बंगाल की हालत पूरी समझी, विचार-विनिमय।
बापू के पास जल्दी जाना।
रात को सेगांव में रहना।

२०-११-३७

सुबह ४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लड प्रेशर १६४-११४, थोड़ी चिन्ता।
सेगांव से महिला आश्रम तक पैदल, चि० प्रभावती चौकी तक साथ में आई।
महिला आश्रम में भागीरथीबहन, आशाबहन, मीरा, नीलम्मा, आदि से बातें।
बंगले पर सरदार व कृपलानी से देर तक बातचीत।
सेगांव जाना। बापू का स्वास्थ्य, व्यवस्था आदि।

नागपुर, २१-११-३७

बापू का ब्लड प्रेशर २२०-११८
सेगांव में प्रार्थना, ४ बजे उठना। बाद में पैदल वर्धा रवाना। रास्ते में खेत वगैरा देखे। कनु गांधी चौकी तक साथ में पैदल। बाद में घोड़ा-गाड़ी में वर्धा।
वर्धा आकर नागपुर जाने की तैयारी।
बम्बई से—डा० गिल्डर व जीवराज मेहता बापू को देखने आये। स्टेशन पर बातचीत।
६। पैसेंजर से नागपुर। शिवराजजी, दामोदर, तेजरामजी से बातें। डा० खरे, बम्बावाले, टिकेकर मिले।
प्रान्तीय कांग्रेस की कार्यकारिणी, अभ्यंकर मेमोरियल प्रान्तीय कमेटी, टाउनहाल में सार्वजनिक सभा। विजय चिन्ह (ट्राफी) श्री शुक्ल ने दी।

नागपुर-वर्धा, २२-११-३७

५-५० की पैसेंजर से नागपुर से वर्धा रवाना। दामोदर व बम्बावाला साथ में।
बापू को देखने डा० जीवराज महादेवभाई के साथ गये। २१८-११८ ब्लड

प्रेशर बहुत ज्यादा था। थोड़ी चिन्ता। प्यारेलाल कल बम्बई गया। यह सुनकर विशेष विचार व चिन्ता। उसे वापस आने का तार भेजा।
डा० जीवराज से बापू के स्वास्थ्य के बारे में देर तक बातचीत। नागपुर बैंक की सभा।
सेगांव में प्रार्थना। बाद में बापू से सेगांव से न जाने के बारे में बातें। अपने विचार कहे।

२३-११-३७

पू० बापू से बातें। विनोद। थोड़ा घूमना। ब्लड प्रेशर १६४-११२ रहा। चेहरा भी ठीक मालूम हुआ। प्यारेलाल व विजया भी आ गये।
भागीरथी बहन, नर्मदा व चिरंजीलाल व उसकी मां को देखा।
सत्यनारायणजी से हिन्दी प्रचार के सम्बन्ध में बातचीत।

२४-११-३७

बापू का ब्लड प्रेशर १६४-११२।
घूमते समय लीलावती, प्रभावती, शारदा, विजया से बातें। बाद में अपने खेत देखे। एक बाड़ी देखी।
बापू के पास घनश्यामदास बिड़ला व महादेवभाई से कलकत्ता के डीटेन्यू के बारे में विचार सुने। शरद को पत्र दिया।
मीराबहन, सुशीला आदि से बातें।
आज दिन भर सेगांव रहा। गांव देखा।

२५-११-३७

बापू का ब्लड प्रेशर १६४-११२ रहा।
सेगांव से महिला आश्रम तक काकासाहब से बातचीत करते हुए पैदल आये।
श्रीमन् का मकान देखा।
महिला आश्रम की सभा सुबह व शाम को हुई।
घनश्यामदासजी से देर तक बातचीत।
जाजूजी के साथ सेगांव जाना। प्रार्थना, बापू का स्वास्थ्य देखा। उनकी व्यवस्था की।

२६-११-३७

बापू का ब्लड प्रेशर १६४-११२, शाम को १८०-११०।
सेगांव से चौकी तक जाजूजी के साथ बात करते हुए आये।
मगनवाड़ी-म्यूजियम के बारे में विचार-विनिमय।
नर्मदा के विवाह के बारे में विचार, व्यवस्था आदि। बिड़लाजी से बातचीत।
प्रभुदयालजी वगैरा दस घर के व तीन नौकर मेल से आये। बातचीत। व्यवस्था सुन्दर थी।
भोजन करके सेगांव। प्रार्थना चल रही थी। बाद में कई कार्यकर्ताओं से बातें।

२७-११-३७

४ बजे प्रार्थना। बापू का ब्लड प्रेशर सुबह १६२-११२। शाम ८ बजे १८०-११० रहा।
मुन्नालाल, विजयाबहन, पारनेरकर, बलवंतसिंह, कन्नू से व्यवस्था आदि की बातें। विजया को ठीक तौर से समझाया कि वह अच्छी कार्यकर्ता बन सकती है। पैदल वर्धा। रास्ते में घोड़ा-गाड़ी मिली।
श्री प्रभुदयालजी वगैरा जनेतियों को महिला आश्रम, नवभारत विद्यालय व हरिजन बोर्डिंग वगैरा दिखलाया।
आज नर्मदा के विवाह तक उपवास किया। फल वगैरा भी नहीं लिया।
पत्र-व्यवहार। घनश्यामदासजी, लक्ष्मीनिवास आदि से बातचीत।
नर्मदा का विवाह संपन्न हुआ।

२८-११-३७

सुबह बापू को सेगांव देखकर घनश्यामदासजी के साथ आये। स्वास्थ्य साधारण।
प्रभुदयालजी, नर्मदा, गजानन्द वगैरा को महिला-आश्रम, नवभारत-विद्यालय ले गये। वे लोग खेल भी खेले। प्रभुदयालजी ठीक खेले।
बापू के साथ प्रार्थना का आनन्द।
गजानन्द, नर्मदा व प्रभुदयालजी से बातें।

२९-११-३७

जल्दी उठे। नर्मदा व वरात मेल से कलकत्ता गई। स्टेशन पहुंचाया। बापू को सेगांव देखकर आया। स्वास्थ्य वैसा ही है।

घनश्यामदासजी बिड़ला व लक्ष्मीनिवास से देर तक बातचीत। दोनों आज दिल्ली व बम्बई गये।

सेगांव, ३०-११-३७

हिन्दुस्तान ट्रेडिंग कंपनी के बारे में रिषभदास, चिरंजीलाल, पूनमचंद, लीलाधर से बातचीत। खुलासा। मार्च तक दूसरा कोई होशियार आदमी देखकर उसमें शामिल करना। जूना काम सलटाना। नौकरों का फैसला।

१-१२-३७

प्रार्थना। बापू से मिलना। घूमते हुए बालकोबा को देखा। जानकी देवी व सोनीबाई से उनकी स्थिति पर बातचीत, विचार-विनिमय।

बापूजी को नागपुर यूनिवर्सिटी डाक्टरेट की पदवी देना चाहती थी। बापू ने कहा, मैं योग्य नहीं हूं। विनोद आदि।

कुमारप्पा, भारतन, सीतादेवी वगैरा आये।

वर्धा, २-१२-३७

सुबह बापू से मिलकर वर्धा रवाना।

काकासाहब मिले। सोनीबाई व विजया से बातचीत।

ब्रिजमोहन गोयनका को बम्बई में काम करने के लिए सवा सौ रुपये मासिक पर ता० १५ दिसम्बर से रखा। वह अपना निजी दूसरा कोई काम नहीं करेंगे। फाटका बिलकुल नहीं करेंगे।

गंगाबाई धुलिया व लक्ष्मी से बातें।

सेगांव पैदल गये। चि० शान्ता साथ। बापू से मिला। रात को वहीं रहा।

सेगांव, ३-१२-३७

प्रार्थना करके फिर सो गया। नाश्ता। बापू से विनोद।

लिखना-पढ़ना। बापू ने बुलाया। हिंसामय वातावरण को दूर करने के लिए हम लोगों को जोरों से प्रयत्न करने को कहा।

जल्दी सोना।

वर्धा ४-१२-३७

पैदल जानकी देवी के साथ महिला आश्रम तक गया। रास्ते में जानकी देवी थक गई। आश्रम के पास से घोड़े की गाड़ी में। बंगले। रास्ते में आर्य-नायकम से नवभारत विद्यालय, महिला आश्रम, आदि के बारे में ठीक विचार-विनिमय हुआ। उन्होंने मेरी सूचना स्वीकार की।

जानकी व दामोदर मोटर से नागपुर गये। वहां मारवाड़ी छात्रों का सम्मेलन था।

डा० नर्मदाप्रसाद महादेवभाई के साथ मोटर से सेगांव जाकर आये। बापू का स्वास्थ्य वैसा ही है। सुबह ब्लड प्रेशर २००-११४ करीब व दोपहर को १६०-१०८। दोपहर का ठीक है।

चि० शान्ता के साथ महिला आश्रम में नाना व भागीरथीबहन से बातचीत।

प्रार्थना के बाद कई बातों का खुलासा। सूचनाएं बहनों को दीं।

५-१२-३७

पैदल सेगांव रवाना—केशर, उमा, रामकृष्ण, श्रीराम, शान्ताबाई वगैरा साथ में।

सब पैदल चले। डा० जीवराज मेहता व नर्मदा प्रसाद वहां आये थे।

बगीचे में दाल-बाटी की रसोई, वहीं भोजन। डा० मेहता से बातचीत।

डा० जीवराज के आग्रह से कल मेल से बापू ने बम्बई (जुहू) जाने का निश्चय किया। तैयारी, टेलीफोन वगैरा किये।

सेगांव आश्रम की व्यवस्था। बापू ने ६ बजे के करीब मौन लिया।

६-१२-३७

४ बजे प्रार्थना। बापू का मौन।

नाश्ता, जानकी देवी व उमा के साथ पैदल वर्धा। रास्ते में बातचीत। घर पर डा० दिनशा मेहता (पूना वाले) आये हुए थे। उन्हें सेगांव भेजा।

नालवाड़ी-वर्धा तालुका व खादी स्वावलम्बन पर विचार-विनिमय। बम्बई की तैयारी।

बापू को लेकर मेल से बम्बई रवाना हुए।

रास्ते में बापू को जरा शारीरिक आराम मिला। विचार चलते रहे।

जुहू, ७-१२-३७

कल्याण में तैयार होकर बापू के डब्बे में गये।

दादर उतरे। वहां से बापू को जुहू ले आये। अपनी छोटी कुटिया में बापू बैठे। कुछ खाया। उन्हें तो यह पसन्द आई। नया मकान व बिड़ला हाउस दिखाया। डाक्टरों ने नये मकान में सर्दी बताई। बापू को बिड़ला हाउस ले गये। वहां व्यवस्था की। खाना-पीना अपने यहां रखा।

शाम की प्रार्थना नये मकान के सामने हुई।

डा० जीवराज, गिल्डर, शाह, रजबअली वगैरा आये। बापू को तपासा।

जुहू, ८-१२-३७

बापू को रात में नींद ठीक आई। बापू के साथ घूमना। डा० जीवराज वगैरा ने बापू के पेशाब व खून वगैरा की जांच की।

पत्र-व्यवहार। मिलने-जुलने वालों की तथा बापू को शांति मिले, ऐसी व अन्य व्यवस्था की।

सीतारामजी से बातें।

गांधी, परिवार मिलने आया।

मुकन्द आयर्न वर्क्स लिमिटेड की सभा जुहू में हुई।

९-१२-३७

बापू को रात को नींद ठीक आई। शांति भी मिली। डा० गिल्डर व जीवराज ने तपासा। बापू के साथ घूमना।

ढवनभाई से सासवने के बारे में बातें। श्रीमन्नारायण वर्धा गया। उससे बातचीत।

मुकन्द आयर्न वर्क्स की सभा हुई। आज की सभा में रामेश्वरजी, मुकन्दीलालजी, वेदप्रकाश, लाला, शिवराज, किशनलाल, केशवदेवजी आदि थे।

१०-१२-३७

बापू का वजन ११२ रत्तल हुआ। बापू के साथ घूमना।

हरिहर शर्मा (अन्ना) से बातचीत। बापू की इच्छा के कारण उन्हें मिलाया भी, परन्तु बापू को दुःख पहुंचा। यहां आने की जरूरत नहीं थी कहा।

जानकीदेवी व सीतारामजी से नौकर, पायखाने आदि के बारे में बातें। कोई परिणाम नहीं आया।

सुव्रता देवी, कमला, मथुरादास त्रिकमजी का कुटुम्ब, विड़ला, मुरारजी, मावलंकर, पकवासा आदि आये। प्रार्थना में वैठे।

११-१२-३७

बापू का ब्लड प्रेशर १८२-११० रहा।

पू० बापू के साथ घूमना-विनोद।

बद्री का विवाह दिल्ली में।

सरदार व जयरामदास आये। सरदार व पुरुषोत्तमदास बापू से मिले।

शाम की प्रार्थना में कई लोग आये थे।

१३-१२-३७

बापू का ब्लड प्रेशर आज कल से कम—सन्तोषकारक था १७५-१००।

बापू के साथ घूमना।

सरदार बापू को देख गये। महादेवभाई हरिपुरा गये।

बापू के साथ शाम को घूमना। चर्खा। पत्र। रात को ब्रिज शंकरलाल बैंकर, केशवदेवजी आदि के साथ।

१४-१२-३७

बापू के साथ घूमना।

जापान ने नानकिंग पर कब्जा किया, यह पढ़कर दुःख हुआ।

आगाखां व उनका लड़का प्रिन्स अलीखां बापू को देखने आये। हंसाकर चले गये।

बापू के साथ घूमना।

१५-१२-३७

बापू के साथ घूमना।

आबिद अली, मूलजी, हरजीवन, नर्मदा आदि से जुहू की जमीन हाउसिंग कंपनी के बारे में विचार-विनिमय।

लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया मिलने आये। बातचीत।

बापू के साथ घूमना।

१६-१२-३७

बापू के साथ घूमना।

सर विश्वेश्वरैया मिलने आये। आटोमोबाइल कंपनी के बारे में बात की।

दिनशा पूना गये। ट्रीटमेन्ट उनके आदमी ने दी।

पत्र-व्यवहार, चर्खा।

बापू को आज डा० गिल्डर व जीवराज ने तपासा। शाम को ब्लड प्रेशर ज्यादा मालूम हुआ, विचार।

१७-१२-३७

बापू के साथ घूमना।

दिन में भी उनके पास रहा।

१८-१२-३७

आज भी बापू का ब्लड प्रेशर कम। उनके साथ घूमना।

बापू के पास, चर्खा।

२०-१२-३७

बापू के साथ घूमे।

आबिद अली व दामोदर से बातें। पत्रों के जवाब व बम्बई कांग्रेस-चुनाव की बातें।

नये घर में प्रवेश, भोजन। सफिया, मरियम, सीतारामजी आदि आये।

रामकिशन डालमिया, रामेश्वरदाजी बिड़ला, केशवदेवजी से देर तक बातें।

प्रार्थना के बाद केशवदेवजी, आबिदअली से हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी के बारे में बातें।

२१-१२-३७

पीठ में दर्द ज्यादा मालूम हुआ। बापू ने सेक करने को कहा।

रामकिसन डालमिया के आग्रह से सर पुरषोत्तमदास से मिलने आज प्रथम बार बम्बई जाना पड़ा। उन्हें मिलाया। सीमेन्ट की बातें।

बापू के साथ थोड़ा घूमना।

महाराजा रीवां बापू के दर्शन को आये। उनसे बातचीत।

२२-१२-३७

यादवजी वैद्य व रामेश्वरदासजी बिड़ला आये। बापू के व मेरे स्वास्थ्य के बारे में बातचीत।

वर्धा जाने की तैयारी—नागपुर के चुनाव के लिए,

घूमते समय महादेवजी, छाजूराम से बातें।

जुहू से सीतारामजी से मिलते हुए बोरी बन्दर। दामोदर, सहदेव साथ में।

वर्धा-नागपुर, २३-१२-३७

मेल से वर्धा पहुंचे। घर से मेटर्रानटी होम गये। भागीरथीबहन को लड़की हुई, उसको देखा।

घर पर बाबासाहब से नागपुर-चुनाव के बारे में बातचीत।

जल्दी भोजन करके मोटर से बाबासाहब, दामोदर व सहदेव के साथ नागपुर गये।

नागपुर-आफिस में कोई नहीं मिला। भारुका भी नहीं था।

पूनमचन्द व ढवले के घर व ऑफिस। बहुत देर तक समझौते का प्रयत्न। कोई रास्ता दिखाई नहीं दिया। रात को ९ बजे बाद वर्धा पहुंचे।

२४-१२-३७

काकासाहब से ऊषा के सम्बन्ध के बारे में तथा बाबासाहब से नागपुर के चुनाव के बारे में बातें। बाबासाहब व दामोदर को नागपुर भेजा।

जाजूजी, किशोरलालभाई, नर्मदाप्रसाद सिविल सर्जन, लीलावती, आर्य-नायकम, श्रीमन्, लक्ष्मीश्वर सिन्हा व प्रो० रामनारायण मिले। हैदराबाद की बहनों से बातचीत।

शिवराज माफी मांगने आया।

कालूराम, द्वारकादास व चिरंजीलाल से दुकान व मुकदमे आदि की बातें।

सेगांव गये। वहां बापू के समाचार कहे।

महिला आश्रम में प्रार्थना।

२५-१२-३७

प्रार्थना। चि०शान्ता व पूनमचन्द बांठिया से बातचीत, बैंक आफ नागपुर, चान्दा मैच फैक्टरी, तेजराम, सिनेमा आदि के बारे में।

जाजूजी व चि० दामू की सगाई के बारे में विचार-विनिमय। महाराष्ट्र चर्खा संघ के बारे में चर्चा।
भागीरथीबहन व परमानन्द को देखा।
नालवाड़ी—विनोबा का सुन्दर भाषण, वर्धा तालुका में खादी उत्पत्ति के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।
महिला आश्रम—कु० ज्योत्स्ना ने क्रिसमस का उत्सव ठीक किया।
गंगाबिसन से वर्धा म्युनिसिपल कमेटी के संबंध में विचार-विनिमय।

२६-१२-३७

नगर कांग्रेस कमेटी के चुनाव के सिलसिले में नागपुर के लिए ६ बजे रवाना। दादा करन्दीकर, दामोदर वगैरा साथ में।
पहले तिलक विद्यालय गये। वहां से सब सेन्टरों में घूमना, व्यवस्था, नगर कां० कमेटी का व्यवहार बाबासाहब व मेरे लिए भी अनुचित रहा। जितना न्याय देना सम्भव था, उसका प्रयत्न रखा। प्रायः दिन भर घूमते रहना पड़ा, भोजन का समय छोड़कर।
गिरधारी के यहां भोजन।
डा० खरे से मिलकर व पटवर्धन को सूचना देकर रात की मोटर से ६।।। बजे वर्धा पहुंचे।

२७-१२-३७

श्रीमन् से नवभारत विद्यालय के लिए सरकारी ग्रान्ट लेने, प्रिंसिपल, व्यापारी कोर्स, आदि के संबंध मे विचार-विनिमय।

२८-१२-३७

महिला परिषद के लिए नागपुर गये। आशाबहन, उमा, लीलावती साथ में। राजकुमारी से मिलना, बातचीत।
महिला परिषद में राजकुमारी का सुन्दर भाषण। मुझे भी बोलना पड़ा। परिषद में जमाव ठीक था। रात को वापस वर्धा १० बजे बाद पहुंचे। आशाबहन, लीलावती, श्रीमन्नारायण साथ में।

२९-१२-३७

घूमना, नालवाड़ी। विनोबा से विजया, महादेवी अम्मा, सहदेव, आदि के बारे में बातचीत।

वावासाहव देशमुख से नागपुर चुनाव के वारे में वातचीत । उन्हें व दामोदर को एक्सप्रेस से नागपुर भेजा।
मथुरदासजी मोहता मिलने आये। कांग्रेस आदि की वातें।
बैंक आफ नागपुर के वोर्ड की सभा हुई।
सेगांव जाकर आये। वहां प्रार्थना में ठहरे। डाह्याभाई का मामला।

३०-१२-३७

सुबह जल्दी तैयार होकर, नागपुर के लिए नौ बजे निकलकर, ११ बजे वहां पहुंचे।
साथ में गोवर्धन, चिरंजीलाल, रामकृष्ण, जाते समय थे। ११ से ७ बजे शाम तक तिलक विद्यालय में ही रहना पड़ा। नागपुर नगर तालुका व वर्धा, आर्वी, हिंगणघाट, नागपुर (अर्बन) को पेटियां खोली गईं। परिणाम जाहिर किया गया।
नागपुर से मोटर से वर्धा। घर थोड़ी देर ठहरकर रात को ही एक्सप्रेस से वम्बई रवाना।
दामोदर साथ में।

जुहू, बम्बई, ३१-१२-३७

मनमाड के वाद नाश्ता किया।
रेल में कागजात देखे। पत्रों के जवाव लिखवाये।
दादर उतरकर, २॥ बजे करीव जुहू पहुंचे।
केशवदेवजी, रामेश्वरदासजी से,
शक्कर, सिंधिया आदि की वातें।

१९३८

जुहू-बंबई, १-१-३८

बापू के साथ घूमना।

श्री धर्मनारायणजी (मैनपुरी वाले) व हृदयनारायणजी आये। उनसे थोड़ी देर बातचीत।

सरदार वल्लभ भाई, राजेन्द्रबाबू, भूलाभाई, जयरामदास, शंकरराव देव, शंकरलाल बैंकर जुहू आये। वर्किंग कमेटी के सम्बन्ध में देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

प्रार्थना। बाद में शरदबाबू व उनकी स्त्री भी आई।

२-१-३८

सुबह जल्दी तैयार होकर बापू से मिलकर बम्बई।

पं० जवाहरलालजी से मिलना। बाद में बिड़ला हाउस, राजेन्द्रबाबू, सरदार, जयरामदास, भूलाभाई, कृपलानी आदि से विचार-विनिमय, अपनी नीति के संबंध में बिड़ला हाउस में ही भोजन।

वर्किंग कमेटी १॥ से ६ तक

वर्किंग कमेटी के मेंबरों ने मदीना स्टीमर सिन्धिया का देखा। साधारण स्टीमर ठीक था।

जवाहरलाल को ताज में छोड़ा। बिड़ला-हाउस, वहां आपस में खानगी चर्चा, विचार विनिमय।

३-१-३८

सुबह जल्दी तैयार हुआ। बापू से मिलकर बम्बई। वर्किंग कमेटी ८॥ से ११। व १॥ से ३। तक हुई। बाद में पं० जवाहरलाल, मौलाना आजाद सरदार, राजेन्द्रबाबू, राजाजी, बापू से मिलने आये। मामूली बातें।

'जानकी-कुटीर' में नाश्ता, चाय वगैरा। बातचीत।

सुब्रतावहन से उसकी मानसिक स्थिति के वारे में विचार-विनिमय। राधाकृष्ण व मदन की सगाई—विवाह आदि के संबंध में वातें। सुबह वहीं भोजन।
कमला मेमोरियल मीटिंग ६।। से ८ तक जाल नवरोजी के यहां हुई।

४-१-३८

जल्दी तैयार होकर बम्बई जाते समय बापू से मिलकर कल का हाल कहा।
वर्किंग कमेटी सुबह ८।। से ११।। व १२।। से ८ तक हुई। महत्त्व की चर्चा व दो महत्त्व के ठराव पास हुए, खासकर कांग्रेस की नीति—मिनिस्टरों के मामलों में व हिंसा आदि के बारे में स्पष्ट की। बिहार किसान सभा के वारे में ठीक चर्चा, विचार-विनिमय।

५-१-३८

पूज्य बापूजी ने, कल शाम को उनकी लकड़ी, जिस पागल मुसलमान ने पकड़ी थी, उस घटना का हाल कहा।
कृपलानी व जयरामदास मिलने आये। बापू को कल के दोनों ठहराव ठीक मालूम हुए।
बम्बई, राजेन्द्रबाबू, सरदार, राजाजी, भूलाभाई, जयरामदास, खेर आदि से वातचीत। मिनिस्टरों के व्यवहार के बारे में विचार-विनिमय।
नेपाल के मेजर जर्नल मिलने आये। गोपीबहन, पेरीन, नरगिस, शूरजी भाई वगैरा आये। सरदार, राजाजी, कृपलानी, शरदबाबू भी।
बापू से मिलकर फिर बम्बई।
रामनारायण सन्स की सभा में थोड़ी देर, रुई हाजर का सौदा पक्का करने व जमीन के बारे में विचार-विनिमय। रामेश्वरजी बिड़ला से बातें। डा० देसाई को दाढ़ दिखाई। उन्होंने निकालना जरूरी समझा, निकाल दी।
थर्ड व इन्टर में भीड़, सेकण्ड में वर्धा रवाना।

वर्धा, ६-१-३८

वर्धा तक चित्रा केस के कागजात पढ़े।
वर्धा पहुंचे। बंगले पर आकर चित्रा केस के कागजात—बडकस, करन्दीकर,

कालूराम के साथ देखे।

१ वजे कोर्ट में गये। जयवन्त के न आने के कारण कोर्ट ने मेरी गवाह छोड़ दी।

महिला आश्रम में खरे पंडितजी के दो भजन सुने।

७-१-३८

सुवह स्टेशन गया। सीतारामजी, भगवानदेवी वगैरा आये।

सेगांव जाकर मिलकर आये। वालकोवा से मिलना। नागपुर से श्री पटवर्धन व ढवले आये। थोड़ी देर वातचीत।

कोर्ट ने चित्रा केस आज शुरू किया। बुलावा आने पर वहां गये।

१ से २ वजे तक रिक्रास, नागपुर वाले जयवन्त की ओर से, शान्ताराम वकील ने किया।

पवनार में शाम का भोजन, २०-२५ आदमी साथ थे। श्री खरे व रमावाई के सुन्दर भजन हुए।

८-१-३८

पू० बापूजी वम्वई से आये। स्टेशन पर पैदल जाना।

बापू वंगले पर आये।

चित्रा केस की चर्चा।

कोर्ट में १२ से ३॥ व ३॥। से ५॥ तक चित्रा केस में रिक्रास मि० शान्ताराम वकील, नागपुर ने चलाया।

बैंक आफ नागपुर की सभा हुई।

पुरुषोत्तमदास जाजोदिया के घर रामेश्वरजी (धुलिया वाले) के साथ भोजन।

९-१-३८

बाई केशर के साथ पैदल सेगांव। केशर से उसके भविष्य, रहन-सहन, वीमारी, पन्ना, प्रहलाद वगैरा के वारे में बातें। उसे समझाना।

सेगांव जाकर बापू से महादेवभाई के साथ बातचीत। उन्हें हरिपुरा कांग्रेस तक पूरा आराम लेने को कहा। परन्तु कोई फल नहीं निकला।

बापू की इच्छा के मुताविक महादेवभाई मुलाकात, प्रोग्राम आदि की व्यवस्था करेंगे।

कुमारप्पा से विहार रिलीफ फन्ड आदि के सम्बन्ध में बातें।

सत्यनारायणजी व श्रीमन से शीघ्रलिपि सभा के बारे में व हिन्दी प्रचार सभा के बारे में विचार-विनिमय।

बालासाहब करन्दीकर, राधाकृष्ण, काले, मोघे से शेलसुरा जिला परिषद के संबंध में विचार-विनिमय। प्रान्तिक विधान व तालुका चुनाव की चर्चा।

चिरंजीलाल व द्वारकादास के साथ दुकान का काम देखा। जाजूजी व राधाकृष्ण से ग्राम सेवा मंडल के विधान की वातें।

गायन-वादन।

१०-१-३८

घूमकर आये। सीतारामजी, जानकीदेवी व शान्ता साथ थे।

हिन्दी शीघ्रलिपि कान्फ्रेंस का काम ९ वजे से ११। तक, दोपहर को २-५।। व रात में ८ से ९।। हुआ।

सेगांव मोटर में जाना-आना। सीतारामजी, जानकीदेवी साथ में। प्रार्थना में बैठना।

बापूजी ने आज लिखने का काम ज्यादा किया। ब्लड प्रेशर ठीक था।

पंडित जवाहरलालजी की माता का देहान्त हो गया। बापूजी ने खबर दी।

मीराबहन ने सुशीला व प्यारेलाल की रात की पूरी घटना कही। विचार-विनिमय।

सीतारामजी से वातें, चर्खा। हैदराबाद की रमा व लक्ष्मी वहन से बातें।

११-१-३८

सेगांव पैदल। चि० शान्ता साथ में थी।

प्यारेलाल से डेढ़ घंटे के करीब बातचीत की। उसका मानस समझा। वर्तमान में जो उसके मन में चल रहा है, वह बताया। बापू यहां से ता० ७ को अगले महीने जाने वाले हैं, वहां तक चिन्ता का कोई कारण नहीं, कल जो घटना हुई, वह उसने समझाकर कही। चर्खा।

वर्धा आकर शीघ्र लिपि कान्फ्रेंस के काम में शुरू में व शाम को भाग लिया। आगे का प्रोसीजर निश्चित हुआ।

छगनलाल भारुका व पन्नालाल, नागपुर नगर कांग्रेस कमेटी की शिकायत लेकर आये। देर तक विचार-विनिमय। चर्चा।

आशाबहन, आर्यनायकम् से भविष्य के बारे में खुलासेवार बातचीत।

१२-१-३८

जानकी का स्वास्थ्य थोड़ा नरम। उसके पास बैठना। उसे सान्त्वना दी।

वासुदेव आर्ट कॉलेज का समारम्भ था। डा० खरे प्रेसीडेन्ट थे। उन्होंने ठीक भाषण दिया।

डा० खरे के साथ बापू के पास सेगांव गये। डा० खरे ने बापू को तपासा, ठीक बताया।

डा० खरे के साथ नागपुर नगर व कांग्रेस के बारे में देर तक विचार-विनिमय।

मन्नालालजी अग्रवाल से चान्दूर जीन के बारे में बातें।

बाबा सा० देशमुख, करन्दीकर से, सेलसूरा-कान्फ्रेंस के प्रस्तावों के बारे में विचार-विनिमय। चर्चा।

काकासाहब से हरिहर शर्मा, रामदेव, प्यारेलाल के बारे में बातें।

१३-१-३८

पैदल सेगांव। सरस्वती बाई गाडोदिया, जानकी देवी, हकीमजी व ईश्वर-प्रसाद साथ में।

बापू से हकीमजी की बातचीत। बापूजी को देखने को नागपुर से हुकमत-राय व सिविल सर्जन आये।

प्यारेलाल से बातचीत। परसों बातें होने के बाद जो परिणाम आने की आशा हुई थी, वह आज कम हुई।

"सेलपुरा जिला शेतकरी सभा, में प्रमुख होकर गया। साथ में विनोबा व काका साहब थे। जिला कांफ्रेंस एक प्रकार से सफल हुई कही जा सकती है। १॥ बजे से रात में ८॥। बजे तक एक बैठक में काम करना पड़ा। लोगों से परिचय हुआ।

वापस वर्धा। विनोबा, काकासाहब, दामोदर, महादेवी, रमाबाई (हैदराबाद) अनुसूया, आदि आठ जने एक मोटर में आये।

१४-१-३८

सेगांव—पैदल। केशरबाई, शान्ता साथ में। आते समय मोटर में। काका साहब साथ में।

कृष्णा राठी, सीता, शान्ती, शशीबहन आये। कृष्णा की करुण कथा सुनी।

आश्रम में महिला मण्डल के बारे में विचार-विनिमय।

सत्यनारायणजी व श्रीमन के साथ हिन्दी प्रचार के बारे में विचार-विनिमय।

नव भारत विद्यालय व मारवाड़ी शिक्षा मण्डल के बारे में भी।

गंगाबिसन, चिरंजीलाल, पूनमचन्द, दामोदर, मीरा, कमलाबाई लेले, रमाबाई, महादेवी आदि से बातचीत। कमला लेले ने पिचहत्तर रुपयों की आवश्यकता बतलाई।

१५-१-३८

शान्ता के घर तिल व दूध लिया।

सेगांव पैदल। शान्ता, सुगनी बाई, सुशीला, बिन्दू, महादेवी, रमाबाई, (हैदराबाद वाली) व केशर फाटक तक आई। सुशीला बहुत ही बुद्धिमान व होशियार लड़की मालूम हुई। ईश्वर उसे खुशी रखे। रास्ते में महादेवभाई मिले। बापू की हालत कही। ब्लड प्रेशर बढ़ा हुआ बतलाया, २०० के ऊपर। बापू से थोड़ी बातें। हकीमजी को भेजने का विचार।

सुशीला व प्यारेलाल से वापस आते समय बातचीत। किशोरलालभाई, गोमतीबहन, शान्ता साथ में। किशोरलालभाई को सब कहा।

भारतन से सीतादेवी व महिला मण्डल के मंत्री-पद संबंधी विचार-विनिमय।

काकासाहब सत्यनारायणजी व श्रीमन से हिन्दी प्रचार के बारे में बातें।

महिला आश्रम में—तिल-गुड़। विनोद।

रमाबाई व महादेवी मेल से गये।

मि० शरीफ मिनिस्टर व ताजुद्दीन मिलने आये। शरीफ ने नागपुर नगर कांग्रेस के बारे में विशेष बातें कीं।

बाबासाहब करंदीकर व दामोदर के साथ नागपुर प्रान्त का काम।

हकीमजी, सरस्वती, जानकी वापस सेगांव गये।

वर्धा-नागपुर, १६-१-३८

मेल से नागपुर ट्रेन। में आविदअली से गाड़ी में हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी (वनारस) के बारे में बातें। उसे वहां का काम शीघ्र जाकर सलटाने को कहा व ब्रान्च वन्द करने को कहा। कंपनी के बारे में वंद करने का विचार, केशवदेवजी की रिपोर्ट आने पर बोर्ड में करना।

नागपुर में तिलक विद्यालय गये। पटवर्धन नहीं मिले। उसके घर पर भी नहीं मिले।

छगनलाल व भगवानदीनजी से उनकी पार्टी की स्थिति समझी।

डा० खरे नहीं मिल सके। मोहनी का घर देखा। गिरधारी के घर भोजन।

तिलक विद्यालय में कार्यकारिणी सभा का काम हुआ। हरिपुरा कांग्रेस के प्रतिनिधियों की सभा। मुझे सभापति चुना।

सुभाषवावू को कांग्रेस का सभापति चुना। आल इंडिया के मेंवरों में डा० खरे, पूनमचन्द, चतुर्भुजभाई और मैं चुने गये। प्रान्त के कॉपशन में श्रीमती सालवे, पन्नालाल, खांडेकर, पटवर्धन चुने गये। अभ्यंकर ट्रस्ट की मीटिंग हुई।

रात में वर्धा वापस।

वर्धा, १७-१-३८

देर से उठना। धोत्रे व सुन्दरलाल के साथ महिला सेवा मण्डल के बारे में विचार-विनिमय।

सेगांव में चि० शान्ता के साथ। पू० बापूजी को देखकर जल्दी वापस—हकीमजी व सरस्वतीबाई को लेकर।

चित्रा केस रिक्रास एक्जामिन की तैयारी घर पर। वाद में कोर्ट में १२। से ४।। तक। आखिर में आज गवाही पूरी हुई।

महिला सेवा मण्डल की सर्व-साधारण सभा, कार्यकारिणी सभा व महिला आश्रम की सभा पांच से साढ़े आठ तक हुई। शान्ता के यहां भोजन व सभा का काम।

श्री घनश्यामदास बिड़ला आज मेल से कलकत्ता से आये। मेरे आने के पहले ही वह सेगांव जाकर महादेवभाई से लार्ड लोथियन के प्रोग्राम के बारे में विचार कर आये।

१८-१-३८

जल्दी तैयार होकर लार्ड लोथियन के लिए स्टेशन जाना। गाड़ी १० मिनट जल्दी आ गई। काकासाहब व शान्ता को मिलाया। बाद में महादेवभाई व दोनों कुमारप्पा को मिलाया।

डा० नर्मदाप्रसाद की गाड़ी में सेगांव रवाना। रास्ते में आर्यनायकम् आदि से मिलाया।

सेगांव पहुंचकर लार्ड लोथियन बापू से मिले। बाद में मीराबहन को मिलाया।

अपने कच्चे मकान में ठहराया। बापू के साथ घूमना। वापस वर्धा।

वियाना के डाक्टर बापू को देखने आये। उसकी व्यवस्था। घनश्यामदास-जी बिड़ला से बातचीत, भोजन, आराम, पत्र-व्यवहार।

घनश्यामदासजी के साथ पवनार तक घूमना व बातचीत।

सेगांव जाकर बापू से मिलना। लार्ड लोथियन प्रार्थना आदि में गये।

१९-१-३८

प्रार्थना। कागजात देखे। सरस्वतीबहन के साथ आश्रम वगैरा घूमना। लार्ड लोथियन नवभारत विद्यालय, महिला-आश्रम, मगनवाड़ी, खादी-भण्डार, लक्ष्मीनारायण मंदिर आदि देखने आये। उनकी व्यवस्था महिला आश्रम में की। वह थोड़े बोले, सुन्दर बोले।

दोपहर को व शाम को सेगांव लार्ड लोथियन के साथ। उनके साथ सेगांव घूमकर देखना।

बापू के पास प्रार्थना तक बैठना। घनश्यामदासजी बिड़ला आये। आज शाम को सेगांव में ही भोजन किया।

घनश्यामदासजी से राजनैतिक, हिन्दू-मुसलमान झगड़े आदि पर विचार-विनिमय। उनकी राय थी कि दो अलग फेडरेशन कर दिये जायं।

२०-१-३८

हिन्दी प्रचार विद्यालय व हरिजन बोर्डिंग देखा।

लार्ड लोथियन ने आज सुबह हरिजन-बोर्डिंग, हिन्दी प्रचार विद्यालय, नालवाड़ी-टेनरी के काम आदि का ठीक तौर से निरीक्षण किया। उन्होंने करीब २०-२५ मिनट विनोबा के साथ अध्यात्मिक विचार-विनिमय भी

किया।

लार्ड लोथियन घर पर आये। कार्यकर्ता व मित्रों से परिचय, बातचीत। समारम्भ ठीक रहा। करीब ३० कार्यकर्ता थे। साथ में भोजन। सब मिलकर ७५ लोग होंगे।

लार्ड लोथियन व बिड़लाजी सेगांव गये। बापू से बातें। प्रार्थना। आज बापू का ब्लड प्रेशर ज्यादा था।

२१-१-३८

सुबह दामोदर से बातें। सरस्वतीबाई व महादेवबाई के साथ रेलवे फाटक तक घूमने।

लार्ड लोथियन को ग्रान्ट ट्रंक ऐक्सप्रेस पर पहुंचाया। वह देहली गये।

बजाजवाड़ी का संघटन हुआ। आज प्रथम सभा हुई। हिन्दी प्रचार के लिए कालोनी बनाने के बारे में विचार-विनिमय।

जमाल मुहम्मद (मद्रास वालों) से बातचीत।

सेगांव—बापू से घनश्यामदासजी बिड़ला के इस वर्ष के एक लाख के फण्ड में से पचास हजार रुपये गांधी सेवा संघ के जनरल फण्ड में देने का निश्चय।

बापू के जिम्मे इअर मार्क फण्ड में से अढ़ाई हजार नालवाड़ी में विद्यार्थियों के लिए मकान बनाने व विट्ठलभाई फण्ड आदि के संबंध में विचार-विनिमय।

उत्तमचन्द शाह पेरिस वालों ने पांच हजार का चेक दिया।

किशोरलालभाई, धोत्रे, वैजनाथजी से गांधी-सेवा-संघ के बारे में बातें।

२२-१-३८

प्रार्थना के भजन। सेगांव पैदल। कमला व कु० सरला बियाणी साथ में। बाद में ब्रिजलाल बियाणी व दामोदर भी साथ हुए।

बापू से, मुन्नालाल व फ्रन्टीयर, हकीमजी के जाने के बारे में।

ब्रिजलाल बियाणी से सरला, कमला व राजनैतिक स्थिति के बारे में विचार-विनिमय।

घनश्यामदास बिड़ला से बालकों की पढ़ाई व अन्य बातों पर विचार व बातचीत।

बाबा साहब विरुलकर व पटवर्धन से नागपुर प्रान्तिक के बारे में विचार-विनिमय।
पवनार में घनश्यामदासजी के कहने से दाल बाटी की रसोई। घनश्यामदास, ब्रिजलाल बियाणी, सरस्वतीबाई गाडोदिया आदि थे।
ईश्वरी प्रसाद ब्राह्मण की बातचीत से बुरा मालूम हुआ।

२३-१-३८

घूमने सेगांव तक पैदल, जानकी साथ में। उससे बातचीत—मानसिक स्थिति स्वास्थ्य इत्यादि के बारे में।
सेगांव में बापू से कांग्रेस व शिक्षण बोर्ड, विद्यापीठ स्नातक, सरस्वतीबाई गाडोदिया, हकीमजी वगैरा संबंधी बातचीत। प्यारेलाल से बापू ने पूरी तैयारी, कांग्रेस सेशन में जाने के बारे में, रखने को कही। प्यारेलाल से बातचीत।
मथुरादास मोहता व घनश्यामदास बिड़ला के साथ बातचीत।
डा० विधान राय व नलिनी रंजन सरकार बंगाल के मिनिस्टर आज आये। अपने यहां ठहरे। उन्होंने देर तक बंगाल की हालत पर बातचीत की।

२४-१-३८

प्रार्थना। घूमने गये। दो मील का चक्कर लगाया। घनश्यामदास बिड़ला, विधानराय, नलिनी रंजन सरकार से बंगाल की स्थिति पर व कांग्रेस-संगठन के बारे में देर तक ठीक विचार-विनिमय होता रहा। साथ में भोजन, बाद में ये लोग सेगांव गये। ठक्कर बापा भी आज आये। शाम को पवनार में उपरोक्त तीनों सज्जन के साथ जाना। वहां, भोजन के समय व बाद में भी यही चर्चा होती रही।
राजाजी आज देहली से मद्रास गये। उनसे स्टेशन पर मिलने गये। वाइसराय व लोथियन से जो बातें हुईं, उसका सार कहा।

२५-१-३८

घनश्यामदासजी बिड़ला, डा० विधानराय, नलिनी रंजन सरकार मेल से कलकत्ता गये।
सेगांव जाकर बापू से व अन्य लोगों से मिलना। वापस घर आकर भोजन, बाद में दो बजे फिर महादेवभाई के साथ सेगांव जाना हुआ। बापू से २ से

३ तक वातचीत। 'गांधी सेवा संघ', बिट्ठलभाई पटेल ट्रस्ट, वर्किंग कमेटी, फेडरेशन, मलकानी, आर्यनायकम्, डा० बतरा, प्यारेलाल आदि के संबंध में।

वर्धा आकर दादा धर्माधिकारी व मदनमोहन से बातें। किशोरलाल भाई, व दादा, बाला साहब खेर से गांधी सेवा संघ की चर्चा।

स्वतन्त्रता दिन २६-१-३८

गाजर का रस लिया। बाल बनाये।

गांधी चौक में झंडा वन्दन। सिविल लाइन वार्ड कमेटी स्थापित हुई।

हिंगणघाट मिल (मोहता) में स्ट्राइक। वहां जाने के बारे में विचार, पर मथुरादासजी के वहां न होने के कारण नहीं जाना पड़ा।

सेगांव में बापू से सेगांव का हिस्सा व अन्य इमारतें आदि 'ग्राम सेवा मण्डल' को देने पर विचार-विनिमय। बापू ने अपना भावी कार्यक्रम व इच्छा बतलाई। उन्हें अब सेगांव छोड़ना नहीं है। फ्रन्टीयर रहना पड़ा, हिन्दू मुसलिम एकता के लिए तो विचारणीय है। कांग्रेस वर्किंग कमेटी व स्वतन्त्रता के प्लेज पर विचार। प्यारेलाल की स्थिति कही। मैंने भी कहा।

वर्धा में स्वतंत्रता दिन की जाहिर सभा गांधी चौक में मेरे सभापतित्व में हुई।

डा० महोदय व श्रीमती चोरघड़े दवाखाने में गये।

मथुरादासजी मोहता नागपुर से आये। हिंगणघाट में हुई भड़काने वाली व भीषण हिंसा का वर्णन सुनाया। दामोदर को भेजा।

वच्छराज जमनालाल के काम की सभा हुई—रात में ८-९ तक।

चि० शान्ता आज वम्बई से आई। मदालसा वगैरा का हाल कहा।

२७-१-३८

प्रार्थना। गाजर का रस। मां से भजन सुने। हिंगणघाट से पत्र लेकर आदमी आया। पैदल स्टेशन। पुखराज से बातें। चि० सुशीला नागपुर गई। हिंगणघाट रेल से गये। मजूमदार से वहुत देर तक वातचीत। बाद में मजदूरों से व फिर मथुरादासजी से बात की। पूरी स्थिति समझी। श्री मजूमदार का मजदूरों पर प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

वर्धा पहुंचे। मिनिस्टर, शरीफ, गोले आदि मिलने आये। बच्छराज जमनालाल की सभा।

२८-१-३८

मां के भजन। आज सरस्वतीबाई गाडोदिया हकीम व ईश्वरी प्रसाद को देखने गये।
दाण्डेकर व छगनलाल भारुका से देर तक बातचीत।
सेगांव। जानकी साथ में। बापू से मिलकर प्यारेलाल से देर तक बातचीत।
हिंगणघाट जाने की तैयारी। जाते समय श्री गोविन्ददासजी जबलपुर वाले मिलने आ गये।
हिंगणघाट पहुंचकर मजूमदार व मथुरादास से मिलना। मजूमदार का पूरा काबू मजदूरों पर नहीं है।
आज दारुबन्दी के संबंध में जाहिर सभा हुई। श्री गोले (मिनिस्टर) व दुर्गा ताई का भाषण ठीक हुआ।

२७-१-३८

हिंगणघाट से पत्र लेकर आदमी आया। पैदल स्टेशन। थर्ड में रवाना। पुखराज से बातें। सुशीला नागपुर गयी। हिंगण घाट में मजुमदार से बहुत देर तक बातचीत। बाद में मजदूरों से व फिर मथुरादासजी से बातें कीं। पूरी स्थिति समझी, मजुमदार का मजदूरों पर प्रभाव नहीं दिखाई दिया।

वापस वर्धा पहुंचे। मिनिस्टर शरीफ, गोले आदि मिलने आये।

बच्छराज-जमनालाल की सभा हुई।

वर्धा, २८-१-३८

दांडेकर और छगनलाल भारूका से देर तक बातचीत।
सेगांव। जानकी साथ में। बापू से मिलकर प्यारेलाल से देर तक बातचीत।
हिंगणघाट जाने की तैयारी। जाते समय जबलपुर वाले गोविंददासजी मिलने आये। बातें।
हिंगणघाट में मजुमदार व मथुरादास से मिलना।
मजुमदार का मजूरों पर पूरा काबू नहीं है।
दारूबंदी की जाहिर सभा में गोले मिनिस्टर व दुर्गाताई का ठीक भाषण हुआ।

२९-१-३८

घूमते हुए नालवाड़ी गये। चि० शान्ता साथ में। विनोबा से सेगांव के बारे में ठीक विचार विनिमय। विनोबा का स्वास्थ्य आज थोड़ा ठीक मालूम हुआ। चि० शान्ता व महिला सेवा मण्डल के बारे में तथा आत्म-विश्वास आदि के बारे में विनोबा से विचार विनिमय।

श्री दुर्गाताई जोशी (आकोला वालों) ने अपनी हालत, त्यागपत्र व अकोला की स्थिति कही। ब्रिजलालजी के बारे में जो कुछ कहा उससे दुःख व मन में विचार हुआ। वर्तमान स्थिति खूब विचारणीय है।

जानकी देवी का स्वास्थ्य थोड़ा खराब।

सेगांव में बापू से सेगांव को दान देने के बारे में बातचीत। मालगुजारी का हिस्सा दान देने के बारे में व्यवहार की अड़चन। बगीचा व जमीन दान देने का निश्चय, वसंत पंचमी सं।

दादा धर्माधिकारी, बाबा सा० से गांधी सेवा संघ के सदस्य की चर्चा।

बच्छराज जमनालाल, जमनालाल संस व जमनालाल गृह विभाग का कार्य हुआ।

वर्धा, नागपुर, ३०-१-३८

प्रार्थना, पत्र व्यवहार। घटवाई, बाबा सा० शिवराजजी व गोपालराव के साथ ९। बजे की गाड़ी से नागपुर जाना। पहुंचने पर हिंदुस्तान हाउसिंग में जाना। छगनलाल भारुका, बाद में पटवर्धन आदि से बातचीत। घटवाई से व शिवराजजी से भी। चि० शान्ती-रामेश्वर, गिरधारी, सोनीबाई, गोपीचंदजी मिले। छोटालाल वर्मा से बैंक के बारे में बातचीत।

तिलक विद्यालय। आज नागपुर प्रान्तिक कमेटी के लिए जो सदस्य आये थे उनसे खुले दिल से विचार-विनिमय। मेरी स्थिति साफ तौर से समझाई।

सभापति का चुनाव हुआ। मुझे पच्चीस वोट मिले। दो विरुद्ध, मैंने अपना वोट दिया नहीं। सब मिलकर २८ हजार थे। चुनाव में पूनमचन्द-पक्ष का व्यवहार आज आशा से ज्यादा समाधानकारक रहा। खरे व अन्य मित्रों का व्यवहार ठीक नहीं रहा। दुःख भी पहुंचा। आज पूनमचन्द-पक्ष की मेरी समझ से नैतिक विजय हुई। छगनलाल से बातें।

एक्सप्रेस से वर्धा। मन में काफी विचार व दुःख रहा।

३१-१-३८

सेगांव में बापू का स्वास्थ्य ठीक था। चि० सुशीला ने कहा नार्मल हालत समझी जा सकती है। बापू को नागपुर कांग्रेस के चुनाव, डा० खरे पूनमचन्द की स्थिति, का हाल थोड़े में कहा। बापू का मौन था।

वर्धा आकर पत्र व्यवहार। नागपुर बैंक के बारे में व महिला मण्डल की रकम जमा रखने पर विचार विनिमय।

भोजन के समय आज गोभी के साग में बिच्छू पका हुआ निकला। क्रोध व ग्लानि आई। मन को रोक कर भोजन किया।

'महिला सेवा मण्डल' की कार्य कारिणी की सभा हुई।

राजकुमारी अमृतकौर व मिसेज लेन्केस्टर आये, उन्हें लेने स्टेशन गया।

हिन्दी प्रचारक विद्यालय में गया।

१-२-३८

जानकी से सुबह तीन घंटे तक बातचीत, मनःस्थिति का वर्णन।

भागीरथी बहन, चि० शान्ता, मोतीलाल से बातचीत। गंगाधरराव देशपाण्डे व मिसेज लेन्केस्टर से बात।

'बैंक ऑफ नागपुर' के बोर्ड की मीटिंग। मारवाड़ी शिक्षा-मण्डल की कार्य कारिणी की सभा। हिन्दी प्रचार कमेटी की भी सभा हुई।

जाजूजी, किशोरलाल भाई से सेगांव, महिला आश्रम की जगह आदि की बातें।

श्री पटवर्धन, घटबाई, बाबा सा० (विरुलकर) से नागपुर प्रान्तीय कमेटी के बारे में व राजकारण के बारे में देर तक विचार-विनिमय। मेरे विचार से पटवर्धन व घटबाई सहमत थे। डा० खरे से बात करने का निश्चय।

२-२-३८

नागपुर से मोटर से—जवाहरलाल व कृपलानी आये। जवाहरलाल को लेकर सेगांव जाना।

मेल से सुभाष बाबू वर्धा आये। स्वागत। सुभाष बाबू को लेकर सेगांव गया।

३-२-३८

सेगांव में बापू से मिलना। सुभाष बाबू को लेकर वर्धा आना। वर्किंग कमेटी ६ से ११।। व दोपहर को १।। से ८ तक हुई।

४-२-३८

चि० उमा साथ में पैदल सेगांव। रास्ते में जानकी देवी मिली। रास्ते में ही प्रार्थना। सेगांव पहुंचने पर बापू से वर्किंग कमेटी का थोड़ा हाल कहा।
वर्किंग कमेटी—८।। से १।। व २ से रात ६।। तक होती रही। फेडरेशन का ठहराव हुआ।
मिनिस्टर यूसुफ शरीफ का मुसलमानों में व्याख्यान हुआ। वहां जाना पड़ा। रात में ११।। बजे सोना।

वर्धा, ५-२-३८

प्रार्थना, आश्रम में उत्सव। झन्डा वन्दन। सभा आदि।
वर्किंग कमेटी-८।। से ११।। व २ से ८।। तक होती रही। बीच में कुछ लोग सेगांव बापू के पास गये। मैं महिला आश्रम के उत्सव में, बीच में दो बार जा आया।
आज वर्किंग कमेटी में—हंगर स्ट्राइक, मिनिस्ट्री, इंडियन स्टेट्स आदि पर खास विचार-विनिमय हुआ।

वर्धा-नागपुर, ६-२-३८

रात में वर्षा आदि। हवा जोर की चली। सुभाष बाबू मेल से कलकत्ता रवाना हुए। भूलाभाई देहली गये।
जवाहरलालजी से खासगी थोड़ी बातें। टेलीफोन के लिए दुकान गये।
श्रीकृष्ण सेट मुख्यमंत्री बिहार से बातचीत हुई। हंगर स्ट्राइक व जूने राजनैतिक कैदियों को छोड़ने के बारे में। लखनऊ फिर से टेलीफोन किया। पन्तजी नहीं मिले। जवाहरलालजी, मौलाना ने आज मंदिर वगैरा देखा।
वर्किंग कमेटी की सभा हुई। इंडियन स्टेट्स का ठहराव बहुत बाद-विवाद व विचार विनिमय के बाद, पंडित जवाहरलाल ने जो ठराव पेश किया वह, सबों ने मंजूर किया।
सेगांव में बापू से मिलना। जवाहरलालजी की बातचीत। आते समय

महिला आश्रम के उत्सव में ठहरना।
जवाहरलालजी, सरोजनी, कृपलानी का नागपुर के लिए निकलना। ४।।।
पहुंचे व गिरधारी के यहां चाय नाश्ता।
अभ्यंकर स्मारक सभा आज जवाहरलाल के हाथ से कोणशिला की क्रिया हुई। सभा अच्छी थी।
श्री शुक्लजी (मिनिस्टर) से बातें। विद्या मंदिर के संबंध में।
ग्रान्ड ट्रंक से वर्धा पहुंचे। गाडगे महराज का कीर्तन सुना-अच्छा हुआ।

७-२-३८

पंडित खरेजी का कल शाम को हरिपुरा में स्वर्गवास होने की खबर सुनकर दुःख व धक्का लगा। किशोरलाल भाई, गोमती बहन, काका सा० से बातचीत।
श्री मणिलाल गान्धी व सुशीला व बालक आये। उन्हें सेगांव भेजा।
घामाजी, आनन्दराव (सेवा समिति वाला) आदि मिले।
पत्र व्यवहार।
दामोदर, गोवर्धन, श्रीमन, शान्ता, हरिभाऊजी, बक्षी आदि से बातचीत।
आज ही रात में एक्सप्रेस से बम्बई जाने का निश्चय किया। साथ में जानकी, रामकृष्ण व विट्ठल नौकर। थर्ड क्लास में रवाना। गाड़ी के चलते ही सो गये।

दादर-जुहू, ८-२-३८

जुहू में केशवदेवजी से मुकन्द आयर्न वर्क्स, हिन्दुस्तान हाउसिंग, हिन्दुस्तान शुगर मिल्स आदि के बारे में वर्तमान स्थिति समझी। मुकन्दलालजी, जमनादास भाई, फतेचन्द, प्रह्लाद, मूलजी, आबिदअली आदि से बातचीत।

जुहू, ९-२-३८

समुद्र तट पर वरसोवा तक घूमे। चि० रामकिसन साथ था। उसकी आगे की पढ़ाई आदि पर विचार विनिमय।
आबिद अली से हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी के बारे में विचार-विनिमय।
मदालसा से बातचीत।

चर्चा। महादेवी (कर्नाटक) ने वद्रीयात्रा का थोड़ा हृदय-द्रावक वर्णन सुनाया।
मन पर असर हुआ।

१०-२-३८

काशिनाथ मिलने आया। भाग्यवती दानी, मिलने आई।
दामोदर, श्रीमन्, शान्ता वर्धा से आये।
केशवदेवजी से बातचीत। मद्रास मिल की रुई की आढ़त के वारे में चर्चा।
फतेचन्द भी था।
शान्ता, मेमराज रुइया से 'महिला मण्डल' के खजानची के वारे में बातचीत।

११-२-३८

बच्छराज कम्पनी आदि की आफिस फोर्ट में ले जाने का विचार चल रहा था।
ऑफिस आदि देखा।

१२-२-३८

बम्बई से कई मित्र मिलने आये—सुव्रता बहन भी आई। हरिभाऊजी, केशवदेवजी रामकुमारजी, व्यंकट लाल आदि। आज समुद्र स्नान के लिए गये तो वहुत वड़ी मच्छी किनारे के नजदीक दिखाई दी। बहुत वड़ा मुंह दिखाई देता था।
मित्रों के मना करने के कारण, जल्दी वापस आ गये। भोजन, आराम, थोड़ी देर ब्रिज। ब्रिजमोहन गोयनका से दुकान के काम के वारे में बातचीत, हिसाब।
किकी बहन वगैरा मिलने आये।
श्री शान्तिकुमार, मास्टर, पंडया मिलने आये। वर्किंग कमेटी के ठहराव के वारे में विचार-विनिमय।

हरिपुरा, (विट्ठल नगर) १३-२-३८

दादर से बैठकर मढ़ी स्टेशन पर उतरना। रास्ते में सुभाष वावू पट्टाभि से इंडियन स्टेट्स के वारे में ठीक बातचीत। सुभाष बावू के साथ भोजन। बाद में उन्हें इन तीन वर्ष की स्थिति से व वर्किंग कमेटी के अन्दर के काम

से ठीक तौर से वाकिफ किया।
मढ़ी से मोटर द्वारा हरिपुरा पहुंचे। विट्ठलनगर में वर्किंग कमेटी के कैम्प में डेरा लगाया।
बापू को—सुभाष से जितनी बातें हुईं वह सब घूमते हुए सुना दी। उन्हें पसन्द आई। सुभाष बापू से मिल लिये। वहीं बातें हुईं।

हरिपुरा, १४-२-३८

वर्किंग कमेटी—८।। से ११।। व २ से ६।। तक हुई। ठीक काम हुआ। रात में सब-कमेटी बैठी।
प्रदर्शनी में थोड़ी देर जवाहरलाल व मौलाना के साथ गये।

१५-२-३८

प्रार्थना। घूमने निकले। गोशाला वगैरा देखी। ब्रजकृष्ण (दिल्लीवाले) से वहां की हालत समझी।
वर्किंग कमेटी—८।। से ११।। व २ से ६ तक हुई। आज श्री जवाहरलाल की रिपोर्ट पर गरमागरमी रही।
बापू से वर्किंग कमेटी का हाल कहा। शाम की प्रार्थना में गये।
बापू के साथ—जवाहरलाल, सुभाष, मौलाना, सरदार और मैं बातचीत में रहे।
मिनिस्टरी के बारे में, खासकर बिहार व यू० पी० के बारे में बातचीत। उन्होंने अपने विचार कहे।

१६-२-३८

बापू के साथ बातचीत। मैंने उनको कहा कि मैं वर्किंग कमेटी में नहीं रहूंगा। मुझे उसमें से निकाल लें।
उन्होंने कबूल तो किया। और दूसरी हालत बताई।
बापू का खादी प्रदर्शनी में प्रार्थना के स्थान पर आज 'खादी के महत्त्व' पर मार्मिक भाषण हुआ।
वर्किंग कमेटी ८।।।-११ तक हुई। रात में ९ से १०।।। तक चली।
विषय निर्वाचिणी व आल इंडिया २ से ७ तक हुई। ठीक काम चला।

१७-२-३८

प्रार्थना। डा० घोष व अन्नदा बाबू से घूमते समय बंगाल की हालत पर

विचार विनिमय।
पू० बापू को श्री खैर ने बम्बई के गवर्नर के बारे में हुई बातचीत कही।
वर्किंग कमेटी ९ से ११, ५॥ व ९-१०॥ तक तीन बार हुई।
कार्यकारिणी सभा १२॥-५ तक हुई। शिक्षण बोर्ड, फेडरेशन आदि के महत्व के ठहराव मंजूर हुए। देशी रियासत-संबंधी ठहराव के बारे में विचार विनिमय-चर्चा। चिन्ता।
शाम को वर्किंग कमेटी की बैठक में प्रीमियर श्री गोविन्दवल्लभ पन्त, श्रीकृष्ण बाबू के निवेदन, स्थिति का वर्णन सुनने पर दुःख व चिन्ता हुई।

१८-२-३८

महावीरप्रसादजी पोद्दार से बातचीत।
बिहार रिलीफ कमेटी (सेन्ट्रल) की मेनेजिंग व जनरल सभा हुई। ठहराव पास हुए।
वर्किंग कमेटी ८॥ से ११। तक हुई।
विषय निर्वाचिनी सभा में आखिर देशी राज्य सम्बन्धी ठहराव पास हुआ। भाषण आदि मूर्खता व बेजवाबदारी भरे हुए थे।

१९-२-३८

काका साहब व सत्यनारायणजी से हिन्दी प्रचार के बारे में देर तक बातचीत।
झण्डा वन्दन। करीब एक लाख आदमी होंगे। बाद में विषय निर्वाचनी सभा।
केशवदेवजी, प्रभुदयालजी वगैरा आये। वर्किंग कमेटी २-४। तक हुई।
बापू से बातें—मेरे वर्किंग कमेटी में न रहने के बारे में।
कांग्रेस का खुला जलसा शुरू ५॥ बजे हुआ। प्रोसेसन आदि। ९ बजे तक होता रहा। ठीक व्यवस्था थी।

२०-२-३८

विषय निर्वाचिनी सुबह ९ से १२॥ तक चली। मैं १०॥ तक बैठा।
मिनिस्ट्री के ठहराव पर सरदार का प्रथम भाषण सुन्दर हुआ। आखिरी का ठीक नहीं हुआ, ऐसा मित्र लोगों ने कहा। मैं हाजिर नहीं था।
हिन्दी प्रचार सभा का कार्य २ से ३॥ तक हुआ। लोग ठीक जमा हुए थे।

खुला अधिवेशन ५॥। से १० तक हुआ। सुभाष बाबू ने कमजोरी दिखाई। जैरामदास का भाषण बहुत ही सुन्दर हुआ—खासकर आखिर का जवाब। सरदार भी ठीक बोले।

आज मन व स्वास्थ्य खराब रहा—आपसी, अन्दर के मतभेदों के कारण। नारियल वाला का पत्र आया—मदन मोहन के बारे में। पढ़कर दुःख व चिंता हुई।

२१-२-३८

वर्किंग कमेटी की चर्चा में मैंने अपने विचार, मेरे न रहने के बारे में, साफ कहे।

विषय निर्वाचनी सभा का काम चला। बापू से जवाहरलाल, सुभाष वगैरा शाम को मिले।

कांग्रेस का खुला अधिवेशन। आज की कार्यवाही आखिर तक की ठीक रही।

मौलाना ने बापू से बात हुई उसका सार कहा। मुझे वर्किंग कमेटी में रहना चाहिए इसका आग्रह किया। मेरी कठिनाई मैंने कही।

२२-२-३८

बापू के जाने की तैयारी। उनसे मिला। बापू ने अन्दर बुलाया व मित्रों का व सुभाष बाबू का जो आग्रह था कि मैं वर्किंग कमेटी में रहूं वह उन्होंने चालू रखा। मैंने इनकार किया।

ऑल इंडिया कमेटी में सुभाष बाबू ने मेरा नाम जाहिर कर दिया। सरदार ने जो खुलासा किया था, वह पूरा खुलासा नहीं किया, अधूरा किया। मैं पूरा कराना चाहता था, तो सुभाष बाबू ने कहा कि यहां ठीक नहीं मालूम होगा। वर्किंग कमेटी में मुझे बुला भेजा।

२३-२-३८

सरदार ने कानजी भाई के लड़के से मिलाया। उससे बातचीत, उसके विचार जाने।

स्वागत वालों के सुभीते के कारण जल्दी मोटर से रवाना होना पड़ा। बारडोली जाकर श्री किशोरलाल भाई को देखा। उन्हें आज बुखार नहीं था। स्वास्थ्य ठीक था। वायसराय का स्टेटमेन्ट पढ़ा। साधारण ठीक

मालूम हुआ।

नवसारी में श्री मणीलाल तेली व मायाभाई मणीलाल तेली, शिवजी कोठारी व मणीभाई कोठारी की लड़की वगैरों से मिलना।

श्री मणीलाल भाई ने तेल की मिल दिखाई। ठीक कमाती मालूम हुई। उनके घर पर ही प्रार्थना, भोजन व बातचीत। पैदल स्टेशन। शिवजी कोठारी से देर तक मणीभाई की लड़कियों की हालत जानी। नवसारी में सुभाष बाबू के साथ सेकण्ड क्लास में बैठे। जानकी व शान्ता साथ में थे।

दादर, जुहू, २४-२-३८

दादर में उतरे, सुभाष बाबू भी वहां उतरे।

जुहू पहुंचे।

अखबारों में बापू का स्टेटमेन्ट देखा। जवाहरलाल नेहरू से टेलीफोन से बातचीत।

शाम को जाहिर सभा—आजाद मैदान में। लाउड स्पीकर बिगड़ जाने से सभा नहीं हो सकी। बहुत गड़बड़ी हुई। प्रबन्ध ठीक नहीं था। कई स्त्रियों व बच्चों को चोटें आईं, दु:ख हुआ। कई को उनके स्थान पर पहुंचाया। श्री कन्हैयालाल मुंशी के घर भोजन। श्री सुभाष बाबू वगैरा भी थे। देर हो गई।

जुहू-बम्बई, २५-२-३८

महिमतूरा मदन मोहन के बारे में सिफारिश करने आये। उन्हें मैंने कहा कि मैं विशेष कुछ नहीं करना चाहता। सादुल्ला, महिमतूरा व गोविन्द चौबे फिर आए। वही बातें।

डा० रजब अली के वहां वर्किंग कमेटी के मेम्बरों की इनफार्मल सभा हुई। आठ मेम्बर हाजिर थे। मिनिस्टरों की स्थिति टेलीफोन से समझी व उन्हें स्वीकृति दी। बापूजी के स्टेटमेन्ट के आधार पर बयान करने को कहा।

पोली क्लीनिक में मौलाना आजाद का दांत निकलवाया। उनसे मिलना व व्यवस्था करना।

जाल नौरोजी को पीटीट अस्पताल में देखना; उसे टी० बी० का सुनकर चिन्ता व विचार हुआ। नारियलवाला से बातें।

२६-२-३८

जवाहरलाल नेहरू, डा० सैयद महमूद, व्रिजराज नेहरू, रामेश्वरी नेहरू, कृष्णा, हठीसिंग, रणजीत नवाब और उनकी स्त्री व लड़की आदि आये। जवाहरलाल व राजा घोड़े पर घूमे, बाद में समुद्र में स्नान किया। कमला नेहरू स्मारक कमेटी का काम देर तक हुआ। कमला नेहरू स्मारक, कांग्रेस व जलियां वाला फंड की रकम में से १२०) ८०, १ हजार चार महीने के लिए चार टका ब्याज से फिक्स डिपाजिट में बच्छराज कंपनी में व हिन्दुस्तान शूगर में रखने का निश्चित किया।

२७-२-३८

डा० दास (होमियोपैथ) अपनी स्त्री को लेकर आये। उन्होंने बड़े कामदार, सालीसिटर की मोटर दुर्घटना से मृत्यु के समाचार कहे। दुःख हुआ।

२८-२-३८

हीरालालजी शास्त्री व रतन बहन आये। समुद्र-स्नान। बातचीत। प्रजामण्डल के बारे में।

भोजन थोड़ा आराम।

बम्बई में मोटर दुर्घटना में कामदार की मृत्यु हो गई सो उनके यहां बैठने गये।

जुहू पहुंचने पर पद्मा से बातें। भोजन, बाद में बच्छराज कम्पनी, फैक्टरी, व हिन्दुस्तान शुगर के बोर्ड की मीटिंग हुई—देर तक।

१-३-३८

बम्बई में श्रीमती रमीबाई कामदार व उनके लड़के प्रताप से देर तक बातचीत।

समवेदना, धीरज देना।

गोविन्द रामजी लोहिया की स्त्री की मृत्यु पर बैठने गए।

ऑफिस में मुकन्द आयर्न वर्क्स का काम हुआ। बोर्ड की मीटिंग हुई।

सेकण्ड क्लास से वर्धा। उसमें भी भीड़ थी। नागपुर के पारसी कुटुम्ब से परिचय। कल्याण तक हरकचन्द भाई के ट्रस्ट के कागज़ात देखे। सुधार सुझाया।

वर्धा, २-३-३८

मेल स वर्धा पहुंचे ।

बाल बनाते व तेल लगाते हुए हीरालालजी शास्त्री ने जयपुर स्टेट व उनके बीच प्रजामण्डल के बारे में जो पत्र व्यवहार हुआ, वह पढ़कर सुनाया। सन्तोष हुआ।

हीरालालजी व रतनबहन के साथ सेगांव । बापू से जयपुर-प्रजामण्डल की स्थिति, वार्षिक उत्सव, मेरा वहां जाना आदि के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

रमीबाई कामदार, मौलाना, सुभाष बाबू, हरिपुरा-कांग्रेस व खर्च वगैरा पर थोड़ी बातें ।

नालवाड़ी में विनोबा से देर तक बातचीत । जुहू जाने के बारे में जानकी का तार आया । उन्होंने विचार करके जवाब देने का कहा ।

दुकान पर से जानकी से फोन पर बातचीत । चिन्ता कम हुई ।

३-३-३८

नागपुर प्रान्तिक कांग्रेस के काम के बारे में बाबा सा० पटवर्धन, घटबाई, दादा, करन्दीकर, जाजूजी आदि से ११।। बजे तक विचार विनिमय—बापू के पास सेगांव । विनोबा व महादेवभाई साथ में । बापू से मदन मोहन का हाल कहा। नागपुर प्रान्तिक कांग्रेस कमेटी से त्यागपत्र देने के बारे में विचार विनिमय । बापू ने देर तक अपनी नीति समझाई। सब जवाबदार कार्यकर्त्ताओं को कांग्रेस में सम्मिलित होना चाहिए। विनोबा व शिक्षण बोर्ड आदि की भी बातें ।

नागपुर बैंक की सभा हुई ।

वर्धा-पुलगांव-देवली, ४-३-३८

मेल से शान्ति कुमार, मास्टर व गगनबिहारी आये ।

दोपहर को बापू के पास सेगांव गये ।

मोटर से गंगाबिसन, केसर, शान्ता के साथ पुलगांव। आज से पुलगांव मिल चालू हुई । यहां केशवदेवजी, नागरमलजी पोद्दार वगैरा मिले । मि० संजाना, सक्सेना आदि भी आये थे । वापस लौटते समय थोड़ी देर देवली ठहरकर, वर्धा ११-२५ को पहुंचे ।

सेगांव में शान्तीकुमार, मास्टर, गगनविहारी का महादेवभाई व वापू से विदेशी व्यापारी भारत में किस नीति से व्यापार करें इसपर विचार विनिमय।

आशा बहन, मृदुला, भागीरथी बहन, चि० शकु, शान्ता, राधा, रुक्मिणी वगैरा से वातें।

वर्धा, ५-३-३८

श्री केशवदेवजी नेवटिया पुलगांव से आये। देर तक व० ज० व जमनालाल सन्स के बारे में विचार विनिमय।

श्रीगणपतराव पान्डे नागपुर (भण्डारवाले) डा० मोडक व हरिभाऊ व दूसरे दिवानजी के साथ पच्चीस हजार कर्ज की व्यवस्था कराने के लिए मोटर से आये। उनके दोनों दिवानजी को हिंगणघाट श्री मथुरादासजी मोहता के पास चिरंजीलाल के साथ भेजा।

श्री मणीलाल गांधी, सुशीला वगैरा अकोला से आये। वालकोबा भावे डाक्टर को दिखाने आये।

केशवदेवजी, चिरंजीलाल, पूनमचन्द, दामोदर वगैरा मिलकर खर्च कम करने की पर विचार विनिमय।

६-३-३८

स्टेशन गये। सुभाषवाबू व मौलाना बम्बई से आये।

सुभाष वाबू को कलकत्ता दो बार शरद बाबू को टेलीफोन करना पड़ा। बापू के प्रोग्राम व डिटेनू के प्रचार आदि के सम्बन्ध में। सुभाष बाबू ने मंदिर, खादीभण्डार व मगनवाड़ी देखी।

सुभाष वाबू व मौलाना के साथ सेगांव जाना। वापू से मिस्टर जिना का पत्र-व्यवहार, शहीदगंज का मामला, सिक्कों का खून, बंगाल का प्रोग्राम, वकिंग कमेटी की जगह पूरी करना, वकिंग कमेटी की सभा उड़ीसा में रखना आदि पर वातें।

शिक्षण बोर्ड के बारे में भी। उस समय पंडित रविशंकर शुक्ल मौजूद थे।

सुभाष वाबू को नालवाड़ी, पवनार दिखाया।

गांधी-चौक में जाहिर सभा। सुभाष बाबू हिन्दी में सुन्दर बोले।

म्युनिसिपल कमेटी के बारे में कहलाना पड़ा। ठीक नहीं मालूम हुआ।

७-३-३८

मौलाना से कलकत्ता की हालत व सुभाष बाबू के विचारों के बारे में बातचीत।

मौलाना आजाद कलकत्ता व सुभाष बाबू नागपुर रवाना हुए।

अस्पताल में लक्ष्मी (दक्षिण प्रान्त वाली बहन) को देखा।

गांधी सेवा संघ की इनफार्मल सभा हुई। राधाकृष्ण, दामोदर, गोवर्धन आदि से बजाजवाड़ी बच्छराज कोष के जमाखर्च वगैरा के बारे में विचार विनिमय।

मणीलाल, सुशीला व सुमती बहन सेगांव से आये। जल्दी भोजन कर इनके साथ वापस सेगांव जाना। बापू का मौन था। मौलाना से जो बात हुई वह बापू को सुनाई। प्रार्थना। वापस।

बच्छराज जमनालाल के बारे में विचार विनिमय। कल जाने का विचार था, पर सुभाष बाबू का फोन आने से रहना पड़ा।

८-३-३८

राधाकृष्ण के साथ विचार विनिमय; बजाजवाड़ी के बजट आदि की सभा।

जमनालाल संस के बोर्ड की प्रथम सभा बंगले पर हुई। कंपनी रजिस्टर हो गई व काम शुरू करने की परवानगी मिल गई।

सुभाष बाबू नागपुर से आकर सेगांव गये। साथ में महादेव भाई को भेज दिया। मैं नहीं गया।

नवभारत विद्यालय व महिला आश्रम में सुभाष बाबू के साथ गये। उन्हें दिखाया। महिला आश्रम का प्रोग्राम ठीक हुआ।

हरिजन मण्डल की सभा हुई। काका साहब की योजना के पक्ष में लोग प्रायः नहीं के बराबर थे।

वर्धा-नागपुर, (रेल में) ९-३-३८

जल्दी तैयार होकर मेल से रांची के लिए रवाना। कागजात पर सही की। वर्धा से नागपुर तक। ना० प्रो० कां० कमेटी के काम के बारे में श्री पटवर्धन घटबाई, करन्दीकर, दामोदर के साथ विचार-विनिमय।

सुभाष बाबू से बातचीत।
रास्ते में टाटा नगर तक लोग कम ज्यादा बराबर आते रहते थे।
करीब दो बजे रात को टाटा नगर उतरे। फास्ट पैसेंजर से रांची के लिए रवाना।

रांची, १०-३-३८

पुरी में गाड़ी बदली। रात में ९।। करीब पहुंचे। चि० महाबीर प्रसाद उर्मिला देवी, सावित्री, ललिता, विमला लेने आये थे।
मोराबादी—पोदार हाउस में पहुंचे। चि० सावित्री को देखकर सुख व शान्ति मिली। यहां सच्ची शांति मिलने का विश्वास हुआ।
रांची के कार्यकर्ता मिलने आये।
चि० सावित्री से बातें—९ जून को पूरे नौ महीने होवेंगे। जापा कलकत्ता में ही कराने का निश्चय रहा। सब बातों का विचार विनिमय व निर्णय कर दिया गया।

११-३-३८

पत्र-व्यवहार। सावित्री से पत्र आदि लिखाना।
सावित्री से बातचीत।
रांची के कुछ कार्यकर्ता मिलने आये

१२-३-३८

प्रार्थना। कांके डेअरी फार्म का भली प्रकार निरीक्षण किया। गायों की व्यवस्था ठीक मालूम हुई। दूध हर वर्ष बढ़ता जा रहा है। गायें प्रायः पंजाब व सिंध की ही हैं। ख़ास ब्रीडिंग नहीं करते। मुर्गी व अण्डों की उपज देखी।
एकादशी का फराल। आराम, अखबार आदि देखे।
सावित्री देवी बियाणी पुलिया से आई। साथ में गोंदिया की एक बहन व आश्रम के मास्टर थे।
गरीबों को बांटने के लिये सावित्री ने लड्डू बनवाये। देर तक बांटने का काम किया।
एक प्रकार से शान्ति मिली।

१३-३-३८

घूमना। गरीबों को लड्डू बांटना। श्री लक्ष्मण प्रसादजी कलकत्ता से आये।

सीतारामजी का बवासीर का आपरेशन ठीक तरह से होने का तार मिला। रामकुमार बजाज, मोदीजी, डा० पूर्णबाबू वगैरा मिलने आये। सतीश बाबू भी आसे।

सावित्री को कल सुबह पांच बजे लड़का हुआ। थोड़ा कमजोर मालूम दिया।

डा० पूर्णबाबू के साथ उनके घर भोजन। उनका बहुत आग्रह।

'हंस' मासिक देखा। श्रीमन् का भाषण, शरदचन्द्र चटर्जी की जीवनी आदि।

१४-३-३८

प्रार्थना। घूमने जाना—तीन मील। वापस खेल-कूद, सायकिल चलाना आदि।

सावित्री से पत्र लिखवाये। चर्खा।

जुगुल किशोर साहू से रांची की हालत समझी।

निर्वाण आश्रम देखा। गूंगे बहरों का स्कूल देखा, भजन आदि।

१५-३-३८

घूमकर आना तीन मील। बाद में रंग आदि का खेल। लक्ष्मण प्रसादजी, महाबीर, उर्मिला देवी, उमा, ललिता, विमला आदि के साथ। रंग बहुत पक्का होने से उतरा नहीं। कई वर्षों के बाद इस प्रकार रंग का खेल खेलने का मौका आया। मन में प्रसन्नता थी।

कई लोग मिलने आये—चर्खा।

सावित्री से पत्र, तार लिखवाये और भिजवाये। शाम को मोटर से घूमने निकले। भोजन के बाद थोड़ी देर ब्रिज खेले।

तेल से पांव साफ किये।

१६-३-३८

घर के कम्पाउण्ड में ही घूमना। तेल, मट्टी, बेसन, साबुन से रंग निकालने का प्रयत्न किया। बहुत कुछ रंग निकला।

चर्खा। श्यामकिशोर, जुगलकिशोर से बातचीत।
चि० सावित्री से बातें। उसका स्वास्थ्य थोड़ा नरम रहा। पत्र व तार बम्बई केशवदेवजी को भेजा।
रांची व्यायामशाला में प्रीति-सम्मेलन था। वहां गये। कुछ परिचित व्यक्ति मिले।
झरिया गये मोटर से। करीब २३-२४ मील है। श्री लक्ष्मण प्रसादजी व महाबीर साथ थे। श्री श्यामकिशोर व जुगलकिशोर साहू भी थे। झरिया का आश्रम तथा बालकों का काम देखा। मणीबाबू ठीक व्यक्ति मिल गये, मालूम हुआ।
वहां के जमींदार, दोनों भाई, मिले।
वापस लौटते समय रास्ते में ही भोजन किया। चांदनी रात थी। ठीक मालूम हुआ। घर पर ९ बजे के बाद पहुंचकर सो गये।

१७-३-३८

चि० सावित्री की तबीयत थोड़ी नरम थी। उसके व उसके माता पिता आदि के साथ मिलकर बातचीत। जापा कलकत्ते कराना या रांची; इस सम्बन्ध में। आखिर कलकत्ते का ही निश्चय हुआ।
चर्खा। कई बंगाली सज्जन बिहार सरकार के सरक्युलर के बारे में शिकायत करने आये। अन्य मित्र भी आये।
सावित्री के पास से कमल को पत्र लिखवाया।
यहां का श्रद्धानन्द अनाथालय देखा। नाम बदलने की व बाजा बजाकर भिक्षा न मांगने की सूचना की।
सार्वजनिक सभा में कांग्रेस के महत्व पर ठीक व्याख्यान हुआ।
शिवनारायणजी मोदी के यहां भोजन। रात में सावित्री आदि से बातचीत।

१८-३-३८

रांची से ८।।। बजे लक्ष्मणप्रसादजी व महाबीरप्रसाद पोद्दार के साथ पुरुलिया के लिए रवाना।

पुरुलिया करीब १।। बजे निवारण बाबू के शिल्प आश्रम में पहुंचे। वासंती, लावण्य प्रभा देवी, अतुलबाबू आदि मिले। केदारनाथ खेडिया

आदि से वातें। चर्खा, भजनाश्रम विद्यालय, वालिका विद्यालय, मारवाड़ी समाज की ओर से मानपत्र। सार्वजनिक सभा केदारनाथ के घर के सापने हुई। म्युनिसिपल कमेटी ने मानपत्र दिया व पुलिया की जनता ने भी। एक घंटे तक कांग्रेस का कार्य व महत्त्व समझाया।
केदारनाथ के घर पर भोजन। पुरुलिया से ८ वजे करीव रवाना सेकन्ड क्लास में—आदरा, आसनसोल, सोन ईस्ट वैंक में गाड़ी वदली।

डेहरी ऑन सोम, १९-३-३८

सुवह सोन ईस्ट वैंक पर श्री ज्वालाप्रसादजी कानोडिया व दुर्गाप्रसादजी खेतान मिले। डेहरी ओन सोन तक रास्ते में वातचीत।
डेहरी पर जयदयाल पैदल स्टेशन आया था। डेरे पर चले। रामकिसनजी मिले।
पटना, बनारस टलीफोन किया। राजेन्द्र वावू का स्वास्थ्य ठीक था। वह डेलांग जायेंगे, गुप्ताजी की स्त्री का स्वास्थ्य आदि की वातें।
रामकृष्ण से वच्छराज कंपनी, हिन्दुस्तान शुगर, हिन्दुस्तान हाउसिंग, मुकन्द आयर्न वर्क्स आदि पर विचार विनिमय। रामकृष्ण ने बिहार मिनिस्ट्री की शिकायत की। तारा की सगाई के बारे में वातें। महावीर की सगाई राजगढ़ियों के यहां हो गई।
चि० रमा व प्रभात मिले। चर्खा व चि० शांतीप्रसाद, जयदयाल से बहुत देर तक वातचीत। त्रिवकलाल शाह, तथा अन्य व्यापार सम्वन्ध में।
सिमेंट फैक्टरी देखी। पेपर मिल्स व पावर हाउस भी वाहर से देखा।
शाम को—स्टाफ के लोगों ने मानपत्र दिया। उनके सामने मालिक व काम करने वाले के सम्वन्ध के बारे में जो कहना था सो कहा। शाह के घर पर गये।

डालमियां नगर, बनारस, २०-३-३८

मोतीलालजी झुनझुनवाले, परमेश्वरी, आदि से वातचीत।
मजदूरों की सभा में थोड़ा परिचय। मजदूर व कांग्रेस नीति के बारे में कहा।
श्री ए० के० शराफ, जीवाप्रसाद आदि से मिलना।

देहरादून एक्सप्रेस से बनारस रवाना। सेकण्ड में भी भीड़ थी।

बनारस पहुंचे। वहां हिन्दू मुसलमान झगड़ा व कतल चालू है। शिवप्रसादजी गुप्त के यहां ठहरे। उनसे बातचीत।

महाबीरप्रसादजी पोद्दार, बनारसीलाल बजाज, (परिवार सहित,) जौहरी व आबिद अली आये।

राजा ज्वालाप्रसाद से देर तक हिंदुस्तान हाउसिंग कम्पनी के बारे में विचार-विनमय। उनकी राय रही कि ब्रांच बन्द न की जाये। ईमानदार व होशियार व्यापारी लाईन के आदमी के चार्ज में दी जाये। इंजीनियरिंग काम वे संभाल लेंगे इत्यादि।

बनारस, २१-३-३८

प्रार्थना। महावीरप्रसाद पोद्दार से बातचीत। बाद में श्री भगवानदासजी (गुप्ताजी के ज़ंवाई) के पिता श्री वैद्यनाथदासजी (चीफ जज) बीकानेर, व उनके पुत्र व पौत्र श्री गोपीकृष्ण, सत्यनारायण प्रसाद व केदारनाथदास, आदि के साथ गंगास्नान बातचीत-परिचय।

श्री चंद्रभाल जौहरी व आबिद अली से हाउसिंग कम्पनी के बनारस ब्रांच के सम्बन्ध में बातचीत। आखिर यह निश्चय हुआ कि श्री जौहरी को मुक्त कर दिया जाय, यानी उनका कम्पनी से किसी प्रकार का भी सम्बन्ध न रहे; व एक बार जो काम हाथ में है वह पूरा किया जाय। बाद में भविष्य का विचार किया जावे। शाम को हाउसिंग के ऑफिस में गये। के० नायर इंजीनियर से बातचीत। गौरी शंकर से भी। एक मकान भी देखा। श्री अधिकारी एक मित्र को लेकर मिले।

बनारसी लाल बजाज के घर गये।

पार्सल एक्सप्रेस द्वारा ६-४० को इन्टर से लखनऊ रवाना हुए। श्री ज्योतिभूषण, आबिद अली साथ में।

लखनऊ-गोलागो कर्णनाथ, २२-३-३८

लखनऊ पांच बजे पहुंचे। मोटर से गोला फार्म ९। बजे करीब पहुंचे।

रामेश्वर से मिल की स्थिति समझी।

हरगांव से चूड़ीवाला व दूसरे काम करने वाले आये थे।

केशवप्रसाद तिवारी, धर्माधिकारी, निर्भयराम की लड़की व उमिया आदि

से मिलना।
मि० गिल्डर से देर तक मिल के वारे में बातचीत।
रामेश्वर व आनन्दकुमार आदि से बातें।

गोलागोकर्णनाथ-लखनऊ, २३-३-३८

मिल अंदर से घूमकर देखी।
चि० रामेश्वर से मिल की व्यवस्था व खर्च के सम्बन्ध में सुबह व दोपहर को विचार-विनिमय किया। नोट किये। मि० गिल्डर, गनी, जोशी आदि से बातचीत।
रामेश्वरदासजी विड़ला का टेलीफोन आने से बनारस जाने का निश्चय किया। बाद में मालूम हुआ कि वह नहीं जा रहे हैं। चर्खा।
५।। के करीव चि० ज्योतिभूषण के साथ मोटर से लखनऊ रवाना हुए।
रास्ते में ज्योतिभूषण से बातचीत।
लखनऊ पहुंचे। श्री पन्तजी घर पर नहीं मिले। घूमने चले गये थे।

बनारस, २४-३-३८

प्रार्थना। जौनपुर में हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी वाले श्रीयशवंत शहा (पटनावाले) मिलने आये। बातचीत करने से होशियार आदमी मालूम हुए।
बनारस पहुंचे। गुप्ताजी के यहां सेवा उपवन गये। शिवप्रसादजी से देर तक बातचीत।
जोहरी (दोनों भाई) व आविदअली आये। दोनों भाइयों से बहुत साफ-साफ बातचीत हुई। मैंने मेरी कल्पना व विचार बिलकुल स्पष्ट तौर से उन्हें वतला दिये।
भगवानदासजी से गोपीकृष्ण व सत्यनारायण प्रसाद के शिक्षा-कार्य आदि की बातें।
पंजाब मेल से सैकण्ड में कलकत्ता के लिए रवाना।

कलकत्ता, २५-३-३८

प्रार्थना। सुबह ७ वजे हावड़ा पहुंचे। लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार के यहां, २५ राजा सन्तोष रोड अलीपुर में, ठहरे।
स्नान कर श्री सीतारामजी सेकसरिया से मिले। वहीं भोजन, आराम,

बातचीत।
मुखालालजी, बुद्धिसेन मिले। आर्थिक अड़चन बतलाई।
सुभाष बाबू से मिलना-बातचीत।
घर लौटकर चर्खा।
पुरी एक्सप्रेस से डेलांग जाने की तैयारी।

बेरबोई (डेलांग), २६-३-३८

प्रार्थना। डेलांग से उतरकर पैदल बेरबोई गांधी सेवा संघ कान्फ्रेंस में पहुंचे। साथ में लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार, महाबीरप्रसादजी पोद्दार, रामकुमारजी केजड़ीवाल, हीरालालजी सराफ आदि थे।
गांधी सेवा संघ की कार्यकारिणी-सुबह ८ से १०। कांफ्रेंस ३-५।
बापूजी के साथ घूमना। थोड़ी बातें।
रात में गांधी सेवा संघ कान्फ्रेंस ७।। से ६।। तक।
जमीन पर सोया।

बेरबोई (डलांग), २७-३-३८

मैदान में दूर महाबीरप्रसाद पोद्दार के साथ निपटने गये।
'गांधी सेवा संघ' की कार्यकारिणी की सभा, सुबह ८-१० व शाम को ७।। से ६।। दोपहर को कांफ्रेंस ३ से ५ तक हुई।
रामकुमार केजड़ीवाल ने, सौ रुपये मासिक मार्च १६३८ से, जब तक जिंदा रहे या वह मोटर गाड़ी रखने की ताकत रखे तबतक, चालू रखने का इरादा बतलाया।
हिन्दी प्रचार सभा। जाहिर व्याख्यान राजेन्द्र बाबू, काका साहब व मैं, थोड़ा बोले। प्रदर्शनी देखी।

बेरबोई (डेलांग), २८-३-३८

परिश्रम के काम में एक घंटा करीब लगा।
गांधी सेवा संघ की कार्य कारिणी कमेटी ८-१० तक हुई। व दोपहर को १।।। से ३।। तक भोजन, आराम। चर्खा, यज्ञ १-१।। तक।
कांफ्रेंस ३ से ५ तक।
प्रार्थना के बाद बापू ने, हिन्दू-मुस्लिम-दंगे के बारे में जो प्रस्ताव रखा था उस बारे में, मेरी शंकाओं का समाधान करते हुए करीब एक घंटे भाषण

किया।

गांधी सेवा संघ कार्यकारिणी का काम ८-१० तक हुआ।

बेरबोई (डेलांग), २९-३-३८

थोड़ा शरीर श्रम का काम। राजेन्द्र बाबू, काका साहब से बातचीत।

गांधी सेवा संघ की कार्यकारिणी सभा ८-९ तक। चर्खा संघ की ९ से १० व १॥-३॥ तक हुई। सूत-यज्ञ-१-१॥ तक। गो सेवा संघ की कांफ्रेंस ३-५ तक।

हिन्दी प्रचार समिति की बैठक। राजाजी के आग्रह से अखिर सत्यनारायणजी को मद्रास भेजने का निश्चय करना पड़ा। नई चिन्ता व विचार।

राजस्थान कांग्रेस के कार्यकर्ताओं से बातचीत।

उत्कल में कांग्रेस के नाम से जो दो पार्टियां हैं उनका झगड़ा सुना। आखिर दोनों मिलकर एक हुईं। उन्होंने गोपबन्धु चौधरी को अपना नेता चुना।

मदनलाल जाजोदिया, गांधी सेवा संघ का सहायक मेम्बर बना। पचास मासिक सहायता उड़ीसा के लिए अंकित।

बेरबोई (डेलांग), ३०-३-३८

वर्धा तार ता० ५ की शाम को पहुंचने का भेजा।

बिहार रिलीफ सोसायटी के ट्रस्ट की सभा हुई। सरदार वल्लभ भाई को ट्रस्टी मुकर्रर किया। चर्खा संघ की सभा का कार्य।

बापू से व जयप्रकाश से थोड़ी बातें। सूत-यज्ञ १-१॥ तक। १॥ से ५ तक गाँधी सेवासंघ की कांफ्रेंस का काम हुआ। कृपलानी, सरदार, राजेन्द्र बाबू, किशोरलाल भाई के भाषण ठीक हुए।

मिलना-जुलना। कलकत्ता जाने की तैयारी।

पुरी एक्सप्रेस से इण्टर द्वारा कलकत्ता रवाना।

कलकत्ता, ३१-३-३८

हावड़ा उतर कर, २५-राजा संतोष रोड, पहुंचे।

चि० सावित्री वगैरा से मिलकर सीतारामजी से मिलना।

४ बजे निकलकर फुलेश्वर जमीन देखने गये—लक्ष्मणप्रसादजी व महावीरप्रसाद साथ में।

कुन्दन सुस्त मालूम हुआ। जमीन बेचने का निश्चय। श्री जगन्नाथजी अगरवाल टाटा नगरवाला (नरसींग कंपनी) वालों से मिलना। व्यवस्था करने का विचार।

१-४-३८

प्रार्थना। स्वास्थ्य साधारण। धन्नू दानी, पूर्णचन्द्र वजाज, कौशल्या, चि० डेडराजजी खेतान आदि मिलने आये। डेडराजजी व मुखालालजी की आर्थिक स्थिति के बारे में बात की। उन्हें थोड़ा समझाया। सिन्दीया वाले मास्टर व गगन विहारी मिलने आये। वर्किंग कमेटी के ठहराव के बारे में वातचीत। शंकरलाल बैंकर व प्रफुल्लचन्द्र घोष भी आये।

२। से ८ तक वर्किंग कमेटी का कार्य हुआ—सुभाष वाबू के घर, एलगिन रोड पर।

घनश्यामदासजी बिड़ला से मिलना। बातचीत। फल वगैरा लिये। स्वास्थ्य नरम मालूम हुआ। १०॥ बजे रात को सोया।

कलकत्ता, २-४-३८

चि० मदालसा व महादेवी के पत्र के कारण फिर से थोड़ी चिन्ता हुई। मन व स्वास्थ्य पर भी थोड़ा परिणाम।

वर्किंग कमेटी ८-११॥ व १ से ६ तक सुभाष बावू के घर पर हुई। विदेशी कम्पनी के बारेमें हमारी नीति का ठहराव, विचार विनिमय के बाद, पास हुआ।

जवाहरलालजी भोज के लिए लक्ष्मणप्रसादजी के यहां आये। भोजन, विनोद।

शाम को थोड़ी देर लेक पर घूमने गये। बालक वहां मिले।

सीतारामजी से बातचीत। नवल-(धर्मचन्द) (मणीभाई कोनरी) बालक व मोहन मिलने आये।

मकई के सिट्टे खाये।

कलकत्ता, ३-४-३८

रामदेवजी चोखानी, ईश्वरदासजी जालान आये। देशी रियासतों के बारे में वर्किंग कमेटी में विचार।

घनश्यामदास व ब्रिजमोहन से मिलना।

वर्किंग कमेटी सुबह ८-११।। व तीसरे पहर २-७ तक हुई। २ से ५ तक बापूजी के साथ नागपुर का शरीफ-प्रकरण चला। सुबह सुभाष बाबू के घर डा० खरे ने जो परिस्थिति कही थी, उससे तो स्थिति एकदम बदली हुई मालूम हुई। विचार-विनिमय।

बापूजी के सामने मैंने मि० शरीफ को यहां बुलाने के बारे में जो विचार कहे वह सरदार को बिलकुल पसन्द नहीं आये। और कई मित्रों को बहुत पसन्द आये—खरे, जयरामदास आदि को। स्नान भोजन आदि।

शाम को सीतारामजी के यहां भोजन। डेडराजजी को मुखालालजी के कर्ज के बारे में समझाना व भागीरथजी से कहना। भागीरथजी व सीतारामजी से मित्र धर्म व पैसे के व्यवहार पर चर्चा।

लक्ष्मणप्रसादजी, सावित्री, उर्मिला बहन से बातें।

कलकत्ता, ४-४-३८

वर्किंग कमेटी ८।। से ११।। व दोपहर को २ से ४।। बजे तक, वहां रहा। बाद में पू० बापूजी से मिला। चि० सावित्री, वगैरा को मिलाया।

सीतारामजी से मिलकर हावड़ा स्टेशन। श्री सुभाष बाबू व मौलाना का आग्रह था कि मैं न जाऊं, परन्तु जाना तो था ही—नागपुर के मामले में सरदार का रुख देखकर भी जाना ही उचित समझा।

हावड़ा—चि० सावित्री, उर्मिलाबहन व उमा पहुंचाने आये। उन्हें बाहर से भेज दिया। बाद में अन्य मित्र लोग आये। बातचीत। थर्ड क्लास से वर्धा रवाना। दामोदर, विट्ठल, साथ में थे। शंकरलाल बैंकर भी साथ थे।

वर्धा, ५-४-३८

शंकरलाल बेंकर से बातचीत। वर्किंग कमेटी से त्यागपत्र देने के बारे में खूब विचार-विनिमय के बाद यही विचार रहा कि आज तो तार से त्यागपत्र न भेजें।

नागपुर के शरीफ प्रकरण के बारे में मैंने कलकत्ता में, बापू के सामने ३ ता० की वर्किंग कमेटी में जो यह राय दी थी कि, डा० खरे का खुलासा सुनने के बाद मेरी यह राय हुई है कि, अब हम इस स्थिति में विशेष ज्यादा कुछ नहीं कर सकते; क्योंकि पार्टी मीटिंग में सर्वानुमति से उन्हें माफी दे

दी गई, व मिनिस्टरों की सबों की भी यही राय है। तब फिर शरीफ को बुलाने से लाभ क्या ? इससे सरदार वल्लभ भाई नाराज हो गये, ऐसा मालूम हुआ था; परन्तु आज सुबह जब ज्यादा हाल मालूम हुआ तो रायपुर से बापू व सुभाष बाबू को एक्सप्रेस तार दिया कि मेरी राय का विचार नहीं किया जाय।

नागपुर में सर पटवर्धन, सोनक वगैरा मिले।

वर्धा पहुंचे। तार पत्र पढ़े।

वर्धा ६-४-३८

केशर व बाद में राधाकृष्ण से बातें करके स्नान आदि के बाद घूमने गये। केशर, नर्मदा साथ में। प्रह्लाद की दादी को साथ रखने व श्रीराम की सगाई आदि की बातें। आश्रम वगैरा घूमकर आया। नर्मदा के शेअर का फैसला राधाकृष्ण के साथ।

बम्बई जाने की तैयारी। जाजूजी व किशोरलाल भाई से देर तक वर्किंग कमेटी के त्यागपत्र, सरदार से मतभेद आदि की व मानसिक दुर्बलता का हाल कहा।

त्यागपत्र नहीं देने की दोनों ने राय दी। विचार करना। डा० महोदय से शरीफ आदि घटना के बारे में बातचीत की।

नागपुर मेल से थर्ड में बम्बई रवाना। ब्रिजलाल बियाणी व उनकी स्त्री से थोड़ी देर बातचीत। भीड़ में ही सोया।

जुहू, ७-४-३८

दादर उतरे।

केशवदेवजी से डायरेक्टर्स, मुकन्द आयर्न वर्क्स, हिंदुस्तान शुगर आदि के बारे में बातचीत।

मुकन्दलालजी (लाहोरवाले) व जमनादासभाई से लोहे की कम्पनी के बारे में विचार-विनिमय।

रामेश्वरजी बिड़ला (परिवार सहित) आये। भोजन सब लोगों के साथ। बातचीत। ब्रिज।

कृष्ण कुमार के स्वास्थ्य का विचार। डा० जीवराज मेहता भी आये। जानकी देवी के बारे में विचार-विनिमय।

डा० दास (होमियोपैथ) आये। बम्बई सरकार जो ,बिल पास करना चाहती है उस बारे में बातें।
थोड़ी देर खेलना। बाद में ऊपर सोने जाना। कई कारणों से प्रायः रात भर सो नहीं सका।

८-४-३८

फतेचन्द झुनझुनूवाले से बातचीत।
जानकी से करीब साढ़े तीन घंटे बातचीत। उसका दुःख मानसिक चिंता का कारण धीरज के साथ सुना। दुःख भी हुआ। आखिर में उससे कहा तुम अपनी योजना देओ। उस प्रकार चलने का प्रयत्न किया जावे आदि। साथ में भोजन किया।
कमला मेमोरियल सब-कमेटी की सभा हुई। डा० जीवराज मेहता, खुर्शेद बहन, भूता, आर्किटेक्चर दिक्षित आये।
बैकुंठभाई मेहता व उनके घर के लोग आये।

९-४-३८

जानकी देवी के साथ विचार-विनिमय।
कई प्रकार के विचार अधिक पैदा होते रहे। उत्साह व रस नहीं मालूम होता।
उपाय सोचता रह गया और दिन उग गया। चि० राधाकृष्ण रुइया आया।
मदन आदि की स्थिति कही। राधाकृष्ण वर्धा से आया।
मि० नरीमन (नेचर क्योअर वाले) के यहां मालिश व स्टीम बाथ लिया।
आज से तीन रोज अनाज न खाने का विचार किया।
सुव्रता बहन रुइया मिलने आई। देर तक बातचीत।

१०-४-३८

सुबह जानकी देवी से बहुत देर तक उसके मन की स्थिति, धीरज, शान्ति के साथ सुनी।
भाग्यवती व यशोदा देवी आये।
मुकन्दलाल, जमनादास गांधी, केशवदेवजी, चिरंजीलाल, ब्रिजमोहन, हरजीवनभाई आये।

दी गई, व मिनिस्टरों की सबों की भी यही राय है। तब फिर शरीफ को बुलाने से लाभ क्या? इससे सरदार वल्लभ भाई नाराज हो गये, ऐसा मालूम हुआ था; परन्तु आज सुवह जब ज्यादा हाल मालूम हुआ तो रायपुर से वापू व सुभाष बाबू को एक्सप्रेस तार दिया कि मेरी राय का विचार नहीं किया जाय।

नागपुर में सर पटवर्धन, सोनक वगैरा मिले।

वर्धा पहुंचे। तार पत्र पढ़े।

वर्धा ६-४-३८

केशर व बाद में राधाकृष्ण से बातें करके स्नान आदि के बाद घूमने गये। केशर, नर्मदा साथ में। प्रह्लाद की दादी को साथ रखने व श्रीराम की सगाई आदि की बातें। आश्रम वगैरा घूमकर आया। नर्मदा के शेअर का फैसला राधाकृष्ण के साथ।

बम्बई जाने की तैयारी। जाजूजी व किशोरलाल भाई से देर तक वर्किंग कमेटी के त्यागपत्र, सरदार से मतभेद आदि की व मानसिक दुर्बलता का हाल कहा।

त्यागपत्र नहीं देने की दोनों ने राय दी। विचार करना। डा० महोदय से शरीफ आदि घटना के बारे में बातचीत की।

नागपुर मेल से थर्ड में बम्बई रवाना। ब्रिजलाल वियाणी व उनकी स्त्री से थोड़ी देर बातचीत। भीड़ में ही सोया।

जुहू, ७-४-३८

दादर उतरे।

केशवदेवजी से डायरेक्टर्स, मुकन्द आयर्न वर्क्स, हिंदुस्तान शुगर आदि के बारे में बातचीत।

मुकन्दलालजी (लाहोरवाले) व जमनादासभाई से लोहे की कम्पनी के बारे में विचार-विनिमय।

रामेश्वरजी बिड़ला (परिवार सहित) आये। भोजन सब लोगों के साथ। बातचीत। ब्रिज।

कृष्ण कुमार के स्वास्थ्य का विचार। डा० जीवराज मेहता भी आये। जानकी देवी के बारे में विचार-विनिमय।

डा० दास (होमियोपैथ) आये। बम्बई सरकार जो ,बिल पास करना चाहती है उस बारे में बातें।
थोड़ी देर खेलना। बाद में ऊपर सोने जाना। कई कारणों से प्रायः रात भर सो नहीं सका।

८-४-३८

फतेचन्द झुनझुनूवाले से बातचीत।
जानकी से करीब साढ़े तीन घंटे बातचीत। उसका दुःख मानसिक चिंता का कारण धीरज के साथ सुना। दुःख भी हुआ। आखिर में उससे कहा तुम अपनी योजना देओ। उस प्रकार चलने का प्रयत्न किया जावे आदि। साथ में भोजन किया।
कमला मेमोरियल सब-कमेटी की सभा हुई। डा० जीवराज मेहता, खुर्शेद बहन, भूता, आर्किटेक्चर दिक्षित आये।
बैकुंठभाई मेहता व उनके घर के लोग आये।

९-४-३८

जानकी देवी के साथ विचार-विनिमय।
कई प्रकार के विचार अधिक पैदा होते रहे। उत्साह व रस नहीं मालूम होता।
उपाय सोचता रह गया और दिन उग गया। चि० राधाकृष्ण रुइया आया।
मदन आदि की स्थिति कही। राधाकृष्ण वर्धा से आया।
मि० नरीमन (नेचर क्योअर वाले) के यहां मालिश व स्टीम बाथ लिया।
आज से तीन रोज अनाज न खाने का विचार किया।
सुव्रता बहन रुइया मिलने आई। देर तक बातचीत।

१०-४-३८

सुबह जानकी देवी से बहुत देर तक उसके मन की स्थिति, धीरज, शान्ति के साथ सुनी।
भाग्यवती व यशोदा देवी आये।
मुकन्दलाल, जमनादास गांधी, केशवदेवजी, चिरंजीलाल, ब्रिजमोहन, हरजीवनभाई आये।

मुकन्द आयर्न वर्क्स की बोर्ड की सभा हुई। रामेश्वरजी, बिड़ला, मैं, मुकन्द-लाल थे। केशवदेवजी व जमनादास भाई भी थे।

जमनालाल सन्स की बोर्ड की सभा हुई। मदालसा, उमा और मैं व केशव-देवजी, चिरंजीलाल तथा जगन्नाथ मिश्र थे।

११-४-३८

सुबह जानकी देवी, मदालसा, उमा, रामकृष्ण, दामोदर वगैरा मिलकर घर के लोगों के स्वभाव के नंबर लगाये।

समुद्र स्नान। बाद में जानकी देवी ने अपना आखिरी फैसला किया कि मैं उसे एक वर्ष तक तो केशर, नर्मदा से बोलने या प्रेम करने के लिए नहीं कहूं। वे आवें और जानकी उनसे न बोले तो मैं नाराज न होऊं। उन्होंने अपना सात वर्ष का दुःख, गैर समझ, आपस की वर्णन इन तीन दिनों में पूरी बताई। वर्धा में मां के पास वह लोग मां की इच्छा हो तब आ सकते हैं। वहां भी जानकी रहे तो उसे बोलने के लिए दबाया न जावे।

माटुंगा जाकर केशर, नर्मदा, पन्ना को थोड़े में स्थिति समझा कर कही। केशर की भी पूरी भूल दिखाई दी। पन्ना को भी न आने को समझाया, उसके ध्यान में नहीं आया।

डॉ० रज्जबअली जुहू देखने आ गये थे इसलिए वहां से जल्दी वापस आना पड़ा। उसने तपासा। जानकी देवी, मदालसा, महादेवी को भी तपासा, हालत कही। डा० दास (होमियोपैथ) आये। देर तक बम्बई सरकार व नया एक्ट के बारे में बोलते रहे।

१२-४-३८

श्री नागेश्वर राव पन्तलू का स्वर्गवास होने के समाचार पढ़े। सज्जन पुरुष थे।

सुब्रताबाई आई। मदन, राधाकृष्ण, ज्ञान मंदिर आदि के संबंध में विचार-विनिमय।

प्राणलाल, देवकरण नानजी, मथुरादास, जमनादास, केशवदेवजी, मुकन्द-लाल आदि से देर तक बातचीत। इन्हें डायरेक्टर लेने को कहा। विचार करके जवाब देंगे।

घूमना

१३-४-३८

जानकी व बालकों से बातचीत। चि० रामगोपाल गाडोदिया आया। हरजीवनभाई आदि से बातें।

घनश्यामदासजी व रामेश्वरदासजी बिड़ला आये। बातचीत, विचार-विनिमय।

केशवदेवजी, आबिदअली, मूलजीभाई से हाउसिंग के बारे में बातचीत।

१४-४-३८

केशर, नर्मदा, पन्ना, प्रह्लाद, श्रीराम, वगैरा आये, समुद्र स्नान, भोजन। आज जानकी का व्यवहार इन लोगों के साथ बहुत ही सन्तोष कारक रहा।

लादूरामजी जोशी जयपुर से आये। उन्होंने सारी स्थिति समझाई।

सर पुरषोत्तम, घनश्यामदास बिड़ला, कस्तूरभाई आदि से देर तक राजनैतिक व व्यापारिक चर्चा। मैंने अपने विचार कहे।

मि० ए० के० दलाल व सर नौरोजी से जमशेदपुर व वर्तमान स्थिति पर देर तक बातचीत।

जुहू आकर भी घनश्यामदास व रामेश्वरदास बिड़ला से देर तक बातचीत। भोजन, ब्रिज।

१५-४-३८

मुकन्दलालजी पित्ती मिलने आये। घर की स्थिति मतभेद का वर्णन किया।

१ बजे करीब जानकी देवी से बिदा लेकर माटुंगा होते हुए बिड़ला हाउस करीब दो बजे पहुंचे।

बिड़ला हाउस में राजस्थानी मण्डल के कार्य पर विचार-विनिमय।

जिन प्रान्तों में राजस्थानी बसे हुए हैं वहां उन्हें उस प्रान्त की सब प्रकार की बेहतरी में पूरा हिस्सा व प्रेम रखने को मैंने कहा। राजस्थानी रियासतों में भी जवाबदार राज्य-पद्धति दाखल कराने का प्रयत्न करना।

पेरीन बहन से हिन्दी-प्रचार वगैरा के बारे में बातें। स्टेशन।

बोरी बन्दर से सेकण्ड में केशवदेवजी के साथ। फतेचन्द व उसकी लड़की नासिक तक साथ रवाना हुए।

पुलगांव, सोनेगांव, वर्धा, १६-४-३८

केशवदेवजी से थोड़ी बातें।

पुलगांव-उतरकर जल्दी स्नान आदि से निवटकर मोटर से सोनेगांव खादी यात्रा में शामिल। विनोबा का भाषण मार्मिक हुआ—खादी के भाव बढ़ाने के बारे में। चर्खा-यज्ञ। एक घंटा काता।

सोने गांव से ४ बजे के बाद रवाना होकर देवली होते हुए। वर्धा। स्टेशन। ग्रान्ट ट्रंक से बापूजी देहली से वर्धा आये।

उन्हें सेगांव के आधे रास्ते तक पहुंचाकर वापस आया।

वर्धा, १७-४-३८

श्री रविशंकर शुक्ल मिलने आये। थोड़ी बात हुई। बाकी की सोनेगांव से वापस आने पर।

श्री घनश्यामदासजी बिड़ला बम्बई से आये।

जल्दी भोजन करके सोनेगांव गया।

शेतकरी परिषद (तालुका) में थोड़ी देर बैठना।

प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का काम साढ़े पांच घंटे तक चला। महत्व की चर्चा, ठहराव आदि पास हुए। एक प्रकार से तो मेम्बरों का वर्ताव ठीक मालूम हुआ। परन्तु प्रान्तीय कमेटी में चार सदस्य नियुक्त करने का अधिकार सभापति को न देना ठीक नहीं मालूम हुआ।

वर्धा पहुंचे। शुक्लजी व मिश्र दोनों, बहुत देर तक अन्दर की परिस्थिति का परिचय कराते रहे। मैंने भी साफ-साफ जो कहना था कहा। इन्होंने स्टेटमेन्ट ठीक करके प्रेस में भेज दिया।

वडकश वकील से सावधान केश की बातें।

१८-४-३८

राधाकृष्ण व घनश्यामदासजी के साथ थोड़ा घूमना।

घनश्यामदासजी बिड़ला कलकत्ता गये।

डा० सौन्दरम् व केशवदेवजी आये।

महिला आश्रम का काम, नाना व भागीरथी बहन के साथ मिलकर, किया।

मि० महाजन व साठे मिलने आये।

केशवदेवजी से हाउसिंग, शक्कर मिल, वगैरा के बारे में बातचीत।
नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का काम, पटवर्धन, घटवाई, बाबा सा० कारन्दीकर आदि के साथ अढ़ाई घंटे तक चला। पूनमचंद रांका, पुखराज (चान्दावालों) की दरखास्तों का फैसला।
सेगांव गये। प्रार्थना, बाद में बापू का मौन खुलने पर थोड़ी देर बातचीत। डा० सौन्दरम साथ थे।
डा० सौन्दरम ने तमिल व हिन्दी के सुन्दर भजन सुनाये।

१९-४-३८

डा० सौन्दरम, सत्यदेवजी, उनकी स्त्री, राधाकृष्ण व अनुसूया मिलकर पवनार गये।
विनोबा से देर तक विचार-विनिमय। मानसिक अशान्ति, रमण महर्षि आदि।
महिला आश्रम में कु० ज्योत्स्ना, शिक्षिका व अन्य लड़कियों से बातचीत।
यादवजी वैद्य व श्री दवे (बम्बई वाले) वैद्य नागपुर से आये। उनसे बातचीत। उन्हें लेकर सेगांव जाना।
बापू से करीब सवा घंटा बातचीत—जयपुर प्रजामण्डल व खादी प्रदर्शनी, वर्किंग कमेटी, स्वास्थ्य व मानसिक स्थिति, महिला मण्डल व परीक्षा, मानसिक अशान्ति व महर्षि रमण इत्यादि बातों पर विचार-विनिमय।
महिला आश्रम में भोजन; प्रार्थना। बहिनों ने धोती जोड़ा दिया, लेने का साहस कम था।
काका साहब, श्रीमन्, सत्यनारायणजी से हिन्दी-प्रचार आदि के सम्बन्ध में देर तक बातचीत।

२०-४-३८

मारवाड़ी शिक्षा मण्डल, नव भारत विद्यालय, महिला आश्रम व परीक्षा के बारे में श्रीमन् से बातें।
राधाकिसन, दिनकर पाण्डे, काकासाहब से द्वारकानाथजी हरकरे के बारे में बातें। दुःख व विचार। मैंने विशेष भाग न लेने का निश्चय किया।
सावधान-केस के कागजात देखे। शंकरलाल बैंकर, जाजूजी, आदि से बातें।

पत्र-व्यवहार, भोजन, आराम।

शुक्लजी व मिश्र नागपुर से आये। रात में देर तक उनसे बातचीत। गोविन्ददासजी के बारे में भी।

२१-४-३८

बापूजी सेगांव से आये। वह थके हुए मालूम हुए। उनका भाषण। उन्होंने आज 'विद्यार्थी-मन्दिर' योजना के अंतर्गत स्कूल का शिलान्यास व ट्रेनिंग स्कूल का उद्घाटन किया।

श्री शुक्ल व मिश्र का घर पर चाय-पानी हुआ।

ग्राम उद्योग संघ की ट्रस्ट-कमेटी की बैठक हुई। जाजूजी, कुमारप्पा, वैकुंठभाई और मैं थे।

आज सावधान-केस में रिक्रास-रिएक्जामिनेशन थी, वहां तैयारी करके जाना पड़ा। थोड़ी देर गवाही होकर डिस्चार्ज मिला।

घर आकर सोया।

महिला आश्रम की सभा का कार्य। जांच का काम हाथ में लिया।

२२-४-३८

महिला आश्रम। कु० ज्योत्स्ना, दीनदयालजी, सुन्दरलाल मिश्र, उनकी स्त्री, दीनदयालजी की स्त्री के पत्र पर सत्यदेवजी से बहुत देर तक विचार-विनिमय होकर आखिर फैसला किया गया कि आगामी वर्ष से ज्योत्स्ना, सुन्दरलाल मिश्र व दीनदयालजी को 'मण्डल' व 'आश्रम' के काम से मुक्त किया जाय। मन पर विचार व चिन्ता।

बापू से सेगांव जाकर दिल खोलकर स्पष्ट तौर से मन की स्थिति व अपनी कमजोरी का वर्णन किया। बापू ने समझाया और अपनी स्थिति का वर्णन किया। किशोरलालभाई, राजकुमारी, प्यारेलाल, मीराबहन वगैरा भी वहां मौजूद थे। मन थोड़ा हलका भी हुआ व दुःख भी हुआ।

रात के १० बजे तक विचार होता रहा। श्री कृष्ण प्रेस की सभा व अन्य कार्य हुआ। काफी थक गये।

बा वहीं सोईं।

वर्धा २३-४-३८

बा, सरस्वती, कान्ती वगैरा सेगांव गये।

नागपुर प्रान्तीय कमेटी की व्यवस्था का काम। शिक्षण बोर्ड का काम अपने यहां शुरू हुआ। श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर ट्रस्ट की सभा हुई।
चिरंजीलाल, द्वारकादास को सूचना की।
राजकुमारी अमृतकौर ने वापू के तैयार किये नोट पढ़कर सुनाये।
प्यारेलाल ने वापू का वह स्टेटमेन्ट, जो उन्होंने जिन्ना की मुलाकात के बारे में दिया, सुनाया।
आशावहन, सौन्दरम, राजकुमारी, वावा सा० की पत्नी आदि से मामूली वातें।
राधाकृष्ण व पुष्कर बजाज के लेन-देन का पंचनामा।
नागपुर मेल से बम्बई रवाना। सेकण्ड में जगह नहीं। पुलगांव से केशवदेवजी के साथ इन्टर में वैठे। वातचीत, रात में पूरी नींद नहीं आई।

जुहू, २४-४-३८

दादर उतरकर जुहू, हजामत व वाद में देर तक समुद्र-स्नान।
केशवदेवजी, प्रह्लाद, पन्ना व शान्ता राणीवाला आये; वातचीत।
सरदार वल्लभभाई, लालचन्द भाई, मणीलाल नानावटी वगैरा मिलने आये, देर तक वातचीत।

२५-४-३८

प्रार्थना। घूमना, जानकी, मदालसा, उमा, रामकृष्ण साथ में। बालादत्त रसोइया के वारे में चर्चा, दुःख। आखिर बालकों पर फैसला करना छोड़ा।
वम्वई में रामनारायणजी के वंगले पर सीकर की स्थिति पर डेपुटेशन आया। १२॥ बजे तक उनसे बातचीत। समझाया व उन्हें कहा कि सीकर रावराजाजी व वहां की जनता ने वड़ी भूल की है। अपने कार्यों से अपना मामला एकदम कमजोर व हानिकर कर लिया।
सुव्रतावहन के साथ भोजन, वातचीत—मदन व कान्ता के सम्वन्ध का खुलासा; राधाकृष्ण की सगाई, रामनारायण रुइया ज्ञान मंदिर के लिए पचास हजार की मदद व विचार-विनिमय।
गोविन्दलालजी पित्ती, शान्तावहन, सुलभा, पद्मा वगैरा आये।
सरदार वल्लभभाई व कृपलानी से मिलना। सी० पी० (मध्य प्रांत)

मिनिस्टरों का हाल कहा। शान्ता, सुशीला से मिलना।
दफ्तर में हिन्दुस्तान शुगर मिल्स डिबेंचर सभा। डा० य० ओ० शाह को नर्मदा व प्रह्लाद को दिखाया।
माटुंगा में पन्ना ने भोजन कराया। केशर से बातें। उसने अपनी स्थिति व दुःख कहा।
नर्मदा व प्रह्लाद से थोड़ी बातें।

२६-४-३८

जानकी का वही जूनी। दुःख व चिंता की बातें।
विचार। सिर दुखने लगा। सोया। घूमना वगैरा नहीं हुआ। देर से विचार व हिम्मत करके समुद्र-स्नान देर तक किया।
गोकुलभाई, सफिया व राधाकृष्ण रुइया वगैरा आये। फलाहार, भोजन, आराम।
शास्त्रीजी को लम्बा तार सीकर के बारे में जयपुर भेजा।

२७-४-३८

चि० मदन रुइया से उसके विवाह आदि के बारे में विचार जाने।
हरिभाऊजी उपाध्याय व कृपलानी आये। जयपुर प्रजामंडल के बारे में स्टेटमेन्ट दिया। भाषण पर विचार-विनिमय। हरिभाऊजी ने लिखना शुरू किया।
रामेश्वरदासजी बिड़ला देर तक बातचीत करते रहे। केशवदेवजी वगैरा भी थे।
हरिभाऊजी रात फ्रन्टियर से रवाना हुए।

२८-४-३८

पू० बापूजी को लाने दादर स्टेशन गये। गाड़ी करीब डेढ़ घंटे लेट थी।
दादर से बापू को लेकर जुहू आये। बापू अपने यहां ठहरे। घूमने गये। स्नान वगैरा से निवृत्त हुए।
नवजीवन ट्रस्ट की सभा हुई।
बापू जिन्ना से मिलकर आये। उसका हाल कहा।
शाम की प्रार्थना में लोग ज्यादा थे।

२९-४-३८

बापू से जयपुर व सीकर के मामले की बातें कीं। उन्होंने भी मेरा वहां जाना पसन्द किया। बापू ने मैसूर व उड़ीसा पर स्टेटमेन्ट लिखवाये। खेर से बातचीत।

जमनादास द्वारकादास ने अपनी रामकहानी कही। उसके साथ थोड़ी सहानुभूति हुई।

सर पुरुषोत्तमदास, सरदार वल्लभ भाई, सर बद्रीदास, रामेश्वरदास, सुव्रतावहन, वगैरा बहुत से लोग आये। सरदार से सीकर व जयपुर के मामले पर विचार-विनिमय।

सुव्रतावहन, ज्ञानमंदिर, वर्धा को दस हजार से ज्यादा नहीं देती दिखती। शाम की प्रार्थना के वाद तैयारी। पूना से हनुमतरामजी के यहां से डेपुटेशन आया। उसका समाधान नहीं कर सका।

बापू के साथ मैं, जानकीदेवी, उमा, रामकृष्ण, दामोदर, विट्ठल फ्रन्टियर मेल से रवाना हुये।

सवाई माधोपुर, जयपुर, ३०-४-३८

रतलाम में बापूजी के डिव्वे में गया। उनसे जयपुर प्रजामण्डल के लिए सन्देश लिया।

जिन्ना से समझौते की जो बात चल रही है, उस बारे में बापू ने अपने विचार कहे। मिनिस्ट्री के वारे में विचार-विनिमय। फ्रन्टियर के वारे में महादेवभाई का नोट पढ़ा, थोड़ा दुःख हुआ।

वापू के पास ही नाश्ता किया। बापू अपनी निराशा की वातें करते थे, मैं अपनी।

सवाई माधोपुर में जयपुर से हीरालालजी शास्त्री आये। बापू से थोड़ी बातें।

बाद में शास्त्रीजी से सीकर व जयपुर के मामले को भली प्रकार समझ लिया।

प्रजामण्डल के काम की स्थिति समझी। चिरंजीलाल अग्रवाल का भाषण देखा।

जयपुर में लच्छीरामजी चूड़ीवाले, मदनलाल (कलकत्तावाला) व जयपुर के

नागरिक आये। मेमोरियल में ठहरने का निश्चय। वहां पहुंचने पर थकावट मालूम दी। थोड़ी देर हरिभाऊजी वगैरा से वात करके चि० मार्तण्ड से सस्ता साहित्य मंडल के बारे में बातचीत की। बाद में बिना नहाये-खाये सो गया।

जयपुर, १-५-३८

हरिश्चन्द्र, चिरंजीलाल अग्रवाल आदि मिलने आये। देर तक बातचीत। वनस्थली आश्रम की बालिकायें आईं।

हरिभाऊजी व कपूरचन्दजी से भाषण के बारे में बातचीत।

माधोलालजी चौधरी ने अपना दुःख कहा। रामनारायणजी, दुर्गाप्रसाद के व्यवहार व हरकतों का विचार। वह भी दुःखी थे। उनकी राय थी कि रामनारायणजी को अजमेर नहीं रहना चाहिए।

सीकर रावराजाजी को, सीकर जाने के बारे में, टेलीफोन से सन्देश दिया।

२-१० की गाड़ी से सीकर रवाना। रास्ते में चौमू के मुस्लिम कार्यकर्त्ता व बाद में जयपुर के वकील वगैरा मिले।

सीकर पहुंचे। कैप्टन वेब मिले। अन्य लोग भी मिले।

राणीजी का बहुत आग्रह होने के कारण डोडीयों पर जाकर आना हुआ।

सीकर, २-५-३८

कई लोग मिलने आये। उन्हें समझाया गया। राणीजी का सन्देश लेकर गौरीलाल बियाणी आये। उन्हें भी, मेरी राय जो थी वह स्पष्ट कहलाकर भेजी।

आज प्रजामण्डल का भाषण आखिरी रूप से तैयार करके जयपुर भेज दिया गया।

सीतारामजी, सागरमल, नगीखां आदि कई लोग मिलने आये।

३-५-३८

मोरों का नाच व खेल देखा।

हरिभाऊजी व रामसिंहजी रजपूत से बातें।

गाडोदा ठाकर मिलने आये। सागरमल बियाणी, सीतारामजी सोढाणी व हिन्दू सभा वाले आये।

जानकीदेवी वगैरा राणीजी से मिल आये। सीकर के कई खास-खास लोग

मिलने आये।
हरिभाऊजी के साथ बापना का सन्देश मिला।
लालसिंहजी, स्योबक्सिंहजी श्रीगढ़ के रखवालों की परवानगी लेकर मिलने आये। उन्होंने आपबीती कही।
लादूरामजी जयपुर से आये। वहां के हाल कहे।

सीकर, कासी का बास, ४-५-३८

हरिभाऊजी सुबह की गाड़ी से ग्वालियर रवाना हुये।
बद्रीनारायण सोढानी की बीमारी का सुना तो उससे मिलने उसके घर गये। थोड़ी बातचीत।
रमाबाई जोशी ने अपनी आपबीती सुनाई। आश्चर्य। कपिलदेव, रुद्रदत्त, गो० भार्गव, डाक्टर, पुष्कर के महन्त साधु, नन्दकिशोर आदि के बारे में बातें।
बम्बई दुकान से तार आया कि श्रीनिवास रुइया की माता सुगनबाई का आज सुबह देहान्त हो गया। तार-पत्र आये, दिये।
मोटर से सब घर के, काशी के बास गये। कुछ लोग जीन माता भी जाकर आये। वहां स्कूल का काम देखा। विजराजजी, गीता, गुलाबचन्द से बातचीत।

५-५-३८

जयपुर प्राइममिनिस्टर का तार जुहू से आया। कुबेरदानजी वगैरा मिले। बद्रीनारायण व सागरमल बियाणी से मैंने अपने विचार कहे।
चि० उमा घाघरा, ओढ़ना, पहनकर मारवाड़ी पोशाक में घूंघट निकाल कर आई। पहचान में नहीं आई। धोखा हुआ।
श्रीहीरालालजी बियाणी, बाबूजी विश्वेसरनाथजी, गौरीलालजी बियाणी आदि से मिलना हुआ। यहां की स्थिति के विषय में। कोर्ट खुलने चाहिए, यह राय सबों की हुई। मैंने भी जोर दिया।

सीकर-जयपुर, ६-५-३८

प्रह्लाद वैद के घर पर, भोजन सुन्दर व प्रेमपूर्वक हुआ।
दोपहर की गाड़ी से सब साथ में जयपुर रवाना।
जयपुर स्टेशन पर स्वागत। इंपीरियल होटल में ठहरे। कार्यकर्ताओं के

साथ प्रोसेशन के बारे में विचार-विनिमय देर तक हुआ। प्रोसेशन निकालने का फैसला। जयपुर सरकार की स्थिति समझी।

जयपुर, ७-५-३८

पूज्य बा, देवदासभाई, कान्ती, सरस्वती गाड़ोदिया देहली से आये।
प्रोसेशन बहुत सुन्दर ढंग से व उत्साहपूर्वक धूमधाम के साथ निकला।
शाम को प्रदर्शनी का उद्‌घाटन पू० कस्तूरबा ने किया।
देवदास ने भी भाषण दिया। मि० यंग भी आये थे। उनसे देर तक वहीं पर बातचीत। कल फिर मिलने का निश्चय।

८-५-३८

मि० यंग से बहुत देर तक राजनैतिक, खासकर सीकर के सम्बन्ध में, विचार-विनिमय होता रहा। मैंने अपने मन का दर्द साफ तौर से कहा। दो-अढ़ाई घंटे तक बातचीत। उसने भी प्रजामण्डल से पूरी सहानुभूति रखते हुए अपनी अड़चनें बताईं।
आखिर में वहां से आकर पू० बापूजी को व जयरामदास को, न आने के बारे में तार करना पड़ा।
विषय निर्वाचिनी समिति व वर्किंग कमेटी का काम हुआ।
प्रजा मण्डल का खुला जलसा ठीक तौर से ७॥ बजे के करीब शुरू हुआ और ११ बजे पूरा हुआ। बीच में थोड़ी गड़बड़ गोपीलाल वगैरा ने की। बाद में शांति हो गई। जलसे की व्यवस्था वगैरा सब ठीक रही।

९-५-३८

रामबाग में थोड़ा घूमना—पार्वती, गिरधारी (देहली वाले) साथ में।
प्रजामण्डल की वर्किंग कमेटी का कार्य व बाद के विषय-निर्वाचनी की सभा ११॥ से ५ बजे तक होती रही। सीकर ठहराव (प्रस्ताव) पर विशेष परिश्रम, विचार व प्रयत्न हुआ। आखिर रास्ता ठीक निकला।
प्रजामण्डल का जलसा साढ़े सात को शुरू हुआ। रात में डेढ़ बजे बाद पूरा हुआ।
कार्य संतोषजनक रहा। खाली गोपीलाल शर्मा की गड़बड़ के कारण कुछ समय बीच में थोड़ी चिन्ताकारक स्थिति हो गई थी, सो बाद में सब ठीक हो गई।

पार्वती का भाषण बेमौके व लम्बा हुआ। वह अपनी आदत से लाचार है।
श्री चिरंजीलाल (दोनों), पाटणी, हरिश्चन्द्र आदि के भाषण ठीक हुये।
जनता ने ठीक भाग लिया।

जयपुर-सीकर, १०-५-३८

मि० एफ० एस० यंग से बातचीत। उन्होंने प्रजामंडल की सफलता पर बधाई दी।
सीकर की स्थिति पर विचार-विनिमय। उनकी इच्छा थी कि मेरा सीकर चलना हो सके तो बहुत उपयोगी होगा। मैंने कुछ महत्व की शर्तें रखीं।
उन्होंने टेलीफोन से सर बीचम से उसकी स्वीकृति ले ली।
श्री हुकमतराय जेल सुपरिंटेन्डेन्ट के आग्रह व प्रेम से जेल व पागलखाने का निरीक्षण किया।
दोपहर की गाड़ी से सीकर रवाना। रास्ते में विचार-विनिमय।
शाम को सीकर पहुंचे। इसी गाड़ी में श्री यंग व कौल भी थे।
सीकर में मित्रों से मिलना।

सीकर, ११-५-३८

सीकर की स्थिति पर विचार-विनिमय। बातचीत अलग-अलग और थोड़े-थोड़े समुदाय से भी करनी थी। समझाना भी था।
पूज्य बा, जानकी देवी, पार्वती, दोपहर की गाड़ी से जयपुर से सीकर पहुंचे।
जनता ने उनका स्वागत किया।
मि० यंग से मिला। बहुत देर तक बातचीत, विचार-विनिमय। जनता में कोर्ट खोलने के विरुद्ध जोश ज्यादा बढ़ा हुआ है। उसका खास कारण कोर्ट आफ वार्ड्स का जाहिर करना व राजाजी को पागल करार देना है।
श्री रावराजाजी को, कलकत्ता व बम्बई वगैरा मित्रों को तार भिजवाना।

१२-५-३८

बा के साथ कॉफी ली। सीकर की स्थिति पर देर तक विचार-विनिमय।
पूज्य बा, जानकी, पार्वती, गुलाब, राणी साहब से देर तक मिलकर आये।
उन्हें साफ-साफ समझाकर आये।
जनता की ओर से जो लोग वहां आये, उन्हें बहुत देर तक समझाया गया।
उनकी शंकाओं को दूर किया गया।

श्री झमनसिंहजी जाट सभा के मंत्री (अलीगढ़ वालों) से सुबह-शाम बातचीत।
मि० एफ० एस० यंग से भी देर तक बातचीत। उन्हें यहां की हालत समझाई।
पांच मांगें लिखकर दीं।
रात में फिर बद्रीनारायण आदि से बातचीत।
पूज्य बा, पार्वती वगैरा कासी के बास जाकर आये।

१३-५-३८

श्री बद्रीनारायण सोढानी आदि से बातचीत।
मि० एफ० एस० यंग और कर्नल वी० एल० कौल, कोर्ट आफ वार्डस् सु० डे०, से बहुत देर तक सीकर-स्थिति पर विचार-विनिमय। बिना बल प्रयोग किये स्थिति किस प्रकार काबू में आ सकती है, इस सम्बन्ध में मैंने अपने विचार कहे। शंकाएं। बाद में शाम को फिर उनका पत्र आया तो देर तक बातचीत। के० वैब भी शामिल हुआ। मैंने उसे खुद होकर त्यागपत्र देने की सलाह दी। थोड़ी जंची भी, परन्तु उन्होंने दिक्कतें पेश कीं।
सीकर के मानेजाने वाले नेताओं को खूब जोर के साथ व स्पष्ट तौर से समझाने का प्रयत्न किया। एक बार आशा भी हुई, परन्तु आखिर नतीजा नहीं निकला। मेरे विचार छपाकर बांटे भी गये। रात में १२।। बजे तक लोगों को समझाया गया। हीरालालजी शास्त्री ने भी खूब समझाया, परन्तु कोई परिणाम नहीं आया।

सीकर-जयपुर, सवाई माधोपुर, १४-५-३८

तीन बजे उठना। मुंह-हाथ धोकर मि० यंग से मिलना। बहुत देर तक बातचीत। उसे मारकाट व हिंसा न करने पर ठीक तौर से कहा। आज सीकर की जनता मेरी बात नहीं मानती है, पर उम्मीद है कि जल्दी ही मानेगी।
उसने कहा, कर्नल कौल की इच्छा है कि मैं यहां रहूं, परन्तु वर्किंग कमेटी व अन्य कारणों से मेरा बम्बई जाना जरूरी है, यह समझाया।
रींगस से बा देहली गईं। गुलाबचन्द पहुंचाने गया।
जयपुर में पहुंचे। वहां से चिरजीलाल अग्रवाल, हरिश्चन्द्र, पाटणी, साथ

हुए।

सवाई माधोपुर तक हीरालालजी शास्त्री तो साथ थे ही। प्रजामंडल के बारे में विचार-विनिमय। रतनजी से जयपुर में ही बनस्थली आश्रम की बातें—भावी संघटन वगैरा। फ्रन्टियर मेल में जगह बराबर नहीं मिली। रतलाम के पहले स्टेशन से दो टिकट सेकण्ड की कराईं। जानकी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था।

जुहू-बम्बई, १५-५-३८

दादर से उतरकर जुहू। केशवदेवजी वगैरा आये थे। सुगनीबाई का मृत्यु-भोज वगैरा न करने के बारे में मेरी साफ राय बतलाई। टेलीफोन किया। बापू के पास वर्किंग कमेटी के लोग जमा हुए थे। विचार-विनिमय में मैं भी शामिल हुआ।

दो बजे से वर्किंग कमेटी बम्बई में भूलाभाई के घर पर हुई।

जुहू में बापू के साथ घूमना। प्रार्थना, मिलना-जुलना सीकर की हालत कहना।

१६-५-३८

वर्किंग कमेटी ८-११। तक व शाम को २ से ५-५।। तक भूलाभाई के यहां हुई।

दोपहर का भोजन माटुंगा में प्रह्लाद के यहां। केशर, प्रह्लाद, नर्मदा, श्रीराम सब थे। श्रीराम के व्यापार आदि की बातें। थोड़ी देर आराम। केशर-नर्मदा से बात कर वर्किंग कमेटी में जाना।

जुहू आकर शाम को बापू के साथ घूमना, प्रार्थना।

१७-५-३८

बापू से वर्किंग कमेटी के काम की चर्चा, विचार-विनिमय, ११।। बजे तक होता रहा।

वर्किंग कमेटी २ बजे से भूलाभाई के घर हुई। ५।। तक वहां ठहरे। सी० पी० के मामले से चिन्ता, विचार।

जुहू में बापू के साथ घूमना, प्रार्थना।

१८-५-३८

सुबह बापू के पास वर्किंग कमेटी के लोग आये। बातचीत।

शाम को २ बजे से वर्किंग कमेटी बम्बई में, भूलाभाई के घर हुई। ५।। बजे तक वहां रहना।
श्री हरिभाऊजी के साथ जुहू। रास्ते में माटुंगा से उनका सामान लिया। केशर से मिले।
जुहू-प्रार्थना, बापू के पास।

१९-५-३८

बापू के पास वर्किंग कमेटी के खास-खास लोग आये। फ्रन्टियर, मैसूर, सीकर, जयपुर आदि के बारे में देर तक चर्चा-विचार।
राजाजी व डा० खान साहेब ने अपने घर भोजन-बातचीत की।
चि०शान्ता से मिलना। उसकी मां के मरने के बाद उससे आज ही मिलना हुआ।
राजेन्द्रबाबू बीमार हो गये। उन्हें डा० खान साहब के साथ देखा। श्री ढवले (नागपुर वालों) से बातचीत।
वर्किंग कमेटी ४-६।। तक हुई। सीकर व जयपुर की हालत का बयान लिखकर दिया और जबानी सुनाया।
जुहू में प्रार्थना। कई लोग मिलने आये थे। खेल-कूद।

२०-५-३८

पूज्य बापू के पास सुभाषबाबू, सरदार, मौलाना, जयरामदास, कृपलानी आदि से देर तक मैसूर, फ्रन्टियर, सी० पी०, कम्युनिस्ट आदि प्रश्नों पर विचार-विनिमय।
सरदार व किशोरलालभाई के साथ बातचीत। सरदार, राजाजी, मौलाना आदि मित्रों का सी० पी० की स्थिति पर मुझे जवाबदारी लेने का आग्रह। मैंने अपनी कमजोरी व स्थिति साफ की।
किशोरलालभाई, हरिभाऊजी के साथ श्री नाथजी से बातचीत। केशर से थोड़ी देर बातचीत। राजेन्द्रबाबू बीमार हैं, उनके पास थोड़ी देर रहे। आज वर्किंग कमेटी दो बजे से थी। मेरी समझ ४ बजे की रह गई। उसका दुःख व आश्चर्य हुआ। बापू के पत्र दे दिये।
बापू के पास प्रार्थना। जवाहरलालजी पंचगनी से आये। लड़कियों का गायन-वादन।

डा० पट्टाभि वगैरा का अपने यहां भोजन।

२१-५-३८

घूमना। जानकी देवी, उमा, पार्वती, दामोदर, हरिभाऊजी आदि साथ में।

रास्ते में मणीभाई नानावटी व सीकर के पुरोहितजी मिले।

बापूजी, सुभाष बाबू, मौलाना आजाद, सरदार, खान साहब से ११ बजे तक विचार-विनिमय।

सीकर व जयपुर के बारे में सुभाषबाबू स्टेटमेन्ट देंगे। सी० पी० मिनिस्ट्री की चर्चा। मैंने अपनी कठिनाई साफ तौर से बतलाई। हरिभाऊजी को रामनारायणजी चौधरी का आज आया पत्र दिखाया।

केशवदेवजी के यहां चि० रामेश्वर के साथ भोजन। गोला मिल के बारे में देर तक विचार-विनिमय।

सरदार, खुर्शेद, पेरीन, राजेन्द्रबाबू के पास देर तक। रामेश्वरदासजी बिड़ला से देर तक बातचीत।

जूहू गये। बापूजी सीधे जिन्ना से मिलते हुए व राजेन्द्रबाबू को देखकर वर्धा जाने के लिए स्टेशन गये।

२२-५-३८

चि० कृष्णा व राजा हठीसिंग आये। समुद्र-स्नान। कई मित्र मिलने आये। राजेन्द्रबाबू को आखिर डा० गिल्डर व डॉ० पटेल की राय न होते हुए भी वर्धा ले जाने का निश्चय करवाया। यह जुहू जाने पर मालूम हुआ। उन्हें १०४ डिग्री तक ज्वर हो गया। चिन्ता रही। आखिर ज्वर घटा।

जुहू के काम की व्यवस्था के सम्बन्ध में केशवदेवजी व रामेश्वर से बातें। जयरामदास, लालजी मेहरो वगैरा से बातें।

बम्बई आकर जानकी देवी, दामोदर विट्ठल के साथ थर्ड से वर्धा रवाना। रास्ते में माटुंगा होते हुए राजेन्द्रबाबू फर्स्ट में। कल्याण से इगतपुरी तक उनके साथ बाद में थर्ड में आ गया।

वर्धा-नागपुर, २३-५-३८

बडनेरा में राजेन्द्रबाबू को देखा। रात में ४॥ घंटे नींद आई। सुबह खांसी का जोर रहा।

वर्धा पहुंचे। राजेन्द्रबाबू को गेस्ट हाउस में ठहराया। ११ बजे तक वहीं रहा।
सिविल सर्जन डा० गुप्ता आया, तपासा।
दादा धर्माधिकारी ने ऊषा के विवाह के सम्बन्ध में अपने मन की स्थिति व चिन्ता कही। दमयन्ती बाई व ऊषा से भी बातचीत। ऊषा ने यही सम्बन्ध रखना पसन्द किया।
सेगांव में बापू से मिलकर आये; जाजूजी, व राधाकृष्ण साथ में। पचमढ़ी जाना जरूरी है, ऐसा बापू ने कहा। रामनारायण चौधरी का व बम्बई के पारसी ने जो पत्र दिया था वह उन्हें दे दिया।
जाजूजी से नागपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय। ३।।। बजे मोटर से नागपुर रवाना। ६-५ की पैसेंजर से थर्ड में पिपरिया रवाना।

पंचमढ़ी, २४-५-३८

पिपरिया उतरकर श्री बापूजी अणे के साथ डा० खरे की मोटर से पचमढ़ी पहुंचे।
डा० खरे, शुक्ला, माखनलालजी, केदार, खुशालचन्द, पुखराजजी, भिकूलाल, सुगनचन्द, दीपचन्द, खांडेकर, घनश्यामसिंहजी गुप्ता, डा० डिसलवा, डा० महोदय, ब्रिजलाल बियाणी, छेदीलाल आदि मित्र लोग मिले। परिस्थिति से वाकिफ हुआ।
सरदार व मौलाना भी पहुंच गये।
श्री ब्रिजलालजी व छेदीलाल के साथ तीनों प्रान्त की ओर से वर्तमान स्थिति पर विचार-विनिमय करके नोट तैयार किया व सरदार और मौलाना को दिया।
नागपुर असेम्बली पार्टी की सभा हुई, उसमें समझौता करने का प्रयत्न करने का निश्चय हुआ। अनुसूया बाई काले को कड़क जवाब दिया।
रात को सब मिनिस्टरों के साथ उपरोक्त मित्रों ने देर तक बैठकर बातचीत की।

पंचमढ़ी, २५-५-३८

प्रार्थना, घूमना, नहाना। दुर्गाबाई बीमार, उन्हें देखना। रतीलालभाई से बातचीत। वार्लिंगे गिरधारी वगैरा भी मिले।

८ वजे से शुक्ला, मिश्रा, मेहता से नागपुर के मिनिस्टरों की स्थिति ११॥ वजे तक सुनी। सरदार, मौलाना, व्रिजलाल, छेदीलालजी के साथ। श्री केदार का पत्र सरदार के नाम आया। वह पढ़कर आश्चर्य व निराशा हुई।

डा० खरे मिलने आये। उन्हें साफ-साफ केदार के पत्र के बारे में, वर्तमान पत्रों के वारे में तथा भोजन इत्यादि के बारे में कहा।

१ वजे से डा० खरे, रामराव देशमुख, गोले व उपरोक्त मित्र लोगों से करीव दो घंटे तक बातचीत की।

वाद में छहों मिनिस्टरों ने आपस में वैठकर फैसला किया। एक वार तो टूटने का मौका आ गया था, पर बाद में दुर्गाशंकर मेहता व खरे ने मिलकर एक नया फार्मूला दिया। मैंने उसमें दुरुस्ती की। उसका सवों ने ठीक स्वागत किया, तथापि भविष्य ठीक नहीं दिखता था।

२६-५-३८

दुर्गाताई जोशी को देखना। आज ठीक थी।

वामनराव जोशी व शरीफ से देर तक बातचीत होती रही। और भी मित्र लोग आये। वाद में मिनिस्टरों के सामने चार्जेस का खुलासा होता रहा। सुवह व शाम को भी। डा० खरे की प्रेस रिपोर्ट व व्यवहार आश्चर्य जनक व अनुचित मालूम हुआ। डा० खरे के खुलासा से व व्यवहार से सरदार व मौलाना के मन का व मेरे मन का आदर भी वहुत कम हुआ। और भी लोगों के लिए कई प्रकार के अच्छे-बुरे विचार पैदा हुए। कुछ लोगों के प्रति श्रद्धा वढ़ी।

श्री छेदीलाल व वियाणीजी से तीनों प्रान्त के संघटन पर विचार-विनिमय नोट किये। मैंने अपनी नीति व उद्देश्य बहुत साफ कहा। रेवानगी सिफारिश वगैरा के बारे में। रात में पिपरिया से थर्ड में वर्धा को रवाना।

नागपुर-वर्धा, २७-५-३८

अनुसुयाबाई काले से नागपुर की स्त्रियों की संस्था तथा अन्य बातें।

नागपुर में श्री पी० वाई० देशपाण्डे मिलने आये। नागपुर से वर्धा तक सरदार के साथ सेकण्ड क्लास में। वर्धा ११॥ वजे पहुंचे।

वर्धा पहुंचने पर राजेन्द्रबाबू की हालत ठीक सुनकर चिन्ता कम हुई।

सरदार के साथ बापूजी के पास सेगांव जाना। सरदार ने सारी स्थिति का वर्णन बापूजी से किया। स्टेटमेन्ट की बात की। डा० खरे व शुक्ला को तार भेजा। मुझे जहां दुरस्ती करना था की।

वर्धा में सरदार, किशोरलालभाई, जाजूजी, बडकस वगैरा से सावधान-केस की चर्चा। गवाह आदि की व अन्य बातें।

वर्धा-सेगांव २८-५-३८

रागोपालजी सिंगी (हैदराबाद वालों) से बातचीत।

सरदार वल्लभभाई, महादेवभाई, जल्दी भोजन करके पू० बापूजी के पास गये। बापूजी ने स्टेटमेन्ट बनाया। पं० रविशंकर शुक्ल व मिश्रा ने उसे देखा। कुछ शब्दों में फरक किया। सरदार बम्बई गये।

बापूजी को पेरीनबहन व सुभाष का पत्र पढ़ाया। मुझे जो कुछ कहना था, वह कह दिया।

श्री रविशंकर शुक्ला, मिश्रा आदि मित्रों के साथ भोजन बातचीत।

वर्धा, २९-५-३८

जानकी से बातचीत। परिणाम नहीं के समान। घूमते समय अस्पताल में विजया को देखा।

चि० पार्वती ने सगाई-विवाह की इच्छा बतलाई, कारण भी बतलाया।

राजेन्द्रबाबू के पास बैठना। बाद में।

३०-५-३८

राजेन्द्रबाबू को देखना। काकासाहब से मिला।

चि० उमा बम्बई से आई। उसने समुद्र में डूबने की घटना का वर्णन सुनाया; ईश्वर ने बचाया।

डा० बनर्जी वगैरा के साथ भोजन, आराम।

चि० गंगाबिसन, पार्वती, रमती से थोड़ी बातचीत।

राजेन्द्रबाबू से मिलना। दादा के सम्बन्धी लोगों से मिलना, परिचय।

३१-५-३८

चि० ऊषा व गप्पू के विवाह सुबह ६-४० व ६-४५ के लगभग सानन्द हो गये। राजेन्द्रबाबू के पास दो बार गया।

नागपुर प्रा० का० को काम के बारे में श्री पटवर्धन, बाबा सा०, घटवाई

आदि से मिलकर विचार-विनिमय। बाबा वकील को काम पर रखा, चालीस रु० पर।

सेगांव में बापूजी से चि० राधाकृष्ण की नालवाड़ी के काम बढ़ाने की योजना पर विचार-विनिमय। बापूजी ने उसकी जिम्मेवारी लेना उचित समझा। चालीस हजार अन्दाज का मैंने कहा। विनोबा व जाजूजी की लिखी स्वीकृति होना जरूरी है। बापूजी मुझसे भी सलाह व मदद की आशा रखते हैं।

बापूजी से श्री आंग्रे, रामनारायण चौधरी, टाटा, प्रो० वारी, जगतनारायण, सरदार आदि की बातें हुईं।

दादा के घर पर भोजन। कढ़ी गिर गई, बुरा मालूम हुआ।

बम्बई जाने की तैयारी।

श्री नारायणजी (अमरावती वाले) मिलने आये। गजानन्द हिम्मतसिंग को वर्धा उतरा।

थर्ड से बम्बई। आंग्रे, बापूजी, अणे, मणिलाल गांधी, तारा व हरिभाऊजी से बातचीत।

जुहू, १-६-३८

श्री हरिभाऊजी उपाध्याय कल्याण से दादर तक साथ आये।

दादर से जुहू। लालजी मेहरोत्रा से बातें। वह एअर से कराची गया।

श्रीमन्, रामेश्वर नेवटिया व ब्रिजमोहन से बातचीत।

माटुंगा होते हुए बम्बई। हिन्दुस्तान शुगर कम्पनी के बोर्ड की सभा हुई। महत्व की चर्चा। मि० गिल्डर को तार देकर बुलवाया। रामेश्वर को सूचना की।

पं० जवाहरलाल से देर तक बातचीत।

श्री चन्द्रोनीराव आंग्रे, फारेन मिनिस्टर ग्वालियर से जुहू तक बातचीत। हरिभाऊजी उपाध्याय भी साथ थे। देशी रियासत व कांग्रेस वगैरा के बारे में तथा राज्य में प्रजामण्डल व जवाबदार पद्धति दाखल करने के बारे में चर्चा।

२-६-३८

घूमते समय पार्वती डिडवानिया साथ में। मन:स्थिति, स्वभाव इत्यादि

की बातें।
नरीमान ने तेल मालिश की। जानकी देवी वर्धा से एकाएक आ गई।
विनोद।
जवाहरलाल नेहरू को पहुंचाने स्टीमर पर गये। इम्पीरियल बैंक में सही करना।
माटुंगा में गजानन्द, केशर, नर्मदा, बालक श्रीराम से बातचीत। थोड़ा, आराम।
मोटर आने में देरी होने से केशवदेवजी के साथ बातचीत।
हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी के बोर्ड की सभा हुई। देर तक विचार-विनिमय।
आबिदअली व मूलजी का मनोमालिन्य तीव्र मालूम हुआ।

जुहू-नासिक, ३-६-३८

घूमते समय पार्वती डिडवानिया साथ में। जेठालाल रामजी के घर बातचीत, खासकर हिन्दी प्रचार के बारे में।
(आगरावाले) प्रागनारायणजी अग्रवाल के यहां। वह ब्लड प्रेशर से बीमार थे। बातचीत।
गजानन्द वगैरा के साथ केशवदेवजी के यहां माटूंगा। वहां से ३।। बजे मोटर से नासिक रवाना। ७।। बजे नासिक पहुंचे। बिड़ला सेनिटोरियम ठहरे।
रामेश्वरदासजी बिड़ला, केशवदेवजी साथ थे। गोला मिल के बारे में ठीक बातचीत हुई, और भी व्यापारी बातें होती रहीं।

नासिक, ४-६-३८

सुबह घूमना। बाद में केशवदेवजी के साथ जीवणलाल भाई मोतीचन्द के यहां। वहां से उनके व स्वामी आनन्द के साथ उनका फार्म देखने गये। प्रयत्न तो ठीक दिखाई दिया।
भोजन के बाद रामेश्वरदासजी बिड़ला ने अपनी निजी व्यापार व घर की हालत कही। मैंने भी अपनी हालत बताई। विचार-विनिमय।
ब्रिज आदि। आम खाये, पपड़ी अच्छी लगी।
नासिक-पंचवटी घूमकर, शाम को जीवनलालभाई के 'यहां भोजन। चि०

रामकृष्ण साथ में था। बातचीत।

रात में रामेश्वरजी लोयलका से बातें, विनोद, खेल-कूद। महाभारत पढ़ा।

नासिक, ५-६-३८

जीवनलाल मोतीचन्द का फार्म, आज भी फिर से रामेश्वरदासजी विड़ला वगैरे के साथ देखने गया।

भोजन, विश्राम, व्रिज। बाद में पौने चार की गाड़ी से बम्बई रवाना। सेकन्ड क्लास में जगह नहीं मिलने से रामेश्वरजी बिड़ला के आग्रह से फर्स्ट क्लास में बैठना पड़ा। शुगर मिल के बारे में, खासकर गोला के बारे में ठीक विचार-विनिमय होता रहा।

दादर ८ बजे उतरे। माटूंगा से कम्पनी की मोटर लेकर जुहू।

जुहू, ६-६-३८

घूमते समय मणीलालजी नानावटी ने बड़ौदा महाराज के जीवन के बारे में व उनकी योग्यता के बारे में ठीक परिचय करवाया।

जानकी से बातें। प्रयाग नारायणजी (आगरा वालों) को देखा।

श्री पुस्तकेजी ग्वालियर प्रजा मंडल व कार्यकर्ताओं के बारे में बातचीत करने आये।

गजानन्द, नर्मदा, केशर, बालक, शान्ता वगैरा आये।

नवाब, फख्र यार जंग बहादुर व डा० दीनशा मेहता मिलने आये।

जुहू-बम्बई, ७-६-३८

श्रीमन्नारायण आज आये। सुबह घूमते समय बातचीत।

सुरेन्द्र ने फर्स्ट डिवीजन में बी. ए. पास किया।

पत्र-व्यवहार। माटूंगा होकर बम्बई जाना, चि० केशरबाई नर्मदा, साथ में। डा० पुरन्दरे को दिखाया। गजानन्द, श्रीराम साथ थे। दोनों को तपास कर उसने दवा लिख दी।

मि० गिल्डर (शुगर एक्सपर्ट) से बातचीत। उसके बाद रामेश्वरदासजी बिड़ला से बातें।

सौभाग्यवती दानी के यहां भोजन।

८-६-३८

मथुरादास खिमजी के जीवुभाई मिलने आये।

हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी की बोर्ड की सभा। बम्बई गये। बाद में अंधेरी में कई जगह मकानात वगैरा देखे।
बम्बई में पेरीनबहन से हिन्दी प्रचार के लिए मिले।

९-६-३८

घूमते समय जानकी देवी, पार्वती डिडवानिया, सौभाग्यवती, मणीलाल नानावटी आदि साथ में। आगरा के प्रयागनारायणजी से मिलना।
समुद्र-स्नान। केशवदेवजी, रामेश्वर नेवटिया आया, गोला-मिल की बात-चीत। दामोदर वर्धा से आया। पत्र-व्यवहार।
महादेवभाई का पत्र पढ़ा। पूज्य बापू की मन की स्थिति पढ़कर आश्चर्य व दुःख व मन में विचार चलने लगा।
मोहनसिंहजी (उदयपुरवाले) मिलने आये।
चि० मदन रुइया व कान्ता मिलने आये। इन्होंने ता० ३० मई को बान्द्रा में विवाह कर लिया।
गजानन्द हिम्मतसिंगका व प्रहलाद का परिवार मिलने आया और भी लोग मिलने आये।
आगरावाले श्री प्रयागनारायणजी के यहां लोग आये। श्री मुकुटजी के लड़के ने वर्ली वाली जमीन के लिए २६ रु० वार का आफर दिया।
भाग्यवती, उमा वगैरा भोजन करके गये।

१०-६-३८

घूमना, जानकी, पार्वती, वगैरा साथ में। ताराचन्द घनश्यामदास के यहां तार आया। सावित्री को लड़का हुआ। दोनों राजी हैं, लिखा।
कलकत्ता टेलीफोन किया। सावित्री को रात में ढाई बजे के अंदाज पुत्र हुआ। वजन ७ रत्तल १० औंस। घूंटी लक्ष्मणप्रसादजी ने दी, जानकी देवी को आज खूब खुशी व शांति मिली।
डा० शाह ने नर्मदा के टौंसिल का आपरेशन किया, दो टुकड़े निकले। अस्पताल में करीब दो घंटे ठहरना पड़ा।
मथुरादास त्रिकमजी के घर भोजन। बापू की स्थिति की चर्चा। मैंने जो पत्र महादेवभाई को लिखा था, वह बतलाया व आज भेज भी दिया।
प्राणलालभाई देवकरण नानजी ने शुगर मिल में डायरेक्टर होना स्वी-

कार किया। दस हजार के शेयर १३५ के भाव में दिये ।
सरदार वल्लभ भाई से बातचीत, विनोद। नरीमान प्रकरण आदि का।
मि० गिल्डर को गोला में मैनेजर रखा। पगार बारह सौ, अलाउंस ढाई परसेंट नेट प्राफिट पर।
नर्मदा को देखा। मुनशी के यहां दूध लिया।

११-६-३८

घूमना—जानकी, पार्वती, मणीलाल भाई नानावटी साथ में। अपनी छोटी जमीन उन्हें दिखायी।
कल रात से टेलीफोन खराब होने के कारण कलकत्ता फोन नहीं हो पाया। वेंकटलाल पित्ती, (हैदराबाद वाले) जयाबहन व वल्लभदास, कांति पारेख, रामेश्वरजी बिड़ला, देशपांडे, नवलचन्द, केशवदेवजी, फतेचन्द व ब्रिजमोहन मिलने आये। प्रयागनारायणजी अग्रवाल का परिवार भोजन करने आया। परिचय, विनोद, बातचीत। इनके छः लड़के व पांच लड़कियां हैं, जिनमें से दो लड़कों व चार लड़कियों का विवाह हो गया। एक लड़का करीब २२ वर्ष का यूरोप में शक्कर एक्सपर्ट का काम सीखने गया हुआ है।
विश्वम्भरदयाल-मुकटजी (खुर्जेवाले) के लड़के ने वर्ली का प्लाट ले लिया। पन्द्रह हजार मुनाफा १९॥= का भाव देना निश्चित। पांच हजार किस्त सोमवार को, बाकी ता० २४।६ के आसपास चुकते।

१२-६-३८

केशवदेवजी व फतेहचन्द से बच्छराज फैक्टरी के काम के बारे में देर तक विचार-विनिमय, योजना।
सीकर के पुरोहितजी मिलने आये। आबू से राव राजाजी का जो संदेश लाये, वह सुनाया।
आज बहुत लोग मिलने आये। पित्ती परिवार, बिड़ला परिवार, शान्ता, सुशीला, बगराजजी, पार्वती डिडवानिया का परिवार—गीता, गौरीशंकर, चतुर्भुजजी आदि।
गोविन्दरामजी सेकसरिया भी मिलने आये। गोविन्दरामजी ने नेचर क्युअर (प्राकृतिक चिकित्सा) की इमारत के लिए एक लाख रुपये तक

देने की इच्छा प्रकट की। इमारत चर्चगेट पर बंधवाना।
जुहू खाजम जमीन के बारे में भी बातचीत हुई। उन्होंने फोन किया। जुहारमलजी ने भी आगरा में फैसला करने को कहा। नये शेयर बाजार के बारे में उन्होंने जो कहना था, वह कहा।

१३-६-३८

मोतीबहन चिनाइ व सुलोचना नानावटी मिलने आये।
श्री बाबूलालजी सिंघल बी० ए० बी० एल० श्री प्रयागनारायण बी० ए० बी० एल० आगरा वालों की ओर से मिलने आये। Labour is always fruitful (परिश्रम फलप्रद होता है) यह प्रयागनारायणजी का मोटो है। प्रेमनारायण के बारे में विशेष जानकारी व बातचीत की।
श्री प्रयागनारायणजी के बालक आये। मूलजीभाई व गोविन्दरामजी सेकसरिया का फोन आया। जुहारमलजी रूंगटा से बात कर यह निश्चय हुआ कि जुहू खाजम जमीन करीब चार सौ एकड़ है वह सीर में रहेगी, वह अपनी दरख्वास्त वापस निकाल लेवेंगे। सीर की पाती कितनी रहे, इसका फैसला रामेश्वरदासजी बिड़ला करेंगे, वह सबको मंजूर।

१४-६-३८

केशवदेवजी, फतेचन्द, प्रह्लाद आये। श्रीनारायण (घामणगांव वाले) सागरमल बियाणी व भूलजीभाई भी आये थे।
आज नीचे लिखी हुई कम्पनियों के सभाएं जुहू में हुईं :
(१) बच्छराज फैक्टरी, लिमिटेड, कार्य-पद्धति। मेमराज रुइया को डायरेक्टर लिया।
(२) बच्छराज कम्पनी, हिन्दुस्तान शुगर के शेयर श्री देवकरण (नानजी वालों) को १३५ में दस हजार के शेयर दिये।
हिन्दुस्तान शुगर कम्पनी की सभा हुई। मि० गिल्डर को मुकर्रर किया, वह नोट किया गया व श्री प्राणलाल देवकरण नानजी को हिन्दुस्तान शुगर में डायरेक्टर लिया।
रामेश्वरदासजी बिड़ला, जीवनलाल भाई वगैरे सबों ने यहीं पर भोजन व बातचीत।

१५-६-३८

मोतीवहन चिनाइ वगैरे मिलने आये। मोतीवहन अंधेरी की हाउसिंग की जमीन ४।।। रुपये गज से १९ सौ गज अंदाज लेने आई थी।

प्रयागनारायणजी के घर के लोग मिलने आये।

चि० गजानन्द, केशर, नर्मदा, श्रीराम आदि मिलने आये, शाम को भोजन किया।

राजा गोविन्दलालजी पित्ती ने अपने घर की स्थिति, खासकर मुकन्दलाल-जी व वेंकट के बारे में वहुत देर तक बातचीत की।

राजा मुकन्दलालजी पित्ती भी मिलने आये। उन्होंने भी अपनी स्थिति सम-झाई।

सीकर-जयपुर के मामले को लेकर रायबहादुर मणीशंकरभाई बैरिस्टर चुडगर, पुरोहितजी, लच्छीरामजी, लोहिया, केशवदेवजी, रामदत्तजी वगैरे आये। रात में १०।। बजे तक विचार-विनिमय। स्थिति समझाई। कल-कत्ता फोन वगैरे किया। आखिर में मैंने जो सीकर में कहा था वही ठीक वतलाया।

१६-६-३८

जुहू की अपनी जमीन के बारे में अम्वालाल सालीसिटर, वान्द्रेकर, आबिद-अली, मूलजी के साथ, सरकार से रास्ते के अधिकार के बारे में विचार-विनिमय देर तक बातचीत।

प्रयागनारायणजी वकील के बालक मिलने आये, बातचीत, विनोद।

२।। बजे करीब बम्बई रवाना। रास्ते में थोड़ी देर माटूंगा केशर, नर्मदा से बातचीत।

केशर ने अपने विचार, शारीरिक व मानसिक स्थिति, प्रह्लाद के व्यापार आदि में मदद व महिला आश्रम की जमीन पर मकान बनाने की इच्छा आदि प्रकट की। उसकी कई बातों पर मुझे क्रोध भी आया व मैंने उसे बहुत ही कड़क भाषा में ठपका व उलाहना दिया।

उसे भी क्रोध आया व रोना शुरू किया।

स्टेशन पहुंचे। गाड़ी को देर थी। कमल का स्टीमर भी जल्दी आ गया। नागपुर मेल से वर्धा जाना सम्भव मालूम हुआ।

मुकन्द आयर्न फैक्टरी, मुकन्दलालजी के आग्रह से, देखकर आया। फैक्टरी चालू हुई।
कमल को लेकर नागपुर मेल से थर्ड से जानकी देवी आदि के साथ वर्धा रवाना हुए।

वर्धा, १७-६-३८

मेल से वर्धा पहुंचे। डा० अभ्यंकर पुलगांव में साथ हुए।
राजेन्द्रबाबू व मां से मिले।
राजेन्द्रबाबू, जानकी, मदालसा, कमलनयन को साथ लेकर पू० बापू के पास सेगांव जाना व सबों से मिलना-मिलाना।
मेहमानों के साथ भोजन आराम, पत्र-व्यवहार।
चि० गंगाबिसन, लक्ष्मीदेवी, चि० पार्वती से शामसुन्दर (कलकत्तेवाले) के साथ सगाई के बारे में विचार-विनिमय व निश्चय।
नाना आठवले से महिला आश्रम के बारे में बातचीत।
कालूराम बाजोरिया, चिरंजीलाल बड़जाते, मि० रजाक (नागपुर वाले), किशोरलालभाई, जाजूजी, बडकश वगैरे से बातचीत।
चिरंजीलाल ने कब्जे के समय का थोड़ा वर्णन कहा। मनोहर पंत आदि के बारे में थोड़ा विचार। उन्हें अपनी नीति समझाई।
चि० कमल व जानकी से देर तक बातचीत।

१८-६-३८

चि० कमलनयन कलकत्ता गया। मदालसा, श्रीमन, सुरेन्द्र, भण्डारा गये।
भूलाभाई देसाई बम्बई से आये, बातचीत। यूरोप की हालत कही।
श्री चेंडके वकील से मिलना। उसके लड़के का देहान्त हो गया।
महिला आश्रम की सभा ९ से ११। तक हुई। विद्यार्थिनियों को भरती, अध्यापकों की नियुक्ति आदि का काम हुआ।
भूलाभाई, राजेन्द्रबाबू के साथ सेगांव। बापू से १ से ४।। तक भूलाभाई ने यूरोप के राजनीतिज्ञों से जो बातचीत हुई वह कही।
बापू से—डा० खरे व शरीफ मिल गये, उसका थोड़ा हाल कहा। विट्ठलभाई पटेल के बिल के बारे में विचार-विनिमय।
वर्धा में भूलाभाई से सेन्टीनल, विविधवृत्त, आदि के बारे में थोड़ा विचार-

विनिमय। वह मेल से बम्बई गये।
विट्ठलराव देशमुख, कानिटकर (नागपुर वाले) से बातचीत।
राजेन्द्रबाबू से देर तक बिजली कारखाने के बारे में बातचीत।
बम्बई में व्रिजलाल झुनझुनवाला की हार्ट फेल होने से मृत्यु का तार आया।
दुःख हुआ।

वर्धा-नागपुर, १९-६-३८

चि० तारा, भारती अकोला गये।
माणकलालजी (विजोलियावालों) ने उदयपुर प्रजा मंडल के बारे में सब कार्यवाही कही।
स्नान, भोजन कर ६। की पैसेंजर से नागपुर गये। रास्ते में अखबार पढ़े।
नागपुर में मि० चौबे ने इम्प्रूवमेंट के विरोधी लोगों के जवाब, चार्ज का खुलासा किया। श्री कलप्पा, श्री नायडू, श्री मजुमदार, घटवाई की लेबर कमेटीवाले मिले। आधे घंटे तक बातचीत। मुझे जो कहना था, वह कहा।
नागपुर प्रा० कांग्रेस कार्यकारिणी का कार्य १-४ तक चला। बाद में प्रान्तिक कमेटी का कार्य रात में ८ वजे तक चलता रहा। कई सदस्यों के व्यवहार से चोट लगी—
श्री पूनमचन्द रांका का व्यवहार असंतोषजनक था। डा० खरे, अवारी, मजुमदार, देशपांडे आदि के व्यवहार भी ठीक नहीं मालूम हुए। रात में एक्सप्रेस से वर्धा वापस।
बिरदीचन्द जी पोद्दार आदि मित्रों से बातचीत।

वर्धा, २०-६-३८

सुबह माणकलाल (बिजोलियावाले) बंशी घेलिया, गंगाविसन, चिरंजीलाल वगैरे से बातचीत। राजेन्द्रबाबू से बिजली के कारखाने के बारे में बातचीत। कमीशन का ड्राफ्ट दुरुस्त किया।
श्री रविशंकर शुक्ला आये। भोजन सबने साथ किया। थोड़ी देर बाद वह चले गये।
भीकूलाल चान्डक व घटवाई से बातचीत। सुन्दरलाल मुरारका व भालेराव मिलने आये। विट्ठलराव देशमुख (सालोडवाले) व उनके जमाई से

बातचीत। चि० पुरुषोत्तम झुनझुनवाला से बातें।
श्यामराव पटेल (तीगांववाले) को नारायणराव बसू लेकर आये। बातचीत तपास। बाद में गंगाविशन, चिरंजीलाल, द्वारकादास से संभाजी के बारे में बातचीत व विचार।
आज नागपुर व शामराव आदि के प्रकरण से मन में बोझ।
जानकी भी आज नाराज व चिन्तित थी। थोड़ी देर विचार। बाद में नींद आ गई।

२१-६-३८

गेस्ट हाउस में माणकलालजी वर्मा व कृपलानी आदि से मिला।
गंगाविसन के घर—पुरुषोत्तम व सीता आज खामगांव गये। गंगाविसन व लक्ष्मी से देर तक बातचीत। चि० पार्वती को समझाकर उसका खुलासा आदि।
सरदार वल्लभभाई व मणीबहन बम्बई से आये, मिलना।
किशोरलालभाई से मेहमानों की व्यवस्था, गांधी सेवा संघ व इमारतें, काका सा० के मकानात, वैजनाथजी व राजपूताना-कारीवाला फंड व बिड़ला शक्कर मिल डिबेन्चर आदि के बारे में बातें।
पत्र-व्यवहार। विश्वासराव मेघे की माता वगैरे मिलने आये। वेंकटराव गोडे की लड़की अनुसूया ने विश्वासराव के साथ विवाह करने की इच्छा बताई। विश्वासराव शाम को आया। बातचीत।
रामरिछपालजी (सिवनीवाले) व उनके लड़के आये। उनकी बहू दूसरा विवाह करना चाहती है, आदि। उन्हें समझाया व चतुर्भुजभाई के नाम पत्र लिखकर दिया।
सरदार वल्लभभाई से रात को १०॥ बजे तक सी० पी० की हालत व उनके व मेरे ख़ानगी मतभेद के बारे में विचार-विनिमय होता रहा।

२२-६-३८

घूमना। चि० उमा से बातचीत। सत्यप्रभा रास्ते में मिलकर अपनी स्थिति कहने लगी।
आशाबहन, कृष्णाबाई, इन्दू, कमला, नाना, श्रीमन, मदालसा वगैरे से मिलना, बातचीत।

कलकत्ता से सुभाषबाबू का फोन आया—कल शाम को आने का बताया।
बजाजवाड़ी के काम की सभा हुई। सागरमल बियाणी को चार्ज दिया।
पचहत्तर रुपये मासिक वेतन।

जानकी ने दो दिन से भोजन नहीं किया। बहुत देर तक उससे बातचीत, क्रोध, आवेश, दु:ख आदि।

सरदार ने बुलवाया। वहां चार मिनिस्टर—श्री शुक्ला, मिश्रा, गोले, रामराव तथा बापूजी अणे, ब्रिजलाल बियाणी व कृपलानी थे। सरदार ने उन्हें पंचमढ़ी का समझौता कायम रखने के लिए समझाया।

हिंगणघाट से बहुत से लोग शिकायत लेकर आये। थोड़ा क्रोध आया—डा० मजुमदार के प्रति। लिखकर कुछ न भेजकर इतने आदमी बिना मतलब भेजे।

सरदार व मिश्र से बातचीत।

आज शिक्षक लोग यहां ट्रेनिंग को आये। उनको भोजन दिया, देर तक बरसात होती रही।

२३-६-३८

सरदार, अम्बुलकर, जुहारमल (हैदराबाद वालों) से बातचीत।

सेगांव में जानकी, मां के साथ। वहां बा व बापूजी से मिलना। श्री धनुस्कर ने एक नवयुवक को वहां सत्याग्रह के लिए बैठा दिया, उसे समझाया।

बालकोबा के पास थोड़ी देर बातचीत। मन को थोड़ी शांति मालूम हुई।

बा के पास प्रसाद लिया। जानकी से बापू को कहकर मन हलका करने को कहा, परन्तु वैसा नहीं हो सका।

२४-६-३८

जानकी का आग्रह था कि मैं स्टेशन नर्मदा व गजानन्द से मिलने जाऊं। कई कारणों से मैंने नहीं जाने का विचार पहले ही कर लिया था। थोड़ा दु:ख व रंज पहुंचा—इसके आग्रह के कारण।

महिला आश्रम गया। नाना व कृष्णाबाई से मिलना।

सुभाषबाबू, मौलाना, सरदार, कृपलानी, राजेन्द्रबाबू के साथ विचार-विनिमय, जिला-प्रकरण, नागपुर मिनिस्ट्री प्रकरण। बाद में विट्ठलभाई बिल के बारे में केवल मौलाना व सुभाषबाबू से मेरी बातचीत।

सुभाषवाबू, मौलाना, सरदार, राजेन्द्रवाबू, कृपलानी और मैं सेगांव गये। बापू से जिन्ना (मुस्लिम लीग) के बारे में व बंगाल कैदियों के बारे में बातें।

२५-६-३८

श्री सुभाषबाबू व मौलाना आजाद के साथ पवनार गये।
विद्या मंदिर ट्रेनिंग कालेज, वर्धा में सुभाषवापू व मौलाना के साथ गये। दोनों के व्याख्यान, काका सा० के सभापतित्व में हुए।
चि० अनुसूया (वेंकटराव गोडे की लड़की) की सगाई उसकी इच्छा व आग्रह से श्री विश्वासराव मेघे के साथ हुई।
डा० खरे से टेलीफोन से बात हुई। उन्होंने कहा कि मेरी तबीयत भी ठीक नहीं है, वह रिपोर्ट भी मेरे पास नहीं पहुंची है; इसलिए आज आपके आने की जरूरत नहीं, मेरी तैयारी होगी तब बुलवा लूंगा।
मि० शरीफ से देर तक बातचीत। मैंने उनका क्या फर्ज है, यह बताया।
शाम को सुभाषबाबू व मौलाना से देर तक बातचीत।
रात में हिन्दी मंदिर में शिक्षण-वर्ग था, वहां गया, हीरालालजी शास्त्री व हरिभाऊजी से बातचीत।

२६-६-३८

हीरालालजी शास्त्री व हरिभाऊजी उपाध्याय से राजस्थान की, चार संस्थाओं की चर्चा। जयपुर प्रजामण्डल, बालिका विद्यालय वनस्थली, राजस्थान संघ हटुंडी, कांग्रेस की।
नागपुर जाते हुए स्टेशन तक बातचीत की। नागपुर रवाना। श्री सुभाष-बाबू व मौलाना आजाद के साथ नागपुर तक सेकन्ड में।
नागपुर प्रान्तिक कांग्रेस कमेटी की कार्य कारिणी सभा का काम सुबह ८ से ११॥ व शाम को २ से ५॥ तक हुआ। साधारण ठीक काम हुआ। ३ ता० को वर्धा में सभा रखी।
नागपुर नगर कांग्रेस कान्फ्रेंस में ५॥। से ७। तक रहे। काका सा० सभापति थे। वहां के प्रस्ताव व वातावरण से चोट पहुंची।
गिरधारी के यहां भोजन। जानकी, दामोदर, जाजूजी, काले आदि एक्सप्रेस से वर्धा।

नागपुर में मुख्यमंत्री डा० खरे से करीब एक घंटा बातचीत। पंचमढ़ी समझौता वह पूरी तौर से पालेंगे, ऐसा वचन दिया। मुझे ता० २९ को वह फिर बहुत करके बुलवावेंगे, ऐसा कहा।
डा० सोनक से मिलकर या मैं ही पत्र लिखूं, यह निश्चय हुआ।

२७-६-३८

हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी उपाध्याय से राजस्थान के काम की बातचीत।
प्रजामंडल जयपुर, बालिका विद्यालय वनस्थली व राजस्थान संघ हटुंडी के बारे में। मैंने मेरी राय इस प्रकार कही : फायनन्स की विशेष जिम्मेवारी व्यवस्था करने की जयपुर प्रजा मण्डल की हीरालालजी, कपूरचन्दजी व जमनालाल की। बालिका विद्यालय की रतनजी, सीतारामजी व भागीरथ-जी की। राजस्थान संघ के बारे में हरिभाऊजी से विचार-विनिमय होकर 'गांधी सेवा संघ' से क्या सहायता दी जा सकेगी, उसका किशोरलालभाई की सलाह से फैसला करना।
महिला आश्रम के नवीन विद्यालय का मुहूर्त हुआ। थोड़ी देर वहां रहे। वहां मोहनबहन (उदयपुरवाली) से व भागीरथीबहन से बातचीत।
मोहन से कहा कि तुम्हारा उत्साह हो तो वनस्थली जा सकती हो।
शाम को व रात्रि को भी राजस्थान के काम के बारे में चर्चा। प्रजामण्डल की वर्किंग कमेटी बनाई। सीकर के बारे में शास्त्रीजी वहां जाकर सब-कमेटी की मीटिंग करके कार्रवाई करेंगे।

२८-६-३८

श्री हीरालालजी शास्त्री के साथ पैदल स्टेशन तक, बातचीत करते हुए। हरिभाऊजी साथ में थे।
मोहनबहन वनस्थली गई।
चि० गंगाबिसन के यहां—पार्वती, लक्ष्मी व गंगाबिसन से विवाह आदि बातें।
बच्छराज जमनालाल के काम की सभा दुकान पर हुई।
सेगांव में बापू से मिल कर आया। जवाहरमल (हैदराबादवाले) के बारे में पूछा।

उन्होंने कहा कि महिला आश्रम में एक वर्ष के लिए रख लिया जाय और सौ रुपये दिये जायं।
बापू की चिन्ता का कारण सुना। सरस्वती का बंगलौर का आग्रह।
प्यारेलाल वगैरे से मिलना।
हरिभाऊजी, जानकीदेवी, मदालसा के साथ घूमने जाना।

२९-६-३८

घूमना—जानकी देवी, हरिभाऊजी साथ में। महिला आश्रम में भागीरथी-बहन व कृष्णाबाई से बातचीत।
पार्वती बाई डिडवानिया बम्बई से आई। किसनलाल गोयनका का लड़का अकोला से आया।
डा० खरे नागपुर से आये व सेगांव गये। आगे बातचीत।
डा० खरे बापू से मिलकर वापस आये और बाद में देर तक मुझे कुछ फ़ाइलें व पत्र-व्यवहार दिखाया। मैंने उन्हें अपने विचार भली प्रकार समझाने की कोशिश की व पत्र न भेजने को कहा। आपस में सफाई करना ठीक रहेगा, यह जोर देकर कहा। आखिर उनके साथ नागपुर गया।
नागपुर में फायनन्स मिनिस्टर श्री मेहता, भालजा, बाद में कलप्पा, फुले, रुईकर, बलवाई,आदि तथा लेबर लीडर नायडू वगैरे से, देर तक बातचीत, विचार-विनिमय।
रुईकर की वृत्ति ठीक नहीं थी। कलप्पा दोनों तरह की बात करता था। मैंने अपने विचार साफ तौर से कहे। बाद में डा० खरे, मेहता, गोले के साथ बातचीत।
मिश्रा, रामराव आ नहीं सके, बीमार थे। छगनलाल व दांडेकर के साथ स्टेशन रात में वापस।

३०-६-३८

घूमते समय जानकी देवी, पार्वतीबाई डिडवानिया, हरिभाऊजी, सोनीराम आदि से बातचीत। पत्र-व्यवहार पर सही की।
राजेन्द्रबाबू से देर तक बातचीत।
बम्बई से दीक्षित का फोन आया, कमला मेमोरियल की रकम के ब्याज के बारे में। मैंने कहा कि जहां तक केशवदेवजी न आवें, वहां तक बच्छराज

जमनालाल के यहां अस्थाई तौर से रख सकते हैं।
आबिदअली व गिरधारी नागपुर से आये। आबिद ने आगरा, दिल्ली, लाहौर, (मुकन्द आयर्न), लखनऊ, बनारस, इलाहाबाद, नागपुर के काम की रिपोर्ट दी।
'हिन्दी प्रचार विद्यालय' में, वर्धा तालीमी संघ की ओर से, जो विशेष वर्ग खोला गया उसकी आज समाप्ति थी, वहां गया। आये हुए मेहमानों से परिचय, औपचारिक भाषण वगैरे।
मेल से रानीगंज से श्री जगन्नाथजी, कन्हैयालाल, बनारसीप्रसाद वगैरे पन्द्रह आदमी बारात में आये, उन्हें स्टेशन से राधाकिसन के यहां पहुंचाया।
शाम को बारात के लोगों के साथ घर पर भोजन, बातचीत, गायन।
बिसाऊ के क्रान्तिकारी ब्राह्मण का रामायण पर प्रवचन वगैरे।

१-७-३८

लक्ष्मीनारायण मन्दिर में चि० अनुसूया (वेंकटराव गोडे की लड़की) विश्वासराव मेघे के साथ विवाह हुआ, उसमें गये।
जमनादासभाई गांधी बम्बई से आये। मुकन्द आयर्न वर्क्स की हालत समझी।
रानीगंज वाले व विश्वासराव के घर के तथा वेंकटराव के घर के लोग सब मिलकर भोजन किया। १॥ बजे तक बंगले पर रहे।
ब्रिजमोहन गोयनका बम्बई के आया। उसने श्री फतेचन्द रुइया के देहान्त हो जाने का समाचार दिया। दुःख हुआ, पत्र-व्यवहार।
चि० पार्वती (सुशीला) का विवाह शाम को श्यामसुन्दर के साथ आनन्द के साथ हो गया।

२-७-३८

श्री जगन्नाथजी वगैरे मेहमानों से मिलना, बातचीत।
चि० गंगाबिसन के घर भोजन, श्री जनन्नाथजी व राजेन्द्रबाबू भी भोजन करने आये। जलेबी ठीक खाई (पेट भर कर)।
फोटो वगैर लेने में समय चला गया।
चि० पार्वती (सुशीला) शामसुन्दर से बातचीत। उसे स्थिति समझा दी,

स्वभाव आदि की। वाराती पवनार, सेगांव जा आये।
वारातवालों ने आज ही जाने का निश्चय कर लिया। शाम की पैसेंजर से वे रवाना हुए।

३-७-३८

जानकी देवी, पार्वती वाई के साथ घूमना—आश्रम जाकर आना।
नागपुर प्रान्तिक कांग्रेस कार्यकारिणी की सभा, सुवह ८—११॥ तक व १ से ७ तक तथा रात में ८॥ से १० तक काम होता रहा। महत्व का काम। मजदूरों के सम्वन्ध के अधिकार का ठराव।
श्री शरीफ आये थे, परन्तु वातचीत नहीं हो सकी, कमेटी में लगे रहने के कारण।
नागपुर ऑफिस का काम बरावर नहीं है, वहुत ही लापरवाही तथा गैर-जिम्मेदारी से काम होता दिखाई दे रहा है।
राजेन्द्रवावू ने छपरा इलेक्ट्रिक कम्पनी के शेयर वेचने के सम्वन्ध का एग्रीमेंट का ड्राफ्ट दिखाया।
फैसला किया।
चि० शान्ता को इस साल दो सौ की छात्रवृत्ति देनी पड़ेगी, निश्चय किया।

४-७-३८

भूरेलाल (उदयपुरवाले) से उदयपुर प्रजा मण्डल की स्थिति समझी।
पवनार में मां के साथ वर्तमान स्थिति की थोड़ी बातचीत की। वापस महिला-आश्रम में वाल मन्दिर का उद्घाटन हुआ।

५ जुलाई ३८

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साधारण समिति की सभा का कार्य, सुबह ८॥ से ११॥ व दोपहर को २॥ से ६ बजे तक, बाद में शाम को ८ से १०॥ तक। वीच में हिन्दी प्रचार का काम भी हुआ। श्री टंडनजी से व मुझसे वावूरामजी की गरमागरम बहस हो गई; थोड़ा दुःख पहुंचा। मेरी भी थोड़ी गलती थी।
पू० वापूजी साहित्य सम्मेलन की सभा के लिए वर्धा आये, ३ से ५ तक बैठे।

शिमला अधिवेशन, प्रचार समिति के अधिकार आदि पर तथा नियमावली वगैरे सम्वन्ध में विचार-विनियम।

६-७-३८

चि० घनश्याम की तवीयत देखना व किशोरलाल भाई तथा बैजनाथजी से मिलना।

सुभाष वावू का तार आया। स्वास्थ्य के कारण वर्किंग कमेटी एक सप्ताह देर से रखने का लिखा।

हिन्दी साहित्य भवन की सभा ८।।-११।। तथा दोपहर को भोजन बाद रात में भी हुई।

चि० शान्ता (राणीवाला) वम्बई से आई। भोजन के समय वातचीत।

७-७-३८

जानकी, पार्वती, रतनजी, वगैरे के साथ घूमना। रतनजी से वनस्थली आश्रम के वारे में बातचीत। स्थिति समझी।

दुकान पर खेती कम्पनी के वोर्ड की व जनरल सभा हुई।

मुकन्दलाल (लाहौर वाले) व जमनादासभाई वम्वई से आये। मुकन्द आयर्न वर्क्स के बारे में देर तक वातचीत।

मारवाड़ी शिक्षा मंडल की कार्यकारिणी की सभा हुई।

महिला सेवा मंडल की कार्यकारिणी व साधारण सभा महिला आश्रम में हुई।

पुरुषोत्तमदासजी टंडन प्रयाग गये। राजेन्द्र बावू से बातें। पत्र व्यवहार किया।

८-७-३८

चि० शान्ता, भागीरथी बहन, तारा आदि से मिलना।

जयपुर से हीरालालजी शास्त्री का तार, वहां जल्दी आने के बारे में आया।

सेगांव में जाकर बापूजी से मिले। उनकी सलाह हुई कि वहां जाना जरूरी है। श्री छेदीलाल (महाकोशल वाले) नहीं आ सके इसलिए रात की एक्स-प्रेस से जाने का निश्चय रखा।

नागपुर, विदर्भ तथा महाकोशल की सभा हुई। श्री ब्रिजलाल वियाणी,

छेदीलाल व वामनराव जोशी आये। ठीक विचार विनिमय के बाद कई बातों का फैसला हुआ।

श्री छेदीलाल ने जिस मजिस्ट्रेट को पत्र लिखा था उसका खुलासा किया। महाकोशल कांग्रेस कमेटी, नागपुर विदर्भ-कांग्रेस को (कानूनी-विधिवत्) समझेगा ऐसा उन्होंने कहा।

नागपुर एक्सप्रेस से बम्बई रवाना। जानकी, दामोदर, विट्ठल साथ में।

दादर-बम्बई, ९-७-३८

रात में व सुबह भी रेल में खूब सोया। आराम मिला; सिर हलका हुआ। दादर उतर कर माटूंगा केशवदेवजी के यहां ठहरना।

अंधेरी में ब्रिजलाल झुनझुनवाला व फतेचन्द रुइया की मृत्यु हो गई इसलिए उनके घर मिलने व सांत्वना देने गया। वापस लौटते समय जूहू होकर माटूंगा। वहां बद्रीनारायण (सीकरवाला) व बम्बई सीकर कमेटी के कार्यकर्त्ता पूरणमलजी, लछीरामजी, वगैरे मिले। देर तक बातचीत। उन्हें बहुत सुनाया। उनकी राय हुई कि मैं कल जयपुर जाऊं। बाद में बम्बई में सरदार वल्लभभाई व रामेश्वरदास बिड़ला की राय भी कल ही जाने की होने के कारण, आज सीकर-जैपुर नहीं रवाना हुआ। सरदार से व रामेश्वरजी बिड़ला से बहुत देर तक सीकर-स्थिति पर विचार-विनिमय। बाद में सरदार ने सी० पी० के बारे में बातें कीं। चिन्ता हो रही थी।

जुहू-बम्बई, १०-७-३८

श्री मणीभाई नानावटी मिले। उन्होंने इक्कीस रुपये वार की जमीन जुहू में ली, यह बताया।

उदयपुर का डेपूटेशन मिलने आया, बातचीत।

माटूंगा में केशर, प्रह्लाद, श्रीराम के साथ भोजन। वेंकट पित्ती वहां आया। उसने भी वहां भोजन किया। श्रीराम के स्वास्थ्य के बारे में विचार विनिमय। उसे हिम्मत बंधाई। केशर को भी चिंता न करने को समझाया। हवा फेर के लिए देस जाना या नासिक वगैरे जाने का कहा। वर्धा आने के बारे में उत्साह नहीं बढ़ाया। केशर की हालत से दुःख व चिन्ता हुई। प्रश्न विकट है। परमात्मा की मदद की जरूरत है।

रामनाथ गोयनका से मद्रास हिन्दी प्रचार की बातें। रुपये सेफ सेक्युरिटी

में रखने को कहा।
सरदार वल्लभभाई से मिलना। वहां पर सीकर डेपूटेशन के लोग आये। सरदार ने उनको ठीक तौर से समझाया।
मुनशी आये। बातचीत।
फ्रंटियर मेल से सेकेन्ड में जयपुर रवाना।

जयपुर, ११-७-३८

रतलाम स्टेशन पर श्री मित्तलजी से सीकर के बारे में बातचीत। भोजन वगैरा।
सवाई माधोपुर में गाड़ी बदली। स्टेशन पर ठहरना पड़ा।
जयपुर स्टेशन पर मित्र-मंडल ठीक संख्या में आया। बिड़ला हाउस में ठहरना। चि० कमल भी मिल गया।
मित्रों से बातचीत। प्रजामंडल व सीकर-स्थिति पर विचार-विनिमय।
जयपुर पुलिस के किशोरसिंगजी ने कहा कि डी० आइ० जी० ने कहलाया है कि आप इस समय सीकर बिलकुल न जायें। देर तक बातें, बुरा लगा। मैंने कह दिया कि मैं तो जरूर जाऊंगा।
श्री शास्त्रीजी व पाटनीजी से इस बारे में विचार-विनिमय।

१२-७-३८

सुबह फिर किशोरसिंहजी आये और रात वाली बात फिर से दुहराई—सीकर न जाने बाबत। थोड़ी देर बाद कैप्टन वैब व डी० आइ० जी० मिलने आये और कहा कि प्राइम मिनिस्टर सर बीचम मिलना चाहते हैं। शाम को मुझे उनसे मिलने का निमंत्रण स्वीकार करना पड़ा व सीकर जाना मुलतवी किया।
भोजन के बाद अचरौल ठाकुर साहब, पंडित अमरनाथ अटल, जोबनेर ठाकुर साहब से हीरालाल जी के साथ मिले। सीकर के बारे में परिस्थिति समझने का प्रयत्न किया। कैप्टेन वैब से व डी० आय० जी० से भी देर तक बातचीत। सर बीचम से मिले। सवा घंटा बातचीत। उन्होंने सीकर न जाने के बारे में खूब समझाने का प्रयत्न किया। मैंने कांग्रेस व प्रजा मंडल की स्थिति साफ की। उनका यंग के नाम का पत्र ठीक नहीं आया। फिर पत्र व्यवहार।

जयपुर-सीकर, १३-७-३८

मित्रों से सीकर के बारे में व जयपुर अधिकारियों के बारे में ठीक विचार-विनिमय।

सर बीचम से आज फिर ११ बजे देर तक बातचीत। पत्रों का मसविदा बदला गया। उसमें कांग्रेस व प्रजा मंडल की नीति का स्टेटमेंट भी दिया। प्रेस में छापने के बारे में वह बहुत घबराये। समझाने का बहुत प्रयत्न किया। परन्तु पुराने जमाने के व उनका मगज कम काम देने वाला मालूम हुआ। खूब साफ-साफ बातें हुईं। मिलने आदि के बारे में भी।

दो बजे की गाड़ी से सीकर रवाना। शास्त्रीजी, कमल जानकी आदि साथ में।

रींगस से मालूम हुआ कि सीकर में गोलीबार के बाद लोग घबराये हैं।

सीकर पहुंचे। मि० यंग से मिले। एक घंटे करीब बातें। बाद में भिनाय राजा साहेब से मिलना हुआ।

सीकर, १४-७-३८

सुबह गोलीबार जहां हुआ था वह मौका देखा। दोनों जगह की स्थिति समझी।

गढ़ में जाना और वहां पर कमेटी के लोगों से साफ-साफ बातें कीं व उनकी असली हालत समझी व उन्हें समझाया।

भिनाय राजा व ठाकुर सा० डुंडलोंद के साथ देर तक बातचीत, विचार विनिमय।

रात में मि० यंग से मिले। शास्त्रीजी, कमल साथ में। उसकी मनशा समझी। लादूरामजी के बारे में भी बातें।

१५-७-३८

गच्ची पर घूमते समय श्री जानकी व चि० कमल से देर तक घर की, जानकी की व मेरी मनःस्थिति, चिन्ता आदि पर विचार-विनिमय।

जानकी गढ़ में श्री राणी जोधीबाईजी से मिल कर आई व उन्हें समझाया कि जैपुर से इस प्रकार मुकाबला करने से हानि है।

सीकर पब्लिक कमेटी के पंचों से व जनता के लोगों से देर तक बातचीत। उन्हें समझाया। क्रोध भी आता रहता था। आखिर शाम को सही करके

श्री राणीजी ने व डिक्टेटर ननूसिंगजी ने पांच जनों को अधिकार दिया; ये हैं भिनाय राजा, डूंडलौद ठाकुर सा, मंडावा ठाकुर व नवलगढ़ ठाकुर व मैं। आपस में विचार-विनिमय।
मि० यंग से मिले। भिनाय राजा, डुंडलौद ठाकुर व मण्डावा के साथ देर तक वातचीत।
जरनल एमनेस्टी (आम रिहाई) पर ही गाड़ी अड़ गई। ठाकुर सा० डुंड-लौद ने बीच-बीच में थोड़ी कमजोरी दिखाई।
भिनाय राजा से कमरे में देर तक बातचीत।

सीकर-जयपुर १६-७-३८

हीरालालजी शास्त्री व दामोदर से सीकर परिस्थिति पर विचार विनिमय व तार पत्र आदि तैयार किये।
मि० यंग से मेरी व हीरालालजी की देर तक बातचीत—खासकर जनरल एमनेस्टी देना क्यों जरूरी है इस बारे में। मैंने कई प्रकार से समझाया, और भी बातें कीं। मि० किचलू से मिलना। बाद में गढ़ में खास-खास लोग थे, उनसे मिलकर बातें कीं।
दोपहर की गाड़ी से सीकर से जयपुर के लिए रवाना।
स्टेशन पर, चि० कमल, जानकी, गुलाब, डेडराजजी वगैरा लोसल से आये, मिले।कमल साथ में जयपुर चला। कमल व शास्त्रीजी से बातचीत।
जयपुर में भिनाय राजा सा० व बैरिस्टर चुडगर से सब स्थिति समझी।
प्रजा मंडल की वर्किंग कमेटी का कार्य ११ बजे तक हुआ।

जयपुर, १७-७-३८

चि० कमल से बातें, थोड़ी चिन्ता। वह आज कलकत्ता गया।
बैरिस्टर चुडगर मिलने आये। बातचीत। उन्हें कई महत्व की सूचना की।
प्रजा मंडल वर्किंग कमेटी ८॥ से १२, व २ से ७ तक हुई। रात में प्रजा मंडल की जनरल कमेटी ८ से ११ तक हुई।
सर बीचम को पत्र भेजा। उनका जवाब आया। सम्भव है श्री दरबार से कल मिलना होवे।
सीकर स्थिति किस प्रकार सुधरे इस बारे में विचार-विनिमय।

१८-७-३८

सीकर के वारे में विचार-विनिमय।

शिवप्रसादजी खेतान के यहां सबों से मिलना। गणेशदास सोमाणी से मिलना। उनकी लड़की की मृत्यु हो गई।

कपूरचन्दजी के घर भोजन।

प्रजा मंडल कार्यकारिणी की १।। से ७ तक सभा चलती रही। प्रजा मंडल की साधारण सभा ८-१०।। तक हुई।

डी० आइ० जी०दो बार मिलने आये। दरबार से मुलाकात के बारे में बात-चीत, पोशाक आदि के सम्बन्ध में।

आज प्रजा मंडल वर्किंग कमेटी में आपस में ठीक खुलासा व सफाई हुई।

१९-७-३८

हीरालालजी से वातचीत। प्रजा मंडल कार्यकारिणी कमेटी ६।। से १०।। तक। ठीक काम हुआ।

प्राइम मिनिस्टर के यहां कैप्टन वैब से बातचीत। प्राइम मिनिस्टर नहीं मिले, दरबार वहीं आ गये थे।

न्यू होटल में भिनाय राजा से बातचीत।

श्री भिनाय राजा, बैरिस्टर चुडगर, हीरालालजी शास्त्री, रतन बहेन, प्रकाशजी, किसनचन्दजी वगैरा दो मोटर से वनस्थली गये। वहां पहुंचने पर आश्रम की इमारतें लड़कियों के खेल-कूद आदि देखे। भोजन, परिचय के वाद जल्दी ही मोहन व सज्जन से मिलकर सो गये।

वनस्थली, जयपुर, सीकर, २०-७-३८

बरसात थी। पानी थम जाने के वाद करीब् साढ़े सात बजे रवाना। ६।। बजे जयपुर पहुंचे।

शास्त्रीजी से कहकर जयपुर महाराजा के नाम पत्र लिखवाया। मित्रों से चर्चा।

जयपुर महाराजा से सर बीचम के बंगले पर मिलना। थोड़ी देर कैप्टन वैब से वातचीत।

बाद में महाराजा से मिलना हुआ। करीब एक घंटा व दस मिनट बात-चीत। सर बीचम भी थोड़ी दूर पर बैठे रहे। सीकर के वारे में कांग्रेस व

प्रजा मंडल की नीति को साफ किया।
एमनेस्टी आदि की बातें, सीकर दरबार का पधारना आवश्यक क्यों है इस पर जोर दिया। उसके विरुद्ध उनकी दलीलों का खण्डन किया।
दोपहर २-१० की गाड़ी से सीकर रवाना। सीकर पहुंच कर गढ़ में गये। जनता की इच्छा, महाराज के पधारने की रही। उसके लिए प्रयत्न करना।

२१-७-३८

नवलगढ़ ठाकुर व मदनसिंहजी से बातचीत। राणीजी ने भी कहलाया, राजपूतों व जनता का भी विशेष आग्रह महाराज को जयपुर बुलवाने का रहा।
महाराज के नाम सीकर आने के बारे में तार दिया। अचरल ठाकुर सा के नाम भी तार भेजा। प्राइम मिनिस्टर की तरफ से तार का उत्तर आया, जो विशेष संतोषजनक नहीं मालूम हुआ।
मि० यंग २ बजे के करीब स्पेशल ट्रेन से आये। उनसे मिलना। उन्होंने कहा कि २४ घंटे का नोटिस लगाकर गढ़ पर फोर्स से कब्जा करने का निश्चय हुआ है। बाद में उन्होंने यह भी कहा कि आपने महाराज को सीकर आने के लिए कहा है, परन्तु महाराज नें कहा है कि मुझे संतोष हो जावे तो वह आ सकते हैं। मि० यंग ने जो शर्तें कही थीं वे गढ़ में जाकर सबों को समझाईं।

२२-७-३८

मि० यंग के हाथ जयपुर महाराज को पत्र भेजा।
उसके मसविदे में फरेफार हुआ। आखर चार बजे सही करके भेजा। शास्त्रीजी व दामोदर उनसे मिले। मि० यंग जयपुर महाराज को लाने को जयपुर गया।
जयपुर महाराज आज नहीं आ रहे हैं। सर बीचम व ठाकुर अचरोल के आने का तार आया। बुरा लगा।
गढ़ में गये। बरसात बहुत जोरों की पड़नी शुरू हुई। दरवाजे खुलवाये, बाजार खुलवाये, सर बीचम, मि० यंग, अचरोल ठाकुर आदि गढ़ व बाजार में घूम गये।

रात में मि० यंग व अचरोल ठाकुर से बहुत देर तक बातचीत हुई। महा-राज के आने के बारे में। सर बीचम का व्यवहार ठीक नहीं रहा। चिन्ता रही व बुरा लगा।

२३-७-३८

पहले राजपूत लोग, बाद में नवलगढ़ ठाकुर सा० मिलने आये। देर तक बातचीत। सर बीचम के व्यवहार व वर्ताव से दु:ख व चोट पहुंचती थी। सब कड़वा घूंट पीना पड़ा।

गढ़ में बुलाने पर जाना पड़ा। मि० यंग भी वहां पर आये। बातचीत से वहां तो यह उम्मीद हुई कि शायद जयपुर दरबार गढ़ में आ जावें पर कुछ निश्चित नहीं था।

स्टेशन पर सीकर की जनता खूब संख्या में आवे, बाजार खुला रहे, आदि लोगों को समझाया। मि० यंग को कहा कि महाराज का व्यवहार आदि ठीक रहे।

नजर का प्रश्न विकट पैदा हुआ। आखिर में सीकर की जनता के हित के दृष्टि से देना तय किया। जयपुर दरबार की स्पेशल आने से पहले सर बीचम ने जो पढ़ा वह ठीक नहीं लगा।

जयपुर महाराज की स्पेशल आई। बरसात खूब हुई। शामियाना गिर गया। नजर आदि की। राजकुमार साथ में थे। मुझे ठीक नहीं लगा। नजर पेश करके मैं कमरे में चला आया।

सीकर-देहली, २४-७-३८

सुबह तीन बजे उठे। जल्दी निवृत्त होकर पैदल स्टेशन। सीकर से देहली के डिब्बे में बैठे।

रास्ते में हीरालालजी शास्त्री ने स्टेटमेंट बनवाया। फेर-फार कर ठीक किया। वह तो रीगंस से जयपुर चले गये। साथ में दीक्षित भी थे। हम लोग देहली १॥ बजे करीब पहुंचे।

देहली में गाडोदियाजी के यहां स्नान, भोजन। श्री घामा, जयसुखलाल आदि से बातचीत।

ग्रान्ड ट्रंक से थर्ड क्लास में वर्धा रवाना ५॥ करीब। जानकी, दामोदर, विट्ठल साथ में।

आगरा तक बहुत ही गरमी मालूम हुई। आगरा में श्री रायजी आ गये। श्री इन्द्रमोहन भी मिला। नई देहली तक देवीदास, लक्ष्मी वगैरे साथ आये।

वर्धा, २५-७-३८

सुबह भिलसा के पहले तैयार। हवा व दृश्य सुन्दर दिखाई देते थे।
जयपुर दरवार को व यंग को पत्र भेजना। मसविदा बनवाया।
नागपुर में श्री पटवर्धन मिले। उनसे गाड़ी चलने तक बातचीत। डा० खरे ने इस प्रकार की भयंकर भूल किस प्रकार की इस बारे में उन्होंने कहा कि मुझे बिलकुल मालूम नहीं। विचार व सलाह मेरे से नहीं की। बाद में श्री खुशालचन्द खजानची, मि० रजाक, तात्याजी उपदेव वर्धा तक साथ आये। खुशालचन्द से बहुत सारी स्थिति मालूम हुई। मि० रजाक के आज के बयान में पहले से फर्क था। तात्याजी ने कहा कि सेलू की तरफ पानी व बाढ़ से बहुत हानि हुई है, ऐसा सुना है।
वर्धा में सीकर के निवासियों ने स्वागत किया। घर पहुंचते ही उसी समय मुझे सेगांव जाना पड़ा। बापू ने डा० खरे को भली प्रकार समझाने का प्रयत्न किया। एक बार तो बापू को कह दिया कि आप जैसा कहेंगे वैसा ही करूंगा। पर बाद में बदल गये।

२६-७-३८

घर में खूब भीड़ थी।
वर्किंग कमेटी का कार्य ८।। से ११ व २ से ८ बजे तक चला। पूज्य बापूजी २।। से ८ बजे तक बैठे। सी० पी० मिनिस्ट्री का ठहराव एकमत से (सर्वानुमत से) खूब सोच समझ कर विचार विनिमय के बाद पास हुआ। मन में बुरा तो लगता था, परन्तु दूसरा कोई उपाय, कांग्रेस की प्रतिष्ठा की दृष्टि से, दिखाई नहीं दिया।
वर्किंग कमेटी के प्रायः सभी सदस्यों की राय हुई कि अगर श्री जाजूजी स्वीकार कर लें तो उनका नाम लीडर के लिए सुझाया जाये। मैं भी जाजूजी से किशोरलाल भाई के साथ मिला। हम दोनों ने खूब समझाया। बाद में उन्हें शरद बाबू, मौलाना, सरदार, आदि से मिलाकर आखिर में सुभाष बाबू से मिलाया। सुभाष बाबू ने बड़े ही अच्छी तरह से प्रेमपूर्वक व जोर

देकर समझाने का प्रयत्न किया। आखिर में कल सुबह बापू के पास जाकर शंकाओं का समाधान होने पर, विचार करने का तय किया।

२७-७-३८

४ बजे उठकर श्री जाजूजी को लेकर सेगांव बापूजी के पास गये। किशोर-भाई साथ थे। बापूजी ने उनकी शंकाओं का भली प्रकार समाधान-कारक उत्तर दिया। एक बार तो लगा कि वह मुख्य मंत्री होने के लिए तैयार हो जायेंगे। मैंने भी काफी जोर लगाया। बाद में मोटर से वर्धा वापस आये, तो उन्होंने इस जवाबदारी को लेने से इन्कार कर दिया। मैंने सुभाष बाबू को सब हालत बता दी। मुझे भी निराशा हुई।

नवभारत विद्यालय में नागपुर असेम्बली पार्टी की सभा हुई। मुझे कोई उत्साह नहीं रहा। मेरी राय थी कि अगर पार्टी, वर्किंग कमेटी पर लीडर चुनने की जवाबदारी देती हो तो उसे हमें ले लेनी चाहिए, या बाद में बाहर कोई मिले तो बाहर का अन्यथा शुक्लजी को चुन लिया जावे। उनके साथ योग्य व्यक्तियों को देकर प्रभावशाली कैबिनेट बनाई जाय। पर मेरी यह योजना पार नहीं पड़ी। डा० खरे घर पर भोजन करने आये। मुझे बहुत अच्छा लगा।

वर्किंग कमेटी की सभा हुई। सीकर सम्बन्धी प्रस्ताव हुआ।

श्रीशुक्ल जी को मैंने अपने विचार व राय बहुत साफ तौर से कही, सर-दार आदि के साथ गांधी-सेवा-संघ की सभा हुई।

वर्धा (सेलू) २८-७-३८

सेलू जाकर आये। जानकी देवी, कमला, शांता साथ में थीं। सेलू की हालत भयानक व दुःखकारक दिखाई दी। विचार-विनिमय।

जयपुर दरबार व मि० यंग आदि को पत्र भेजे। श्री रुईकर व मजुमदार को भी पत्र भेजे।

श्री अन्ना सा० दास्ताने से खानगी स्थिति आदि पर विचार-विनिमय। अभी तक वह सफल नहीं हो सके।

सरदार वल्लभभाई से नागपुर प्रान्त के बारे में विचार-विनिमय। मैंने अपने मन की स्थिति कही।

सरदार गेस्ट हाउस ले गये। वहां मैं, सरदार, राजेन्द्रबाबू व कृपलानी थे

काफी दु:ख देने वाली बहस छिड़ गई, सी० पी० मिनिस्ट्री के बारे में १२ बजे रात तक। दु:ख व चोट पहुंची। मैंने तो मेरी स्थिति कल व आज सुबह साफ कर ही दी थी। वही फिर कर दी। मुझे इस मिनिस्ट्री में रस नहीं है।

वर्धा (घोराड), २९-७-३८

घोराड जाकर आये। सब मिलकर करीब चार मील घूमना हुआ। घोराड की हालत भी बाढ़ के कारण भयानक दिखाई दी। डा० हुसन साथ में थे। श्री महाजन स० डि० आफिसर भी पहुंच गये।

पं रविशंकर शुक्ल नागपुर से आये। सरदार व राजेन्द्र बाबू ने उनसे मिनिस्ट्री बनाने के बारे में बातें कीं। मैं और ठाकुर छेदीलाल भी हाजिर थे। मैंने तो अपने विचार व स्थिति कल ही साफ कर दी थी, वही आज भी दुहरा दी।

पत्र-व्यवहार करता रहा।

शाम को महिला आश्रम। प्रार्थना में शामिल। सिर को आराम मिला। सरदार व राजेन्द्र बाबू से बातचीत।

३०-७-३८

सरदार, राजेन्द्र बाबू आदि से बातचीत। डा० जीवराज मेहता व गिल्डर आज बम्बई से मेल से आये। सरदार वगैरे सब फिर साथ में बम्बई गये।

९ से ११ तक महिला आश्रम की सभा का काम हुआ।

१२ से १२-५० तक तालुका फ्लड रिलीफ का काम डि० क० के आफिस में हुआ।

३। से २ बजे रात तक ना० प्रा० कां० कमेटी का काम चला। तीन महत्व के प्रस्ताव पास हुए। ठीक विचार-विनिमय, चर्चा हुई, आज काफी परि-श्रम व चिन्ता रही।

३१-७-३८

कल रात में देर तक (२।। बजे तक) जगना पड़ा इससे आज घूमने से आराम मिला।

सेगांव-राजेन्द्र बाबू के साथ। बापू जी को रात को प्रा० कां० कमेटी में जो खास प्रस्ताव पास हुए थे, वे बतलाये। डा० खरे के बारे में राय ली।

हिंगणघाट मिल की पिकेटिंग व कानपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय। बापू ने कहा हिंगणघाट की पिकेटिंग इस प्रकार बिलकुल नहीं हो सकती। वह जल्द बन्द होनी चाहिए।
मेरा कर्तव्य बतलाया। मद्रास श्री रमण महर्षि के पास जाने को कहा।
राजेन्द्र बाबू ने नागपुर के बारे में पार्लमिंट्री बोर्ड का स्टेटमेंट बताया।
शाम को चि० शांता ने बताया कि नाना आठवले को हैजा हो गया सो वहां गया हालत चिंताजनक। डाक्टर की व मोटर आदि की व्यवस्था की। बाद में मालूम हुआ काका सा० व अन्य लोगों को भी थोड़ी शिकायत हुई। चिंता रही।

१-८-३८

श्री काका सा०, नाना तथा काका सा० के चार विद्यार्थी—कार्यकर्त्ता—पांडुरंग, दाबके, सबनिस व श्रीपाद ने सेगांव से परसों आई जो नीरा पी थी, उससे हैजा हो गया था। हालत चिन्ताजनक व वातावरण एकदम गम्भीर तथा विचारणीय हो गया।
सेगांव जाकर बापू से मिलकर आया। उन्हें स्थिति कही।
हैजे के बीमारों की व्यवस्था आदि की चिन्ता में प्रायः रात के साढ़े ग्यारह बज गये। कई बार उन्हें जाकर देखा।
'महाराष्ट्र' का थोड़ा भाग पढ़ा। झूठा लिखने की कमाल है!
रात्रि में कलकत्ता से प्रभुदयालजी का व नर्मदा का फोन आया। प्रभुदयालजी ने भी मेरे वहां आने पर जोर दिया।। थोड़ी चिन्ता और बढ़ी।
हिंगणघाट मिल की हड़ताल की चिन्ता। लिखा पढ़ी की।

२-८-३८

काका सा० व नाना को देखा। बाद में अस्पताल में जाकर दाबके, पांडुरंग, सबनीस, श्रीपाद को भी देखा। पांडुरंग व दाबके की हालत चिन्ताजनक मालूम हुई, उन्हें हिम्मत दी।
महिला आश्रम तक पैदल गया आया। कलकत्ता व मद्रास का प्रोग्राम निश्चित करना। भालेराव देशमुख, दादा, धोत्रे आदि से बातचीत।
आखिर आज शाम को पांडुरंग चला गया। दुःख व चोट तो लगी, पर उपाय क्या? दूसरे बीमारों के पास देर तक बैठना। उन्हें हिम्मत दी व

इलाज की व्यवस्था की।

काका व नाना को फिर देखा। सिविल सर्जन से देर तक बातचीत—इलाज व हैजे के बारे में।

हिंगणघाट मिल हड़ताल के बारे में चिन्ता। विचार-विनिमय।

३-८-३८

रात में निद्रा बराबर नहीं आई। चिन्ता रही, विशेषतः बीमारों की। सुबह काका सा० के इलाज के बारे में बहुत देर तक विचार-विनिमय के बाद श्री दफतरी (नागपुरवालों) का इलाज चालू किया। दावके की हालत खराब जोखमवाली मालूम हुई। उन्हें भी डा० दफतरी ने दवा दी, परन्तु वह १।। बजे दिन के चल बसा, दुःख हुआ। उसके पिता पांच मिनट बाद आये। बहुत ही समझदार व हिम्मतवाले मालूम हुए। उन्हें देखकर व उनसे बात कर मन में हिम्मत मालूम हुई। नाना की तबीयत साधारण ठीक है। सवनिस व श्रीपाद भी ठीक हैं।

हिंगणघाट मिल की हड़ताल के बारे में डा० मजुमदार, बंसीलाल, अबीरचन्द के व रेखचन्द मोहता के मैनेजरों से करीब तीन घंटे बातचीत। स्थिति समझ में आई। आखिर में एक सप्ताह की सूचना देकर मिल चलाने का निश्चय पक्का हो जाए तो पिकेटिंग उठा दिया जाने का डा० मजुमदार ने स्वीकार किया।

रात में ग्यारह बजे तक मिलने आने वाले व काम की गड़बड़ रही।

वर्धा, ४-८-३८

जानकी देवी, चि० शान्ता (राणीवाली) व विट्ठल के साथ थर्ड क्लास में मेल से कलकत्ता रवाना हुए।

नागपुर में पटवर्धन को डा० खरे व उनके नाम का पत्र दिया व जबानी समझा कर कहा।

बिलासपुर में फटे हुए दूध की काफी पी।

रात में ८।। करीब सोया। साधारणतः ठीक नींद आई।

कलकत्ता, ५-८-३८

हावड़ा से ही सीधे नर्मदा को देखने चि० शान्ताबाई के साथ गये। नर्मदा का प्रलाप व दिमाग का पागलपन देखकर आश्चर्य व दुःख हुआ। डा०

वराट से बातचीत। करीब दो घंटे वहां ठहरा।
श्री लक्ष्मणप्रसादजी के यहां उतरे। वहां स्नान, आदि के बाद चि० सावित्री व बच्चे (राहुल) को देखा। बाद में भोजन।
नर्मदा के वहां जाकर देर तक बैठना व केशर को समझाना। रात में डा० वराट ने डा० कर्नन पी० गाँव को बुलाया। दोनों से देर तक विचार करने के बाद इन लोगों ने यही निश्चय किया कि बच्चा तो निकाल ही डालना चाहिए। मेरी राय यह रही कि निश्चय का अमल एक रोज ठहर कर किया जाय। परन्तु नर्मदा की हालत सुबह से शाम को ज्यादा खराब हो गई, इससे सबों की राय कबूल की।

६-८-३८

सात बजे चि० नर्मदा का डा० पी० गांव आपरेशन करने वाले थे, परन्तु आज आधा काम किया। आपरेशन कल करने का निश्चय। वहां करीब दो-ढाई घंटे ठहरा। वापस आते समय चि० पार्वती को उसके घर से साथ लेते हुए आये। उसका घर देखा व सबों से मिला।
नर्मदा को फिर देखने गये। घनश्यामदासजी बिड़ला मिले व जयपुर तथा सीकर सम्बन्धी चर्चा। उनको स्थिति समझाई।

७-८-३८

सुबह सात बजे प्रभुदयालजी के यहां। डा० गांव व वराट ने नर्मदा के डेढ़ महीने करीब का बच्चा आपरेशन करके निकाला।
चि० गोपी व गजानन्द बिड़ला से मिलकर घर।
श्री सुभाष बाबू भोजन को आये। सावित्री व बच्चे को देखा। उसका नामकरण करने का प्रयत्न। भोजन के बाद मौलाना आजाद भी आये। बंगाल व सी० पी० मिनिस्ट्री की चर्चा, विचार-विनिमय।
घनश्यामदासजी बिड़ला से सीकर-स्थिति व प्रजा-मंडल के बारे में विचार-विनिमय।
इस वर्ष के छः हजार देने का निश्चय। बाद में पांच सौ रुपये मासिक तीन वर्ष तक।
कमल के बारे में सब मिलकर विचार हुआ। भारत में ही रहने का निश्चय हुआ।

८-८-३८

श्री मणीवाई पोद्दार, (रघुनाथ प्रसादजी पोद्दार की स्त्री) से मिलना, सांत्वना। इलाज—खून देने की बातचीत।

चि० नर्मदा को देखने गया। वहां पर श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दार, जयदयालजी गोयनका आदि मिलने आये। डेढ़ घंटे तक बातचीत, अहिंसा व सत्य का प्रचार करने का स्वीकार किया।

रतन देवी शास्त्री व सीतारामजी से वनस्थली बालिका विद्यालय के बारे में विचार-विनिमय।

श्री बंशीधरजी जालान, श्यामदेव देवड़ा के साथ आये। वर्धा जाने के बारे में देर तक बातचीत।

घनश्यामदासजी बिड़ला के साथ बद्रीदासजी गोयनका से देर तक बातचीत, वर्धा आने बाबत भी। जुगलकिशोरजी बिड़ला से भी बातचीत।

चि० नर्मदा के पास रहे। हालत वैसी ही थी।

जानकी देवी व शांता से बातें।

९-८-३८

रात में नींद बराबर नहीं आई। सीकर व जयपुर के विचार खासकर चलते रहे।

दुर्गाप्रसाद खेतान व बद्रीनारायण सोढाणी सीकर के बारे में बातें करने आये।

लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार से रघुनाथप्रसादजी व मणीबाई के बारे में बातचीत।

सीतारामजी, रतनजी, भागीरथजी से वनस्थली विद्यालय के बारे में विचार-विनिमय।

रतन बहन को दुःख हुआ।

प्रफुल्ल बाबू व आनन्दा बाबू मिलने आये।

प्रभुदयालजी के यहां गया। चि० नर्मदा की हालत वैसी ही थी। देर तक बैठा।

श्यामदेव देवड़ा के साथ व बन्शीधरजी जालान की उद्योग विद्यालय देखा। केशर को कड़ी भाषा में समझाया। नर्मदा को डा० विधान राय को दिखाने

के लिए देर तक खोटी हुए। वह नहीं आया।

आज सावित्री का जन्म दिन था, १८ वर्ष पूरे हुए।

१०-८-३८

गोपीबाई, गजानन्द के घर भोजन, प्रेमपूर्वक बातचीत।

नर्मदा की हालत नीचे से ही पूछकर आया। घर पर आराम किया।

आज महेश्वरी भवन में सुभाष बाबू के सभापतित्व में जाहिर सभा हुई। सीकर, नागपुर, अहिंसा वगैरे पर पचास मिनट करीब बोला। सुभाष बाबू ने समर्थन किया।

११-८-३८

आज नर्मदा की तबियत ठीक मालूम हुई। उसने आज जानकी, पन्ना, सीतारामजी वगैरे से मनोमालिन्य दूर करने का प्रयत्न किया।

रक्षाबन्धन का दिन। केशर ने रक्षा वगैरा बांधा।

रतनदेवी (वनस्थली वालों) का फैसला।

सीतारामजी, रतनदेवी, शांताबाई (राणीवाले) ने बम्बई में कम-से-कम पांच हजार का चन्दा करने का निश्चय किया।

रघुनाथप्रसादजी पोद्दार से मिलकर खुलासा।

सुभाषबाबू, शरदबाबू व मौलाना आजाद मिलने आये। देर तक विचार-विनिमय खासकर बंगाल की स्थिति पर।

नर्मदा की हालत आज ठीक मालूम हुई। उसने खानगी थोड़ी बातें करने का प्रयत्न किया—गजानन्द आदि के बारे में।

थर्ड में मद्रास मेल से ७-५ को जानकी, शांता, विट्ठल के साथ रवाना।

रेलवे में १२-८-३८

रात में रेल में भीड़ कम रही। नींद ठीक आ गई। दृश्य बहुत सुन्दर थे; रास्ते में, महानदी, गोदावरी, कृष्णा वगैरा नदियां मिलीं।

मद्रास, तिरुवण्णामलै, १३-८-३८

मद्रास मेल से ९ बजे करीब मद्रास पहुंचे। त्यागराज नगर में हिन्दी साहित्य सभा के कार्यालय में ठहरे। डा० सौन्द्रम्, राजाजी, डा० राजन्, डा० सुब्रम्हण्यम्, रामनाथन्, श्रीमती अम्बुजम्मा बहेन, देवास की रानी, रंगलालजी, रामनाथजी, कामत वगैरा मिले।

२ वजे मद्रास से तिरुवण्णामलै रवाना हुए।
तीन मोटर—एक में मैं, राजेन्द्र बाबू, जानकी, शांतावाई थे।
शाम को पौने सात बजे करीव रमण-आश्रम पहुंचे। सात से आठ तक प्रार्थना, रमण महाराज के साथ भोजन, ध्यान। ६। वजे वहां से डेरे-धर्मशाला में गये। थोड़ी देर वाद ऊपर सो गये।

तिरुवण्णामलै-पान्डीचेरी, १४-८-३८

निवृत्त होकर श्री रमण-आश्रम में रमण महर्षि के पास पांच बजे पहले ही पहुंच गये। प्रार्थना, ध्यान, नाश्ता। महर्षि के साथ आश्रम देखा। १० बजे तक साथ वैठे। पांडीचेरी जाने की तैयारी। डेरे पर गये। विट्ठल की वीमारी के कारण चिन्ता। उसे अस्पताल भेजा। भोजन आदि। राजेन्द्र बाबू को दमे की दवा रमण आश्रम वालों ने दी।
श्री के० भाष्यम् व श्रीमती बालम्मा से वातचीत। साथ में भोजन।
२ वजे करीव पांडीचेरी के लिए जानकी देवी, चि० शांता (राणीवाले) व कादर अली की मोटर रवाना। पांडीचेरी ४॥ करीव पहुंचे। देवशर्माजी, मदन, गाडोदियाजी, केश व शास्त्री आदि कई जान-पहचान वाले मिले। हिन्दू या अंग्रेजी होटल में जगह नहीं मिली। आश्रम में भोजन, प्रार्थना। ध्यान में शामिल। कल दर्शन की स्वीकृति मिली।

पांडीचेरी-कडलूर, १५-८-३८

सुवह जल्दी निवृत होकर अरविन्द आश्रम में नाश्ता। वाद में श्री अरविन्द व मां (मदर) के दर्शन, करीव सवा आठ वजे, जानकी देवी, चि० शांता (राणीवाले) के साथ ठीक तौर से किये। श्री अरविन्द फोटो की अपेक्षा प्रत्यक्ष देखने में विशेष प्रभावशाली व तेजस्वी दिखे। टैगोर से मिलते-जुलते। दर्शन के वाद वहां नीचे सवा घंटे वैठना।
मैंने जो मालायें लीं वे उत्साह व पवित्रता प्राप्त कराने वाली थीं।
श्री अनिल वरण राय से करीव एक घंटा वातचीत। श्री अरविन्द के विचार समझे।
दोपहर को अरविन्द आश्रम में भोजन। दस आने रोज देना पड़ता है।
सर हैदरी से परिचय। उनसे ५ से ६॥ तक हैदरावाद में जिम्मेदाराना राज्य पद्धति, भूलाभाई वाली घटना, खद्दर-कार्य वगैरा पर खुले दिल से

बातचीत। लेडी हैदरी भी मौजूद थी।
करीब ७। बजे मदर ने मालाएं दीं; मुझे तुलसी की माला मिली। मित्रों से मिलना।
कडलूर के लिए (१३ माइल) रवाना। कडलूर आश्रम में जादू के खेल, विनोद आदि। सोया।

कडलूर-तिरुवण्णामलै, १६-८-३८

श्री बाल गुरुकुलम् का निरीक्षण किया। पिनाकिनी गंगा में स्नान। आनन्द के साथ प्रेमपूर्वक बालकों के साथ नाश्ता। बालकों की दोनों प्रार्थना में शामिल हुये।
कुछ कहा। झाडों के नीचे वर्ग देखे।
८।।। बजे वहां से तिरुवण्णामलै के लिए रवाना हुए। करीब ६७ मील मोटर से आए।
करीब १२ बजे पहुंच कर भोजन किया। पोस्ट देखी।
साढ़े तीन बजे करीब रमण महर्षि के पास गये। वहां देर तक बैठे। आज महाराज से प्रश्न-उत्तर व शंका-समाधान का मौका भी मिला। 'सद्बुद्धि' कैसे कायम् रहे, 'नत्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं, न मोक्षये' का ध्येय रखा जावे तो कैसा है, आदि पूछे। प्रश्न-उत्तर अलग लिखे हुए हैं। वहीं पर दूध लिया।
९।। बजे करीब डेरे पर (याने एड० एन० एस० छल्लप चेट्टियार के यहां गये)। वहां डा० सौन्द्रम् व उसकी भाभी ने भजन सुनाये।
सिर में दर्द होने लगा।

१७-८-३८

नाश्ता वगैरा करके रमण-आश्रम। करीब सवा दो घंटे रमण महर्षि के पास बिताये।
यहां की सरकारी अस्पताल में विट्ठल को देखने गये। बाद में अस्पताल भी घूमकर देखी। डा० सौन्द्रम् साथ थी। तिरुवण्णामलै अस्पताल के डा० एस० एम० नटेसन मुद्लियार योग्य व सेवाभावी मालूम दिये।
तार, पत्र। सर बीचम जॉन को पत्र भेजा। असोसियेटेड प्रेस को पोस्ट से मद्रास स्टेटमेंट भेजा।

रमण-आश्रम ४। बजे करीव गये। वरसात जोर से हुई। भजन वगैरा में शामिल।

अरुणाचलेश्वर मंदिर में ट्रस्टियों की ओर से व अफसरों की कोशिश से जाहिर सभा हुई। हरिजन व मंदिर-प्रवेश पर करीव एक घंटे तक वोला व अनुवाद भी ठीक प्रामाणिक हुआ लगा। ठीक परिणाम आया।

रमण महाराज के साथ प्रेमपूर्वक भोजन। रात में ९। बजे तक उनके पास वैठे। भजन हुए।

तिरुण्णामलै, १८-८-३८

जल्दी उठकर निवृत्त। रमण-आश्रम में वहीं पर महर्षि के साथ नाश्ता।

आज अरुणाचलम पर्वत के चारों तरफ घूमना। कई स्थान, जहां रमण महर्षि ने तपश्चर्या की वह देखे। बहुत ही सुन्दर व रमणीक पहाड़ हैं। करीव चार मील से ज्यादा पैदल घूमना हुआ। आखिर में स्कन्द आश्रम में स्नान, भोजन, आराम। स्थान वहुत ही सुन्दर था। यहीं रहने की इच्छा होती थी।

रमण-आश्रम से डेरे पर। वहां जाहिर सभा थी। हिन्दी, खादी, हरिजन व मंदिर-प्रवेश पर थोड़ा वोला।

शाम को फिर रमण-आश्रम में कई स्थान देखे। कॉफी ली। महाराज के पास वैठे। देवराज व गजानन्द शास्त्री के भजन, नृत्य आदि।

रात को आश्रम में ही राजेन्द्र बाबू व मेरे सोने की व्यवस्था की गई।

तिरुवण्णामलै-मद्रास, १९-८-१९३८

रात में निद्रा वहुत कम। विचार-विनिमय; आश्रम में सोने के कारण।

रमण महर्षि के साथ सुवह ३ बजे से ४।।। बजे तक वैठे। उनका साग काटना रसोई का काम करना आदि देखा। देखकर संतोष हुआ। थोड़ी बातें भी हुईं।

थोड़ा आराम करके सुवह पांच वजे से ६ बजे तक फिर रमण महाराज के पास वैठा, प्रार्थना।

महाराज के साथ नाश्ता करके ७।।। बजे तिरुवण्णामलै से मद्रास रवाना हुए। राजेन्द्र वाबू, जानकी, शान्ता साथ थे। मद्रास (१२० मील करीब) ११-४० को पहुंचे। हिन्दी प्रचार कार्यालय में ठहरे। रास्ते भर खूब भजनों

व गायन का आनन्द रहा। मित्रों से मिलना-जुलना। तार-पत्र देखे। राजाजी के साथ उनके यहां गया। उनका घर देखा।
मद्रास कोरपोरेशन ने मुझे व राजेन्द्रबाबू को मानपत्र दिया। समारंभ ठीक हुआ।
भाष्यम् व नागेश्वरराव के घर रात में कई मिनिस्टर मिलने आये।

मद्रास, २०-८-३८

राजेन्द्रबाबू ग्रांड ट्रंक से वर्धा गये। जाने के पहले हिन्दी प्रचार कार्य-कर्ताओं के साथ फोटो। राजाजी वगैरा भी थे। झण्डावन्दन।
दक्षिण में हिन्दी प्रचार कार्य के बारे में विचार-विनिमय—८॥ से ११। तक होता रहा। स्थिति जानकर संतोष मिला।
दक्षिण प्रान्त हरिजन कांफ्रेंस में थोड़ी देर रहे।
राजाजी के घर—खरे, गवर्नर, हिन्दी प्रचार ट्रस्टी, मद्रास गवर्नमेंट, डेढ़ करोड़ लोन आठ आने सैकड़ा कमीशन आदि पर चर्चा।
डा० सौन्द्रम का अनाथालय व गरीबों का दवाखाना देखकर उसके घर। बाद में मि० याकूब हुसैन के यहां। उनकी बीवी ने दावत दी थी। कई मुसलिम बहनें वहां आई थीं। विद्यालय संस्था देखी।
दक्षिण हिन्दी प्रचार ट्रस्ट की मीटिंग, भाष्यम्, रंगलालजी व सत्यनारायण-जी को लेने का निश्चय। मेरे त्याग-पत्र की बातें।
मित्रों के साथ भोजन व बातचीत।
आज जानकी देवी को कड़े शब्द कहे गये, उसका दुःख व विचार रहा।

२१-८-३८

सुबह जल्दी तैयार होकर—राजाजी के घर पहुंचकर, श्री रंगलालजी व रामनाथ से देर तक बातचीत। राजाजी के साथ स्टेशन। ग्रान्ड ट्रंक से थर्ड के डिब्बे में वर्धा रवाना। जानकी देवी, शान्ता, विट्ठल साथ में। रंगलालजी व रामनाथ कुछ दूर तक साथ आये। रामनाथ ने आखिर में मेरी बात मान ली। (राजाजी के सम्बन्ध में)।
जानकी को कल मेरे कटु व कड़े शब्दों के प्रयोग से अत्यन्त दुःख पहुंचा। वास्तव में उसकी समझने में भूल थी, तथापि मुझे भी कल से दुःख था, उसका खुलासा व निराकरण किया।

वर्धा, २२-८-३८

हिंगणघाट से श्री रुईकर साथ हुए। उन्होंने कहा कि आपकी कांग्रेसवाले ही बुरी तरह से गालियां वगैरा निकाल रहे हैं, हम लोगों ने कभी ऐसा नहीं किया, आदि। हिंगणघाट एम्प्रेस मिल की हड़ताल के बारे में उन्होंने कहा कि यह उनकी टेकनिकल गलती हो सकती है, नैतिक नहीं।

वर्धा पहुंचे। पी० आर० दास वगैरा बिहार व बंगाल आदि से आये हुए अतिथि मिले।

बापू के पास सेगांव जाकर आया। प्यारेलाल को देखा। बापू को रमण महर्षि तथा श्री अरविन्द व मदर के दर्शन तथा आश्रम का इतिहास कहा। बापू का उस दिन मौन था।

वर्धा में नागपुर से श्री शेरलेकर, अम्बूलकर, सहस्त्रबुद्धे, वगैरा आये। वहां की स्थिति बताने लगे।

२३-८-३८

पत्र लिखवाये। पी० आर० दास आदि कलकत्ता गये। उन्हें स्टेशन पहुंचाया।

पवनार जाकर आया। गोपालराव से बातचीत, कुआं देखा। विनोबा सोये हुए थे।

पत्र-व्यवहार। नागपुर से दाण्डेकर वगैरा आये। वहां की स्थिति समझी।

काका सा० से देर तक रमण आश्रम व अरविन्द आश्रम की बातचीत।

पवनार में विनोबा से रमण महर्षि व श्री अरविन्द के बारे में देर तक बातचीत।

पवनार, वर्धा, २४-८-३८

विनोबा के साथ बातचीत। डेढ़ मील तक पैदल घूमकर आया। वर्धा से साप्ताहिक पत्र निकालने का विचार। दादा धर्माधिकारी व गोपालराव काले को सम्पादक बनाने का सोचा।

वर्धा में दादा से वर्तमान स्थिति पर बातचीत व पत्र के बारे में विचार-विनिमय।

बजाजवाड़ी गृह-विभाग की सभा का कार्य देर तक हुआ।

वर्धा, २५-८-३८

सुबह जल्दी उठना। किशोरलाल भाई, धोत्रे, जाजूजी, दादा, राधाकृष्ण, दामोदर आदि से, देर तक नागपुर के वातावरण, वर्तमान-पत्र आदि के विषय में विचार-विनिमय होता रहा।

काका साहब को बापू के पास सेगांव ले जाना। बीमारी के बाद बापू की और काकसा की प्रथम बार बातचीत। प्यारेलाल ठीक थे।

नागपुर से पटवर्धन आये। प्रान्तीय कमेटी वगैरा का एजेन्डा तैयार किया। पटवर्धन से डा० खरे के बारे में देर तक बातचीत।

२६-८-३८

श्री पटवर्धन को नागपुर पत्र भेजा। डा० खरे के सम्बन्ध में रुईकर के स्टेटमेन्ट का जवाब तैयार किया।

चि० शान्ता के विल (मृत्युपत्र) का मसविदा देखा।

ब्रिजमोहन गोयनका के नाम माहिम जमीन के बारे में पावर आफ अटर्नी रजिस्टर करके भिजवाया। नागपुर बैंक के डायरेक्टरों की सभा हुई।

राजेन्द्र बाबू से नागपुर लेबर समस्या सम्बन्धी वक्तव्य पर विचार।

पत्र व्यवहार। कृष्णा बाई कोल्हटक आदि से महिला-मंडल के बारे में बातचीत।

राजेन्द्र बाबू, हंस डी० राय आदि से राजनैतिक व १९०६ से जीवन वृतान्त सम्बन्धी बातचीत ठीक रही।

वर्धा, नागपुर, २७-८-३८

श्री पटवर्धन का नागपुर से फोन आया कि मैं आज ही आकर डा० खरे से मिल जाऊं, क्योंकि बाद में वह गणपति उत्सव के निमित्त बाहर जावेंगे।

महिला आश्रम की सभा, काका साहब के यहां हरिजन बोर्डिंग में हुई। श्री नाना के बारे में ठहराव। कृष्णाबाई को कार्य भार सौंपा। काशिनाथ को भी।

एक्सप्रेस से नागपुर गये। दादा धर्माधिकारी साथ थे। रास्ते में विचार-विनिमय। वर्तमान पत्र के बारे में। द्रविड़ भी उसी गाड़ी में थे।

नागपुर में पटवर्धन स्टेशन आये थे। टांगा करके डा० खरे के वहां गये।

वहां डा० खरे, पटवर्धन, दादा धर्माधिकारी, व मैं इन चारों ने मिलकर दिल खोलकर बातचीत की। मैंने खूब प्रेम से व खुली तौर से डा० खरे को यह बताया कि वे जिस प्रकार प्रचार करते हैं उसका क्या परिणाम आवेगा।
दादा ने भी। परन्तु डा० खरे की यह समझने की तैयारी नहीं दिखी। उन्हें क्रोध व अपमान की कल्पना बहुत सता रही थी। मैंने उनकी पचमढ़ी के बाद की गलतियां व भविष्य का परिणाम भली प्रकार कहा।

२८-८-३८

पवनार रोड का मकान जहां ऋषीकेशजी वगैरा रहते हैं, घूमते हुए गये। शारदा बहन के साथ देखा। श्री सिंह से बातचीत।
श्री हरिराम मुरारका की स्त्री चलती रही। वहां थोड़ी देर बैठने गये। सब स्थिति देखकर रामनाथजी के जमाने की याद आई व बुरा मालूम दिया।
भानीराम खंडेलवाल से बातचीत। रास्ते में भाड़े का टांगा कर बंगले आये।
चि० शान्ता (राणीवाला) अपना मृत्यु पत्र लिखकर लाई। राजेन्द्र बाबू, राधाकृष्ण, कमल वगैरा के सामने उसने सही की व हम लोगों ने गवाही पर हस्ताक्षर किये।
डा० अग्रवाल (देहली वाले) ने आंख के बारे में कुछ बातें समझाईं, जिससे आंखें अच्छी रह सकती हैं।
जानकी, कमला, डा० अग्रवाल, ऋषीदत्तजी आदि के साथ पवनार। विनोबा की आंखें डा० अग्रवाल ने देखीं। वार्तालाप, प्रार्थना।
घनचक्कर क्लब के गणपति उत्सव के वहां गये।
सुभाष बाबू का कलकत्ता से वर्किंग कमेटी व आल इंडिया की मीटिंग वर्धा में रखने के बारे में फोन आया।

२९-८-३८

चि० रामकृष्ण कलकत्ता गया। नर्मदा को देखने व केशर को लाने को।
केशवदेवजी नेवटिया बम्बई से आये।
श्री भीकुलाल चाण्डक, घटवाई, देवतले, गुमानी, आदि नागपुर कांग्रेस के बारे में बातें करने आये।
सहायता खाते के हिसाब का, जो बच्छराज कोष में है, जमा-खर्च।

दो वजे करीव राजेन्द्रवाव्, काशी वहन गांधी, केशवदेवजी, गौरीशंकर नेवटिया और मैं मोटर से सेगांव गये। रास्ते में वर्षादि से सेगांव की सड़क के पास गाड़ी कीचड़ में फंस गई। थोड़ी दूर पैदल।

वापूजी से, रात को सुभाष वावू का जो फोन आया, वह वताया।

वापू ने कहा कि वर्धा में ता० २० अक्तूवर के वाद वकिंग कमेटी व ए० आई० सी० सी० की सभा रखी जा सकती है। उस समय तक वह फ्रन्टीयर से आ जावेंगे। पहले रखना हो तो देहली में रखें।

रात में घनचक्कर क्लव में दादा का सुन्दर व्याख्यान हुआ।

केशवदेवजी, गौरीशंकर पुलगांव गये। श्री शुक्लाजी नागपुर से १० वजे आये। राजेन्द्रवावू सो गये थे। सो मेरे पास देर तक बैठे रहे।

३०-८-३८

श्री शुक्ल व राजेन्द्रवावू आये। शुक्लजी नागपुर गये। राजेन्द्रवावू से बंगाल, विहार आदि पर वातचीत। सुभाष वावू से फोन पर वातचीत। मीटिंग देहली रखने का निश्चय।

केशवदेवजी नेवटिया पुलगांव से आये। मुकन्द आयर्न, हिन्दुस्तान हाउसिंग कंपनी व हिन्दुस्तान शुगर फैक्टरी के वारे में थोड़ी वातें।

वच्छराज जमनालाल के लेने-देने, शेअर आदि वेचने के वारे में विचार-विनिमय।

शिवराजजी, करन्दीकर, गंगाविसन आदि से वर्धा म्युनिसिपल ऑफिस के वारे में विचार-विनिमय।

आज फिर दाहिने पांव के नीचे जहां पहिले दो वार मोच आ गई थी दर्द होना शुरू हुआ। जोहारमलजी (सिंध वालों) का परिवार भोजन करने व मिलने आया।

किशोरलालभाई मश्रवाला के यहां, वैजनाथजी महोदय के वड़े भाई, जो सूरदास हैं, के भजन सुने।

घनचक्कर क्लव में वांसरी वजाने वाला नागपुर से आया था। उसने वंशी अच्छी वजाई।

३१-८-३८

राजेन्द्र वावू से वातचीत। विहार से एक नवयुवक आये उनसे वातचीत।

अ-ब्राह्मण पार्टी के लोग श्री बाजीराव, भालेराव, अमृतराव, मोतीबाबा, वगैरा मिलने आये। उन्हें कांग्रेस की नीति साफ तौर से समझाई। कांग्रेस से सौदा, लेन-देन की बात नहीं। मेरी समझ से अ-ब्राह्मण पार्टी की जरूरत नहीं। कांग्रेस ने रचनात्मक प्रोग्राम ले ही लिया है।
राजनैतिक प्रोग्राम से भी विशेष लाभ भारत के बहुजन समाज को ही मिलने वाला है। मद्रास की जस्टिस पार्टी वगैरा के उदाहरण भी दिये।
पत्र व्यवहार।
राजेन्द्र बाबू का घनचक्कर क्लब में व्याख्यान।

१-९-३८

पूज्य मां से बातचीत। उसे केशर व जानकी के आपस के मन न मिलने के बारे में समझाया। उसे पूरा हाल मालूम नहीं था, इसलिए केशरबाई को वर्धा रखने का आग्रह न करने का समझाया।
सरदार, कृपलानी, चोइथराम आये। रमण महर्षि व अरविन्द के बारे में जो कुछ देखा, समझा वह कहा।
श्री नारायणजी गनेडीवालों के चार लड़के मिलने आये। अर्जुनलाल के साथ बातचीत परिचय।
श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र नागपुर से सरदार से मिलने आये। थोड़ी देर बात-चीत—नीरा आदि के मिथ्या आंदोलन के बारे में।
मौलाना आजाद शाम को कलकत्ता से आये। उनसे मिला, बातचीत।
घनचक्कर क्लब में कृपलानी व डा० चोइथराम के भाषण, बातचीत। मैं सभापति बना।

२-९-३८

सरदार वल्लभभाई, मौलाना आजाद, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, डा० चोइथराम से देश की वर्तमान स्थिति पर विचार-विनिमय, तथा वर्किंग कमेटी तथा आल इंडिया के बारे में गंभीरतापूर्वक विचार। राजेन्द्र बाबू के जिम्मे प्रस्ताव बनाने का काम सौंपा गया।
मौलाना से आगामी वर्ष के चुनाव आदि तथा मेरा वर्किंग कमेटी में न रहने के बारे में व सभापति वगैरा के बारे में थोड़ी बातें।
ना० प्रा० कां० कमेटी का कार्य।

नागपुर से मिनिस्टर शुक्ल, मिश्र, वगैरा आये। नागपुर में डा० खरे का स्टेटमेन्ट प्रकाशित हुआ।

नागपुर के लिए जो मुख्य प्रस्ताव करना था, उसपर विचार-विनिमय। कानूनी फैसलों पर भी रात में देर तक जाजूजी वावू के साथ विचार-विनिमय।

वर्धा-नागपुर, ३-९-३८

नागपुर जाने की तैयारी। मौलाना, सरदार वगैरा से मिलना। देहली से रघुवीर शरणजी आये। नागपुर ६-१५ की गाड़ी से रवाना। गाड़ी में अखवार देखे।

नागपुर में पहुंचकर गिरधारी के यहां सामान रखा व थोड़ी देर १० मिनट लेटा।

वाद में ना० प्रा० कां० कमेटी के लिए म्युनिसिपल स्कूल में १२ वजे पहुंचे।

शाम के ६। वजे तक कार्य होता रहा। प्रस्ताव वगैरा ठीक पास हुए। ना० न० कमेटी व ना० म्यु० कमेटी का झगड़ा। म्यु० आफिस में ६।।। से ६। तक सव स्थिति समझी। पटवर्धन की भूल मालूम हुई। रात में गिरधारी के यहां ६।। वजे थोड़ा खाया।

जानकी भी वर्धा से दांत दिखाने आई थी।

नागपुर-वर्धा, ४-९-३८

७।। वजे नाश्ता वगैरा से निपटकर म्यु० स्कूल धनतोली में ना० प्रां० कां० कमेटी की सभा के लिए गया। काटोल, भण्डारा के नामिनेशन पर विचार। चतुर्भुजभाई, भीकूलाल तथा वहां से आये हुए लोगों से स्थिति समझना।

ना० प्रा० कां० की साधारण सभा—६ से ११ व १-२।। तथा ३।। से ८ तक। वीच में डेलीगेटों की सभा २।। से ३।। तक हुई। सुवह ८ से रात में ८ तक वहीं रहकर काम हुआ। डेलीगेटों का चुनाव। चौबीस डेलीगेट हाजिर थे। गोपालराव काले को १५ व हरकरे को ६ मत मिले। प्रा० क० के गन्दा प्रचार रोकने के वारे के ठहराव पक्ष में २, विरुद्ध में १ मत मिले।

वर्किंग कमेटी का ठहराव सर्वथा योग्य था। डा० खरे हाजिर थे। वर्धा ऑफिस ले जाने के पक्ष में २७ व विरुद्ध में ७ वोट। कुछ तटस्थ थे। हरकरे, खाण्डेकर का वर्ताव शोभा के योग्य नहीं था। श्री काले ठीक बोले। पटवर्धन का व्यवहार भी ठीक नहीं रहा। आखिर में काम ठीक तौर से निपटा। रात में एक्सप्रेस से वर्धा रवाना।

५-९-३८

नर्मदा की हालत केशर से थोड़ी समझी।

वर्धा से मराठी अखबार निकालने के बारे में गोपालराव काले, राधाकृष्ण, दादा, दामोदर से चर्चा। दशहरा से शुरू करने का विचार। गोपालराव सम्पादक रहेंगे।

दादा से नागपुर प्रान्त की वर्तमान स्थिति में मेरी व अन्य जवाबदार कांग्रेस कार्यकर्ताओं के सम्बन्ध में विचार-विनिमय। मेरी विचारधारा उनको समझाई। राजेन्द्र बाबू, मौलाना, कृपलानी, चोइथराम, सुभाष बाबू वगैरा का मत, नागपुर की प्रां० कां० कमेटी के प्रस्ताव, डा० खरे व उनके पक्ष के लोगों का व्यवहार आदि सब स्थिति भी समझाई।

डा० खरे के स्टेटमेन्ट के जवाब पर विचार-विनिमय।

सेगांव में बापू से जाहिर सभा के बारे में व अ० भा० कांग्रेस कमेटी में ठहराव करने के बारे में विचार-विनिमय।

बन्नू के डेपुटेशन का डाके बारे में कहना सुनना।

६-९-३८

जानकी से घूमते समय बातचीत। मदालसा के घर खाने-पीने आदि का झगड़ा।

पत्र वगैरा लिखे। अखबार पढ़े।

जानकी, चि० कमला, सुशीला, झेबू मेल से जावरा गये। उनकी तैयारी। नाग, विदर्भ, महाकौशल, बोर्ड की सभा। ब्रिजलालजी व बामनरावजी रात में आये। डा० खरे का पूरा स्टेटमेन्ट पढ़ा। हिन्दी प्रचार सभा हुई। विद्यामन्दिर ट्रेनिंग स्कूल (नार्मल स्कूल) में पुरस्कार समारम्भ। वहां सभापति का काम किया।

७-९-३८

डा० खरे के स्टेटमेन्ट का जवाब तैयार। नाग, विदर्भ, महाकौशल बोर्ड का कार्य।

श्री प्रभू सब-एडीटर 'बांबे क्रॉनिकल' व डा० शेरलेकर से नीरा-प्रकरण की बातें।

श्री अत्रे आये। उनसे भी बातचीत।

जाहिर सभा गांधी चौक में हुई। श्री सुभाष बाबू व डा० चौइथराम का ठीक भाषण हुआ। सभा में पूरी शान्ति थी।

वर्धा, नागपुर, ८-९-३८

हीरालालजी, भागीरथीबहन, कृष्णाबाई से महिला आश्रम के बारे में बातचीत।

जमनालाल सन्स लिमिटेड की सभा दुकान पर। कमल व रामकृष्ण भी हाजिर थे।

नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के कार्य की व्यवस्था।

जयपुर प्रजामण्डल व सीकर स्थिति के बारे में हीरालालजी शास्त्री व हंस डी० राय से बातचीत विचार-विनिमय।

मोटर से नागपुर। डा० चौइथराम, कमल, दामोदर, रामकृष्ण के साथ। भारुका के बंगले, वहां से सुभाष बाबू के साथ व्यंकटेश थियेटर में ना० नगर की ओर से जो जाहिर सभा हुई थी। वहां गये। मैं सभापति बना। श्री सुभाष बाबू का व्याख्यान। खरे-पार्टी के लोगों ने गड़बड़ मचाने की कोशिश तो खूब की, पर सभा ठीक हुई। सुभाष बाबू को खूब परिश्रम करना पड़ा। रात में १ बजे वर्धा रवाना।

वर्धा, ९-९-३८

नागपुर से रात में तीन बजे वर्धा पहुंचे। थोड़ी देर ही सोने को मिला।

मौलाना आजाद व रणजीत पंडित से मिला।

नाश्ते के बाद १ घंटा सोया। सिर पर मट्टी की पट्टी रखी।

जयपुर प्रजामण्डल व सीकर में जनरल माफी के बारे में मि० यंग को पत्र भेजा। हीरालालजी से बातचीत व विचार-विनिमय।

पत्र-व्यवहार। नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस का काम अम्बुलकर, घटबाई

वगैरा के साथ हुआ।

शरद बाबू, राजेन्द्र बाबू, मौलाना आदि से बातचीत।

मौलाना आजाद, राजेन्द्र बाबू को व हीरालालजी शास्त्री को स्टेशन पहुंचाया।

सेगांव में बापूजी से कांग्रेस प्रेसिडेंट के सम्बन्ध में उनके विचार जाने। जयपुर व सीकर की परिस्थिति, हैदराबाद व सर हैदरी का स्टेटमेन्ट, शिमला हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हरिजन सत्याग्रह वगैरा के सम्बन्ध में उनसे चर्चा व विचार जाने। काका साहब, गोपालराव, कमल, दामोदर भी थे।

भोजन व आराम के बाद मुखत्यार पत्र रजिस्ट्री करने कचहरी जाना पड़ा।

नागपुर प्रान्तीय कां० कमेटी की ऑफिस का कार्य। आर्डर वगैरा दिये। नागपुर मेल से थर्ड क्लास में बम्बई रवाना हुए। कमल, हंस डी० राय, विट्ठल, चौइथराम साथ में। रास्ते में श्रीगोपाल नेवटिया व गौरीशंकर भी थोड़ी देर के लिए आये। बातचीत।

जुहू, ११-९-३८

दादर से जुहू। केशवदेवजी, जमनादास गांधी, कमल के साथ मुकन्द आयर्न वर्क्स के बारे में विचार-विनिमय।

दोपहर को मुकन्दलाल, वेदप्रकाश के साथ भी देर तक इस सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

शान्ति प्रसाद जैन (डेहरीवाले) मिलने आये। देर तक व्यापारिक बातचीत।

सीमेन्ट की स्थिति समझी।

जुहू, पूना, १२-९-३८

दादर से ८-२१ की एक्सप्रेस से चि० शान्ता के साथ पूना रवाना।

पूना में सुब्रता बहन, कमला, विनय वगैरा से मिलकर भोजन। थोड़ा आराम।

सुब्रता बहन से देर तक बातचीत। चि० राधाकृष्ण की सगाई, श्री निवास की सगाई, ज्ञान-मन्दिर, बम्बई-हिन्दी प्रचार, स्वास्थ्य (मानसिक)

बच्छराज कम्पनी के शेयर, जुहू जमीन इत्यादि की बातें।
एम्प्रेस गार्डन में फलावर शो व साग फल की प्रदर्शनी देखी। सुन्दर थी।
११।।। की पैसेंजर से सेकण्ड क्लास में बम्बई रवाना। चि० शान्ता साथ थी।

जुहू, १३-९-३८

जुहू में थोड़ा घूमना। बाद में केशवदेवजी, श्रीगोपाल वगैरा आये। पालीरामजी व फतेचन्द से बच्छराज फैक्टरी वगैरा के बारे में देर तक बातचीत।
बच्छराज फैक्टरी व कम्पनी, हिन्दुस्थान शुगर कम्पनी के बोर्ड की मीटिंग शहर में हुई।
रामेश्वरजी बिड़ला से बातचीत। सरदार पटेल से मिलना। भाग्यवती दानी से भी मिला। पन्नू दानी के बारे में निश्चय करने वह जुहू साथ आई।
लक्ष्मीनारायण, मालपाणी व लाहोटी मिलने आये। बातचीत।

१४-९-३८

घूमते समय हंस डी राय, प्रह्लाद पोद्दार, वगैरा से थोड़ी बातें। भाग्यवती से भी।
केशवदेवजी वगैरा आये। मुकन्द आयर्न वर्क्स के बारे में विचार-विनिमय।
मुकन्दलाल, विद्याप्रकाशजी आदि मिले।
बम्बई—रास्ते में डा० रजब अली पटेल को देखा। उनकी बीमारी बढ़ी हुई लगी।
चिन्ता की बात मालूम हुई।
ऑफिस में हिन्दुस्तान हाउसिंग के बोर्ड की सभा हुई। बाद में मुकन्द आयर्न वर्क्स की सभा व कम्पनी की सभा।
रामनिवास रुईया से देर तक बातचीत। रामेश्वरदासजी बिड़ला के यहां भोजन। बातें।

१५-९-३८

सुबह जमनादासभाई व केशव गांधी से घूमते समय मुकन्द आयर्न कारखाने के बारे में बातचीत।

काकूभाई व केशवदेवजी के साथ बम्बई प्रान्तीय कमेटी का हिसाब देखा।
नारायणलालजी पित्ती मिलने आये। हैदराबाद की हालत कही। रामेश्वरदासजी का उनसे जो मन-मुटाव चलता है, उस बारे में बातचीत। श्री गोविन्द लालजी व बैंकट के बारे में।
श्री शान्तिप्रसाद जैन (डालमिया के जवांई) आये। उन्होंने अपनी कम्पनी की हालत कही। यहीं पर भोजन भी किया। सीमेन्ट के सिंडीकेट के बारे में विचार-विनिमय।
सफिया खान मिलने आई। चि० शान्ता वगैरा भी आये।
जुहू का छोटा प्लाट लुकमानी को मूलजी के मार्फत (हिन्दुस्तान हाउसिंग) पौने आठ रुपये गज से सौदा पक्का किया।
विले पारले छावनी ट्रस्ट की मीटिंग हुई। जुहू में छावनी की जो इमारत है उसे बेचने का फैसला हुआ।
फ्रन्टीयर मेल से इण्टर में शिमला के लिए रवाना।

दिल्ली, १६-९-३८

मुकन्दलालजी (लाहोरवाले) से मुकन्द आयर्न कम्पनी के बारे में बातचीत।
श्री हंस डी राय से बातें। वह सवाई माधोपुर में उतर गये।
हिसारवाले आनन्द से बातचीत।
देहली में कालका-कलकत्ता-एक्सप्रेस गाड़ी पकड़ी। स्टेशन पर स्नान किया। रास्ते में गर्मी बहुत ज्यादा थी। कोटा से मथुरा तक लू भी चलती थी। स्नान करने से ठीक मालूम हुआ। स्टेशन पर पार्वती बाई डिडवानिया, दुर्गादेवी, जयसुखभाई गांधी आये थे। जयसुखलाल भाई दूध वगैरा लाये थे। देहली से शान्ता केजडीवाल साथ हुई। इण्टर में भीड़ थी—नींद बराबर नहीं आई। खांसी भी आती रही।

शिमला, १७-९-३८

कालका में गाड़ी बदली।
रास्ते में दृश्य देखते हुए १२॥ बजे करीब शिमला पहुंचे। वहां से पैदल जैन धर्मशाला में। वहां स्नान, भोजन वगैरा के बाद पैदल सभापति के जलूस में गये। थोड़ी वर्षा थी।

आर्य समाज हाल में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन शुरू हुआ। साढ़े सात बजे तक वहां ठहरना। बाद में कृष्णकान्त मालवीय के आग्रह पर होटल में ठहरे। वहीं सोया।
कमलनयन, दामोदर, शान्ता, विट्ठल, उमा, कमलाबाई कीबे वहां नहीं आये।

१८-९-३८

साहित्य सम्मेलन में काका साहेब का भाषण ठीक हुआ। बाद में साहित्य के विषय पर वर्माजी का भाषण ठीक हुआ। केशर, दामोदर, कमल, उमा, शान्ता वगैरा पहाड़ पर घूमने व देखने गये।
साहित्य सम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ। वहां सात बजे तक ठहरना हुआ।
शिमला में कांग्रेस की ओर से जाहिर सभा हुई। वहां मानपत्र, व्याख्यान। सम्पूर्णानन्दजी, दादा धर्माधिकारी, बद्रीदत्तजी पाण्डे व मैं बोले। शन्नोदेवी भी।
साहित्य सम्मेलन की विषय निर्वाचिनी सभा में रात के १० बजे तक बैठे।
नियमावली पास की।

१९-९-३८

शान्ता केजड़ीवाल के साथ साहित्य सम्मेलन की विज्ञान सभा में गये। रास्ते में उससे उसके भावी विचार आदि की बातें।
साहित्य सम्मेलन की विषय-निर्वाचिनी सभा में देर तक—दो अढ़ाई बजे तक विचार-विनिमय ठीक हुआ। श्री टण्डनजी, काका साहब, वर्माजी आदि के विचार-विनिमय व बातचीत का ठीक परिणाम हुआ। वातावरण ठीक बना दिखाई दिया।
साहित्य सम्मेलन में साढ़े पांच बजे तक ठहरे।
खादी भण्डार देखते हुए ६ बजे मोटर द्वारा शिमला से कालका के लिए रवाना।
भाड़ा १२) दिया। केशर बाई, दामोदर, विट्ठल साथ में।
कालका १० बजे पहुंचे। भूलाभाई, सर रजा अली, मास्टर आदि से

मिलना।

दिल्ली, २०-९-३८

हरिजन कालोनी, किंग्सवे में ठहरे। राजेन्द्र बाबू व लक्ष्मी वगैरा से मिलना हुआ। कॉफी ली।

हरिजन कालोनी में चक्की व चर्खा-यज्ञ चल रहा था। वहां वियोगी हरिजी की राय से भाग लिया। आधे घण्टे चक्की चलाई। पार्वतीबाई डिडवानियां साथ थीं। चर्खा भी आध घण्टा काता। फलाहार के बाद आराम।

हरिभाऊजी उपाध्याय से राजस्थान, जयपुर, अजमेर की स्थिति पर विचार-विनिमय।

उदयपुर के बारे में भूरेलाल बया से बातें। दिन में गाडोदियाजी, सरस्वती-बाई, पार्वतीबाई, प्रभुदयाल, द्वारकाप्रसाद, वगैरा कई लोग मिलने आये। नलिनीरंजन सरकार आये।

वियोगी हरिजी की रामायण में गया।

२१-९-३८

सुबह ४॥ से ५ बजे तक चक्की चलाई, दामोदर वियोगी हरिजी आदि के साथ। चर्खा।

केसर के साथ घूमना। उसे नर्मदा के बारे में समझाया कि पहाड़ पर ले जाना अच्छा नहीं। उसकी मनःस्थिति के बारे में भी देर तक व गम्भी-रता के साथ समझाने का प्रयत्न।

इस मामले में मेरी जिम्मेवारी व भूल का पूरा चित्र देकर देर तक समझाने का प्रयत्न। कुछ बातें तो उसकी समझ में बैठीं।

आज रेंटीया बनारस (चर्खा द्वादशी) थी। हरिजन बालकों के साथ भोजन किया।

बापू के पास तीन बजे से पांच बजे तक वर्किंग कमेटी के मित्रों के साथ विचार-विनिमय।

रात्रि में केसर के कारण कलकत्ता फोन करना पड़ा। नर्मदा की हालत ठीक है वजन बढ़ रहा है।

आज मन व शरीर ठीक नहीं मालूम देता था, सिर में दर्द था।

२२-९-३८

चि० उमा के साथ थोड़ा घूमना।

प्रभूदयाल (चर्खीदादरी वाले) व साथ में परमेश्वरी, बदामी बाई, गोदावरी, कमला, सुभद्रा, शान्ता, आये। बाद में इन्द्र मोहन व उनके पिता से थोड़ी देर बातचीत—सम्बन्ध के बारे में।

बिड़ला हाउस में वर्किंग कमेटी की सभा हुई।

हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी उपाध्याय, घनश्यामदासजी बिड़ला के साथ जयपुर व सीकर स्थिति के बारे में देर तक विचार-विनिमय। वहीं पर भोजन।

बापू के साथ वर्किंग कमेटी के लोग तीन से पांच तक बैठे।

२३-९-३८

वर्किंग कमेटी की सभा बिड़ला हाउस में सुबह ८ से ११ तक हुई।

मि० यंग इन्सपेक्टर जनरल, जयपुर मिलने आया। उससे ढाई घंटे-(११ से १॥ तक) बातचीत हुई। बहुत साफ तौर से उसने अपनी कठिनाइयां व जो अड़चनें आईं वे बतलाईं।

कौंसिल ने पहले स्वीकार कर लिया था। महाराज के जन्म दिन पर छोड़ने का निश्चय हो गया था, बाद में ऊपर से ए० जी० जी० की तरफ से जोर पड़ा, इससे वह नहीं कर सका। और भी कई बातें उसने बतलाईं। आखिर में उसको कहना पड़ा कि उसे और थोड़ा समय मिले तो वह प्रयत्न कर देखे। उसकी बातचीत से आशा तो कम मालूम हुई। हीरालालजी शास्त्री व चिरंजीलाल मिश्रा भी मिले।

२४-९-३८

वर्किंग कमेटी की बैठक सुबह व दोपहर को भी हुई।

ऑल इंडिया की कमेटी की बैठक हुई। नागपुर के डा० खरे का प्रस्ताव, श्री बालकृष्ण शर्मा की सूचना के साथ पास हुआ। श्री बापूजी अणे ने डा० खरे की वकालत की। सरदार, पट्टाभि वगैरा के भाषण ठीक हुए। श्री बालकृष्ण शर्मा की उप-सूचना का नरेन्द्रदेवजी वगैरा ने विरोध किया। आखिर मूल प्रस्ताव शर्मा की सूचना के साथ पास हुआ। केवल ११ मत विरुद्ध थे। डा० खरे के पक्ष में तो प्रायः कोई भी नहीं मालूम हुआ।

आकोला के सहस्रबुद्धे की सूचना को कोई ने दुजोरा-समर्थन भी नहीं दिया।

२५-९-३८

वर्किंग कमेटी की बैठक सुवह व शाम को हुई।
ऑल इंडिया कमेटी शाम को ४।। बजे से शुरू हुई। रात में जोर की आंधी व तूफान आने के कारण सरदार का भाषण पूरा नहीं हुआ व बैठक वन्द करनी पड़ी।

२६-९-३८

वापूजी के पास-वर्किंग कमेटी हुई, ८-११ तक।
जलियांवाला वाग मेमोरियल की सभा हुई, ३ से ४।। तक।
ऑल इंडिया कां० कमेटी की सभा में पांच बजे से रात के ढाई बजे तक—वहां एक सरीखा बैठना पड़ा। सोशलिस्ट लोगों की वाक आउट देखी व भाषण सुने। पता नहीं भविष्य किस प्रकार का आनेवाला है।
जयपुर के बारे में हीरालालजी शास्त्री से बातचीत। वह आज गये।

२७-९-३८

गंगाधर राव, कमल, इंदू के साथ घूमना, स्मारक तक।
चर्खा संघ की कमेटी बापू के यहां, सुबह ९-११ तक हुई। तथा वर्किंग कमेटी की सभा दोपहर को बापू के पास २ से ५।। तक हुई।
आज भी जलियांवाला वाग मेमोरियल की सभा हुई।
सुभाष वावू ने बुलवाया।
महात्मा भगवानदीनजी, सत्यदेवजी, सुभद्रा, सत्यप्रकाश वगैरा मिलने आये।

२८-९-३८

सुबह घूमना, गंगाधर राव, इंदू, वगैरे साथ थे।
श्री चतुर्सेन शास्त्री व डा० युद्धवीर सिंह आये। माफी मांगने की बात-चीत।
वर्किंग कमेटी सुबह वापूजी के यहां ८।। से ११, व शाम को बिड़ला हाउस में ४।। से ६।। तक हुई।
चर्खा संघ की सभा दोपहर को बापू के पास हुई।

चि० शान्ता—रामगोपाल केजड़ीवाल के यहां भोजन। सीतारामजी सेख-सरिया से बातचीत, आराम वगैरा के बारे में।

रात में भटिंडा मेल से सेकन्ड में लाहौर रवाना।

लाहौर-अमृतसर, २९-९-३८

लाहौर पहुंचे।

मुकन्द आयर्न वर्क्स का लाहौर का कारखाना, स्टेशन से सीधे जाकर देखा। दो घंटे से ज्यादा समय तक सब कारखाना लाला मुकन्दलाल, विद्या-प्रकाश, जयप्रकाश, कमल के साथ देखा।

लाला मुकन्दलाल के घर भोजन।

मुकन्द आयर्न वर्क्स के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स की सभा हुई—२।। से पांच बजे तक।

महत्व के निर्णय हुए। लाला शिवराज की योग्यता की ठीक छाप पड़ी। लाला मुकन्दलाल ने पार्टी दी। वहां कई मित्र लोगों से मिला व परिचय। मानपत्र, भाषण।

मोटर से अमृतसर गये। जलियांवाला बाग में जाहिर सभा हुई। वर्त-मान स्थिति व बापूजी के जन्म दिन के सम्बन्ध में बोलना हुआ।

पंजाब कांग्रेस की स्थिति का परिचय हुआ।

दिल्ली, ३०-९-३८

लाहौर व अमृतसर से सुबह फ्रंटियर मेल में सेकन्ड में दिल्ली पहुंचा।

हरिजन कालोनी में पू० बापूजी के सामने वर्किंग कमेटी की सभा हुई, ८।। से ११ तक। आसाम की परिस्थिति पर खास चर्चा हुई।

चर्खा संघ की सभा २-५ तक हुई। खजान्ची के काम का त्यागपत्र दिया।

गांधी आश्रम मेरठ के ट्रस्टी पद का त्यागपत्र दिया।

सरदार वल्लभ भाई व घनश्यामदासजी बिड़ला आये। मुझे बिड़ला हाउस ले गये।

आसाम के बारे में सुबह वर्किंग कमेटी में मैंने जो कहा उस बारे में बात-चीत। सरदार को मेरे व्यवहार से दुःख व नाराजी थी। मुझे भी उनके व्यवहार से पूरा असन्तोष था। कल बापू के पास बैठकर आखरी फैसला करने का निश्चय हुआ।

रात में राजेन्द्र बाबू से थोड़ी बातें। मन हलका नहीं हुआ।

१-१०-३८

सुबह थोड़ा घूमना। जाजूजी से वर्तमान स्थिति तथा रात में सरदार व घनश्यामदासजी से बातें हुई थीं, उस सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

बापू के पास वर्किंग कमेटी ८॥ से ११। तक हुई।

हिन्दुस्थान हाउसिंग कम्पनी की ऑफिस में गये। वहीं भोजन तथा भावी काम के बारे में बातचीत। आबिदअली बम्बई से आया।

पू० बापू के पास सरदार व घनश्यामदासजी तीन बजे से साढ़े चार बजे तक रहे।

वल्लभ भाई का व मेरा जो मतभेद था उसका खुलासा मतभेद बहुत तीव्र-रूप का व दुःखदायक था। मैंने बताया कि और तो दूसरे कारण थे ही, यह भी एक महत्व का कारण था, जिससे मुझे वर्किंग कमेटी से निकल जाना आवश्यक मालूम हुआ।

पू० बापू ने अपनी स्वीकृति दी। त्यागपत्र के मसविदे में बापू ने थोड़ी दुरुस्ती की।

विद्यापीठ पुस्तकालय (काका), देव, गंगाधर राव को पत्र, आसाम मिनिस्ट्री, नरीमान शरीफ प्रकरण आदि खास थे। महादेव भाई ने पत्र भेजा। सीकर व वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव, सीकर जाना आदि की चर्चा।

पेरीन बहन से मिलना हुआ।

पलवल (गुडगांव जिले) में गांधी आश्रम का शिलान्यास श्री सुभाष बाबू ने रखा। वहां गये। रात में १० बजे वापस। वहां बोलना पड़ा। पार्वती देवी व अन्य लोग साथ थे।

२-१०-१९३८

घूमना, पार्वतीदेवी डिडवानियां साथ थी। भावी जीवन शांतिमय कैसे बीते, इसपर विचार।

वर्किंग कमेटी की बैठक बापूजी के यहां ८॥-११॥। तक होती रही। डा० खरे को, अगर वर्किंग कमेटी चाहे तो, और समय दे सकते हैं, मैंने कहा। आखिर आज ही फैसला हुआ।

वर्किंग कमेटी के पद का त्यागपत्र दिया। बापूजी ने मेरी सुन्दर व साफ

तौर से वकालत की। मुझे भी जो कहना था थोड़े में कहा।

सदस्य लोग स्वीकार नहीं करना चाहते थे; पर पू० बापू ने विश्वास दिलाया कि वह ठीक कर लेवेंगे।

सर हैदरी को पत्र भेजा।

सीतारामजी सेखसरिया वनस्थली से आये। जावरा जाने का निश्चय। पू० बापूजी से इजाजत ली।

राजेन्द्र बाबू से बहुत देर तक बातचीत, मानसिक स्थिति व सरदार की बातचीत का सारांश कहा। उन्हें मेरे वर्किंग कमेटी से निकल जाने का रंज था।

शंकरराव देव भी मिले। अन्य मित्रों से व ठक्कर बापा, वियोगी हरि आदि से मिला। डा० अग्रवाल (आंखवाले) व बैरिस्टर आसफ अली से मिलना। १०-१० की दिल्ली एक्सप्रेस से थर्ड में रवाना।

चालू रेलवे, ३-१०-३८

रतलाम से जावरा जाने को सामान उतारा पर बालकृष्ण आजोदिया ने कहा कि जानकी व कमला इंदौर गये हैं। सो इंदौर जाने की तैयारी। बाद में वहां की राजनैतिक स्थिति के कारण जाना स्थगित किया और सीधे बम्बई रवाना।

रास्ते में खासकर बड़ौदे में बहुत ज्यादा भीड़ हुई। घबराहट होने लगी। सूरत के आगे बरसात शुरू हो गई थी।

रास्ते में जमनादास भाई गांधी से बातचीत। रतलाम में लक्ष्मण रसोइया भी मिला।

दादर-जूहू, ४-१०-३८

दादर में छः बजे उतरे।

माटूंगा में केशवदेवजी से बातचीत।

जमनादास भाई, सन्तोक बहेन, केशव व राधा से बातचीत। केशव गांधी की सगाई मथुरादास त्रिकमजी की साली की लड़की बिन्दुमति से होने की खबर मिली।

चि० शान्ता का फोन आने से बम्बई जाना पड़ा। सुशीला को १०७ डिग्री बुखार था।

वहां थोड़ी देर ठहरकर भाग्यवती दानी से मिलना। पन्नू से बातें।

जुहू, ५-१०-३८

कलकत्ता वाले बन्सीधर खेमका से बातें। मुस्तफा खान से जुहू जमीन के बारे में बातें।

सुलोचना व नन्दू बहन (मोती बहन की लड़कियां, आईं। भगवती प्रसाद खेतान, उसकी स्त्री व लड़के मिलने आये।

माणक, धन्नू की स्त्री भाग्यवती (दानी) की माताजी मिलने आईं।

सफिया मिलने आई। जूनी नई बातें पेशावर आदि की करती रही।

राधा, बिन्दुमती (केशव गांधी से जिसकी सगाई हुई उस लड़की) को लेकर आई।

केशवदेवजी, मूलजी, प्रह्लाद वगैरा आये। हाउसिंग व मुकन्द आयर्न की बातें।

६-१०-३८

राधाकृष्ण रुइया आया। यहीं पर भोजन-बातचीत। चि० गंगाबिसन से बातें।

अंधेरी, माटुंगा होते हुए शाम को बम्बई। बिड़ला हाउस में फल-वगैरा। ब्रिज खेलना; माधव व बन्सीधर थे।

रामनारायणजी के बंगले पर सोये। चि० राधाकृष्ण से बातचीत।

७-१०-३८

बालकेश्वर पर रामनारायणजी के बंगले पर वर्षा आदि के कारण घर में ही घूमना।

चि० राधाकृष्ण व रामनिवास से देर तक बातचीत। रामनिवास के पत्र पर शान्तीप्रसाद जैन मिलने आया।

टाटा (बम्बई आफिस) ए० आर० दलाल, जहांगीर रतन टाटा, सर मोदी तीनों से शामिल व अलग-अलग १२ से १॥। तक बातचीत हुई—खासकर डालमिया सीमेन्ट व एसोसियेटेड सीमेन्ट के बारे में। ठीक विचार-विनिमय हुआ।

मि० नारियलवाला से, गोविन्द ने कहा था उस बारे में, बातचीत। शाम को उनके साथ सुभाष बाबू से मिलना।

मटुभाई जमीयतराम ने चान्दोड फैक्टरी के पावर ऑफ अटर्नी के लिए सही कराई।

८-१०-३८

घूमने, चि० शान्ता, वेंकट, श्री निवास साथ में। ग्वालियर का बंगला देखा।

वेंकटलाल से समझौते के बारे में बातचीत।

शान्ति प्रसाद से सीमेन्ट के बारे में सब स्थिति समझी।

मंगलदास सेठ गोण्डल की जमीन के लिए आये। १२ हजार वार-१०, का भाव।

चि० राधाकृष्ण रुइया मिलने आया।

चिरंजीलाल बडजाते वर्धा से आये। ब्रिजमोहन से शेअरों की स्थिति समझी।

भगवतीप्रसाद खेतान, सब परिवार सहित आया, यहीं भोजन किया। खेल-कूद।

देवीप्रसादजी की स्त्री व त्रिवेणी वगैरा भी आये।

चि० शान्तिप्रसाद जैन आज दिनभर यहां रहा। टाटा वालों से बात करने के लिए स्टेटमेन्ट तैयार किया।

९-१०-३८

घूमना शान्तिकुमार व हरजीवन भाई के साथ। गोन्डल की जमीन देखी। विचार-विनिमय।

श्री मंगलदास से शान्तिकुमार ने जो बातचीत की वह कही। उससे आशा कम रहीं।

केशवदेवजी, मूलजी, आबिदअली आदि से बातचीत। बम्बई से कई लोग मिलने आये।

थोड़ी देर खेलना। बम्बई से १५-२० लोग-बाग आ गये।

मंगलदास मिले। जमीन लेने की इच्छा व तैयारी बताई।

१०-१०-३८

घूमना, चि० रमा से बातचीत। बाद में शान्ता से श्री मणीलाल नाणावटी मिले।

श्री शान्तिप्रसाद जैन आये। उन्होंने श्री बोस से, सर मोदी मिले यह बताया और मुझसे बोस मिलना चाहते हैं यह कहा। जल्दी तैयार होकर उनके साथ सुभाष बाबू से मिलने गया। डालमिया सीमेन्ट व असोसिएटेड सीमेंट के मर्जर के समझौते के बारे में बातचीत। विचार हुआ कि भाव मुकर्रर करने, कोटा फिक्स करने वगैरा के बारे में सर मोदी से मिलना। १२ से १२।। तक। उन्हें स्टेटमेंट दिया। उसपर चर्चा। कोटा फिक्स होना कम सम्भव है यह कहा। भाव में डालमियां को चान्स व फैसीलिटी दी जा सकती है। उन्होंने ५-७ दिन में वर्धा रिपोर्ट भेजने को कहा।
बच्छराज कम्पनी के आफिस में गये। बाद में डालमिया ऑफिस। शान्ति-प्रसाद को बातचीत का सारांश कहा। भारत का बम्बई मैनेजर आशर से गोन्डल की जमीन के बारे में ऑफर, साढ़े पांच रुपये वार व दो रुपये दलाली। इस मास के आखिर तक नये करने का कहा।
चि० पन्ना को प्रह्लाद के साथ पुरन्द्रे को दिखाया।
सुव्रता बाई व राधाकृष्ण से देर तक सगाई की बातें।
शान्ति प्रसाद व महादेवलाल मिलने आये।

११-१०-३८

चि० रमा व शान्ता से सगाई के बारे में खुलासेवार बातचीत; सुव्रताबाई व राधाकृष्ण के बारे में भी।
श्री केशवदेवजी, आबिदअली ६।। बजे आये। मरवा की जमीन देखने गये। जमीन पसन्द नहीं आई। मथुरादास जीवनदास के यहां मिले।
चि० नर्मदा, गजानन्द वर्धा से आये। दोनों से बातचीत। स्थिति समझी। पहले से वह ठीक मालूम हुई, पर ज्यादा बोलती है व अतिशयोक्ति खूब करती है।
श्री सुभाष बाबू से मिलना। वहीं पर ए० आर० दलाल (टाटा वाले) भी आ गये थे। खासकर सीमेंट डालमियां व असो० सीमेंट व मर्जर के सम-झौते के बारे में देर तक बातचीत होती रही।
जर्मन डा० ने खून का फरक समझाया। इन्जेक्शन लेने व आराम का कहा।
चि० राधाकृष्ण व रामनिवास से राधाकृष्ण की सगाई व चि० रमा के

बारे में खुलासेवार बातचीत। व्यापार व फायनन्स की भी बातचीत होती रही।
दादा वर्धा गये, तार आया। चिन्ता हुई।

१२-१०-३८

नर्मदा के मन में जो तीन-चार बातें (वहम की) बैठ गई थीं, उसका केसर, नर्मदा, गजानन्द के साथ में खुलासा। नर्मदा की समझ गलत व झूठी थी।
बाल कालेलकर से बातचीत।
शान्तिप्रसाद जैन आज प्राय: दिन भर यहीं रहा। सीमेन्ट, शुगर आदि के बारे में बातचीत।
रांची से घनश्यामदास बिड़ला का फोन आया। मि० यंग ने फोन में कहा है कि सीकर के जो २० कैदी रहे हैं वे कल छूट जावेंगे। प्रजामण्डल के बारे में भी ठीक सफलता मिलने की आशा है। सर बीचम, पंद्रह रोज में आने वाला है। मैं अभी सीकर न आऊं व आदि।
रामेश्वरदासजी बिड़ला ने फोन किया कि शुगर मिल बेचना हो तो १६ से १८ लाख तक में बिक सकती है। कीमत कम मालूम हुई।
केशवदेवजी से व शान्ति प्रसाद से शुगर मिल बेचने के बारे में बातचीत।

१३-१०-३८

शान्तिप्रसाद जैन मिलने आया। ए० आर० दलाल से जो बातें हुई वह कही।
श्री नारायणलाल पित्ती से बातचीत। हैदराबाद स्टेट शक्कर फैक्टरी, वेंकट व मुकन्दलालजी का फैसला, बच्छराज कंपनी व बच्छराज जमनालाल के खाते के बारे में।
सर चुन्नीलाल मेहता से डालमियां सीमेंट, नागपुर बैंक, व्यापार व राजनैतिक स्थिति पर विचार-विनिमय। वहीं पर रांची से रामेश्वरजी बिड़ला का फोन आया। गोला शक्कर मिल २२-२३ लाख से कम में नहीं बेचने का कहा।
सुभाष बाबू से मिलना।
सर पुरुषोत्तमदास से डालमियां सीमेंट व ऐसोसियेटेड सीमेंट के बारे में देर

तक बातचीत।
डा० ऐ० दास (होमियोपैथिक) से सर्दी-खांसी की दवा ली।
भाग्यवती दानी से दो हजार का खाता। पेरीन बहन से बम्बई हिन्दी प्रचार के सम्बन्ध की बातें।
ज्वाल व ब्रिजमोहन पिलानी से मिलने आये।

१४-१०-३८

घूमना, केशर व शान्ताबाई साथ में डा०। पटेल ने जांच की, ब्लड प्रेशर १००-१५० अन्दाज।
झोंपड़ी का भाड़ा २५०) मूलजी भाई से बातें।
बच्छराज फैक्टरी के बोर्ड की सभा हुई।
श्री लक्ष्मणदासजी डागा से कम्पनियों के बारे में बातचीत, खाते का फैसला।
मुकन्दलाल (लाहौरवाले) आज आये। बीमार थे। दो घंटे से ज्यादा देर तक बातचीत।
केशवदेवजी से मुकन्द आयर्न की बातें।
श्री गुरुजी को अमलनेर फोन किया; उन्हें समझाने का प्रयत्न, बम्बई सरकार को समय देने के बारे में।

१५-१०-३८

समुद्र स्नान देर तक। जुहू म्यु० चुनाव में मत दिया। त्रिभुवनदासजी, राजा (पोरबन्दर वाले) आये। बैंक की बात की। चेअरमन बनने को कहा। श्री मुंशी से टेलीफोन से बातें।
मुकन्द आयर्न वर्क्स के बारे में बातें।
गोकुलभाई, रमणीकराय मेहता, हरजीवन भाई आये। स्वदेशी स्टोर्स वगैरा के बारे में विचार-विनिमय, योजना। रमणीकराय हरजीवन भाई को यह काम सौंपा गया।
केशवदेवजी, फतेचन्द, जमनादास भाई वगैरा आये। मुकन्द आयर्न वर्क्स, बम्बई शाखा के बारे में, मुकन्दलाल से जो बातें हुईं वह कहीं। अन्य बातें बच्छराज फैक्टरी व अलसी, गेहूं गोदाम, प्रह्लाद व दलाली आदि।
चि० पन्ना की लड़की का जन्म दिन था वहां नाश्ता किया।

सुभाष बाबू ने बुलवाया; सिन्ध मिनिस्ट्री, आसाम, बम्बई, मजदूरों का ट्रेड बिल के लिए विरोध आदि की बातें। वर्किंग कमेटी से न निकलने के बारे में भी समझाने लगे।

नागपुर मेल से वर्धा रवाना। थर्ड में जगह नहीं। २।। टिकट इण्टर की ली। ६।।) एक टिकट पर ज्यादा लगा। रमा, सुशीला साथ में।

वर्धा, १६-१०-३८

घामणगांव से वर्धा तक श्री नानालाल व बेचरलाल बन्सीलाल (बर्मावालों) से बातचीत।

वर्धा पहुंचे। नारायणदासजी बाजोरिया से मिलना।

नवभारत विद्यालय (मा० शिक्षा मण्डल) की कार्यकारिणी की सभा।

महिला आश्रम में प्रार्थना।

वर्धा का मालगुजार मिलने आया उसे चिरंजीलाल व द्वारकादास का सन्तोष करने को कहा।

इन्दू गुणाजी कृष्णाबाई से थोड़ी बातें।

१७-१०-३८

बम्बई मेल से सुभाष बाबू आये।

श्री सुभाष बाबू का वर्धा, अमरावती, नागपुर का प्रोग्राम निश्चित किया। सब जगह टेलीफोन वगैरा करने पड़े।

हैदराबाद वाले रामकिसनजी धूत व नारायणदास आये। वहां की स्थिति समझी।

नागपुर से दाण्डेकर, ललताशंकर वगैरा आये।

सुभाष बाबू से देर तक बातचीत। उनका आग्रहपूर्वक कहना था कि तुम्हारे वर्किंग कमेटी से त्यागपत्र स्वीकार किये जाने से बहुत ज्यादा गलतफहमी फैलेगी। कई उदाहरण दिये। कमल से बात हुई वह कही। वर्किंग कमेटी के सभी मेम्बरों की इच्छा है कि मुझे त्यागपत्र नहीं देना चाहिए इत्यादि। मैंने मेरी मानसिक स्थिति समझा कर कही। उन्होंने आराम लेने व छुट्टी लेने का कहा। उन्होंने कहा कि वह पूज्य बापू को पत्र लिखेंगे।

गांधी चौक में सुभाष बाबू की जाहिर सभा।

१८-१०-३८

नारायणदासजी बाजोरिया व देवशर्माजी के साथ पवनार। पू० विनोबा का स्वास्थ्य ठीक देखकर सुख मिला। वजन १२० पौण्ड होने की उन्हें आशा है।

नागपुर प्रां० कां० कमेटी की ऑफिस में गये। बाबा साहब करन्दीकर, गोपालराव काले, जाजूजी के साथ विचार-विनिमय।

अ-ब्राह्मण पार्टी की ओर से निमंत्रण देने भालेराव व बाजीराव आये।

कलकत्ता से चि० सावित्री व लीला जगदीश प्रसाद के साथ आये। दोनों अच्छे थे।

१९-१०-३८

सेगांव में श्री भणशाली व बालकोबा को देखा। भणशाली ठीक हो जायेंगे बालकोबा की हालत ठीक नहीं दिखी।

सर अकबर हैदरी को हैदराबाद स्टेट कांग्रेस पर प्रतिबन्ध के बारे में पत्र भेजा।

मि० यंग के पत्र का ड्राफ्ट दादा से बनवाया। अ-ब्राह्मण कानफ्रेंस, नागपुर का तार आया। बदले में तार दिया।

हिन्दी प्रचार कार्य के लिए व काका साहब के लिए झोंपड़ी तथा मकानात के लिए जमीन महिला आश्रम, याने नायकमजी घर के सामने का खेत देखा। वह उन्होंने पसन्द किया। दरबारीलालजी भी साथ थे। कृष्णाबाई के साथ महिला आश्रम के बारे में देर तक विचार-विनिमय।

महिला-आश्रम प्रार्थना में रहे। वर्किंग कमेटी व आल इंडिया कमेटी के बारे में कहा।

२०-१०-३८

पदमपतजी को पत्र लिखवाया।

श्रीमती आर० शाह, हॉर्टीकल्चरिस्ट, नागपुर से मिलने आईं। बहुत जरूरी काम के लिए पांच सौ नहीं तो तीन सौ कर्ज मांगती थी। रुडमलजी व शिवनाराणयजी लध्धड़ की हालत सुनाई।

दामोदर से हैदराबाद स्टेट कांग्रेस की हालत पर चर्चा। उसको छुट्टा करना पड़ेगा।

बच्छराज जमनालाल, जमनालाल संस, लक्ष्मीनारायण मन्दिर व बच्छराज फैक्टरीज के काम के बारे में दुकान पर कार्यकर्त्ताओं में चर्चा-विचार। बच्छराज जमनालाल की सभा।
आबिदअली को जुहू जमीन के सेटलमेन्ट के बारे में तार किया व पत्र लिखा।
चि० रामेश्वर नेवटिया मेल से आया। गोलामिल की हालत समझी।
श्रीमन्नारायण, मदालसा, काका साहब कानपुर होते हुए उड़ीसा गये।
पदमपतजी सिंघानिया को खुलासेवार पत्र भेजा।

२२-१०-३८

हैदराबाद स्टेट कांग्रेस का पत्र। बापू का तार। अन्य पत्र।
हैदराबाद स्टेट कांग्रेस से जो सज्जन आये थे उनसे बातचीत।
दीपावली पूजन। भोजन। गांव में पैदल—खासकर मन्दिर व दुकान जाना-आना।
जाजूजी, कुमारप्पा, नायकम्, भारतन्, किशोरलाल भाई वगैरा से मिला।
दुकान पर कमल ने पूजा करी। कपास का भाव ४३। था। आज ४१ का भाव चाहिए कहा। रुई बहुत मंदी मालूम हुई।

२४-१०-३८

दुकान व फैक्टरी की मीटिंग हुई। वहां देर तक रहना पड़ा।
बच्छराज जमनालाल के काम का भी विचार। नये आदमी रखना व उम्मीदवारों की व्यवस्था।
पत्र-व्यवहार बहुत सा साफ हुआ। जगन्नाथ मिश्र काम पर आया।
शाम को महिला आश्रम। मोहन साथ में। चि० शान्ता के यहां भोजन। भागीरथी बहन से खुलासेवार बातें। मैंने समझाया कि मैं महिला आश्रम से क्यों अलग होना चाहता हूं।
मन:स्थिति व आराम की जरूरत के कारण बाहर जाना जरूरी है आदि बातें कहीं।

२५-१०-३८

सागरमलजी के लिए मकान के बारे में विचार। भेंरू जिसमें रहता था, वह मकार दुरस्त कराने का निश्चय। दुकान व बच्छराज फैक्टरी की मीटिंग।

११।। बजे तक काम किया।

गोमती बहन व किशोरलाल भाई के साथ भोजन। मनः स्थिति आदि पर विचार, खासकर महिला आश्रम व मण्डल की जिम्मेदारी से छूटने में इनकी मदद लेने पर देर तक विचार-विनिमय। धोत्रे व काका साहब का विचार।

पत्र व्यवहार—नागपुर प्रां० कां० के भावी कार्य के बारे में श्री घटवाई, करन्दीकर, दादा, वारलिंगे व बाद में किशोरलाल भाई से देर तक विचार-विनिमय।

२६-१०-३८

घूमते समय चिरंजीलाल बड़जाते से दुकान सम्बन्धी व उनकी खानगी बातें।

दुकान पर शिवनारायणजी लघ्घड़ को बच्छराज फैक्टरी में वर्धा के काम के लिए रखने की बातचीत व अन्य विचार-विनिमय।

नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कार्य के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

महिला आश्रम की बहनें व कृष्णाबाई मिलने आईं। उद्योग बढ़ाने पर विचार।

सेगांव में एकदम बहुत से लोग बीमार पड़ गये। डा० नर्मदाप्रसाद (सिविल सर्जन) को वहां भिजवाया। उन्होंने आकर रिपोर्ट दी। थोड़ी चिन्ता। सुबह मोटर लेकर राधाकृष्ण की वहां जाने की व्यवस्था की। पारनेरकर को वर्धा अस्पताल में दाखिल कराया।

नागपुर, वर्धा २७-१०-३८

नागपुर रवाना। साथ में चि० रामेश्वर नेवटिया व कमलनयन। ६-५५ की मोटर से रवाना ८। को वहां पहुंचे। बैंक, आफिस, स्टेशन। इतवारी में गोपीजी का वह मकान देखा जिसे हाउसिंग कंपनी बनाती थी।

बैंक आफ नागपुर का उद्घाटन ९।। बजे हुआ। श्री पूर्णचंद्र बुटी के सभापतित्व में। मैंने भी थोड़ा कहा व खुलासा किया। ठीक लोग आये थे। बाद में बैंक में खाते खोले गये।

गिरधारी के घर भोजन। श्री कानिटकर, अम्बुलकर, रामेश्वर अग्रवाल आदि वहां मिलने आये। कानिटकर से साफ बातें कीं।

बैंक आफ नागपुर के बोर्ड आफ डायरेक्टर की मीटिंग, बैंक कार्यालय में, हुई। देर तक विचार-विनिमय।
हिन्दुस्तान हाउसिंग के प्लाट घूमकर देखे। वहीं नाश्ता।
श्री मथुरादासजी मोहता के साथ मोटर में वर्धा तक आया।

वर्धा, २८-१०-३८

आबिद अली के साथ बजाजवाड़ी, महिला आश्रम, हिन्दी प्रचार कालोनी आदि घूमना। प्लानिंग आदि का विचार।
नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में गये। विचार-विनिमय।
अबिदअली, गिरधारी, पटेल, इंजीनियर और सब जगह देखकर आये, बातचीत।
जानकी देवी का कमल के लड़के के नाम से दस हजार की पूंजी से काम करने के बारे में आग्रह।
नागपुर प्रांतीय कांग्रेस के आफिस में तीन बजे से ८ बजे तक कार्यकारिणी का काम—विशेष तथा श्री हरकरे, खाण्डेकर, देशपाण्डे के बारे में अनुशासन भंग पर देर तक चर्चा। प्रायः सभी मेम्बरों का आग्रह था कि कार्यवाही होना आवश्यक है।
श्री दीक्षित की राय दोनों तरफ थी। भीकूलालजी, खोडे साहब आदि से बातें।

२९-१०-३८

'प्रसाददीक्षा' पूरी की। सब मिलाकर किताब ठीक है। कुछ पत्रों के बारे में गैर-समझ हो सकती है।
इन्दौर के हजारीलाल जडिया व खरगोन के खोड़ेजी के साथ भोजन। वहां की स्थिति समझी।
नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कार्य। श्री खांडेकर के पत्र के जवाब में पत्र भेजा। अधिक खुलासा मंगाया।
धोत्रे व किशोरलाल भाई से बातचीत। बापू का पत्र। 'गांधी सेवा संघ' से त्याग-पत्र देने के बारे में किशोरलालभाई के पत्र से गैर समझ हुई।
महिला आश्रम के काम में धोत्रे मदद करें, यह निश्चय हुआ।
कृष्णाबाई कोल्हटकर, अम्बिका बाबू आदि के साथ महिला आश्रम का

कार्य । कृष्णावाई, काशीनाथजी व शान्तावाई से खुलासा।
चि० सावित्री, कमला, जानकीदेवी वच्छराज-भवन में रहने गये। पवनार जाने का विचार, परन्तु हीरालालजी शास्त्री आदि का आने को तार आने से जाना नहीं हो पाया।

३०-१०-३८

चिरंजीलाल वड़जाते का लम्बा पत्र दीपावली निमित्त आया। पढ़ा।
घूमा, वच्छराज-भवन। रास्ते में मोहन छाजेड़ व मदनलाल कोठारी (मोहाड़वाले) से परिचय।
पू० जाजूजी से देर तक विचार-विनिमय। अनुशासन भंग के वारे में वापूजी के पत्र का जवाब दिया।[1]
हीरालाल शास्त्री (जयपुरवाले) से रात में देर तक वातें।
श्री फुले (नागपुर) मोटर से मिलने आये।
फुले ने पूछा, मैं कांग्रेस का सदस्य वनूं क्या ? उनको कांग्रेस की नीति साफ तौर से क्या है, यह वताया। उनके वारे में जो राय है, वह भी उन्हें कह दी, याने खरे-प्रकरण में भाग लिया, वगैरा। वह अपनी जवावदारी पर, उनकी आत्मा कहे, वैसा करें, पद की इच्छा न रखें वगैरा कहा।
किसनलाल व राधादेवी के साथ पवनार। वातें। विनोवा से त्यागपत्र आदि पर विचार।

३१-१०-३८

घूमने जाना, हीरालालजी शास्त्री साथ में। गौरक्षण के वंगले तरफ होते हुए बच्छराज-भवन।
नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के कार्यालय में देर तक विचार-विनिमय।
हीरालालजी शास्त्री (जयपुरवालों) से वहां की, प्रजा-मण्डल की तथा अन्य स्थिति समझी। फिलहाल पूरी ताकत लगाकर दुष्काल के काम में लगना ही पहला कर्तव्य है, यह उनसे कल रात को भी कहा था, आज

---

१. उस समय के मध्यप्रांत के मुख्यमंत्री डॉ० नारायण भास्कर खरे के कांग्रेस के पार्लमिंटरी बोर्ड के निर्देशों की अवहेलना करने के कारण उनपर अनुशासन-भंग का आरोप लगाया गया था।

स्पष्ट कह दिया। उन्होंने स्वीकार कर लिया।

हरिभाऊ उपाध्याय भी आज आये। उनसे व हीरालालजी से त्यागपत्रों के बारे में विचार-विनिमय। बाद में हरिभाऊजी से शाम को घूमते समय मनःस्थिति आदि पर विचार। महिला-आश्रम में भागीरथी बहन से शक्कू की सगाई वगैरा की बातें।

बच्छराज-भवन में हीरालालजी शास्त्री के जयपुरी भाषा में प्रचार व उपदेशपूर्ण गीत व भजन।

१-११-३८

घूमना, हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी उपाध्याय, दामोदर साथ में। जयपुर प्रजामण्डल, अजमेर कांग्रेस वगैरा के बारे में बातचीत।

चौधरी हरलालसिंह (झुंझनूवालों) से जाट पंचायत बोर्डिंग आदि का परिचय।

मि० यंग को पत्र भेजा। साथ में प्रजा-मण्डल की ओर से अकाल-कार्य के बारे में जो स्टेटमेंट निकाला, उसकी कापी भी भेज दी। स्टेटमेंट तैयार नहीं हो सका। हीरालालजी व हरिभाऊजी गये।

डा० बारलिंगे, दादा, भिकूलाल आये। जाजूजी व बाबा सा० करंदीकर भी।

श्री हरकरे रिव्हीजन करना चाहते हैं। इसपर देर तक विचार।

विनोबा, जाजूजी, किशोरलालभाई जो निर्णय कर देंगे, उसे मानने को वह तैयार हैं।

चतुर्भुजभाई व सुखदेवजी, गोंदिया से आये। हैदराबादवाले मिलने आये।

२-११-३८

हैदराबाद स्टेट कांग्रेस के बारे में श्री जाजूजी व दामोदर के साथ विचार-विनिमय। दिन में बच्छराज-भवन में जानकी के पास भोजन।

शाम को बालकों के वहां जानकीदेवी के पास नाश्ता।

पवनार में विनोबा से विचार-विनिमय।

३-११-३८

प्रार्थना के बाद विनोबा से वार्तालाप। नालवाड़ी में विनोबा को छोड़ा।

फिर महादेवी अम्मा व गोपालराव काले के साथ पैदल वर्धा।
राव साहब पटवर्धन (अहमदनगर वाले) आये। हैदराबाद की स्थिति समझी।
विट्ठलदास राठी (आर्वीवाला) आया। पत्र-व्यवहार।
विनोबा, जाजूजी, किशोरलालभाई के साथ वायगांव के कोढ़ियों का दवाखाना देखा। श्री मनोहर दिवाण का प्रयत्न सुखदेने वाला व अनुकरण करने लायक मालूम हुआ। बावूराव हरकरे-प्रकरण को लेकर दादा व उनकाभाई आया। खानगी तौर से वह अपना समाधान विनोबा, जाजूजी व किशोरलालभाई से कर ले।
काकीसाहब श्रीमन्न, मदालसा वगैरा से मिलकर पवनार की प्रार्थना में शामिल।

४-११-३८ (जन्म-दिन)

सुबह प्रार्थना के बाद विनोबा के साथ, मनुष्य अगर अपनी कमजोरी निकाल सके तो आत्म-हत्या में क्या दोष, इस विषय पर भली प्रकार विचार-विनिमय। अप्पा पटवर्धन आदि भी थे। विनोबा के साथ घूमना, अप्पा पटवर्धन साथ में थे।
बापट व गुरुजी के सत्याग्रह पर विचार सुने।
बालूभाई मेहता आये। सेवक के खर्च के बारे में विचार-विनिमय। ज्यादा से ज्यादा बीस रुपये काफी हो सकते हैं, एक आदमी को। विनोबा ने प्रमाण देकर समझाया।
बाबूराव हरकरे के बारे में दादा ने विनोबा से बातें कहीं। मैंने भी मंजूर किया कि अगर सचमुच में हृदय-परिवर्तन हुआ हो और यह विश्वास हो जाय तो ठीक है।
पू० बापू, सरदार, जानकीदेवी, कमल को, हृदय के दुःख व उद्‌गारों तथा मन में जो मंथन चल रहा है, उसके बारे में महत्त्व के पत्र लिखे। कुछ पत्र विनोबा ने देखे।
राधाकृष्ण ने नकलें कीं।[1]

---

१. देखिये मंडल से प्रकाशित पुस्तक 'बापू के पत्र'। पृष्ठ सं० १५६ से १६०।

चर्चा। शाम को बालकों के आग्रह से भोजन बजाजवाड़ी में। प्रार्थना, विनोद।

मैंने मन के भाव कहे, दुःख-दर्द भी कहा।

५-११-३८

विनोबा से चर्चा। चि० राधाकृष्ण के साथ अढ़ाई मील पैदल। बाद में मोटर में।

नागपुर प्रांतीय कांग्रेस के आफिस में।

हरिभाऊजी उपाध्याय से बातचीत। मेरे कल के खुलासे से उनका समाधान हो गया।

भागीरथीबहन का भी खुलासा। एक वर्ष का नोटिस देने का निश्चय।[1]

चि० शान्ता साथ थी।

चि० रामेश्वर अग्रवाल व चि० शान्ता गंगाबिसन से खुलासेवार बातें। बम्बई में स्थायी तौर से रहना होगा। हाल में १०० मिलेंगे। धीरे-धीरे हर साल पचीस बढ़ते हुए अढ़ाई सौ तक।

पवनार, ६-११-३८

प्रार्थना के बाद विनोबा से विचार-विनिमय।

भोजन। जवारी की भाखरी व दाल बहुत स्वाद लगी।

नागपुर के श्री हरकरे विनोबा के पास आये। दादा धर्माधिकारी उन्हें ले आये थे। उन्होंने अपने त्यागपत्र दिये। देर तक विवाद। साफ-साफ बातें। मैंने कहा, अहंकार बहुत बढ़ गया है।

पवनार, ७-११-३८

विनोबा के साथ विचार-विनिमय। घूमना, चि० शान्ता साथ में। नदी में स्नान। जानकी, शान्ता, बालूभाई मेहता वगैरा के साथ।

नागपुर से गिरधारी, द्रौपदी व राममनोहर लोहिया आये। देर तक बातचीत, विनोद।

हैदराबाद वाले हरिश्चन्द्र, दामोदर तथा औरंगाबादवाले लोग आये। वहां की स्थिति समझी।

---

१. इस चर्चा का सम्बन्ध जमनालालजी का बापू के नाम का उपरोक्त पत्र से था।

पवनार-वर्धा, ८-११-३८

तीन बजे करीब उठना। चंद्र-ग्रहण खग्रास हुआ देखा। प्रार्थना। उसके बाद विनोबा से बातें।

६ बजे करीब नदी में स्नान करके गोपालराव काले व शान्ता के साथ घूमकर आया।

नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कमेटी का ८।। से १२ बजे तक कार्य किया। नागपुर टेलीफोन।

सालवे, ढवले वगैरा को टेलीफोन किये। श्री सहस्रबुद्धे व अप्पाजी गांधी को म्युनिसिपल कमेटी के बारे में कहा।

नागपुर से शेरलेकर, नायडू, पन्नालाल, अवारी व मिसेज सालवे मिलने आये। उन्होंने नागपुर म्यु० क० की स्थिति समझाई। रात में १०।। बज गये। पवनार जाना नहीं हुआ।

वर्धा, ९-११-३८

प्रार्थना के बाद काका सा०, कृष्णदास गांधी, राधाकिसन से बातें। काकासाहब के साथ घूमना। हिन्दी-प्रचार, 'प्रसाद दीक्षा', 'सर्वोदय', महिला-आश्रम आदि के बारें में ठीक विचार-विनिमय।

वच्छराज जमनालाल व जमनालाल संस की सभाएं हुईं; ठीक काम हुआ। सर अकबर हैदरी का पत्र आया। फखूयारजंग बहादुर को व मि० यंग को पत्र लिखवाए। देशपाण्डे (चर्खा संघ वाले) जयपुर से आये। वहां की राजनैतिक स्थिति पर विचार-विनिमय। उन्हें कह दिया, चर्खा संघ को राजनैतिक संघर्ष में नहीं पड़ना है। इतने पर भी स्टेटवाले गैरवाजिब हैरान करेंगे तो तैयारी रखनी चाहिए। काम नहीं बढ़ाना चाहिए।

पवनार-वर्धा, १०-११-३८

प्रार्थना के बाद विनोबा से विचार-विनिमय।

पवनार से महिला आश्रम तक पैदल करीब ६ मील; चि० शान्ता व रामकृष्ण साथ में, मशाला गांव होते हुए, पैदल खेतों में से चले।

महिला आश्रम की सभा हुई। मेरे त्यागपत्र पर विचार-विनिमय। धोत्रे, काकासाहब, किशोरलालभाई की सलाह से पत्र लिख दिया।

श्रीमती अगाथा हेरिसन व मि० देसाई के साथ भोजन।

पत्न-व्यवहार। झैबू (शरत नेवटिया) को १०४ डिग्री बुखार। थोड़ी चिंता। सिविल सर्जन को वताया।
सर हैदरी का तार आया। रात में एक्सप्रेस से वम्बई रवाना होना पड़ा।

बंबई, ११-११-३८

मनमाड से नासिक तक विहार-वंगाल रिपोर्ट व अन्य कागजात पढ़े।
नासिक में जीवनलालभाई व चन्दावहन साथ हुए। भोजन, वातचीत।
सर हैदरी से रात्रि में ६।। से १२ वजे तक वातचीत, हैदरावाद स्टेट कांग्रेस के वारे में विशेष स्थिति। मैंने उनकी भूल वताई। उन्होंने अपनी दिक्कतें वताई; सीमेंट के वारे में भी थोड़ी वातें।

१२-११-३८

पन्ना के पास भोजन। शांतिप्रसाद भी वहीं आ गया।
डा० सरदेसाई ने दोनों आंखें तपासीं। चश्मे का नंवर ३.२५ याने जूना नम्वर ही वताया।
सर अकवर हैदरी का फोन आया। उससे मिलने निजाम पैलेस गये। उनसे देर तक स्टेट के मामले में, खासकर स्टेट कांग्रेस के वारे में वातचीत। उन्हें जो कहना था, वहुत साफ़ तौर से कहा गया। उन्होंने ५-७ रोज में हैदरावाद से खुलासेवार पत्न भेजने को कहा।
पन्नालालजी पित्ती व गोविन्दलालजी वगैरा से वातचीत।
आफिस में गंगाधर राव देशपांडे, राजपूताना शिक्षा मण्डल, हरजीवन-भाई आदि का कार्य व वातें।
सरदार वल्लभभाई से मिलना।
जुहू में रामेश्वरजी विड़ला से वातचीत।

जुहू, १३-११-३८

घूमना। ओंकारनाथ वाकलीवाल अजमेरवाले ने अपनी स्थिति कही।
मणीलाल नानावटी से स्टेट के वारे में वातचीत।
कमलनयन से जुहू वगैरा के वारे में व नौकरों के वारे में विचार।
दामोदर मूंदड़ा से हैदरावाद स्टेट के वारे में वातें। सर अकवर ने जो कई वातें कहीं, उस वारे में विचार-विनिमय।
श्री पन्नालालजी पित्ती से व्यापार व हैदरावाद स्टेट के वारे में देर तक

विचार-विनिमय।
शांतिप्रसाद जैन को असोसियेटेड व डालमिया सीमेंट के बारे में व सर सुलतान व सर अकबर स जो बातचीत हुई, उसका हाल समझाकर कहा।

जुहू, १४-११-३८

मुकन्द आयरन बोर्ड की सभा जुहू में हुई; बहुत देर तक विचार-विनिमय के बाद फैसले हुए। लाला मुकन्दलाल का व्यवहार बहुत ही निराशाजनक रहा। विद्याप्रकाश, लाला किशनचन्द, रामेश्वरदासजी बिड़ला, केशवदेवजी, कमल वगैरा ने चर्चा में भाग लिया। रात में ८ बजे तक कार्य हुआ।

बंबई, १५-११-३८

घूमना। दामोदर, विट्ठलदास, कमल, मणीलाल नानावटी साथ में। घूमते समय नाणावटी से हैदराबाद के बारे में बातचीत। उनके घर तक जाना।
श्री वैकुंठभाई मेहता, जैराजाणी, कांति, हरजीवनभाई, काकूभाई आये। ग्राम उद्योग भण्डार के बारे में देर तक विचार-विनिमय।
बम्बई जाकर—श्री शंकरलाल बैंकर, रजबअली पटेल व सफिया के लड़के को, जो बीमार था, देखना।
मणीलालजी नानावटी के यहां बड़ौदे के दीवान से मिलना, देर तक बातचीत।
शांतिप्रसाद जैन मिलकर डेहरी गया।

१६-११-३८

सुबह विट्ठलदास राठी के साथ पैदल घूमते हुए हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी के अंधेरी की जमीन के प्लाट्स देखे। खंडूभाई मेहता साथ में थे।
वैकुण्ठभाई से भी बातचीत हुई।
श्री हीरालाल शाह व मोघीबन आये।
मूलजी, आबिदअली से मूलजीभाई के बारे में बातचीत। हिन्दुस्तान हाउसिंग के बारे में मूलजी की बातचीत से थोड़ी चोट पहुंची। सिर में दर्द शुरू हुआ।
प्रो० इन्द्र हिन्दी अखबार के लिए आये।

श्री कन्हैयालाल मुंशी, मुंगालाल गोयनका, उमादत्त नेमाणी मिलने आये। मुंगालाल ने जो आठ लाख रुपये दिये, उसका हाल कहा। गोविन्दराम सेकसरिया के बारे में बातें। मुंशी ने बैंक के बारे में व सर अकबर हैदरी के बारे में बातें कीं।

मुकन्द आयरन वर्क्स लि० की सभा हुई, ३। से ८।। बजे तक काम हुआ।

बिड़ला-हाउस गये।

१७-११-३८

सर अकबर को हैदराबाद भेजे जाने वाले पत्र का मसविदा ठीक किया। रामेश्वर व विट्ठलदास राठी साथ में।

चि० पन्ना के टांसिल का डा० शाह ने आपरेशन किया। दो टांसिल बढ़े हुए थे।

रामेश्वरदासजी बिड़ला के साथ भोजन, बातचीत।

सर अकबर हैदरी का पत्र आदमी के हाथ आया। पत्र पढ़ने से यह साफ मालूम देता था कि वह लड़ना चाहते हैं।

रामेश्वरजी के साथ ओरियंटल बिल्डिंग की आफिस देखी, पसन्द नहीं आई।

गोविन्दरामजी सेकसरिया के भाई रामनाथ सेकसरिया को देखा। सांत्वना दी।

पं० जवाहरलाल व इन्दू से मिले। देर तक बातचीत।

किशोरलालभाई के यहां गये। वे नहीं मिले, नाथजी मिले।

डा० पट्टाभी के साथ हैदराबाद स्टेट के बारे में बातचीत, पत्र का मसविदा बनाया।

केशवदेवजी व कमल से लाला मुकन्दलाल व विद्याप्रकाश के बारे में बातचीत।

१८-११-३८

घूमते हुए खार पैदल। चि० दामोदर साथ में। चि० नीलकंठ मश्रूवाला के घर किशोरलालभाई व नाथजी से मिले।

रामेश्वरजी बिड़ला जुहू आये, उनके साथ मणीलाल नानावटी से मिलना; बैंक के बारे में विचार-विनिमय।

कमला मेमोरियल की मीटिंग का काम हुआ।

देशी रियासत कार्यालय में पं० जवाहरलाल का स्वागत हुआ, वहां गया।

वकील स्कूल की लड़कियों ने १० मिनट का खेल किया, जवाहरलाल के साथ वहां गये।

वम्वई की सार्वजनिक सभा में। थोड़ी देर अस्पताल में।

१९-११-३८

मणीलाल नानावटी से बातचीत। विट्ठलदास राठी ने अपनी योजना दिखायी।

इन्दिरा का जन्म-दिन। इक्कीस वर्ष पूरे हुए; बाईसवां लगा। जुहू में अपने यहां भोजन।

सरदार वल्लभभाई, जवाहरलाल, राजा, कृष्णा, इन्दिरा, बच्चे वगैरे आये। बातचीत, भोजन।

स्पेन की सहायता के बारे में बम्बई प्रान्तीय कमेटी में व्यापारियों की सभा हुई, मैं सभापति बना।

मेवाड़ के बारे में विचार-विनिमय।

हिन्दी प्रचार आफिस व दानी के यहां जाना। वहां से मुकन्द आयरन वर्क्स का बम्बई कारखाना देखा।

२०-११-३८

श्री केशवदेवजी नेवटिया, जमनादास गांधी मिलने आये। थोड़ी देर बाद लाला मुकन्दलाल व विद्याप्रकाश भी आये। उनसे थोड़े में साफ-साफ बातें कीं।

चीन में व स्पेन में लड़ाई के समय उन लोगों की जो खून-खराबी हुई व जिस प्रकार वे लड़े, उसकी फिल्म १० से १ बजे तक देखी। पं० जवाहर-लाल भी थे।

श्री वंशीधर डागा व चन्द्रकला के यहां फल वगैरा लिये।

सर विश्वेश्वरैया से मिलना, बातचीत।

कांग्रेस हाउस में स्पेन-सहायता व मेवाड़ प्रजामंडल के बारे में विचार-विनिमय।

नागपुर-मेल से वर्धा रवाना। रास्ते में पं० जवाहरलाल से देर तक बात-चीत।

वर्धा, २१-११-३८

वर्धा पहुंचे। जवाहरलालजी, इन्दिरा वगैरा घर पर ठहरे।

सबके साथ भोजन। बापू के पास इन्दिरा व अगाथा हेरिसन के साथ सेगांव गया। थोड़ा विनोद, हैदराबाद की स्थिति कही।

बच्छराज भवन में बीमारों को देखना।

पं० जवाहरलाल व डा० जाकिरहुसेन के साथ देर तक हैदराबाद की स्थिति पर विचार-विनिमय होता रहा।

२२-११-३८

बेचरलालभाई व नटवरलाल बम्बई से आये।

अप्पाजी सवाने व वेंकटराव आये, उनसे बातें।

दुकान पर म्युनिसिपल प्लाट के बारे में जांच की; पोद्दार के खेत की समाधि के बारे में झूठा प्रचार; अपने आदमियों की भी गलती लगी।

जानकीदेवी वगैरा से मिलकर दुःख व थोड़ी चिन्ता हुई।

जवाहरलाल, जाकिर हुसेन, कृपलानी, पट्टाभि, अगाथा हेरिसन वगैरा के साथ भोजन।

काशीनाथ राव वैद्य (हैदरावाद वाले) से बातचीत, वहां की स्थिति पूरी तौर से समझी।

जानकीदेवी आदि बीमारों को बच्छराज-भवन में देखा; पं० जवाहरलाल भी आ गये थे।

पं० जवाहरलाल का सार्वजनिक व्याख्यान अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति पर हुआ।

२३-११-३८

घूमते समय बच्छराज-भवन में बीमारों को देखा, इलाज वगैरा के बारे में बातचीत।

नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कार्यालय में नागपुर म्युनिसिपैलिटी के लिए गोपालराव काले व तेजराम गेहलौत को जांच के लिए भेजा।

पं० जवाहरलाल को राजा ज्वालाप्रसाद व सुभाषबाबू के पत्र दिखाये।

खानगी बातें व अन्य बातचीत।
सेगांव जाकर बापू से थोड़ी बातें, खासकर जानकी के बारे में सुशीला से चर्चा।
जानकी का रामकृष्ण के डाक्टरी इलाज के बारे में विवाद—बातचीत।
जवाहरलालजी ने खादी वगैरा के बारे में सावित्री से देर तक बातचीत की।

२४-११-३८

मदनलाल भट्ट व नर्मदा से घूमते समय बातचीत।
पं० जवाहरलालजी, इन्दिरा के साथ स्टेशन। कृपलानी और उपाध्याय भी प्रयाग गये।
बैंच्छराज-भवन में जानकी से देर तक बातचीत, आपरेशन इलाज वगैरा के बारे में।
सी० एफ० एण्ड्रूज, सुरेश ब्नर्जी व शंकरलाल बैंकर वगैरा आये।
पत्र-व्यवहार।
खुशालचन्द खजांची ने नागपुर की स्थिति कही।
डा० पट्टाभि सीतारामैया का गांधी चौक में देशी रियासतों के बारे में जाहिर व्याख्यान। मुझे भी सभापति के नाते बोलना पड़ा।

२५-११-३८

घूमना—शान्ता, नर्मदा, मदालसा साथ में।
गोपालराव काले से नागपुर की स्थिति समझी।
शंकरलाल बैंकर व कुमारप्पा के साथ मगन-म्यूजियम की सभा हुई।
सी० एफ० एण्ड्रूज व पट्टाभि वगैरा से मिलना।
आज 'सावधान' व 'चित्रा' याने मावकर व जयवन्त का फैसला हुआ।
मावकर को छः मास की सादी सजा, एक हजार दंड (उसमें से २५० अपने को मिलेगा)। दण्ड वसूल न हो तो चार मास अधिक।
'चित्रा' के जयवन्त को छः मास की सजा, पांच सौ रुपये दंड (उसमें से २५० अपने को मिलेगा)। दण्ड वसूल न हो तो दो मास अधिक।
बालूजी की स्त्री मणीबाई चूड़ीवाले व काशीबाई आयी। रकम धर्मादे में लगाने का विचार कहा।

वर्धा-साटोडा, २६-११-३८

चि० चन्द्रकला व वंशीधर डागा बम्बई से आये। उनसे बातचीत।

दोपहर को—पैदल साटोडा जाने को १। बजे निकले। करीब ३। मील जाना-आना। थोड़ी दूर साइकल पर भी गये। आज सब मिलाकर करीब ८॥-९ मील घूमना हुआ।

साटोडा में खेती कम्पनी के बोर्ड की सभा हुई।

घर आकर गरम दूध लिया व गरम पानी में नमक डालकर पैर में सेंक दिया।

२७-११-३८

अप्पा सा०, (औंध महाराज के पुत्र) तथा सातवलेकरजी वगैरा आये।

बापू से बात करने के नोट तैयार किये।

सेगांव में बापू से करीब सवा घंटे बातचीत। मेरे जन्म-दिन का पत्र उन्हें (बापू को) नहीं मिला। आश्चर्य हुआ। प्यारेलाल से बातचीत। उसे भी पत्र नहीं मिला। बापू से खुलासा।

मेरे त्यागपत्रों के बारे में मैंने पूछा कि वर्किंग कमेटी के समय मैं बाहर रह सकता हूं? उन्होंने कहा, "हां।" जयपुर की जिम्मेवारी नहीं छोड़ी जा सकती; नागपुर की भी।

परन्तु नागपुर की, अगर वे लोग मेरा कहना न माने तो, शायद छोड़ी भी जा सकती है। बापू ने साफ व जोर से कहा कि राजकोट का उदाहरण जयपुर, उदयपुर, हैदराबाद को नहीं लागू करना चाहिए।

२८-११-३८

बंशीधर व चन्द्रकला डागा कलकत्ते गये। गांगोली व मिना जर्मनी से आये।

गोपालराव, जाजूजी, बाबासा०, तेजराम, घटवाई से नागपुर प्रांतीय कांग्रेस खासकर नागपुर म्यु० क० के बारे में देर तक विचार-विनिमय। गोपालराव व तेजराम की रिपोर्ट पढ़ी। श्री ढवले को तार भेजा। दादा ने श्री मडखोलकर को तार भेजा।

श्री काने (नागपुरवाले) मिलने आये।

नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कार्यकारिणी की सभा का कार्य २ बजे से रात में १२। तक चला। ना० म्यु० क० के व दूसरी पार्टी के व्यवहार से दुःख व

क्रोध आना सम्भव था।

२९-११-३८

श्रीमन्नारायण, जाजूजी, गोपालराव, घटवाई, अम्बुलकर, विनायकराव, देशमुख, हरजीवनभाई, यमूताई, मालतीबाई थत्ते मिले। चिनाई-परिवार के चार लोग बम्बई से आये।

नागपुर से श्री काने डाक्टर आया। भैयालाल सेक्रेटरी व चौहान आये।

घटवाई, अम्बुलकर से बातें ना० म्यु० के बारे में।

नवभारत पत्र के विश्वम्भरप्रसाद से एक हजार कर्ज के बारे में बातें।

अप्पा साहेब (औंध वालों) से व बम्बई के चायनीज कौंसिल के प्रतिनिधि वगैरा से बातचीत।

डा० गांगोली से जर्मनी की हालत समझी।

३०-११-३८

श्री जाजूजी, गोपालराव, घटवाई आदि से नागपुर म्युनिसिपैलिटी के बारे में बातचीत।

नागपुर से श्री सालवे, श्रीमती सालवे, शेरलेकर, अवारी, गुप्ते आदि १० बजे करीब आये। १॥ बजे तक म्युनिसिपल कमेटी नागपुर के बारे में विचार-विनिमय। जाजूजी, काले, घटवाई भी हाजिर थे। आशा तो हुई कि भविष्य में वह इस प्रकार की भूल नहीं करेंगे। और बातों का खुलासा उन्होंने किया। श्री ढवले को आज फिर फोन करवाया। वह आने को तैयार नहीं; पत्र भी नहीं भेजा।

डा० मोट नागपुर से आये और सेगांव गये।

डा० गांगोली व उसके कुटम्ब के लोगों से बातें।

१-१२-३८

श्री मन्चरशा अवारी से ना० म्यु० क० के बारे में बहुत देर तक बातचीत होती रही।

नवभारत विद्यालय के उर्दू वर्ग के संबंध में बात करने को अंजुमन इस्लाम वर्धा का डेपूटेशन आया। श्री आर्यनायकम व श्रीमन्नारायण की उपस्थिति में उन्हें पूरी स्थिति साफ तौर से समझाकर कही।

२-१२-३८

नागपुर से शुक्लाजी व मिश्रा आये, जबलपुर-कांग्रेस तथा अन्य बातचीत, मुझे जो कहना था वह कहा।
आज कुटुम्ब के लोगों को भोजन।
हरीभाऊ जी, नरसिंहदासजी आये—अजमेर-कांग्रेस की बातें करने। मैंने ज्यादा रस नहीं लिया।
जयपुर से टेलीफोन आया। मिश्रजी व हीरालालजी शास्त्री आज सुबह गिरफ्तार कर लिये गये।
शेखावाटी जाने के बारे में मैंने कहा कि मैं वहां आने को तैयार हूं। विचार-विनिमय। कमर में दर्द।

३-१२-३८

जानकीदेवी के इलाज के लिए बम्बई जाने की तैयारी।
हरीभाऊ उपाध्याय से अजमेर कांग्रेस के बारे में बातचीत। स्थिति समझी। रात में जयपुर से टेलीफोन आया, हीरालालजी शास्त्री की गिरफ्तारी के बारे में।
मि० यंग व सीकर वगैरा तार भेजे। जयपुर जाने की तैयारी।
बरवे (पूनावाले) आये। वैदिक विषय में बातचीत। श्री हरिभाऊजी व देशपांडे से जयपुर व अजमेर के बारे में बातें।
आर्वी का डेपुटेशन आया। वहां के डाक्टर के बारे में डा० नर्मदाप्रसाद से बातचीत।
सेगांव जाने को रुईकर, छगनलाल भारुका व दांडेकर आये।
भारुका सेगांव जाकर आये। अभ्यंकर मेमोरियल व नागपुर-परिस्थिति पर विचार-विनिमय।
जानकीदेवी व कमल बम्बई गये।
आज फिर जयपुर से फोन आया कि कल की खबर गलत है। बम्बई से दामोदर का भी फोन इसी बारे में आया।

४-१२-३८

लक्ष्मीनारायण मूंदड़ा से हैदराबाद स्टेट के बारे में बातचीत। प्रकाशवती मिलने आयी, सम्बन्ध के बारे में।

सरदार किबे व वैद्य से बातचीत।
बापू से मिलना। सरदार किबे के बारे में विचार-विनिमय। अगर वे नागपुर रहना चाहते हों तो रह सकते हैं। मेरे प्रश्नों के उत्तर बापू ने दिये—
(१) हैदराबाद स्टेट—'लोटस' (सरोजिनी) नायडू का पत्र पढ़कर जवाब भेजने को कहा।
(२) जयपुर प्रजामंडल व यंग का तार बताया। अभी गिरफ्तारी की सम्भावना कम मालूम होती है।
(३) राजकोट वगैरा के बारे में बापू 'हरिजन' के अगले अंक में लिखनेवाले हैं। इस अंक में भी स्टेटों के बारे में लिखा है। बापू ने मेरे बारे के खुलासे का मसविदा दिया है।
(४) ना० म्यु० क० की स्थिति के बारे में उन्होंने कहा कि ढवले व पटवर्धन को त्यागपत्र देना ही चाहिए। सालवे-ग्रुप को खुलासा करना चाहिए व भूल कबूल करनी चाहिए।
(५) नागपुर प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के बारे में कहा कि जब कहना न मानें तो छोड़ देना ठीक होगा। ज्यादा दिन तक exploit नहीं होने देना चाहिए।
(६) जयपुर जाने के बारे में कहा कि मैं अभी बम्बई जा सकता हूं। वहां से जयपुर, या आराम के लिए जहां जाना हो, जा सकता हूं। डाक्टरी इलाज कराकर देख सकते हो।
(७) वर्धा में न्यू रेस्ट हाउस। (८) मेरा पत्र नहीं मिला। (९) त्रिबकलाल भट्ट व मीरा सेगांव। (१०) जनवरी में बारडोली रहेंगे।
लाहौर विद्या प्रकाश को फोन। मंदिर में राष्ट्रीय रामायण का पाठ।

५-१२-३८

गुलाब, नर्मदा, राधाकिसन, मोतीलाल राठी वगैरा से बातें।
पौनार गया। गुलाब, नर्मदा, गोपालराव, बावटे साथ में। विनोबा से ना० म्यु० क० के बारे में विचार-विनिमय।
बाबासा०, गोपालराव व घटवाई से बातें।
शाम को नागपुर से श्री सालवे, नायडू (ना०न०पा० के अध्यक्ष) नागपुर म्यु०

कमेटी के मामले में बातें करने आये। देर तक विचार-विनिमय।

वर्धा-नागपुर-केलोद, ६-१२-३८

पांव में दर्द कम। केलोद जाना था सो जल्दी तैयार हुए।

वर्धा से नागपुर तक चि० नर्मदा व अमरचन्द पुंगलिया से बातचीत। नर्मदा को भावी जीवन के बारे में समझाया।

नागपुर से किराये की मोटर में, बाबासा० देशमुख, धर्माधिकारी, गोपालराव काले के साथ, केलोद। वहां भिकूलाल चाण्डक के घर भोजन।

केलोद—किसान परिषद में। दादा धर्माधिकारी सभापति। मैंने उद्घाटन किया।

श्री दुर्गाशंकर मेहता, छगनलाल भारुका, श्री गोखले भी परिषद में हाजिर थे।

परिषद ठीक रही व दादा का व्याख्यान अच्छा हुआ। बाद में मेहता व छगनलाल के साथ नागपुर पहुंचकर मेल से वर्धा रवाना।

७-१२-३८

हरगोविन्द को भी थोड़ा ज्वर।

स्टेशन गये। औंध के राजा साहेब, बाला साहेब व उनके चिरंजीव अप्पा सा० व दीवान वगैरा की पार्टी आई। जापान की पार्लियामेंट का सदस्य भी आया।

सुरेश बनर्जी भी आये।

औंध राजे साहेब को ऊपर ठहराया।

पू० बापूजी से मिलने का इन सबों का समय निश्चित किया।

सुरेश बनर्जी, रुईकर, मिसेज रुईकर वगैरा भी थे।

रेल से नागपुर गया, बाला सा० देशमुख, गोपालराव काले, तेजराम साथ में थे।

नागपुर स्टेशन से न० कां० के आफिस में। वहां म्यु० क० पार्टी की सभा।

८-१२-३८

नागपुर से मोटर से सुबह ४ बजे पहुंचे। मां व गुलाब के पास थोड़ी देर रहा। बाद में एक-डेढ़ घंटा सोया।

केशवदेवजी, मुकन्दलाल, आबिदअली बम्बई से आये। मुकन्द आयरन स्टील

वर्क्स लि० के बारे में सुबह व दोपहर का समय दिया। सिर भारी हो गया। दोपहर को करीब सवा घंटा आराम मिला।

आज दामोदर के सम्मान में बजाजवाड़ी के लोगों ने पार्टी, भोजन वगैरा की व्यवस्था ठीक की। परन्तु आज ही गांधी चौक में श्रीमंत राजे श्री भवानराव श्रीनिवासराव, उर्फ श्री बाला सा० पंत प्रतिनिधि औंध निवासी को म्यु० क० की ओर से मानपत्र, स्वागत व व्याख्यान ८।। बजे रखा था, सो जल्दी करनी पड़ी।

गांधी चौक में ८।। बजे औंध के राजा साहेब व अप्पा सा० का प्रभावशाली सुन्दर व मनन करने योग्य भाषण हुआ। इनके प्रति आदर बढ़ा।

९-१२-३८

औंध के राजा पन्त प्रतिनिधि श्री भवानजी पन्त के सूर्य-नमस्कार सुबह पांच बजे केशवदेवजी के साथ देखे। उनके साथ महिला-आश्रम गया। वहां स्त्रियों के व्यायाम, पोशाक व उद्योग पर उनका सुन्दर भाषण हुआ। 'पक्का घेऊ नये, कच्चा देऊ नये—पक्का द्यावा, कच्चा घ्यावा।'—इसकी व्याख्या भी की।

बम्बई से कमल का फोन आया, जिसमें उसने जानकीदेवी की ट्रीटमेंट कल से शुरू करने के बारे में व मेरे वहां आने के बारे में पूछा। सरदार वल्लभ-भाई भी वहीं बैठे थे।

मैंने कह दिया कि मैं आता हूं।

बापू से मिलकर सर हैदरी के पत्र का जवाब तथा बम्बई जाने का विचार आदि की बातें।

केशवदेवजी, मुकन्दलाल, आबिदअली से बातचीत। मुकन्दलाल से कहा कि विद्याप्रकाश से बात कर लो।

हिन्दी प्रचार समिति। ना० प्रां० कां० का काम। जाजूजी व गोपालराव से बातचीत। मैंने छुट्टी ले ली।

मेल से बम्बई रवाना।

बम्बई, १०-१२-३८

रात में गाड़ी में भीड़ थी। दादर गाड़ी एक घंटा लेट पहुंची।

औंध के राजा सा० व अप्पा सा० भी इसी गाड़ी में थे। अप्पा साहेब व

टी० एम० पारधी (त्रिलेपार्लेवाले) के साथ जुहू।
जुहू पहुंचकर जानकीदेवी व कमल से बात करके आज ही डोशीबेन दादाभाई के अस्पताल में दाखिल होकर ट्रीटमेंट शुरू करने का निश्चय। बम्बई में डा० डोशीबाई से बात की व रेडियम ट्रीटमेंट के इलाज की तैयारी।

१२-१२-३८

लाला मुकन्दलाल, केशवदेवजी, आबिदअली आदि से बातचीत। आखिर आज भी निश्चित फैसला नहीं हो पाया। मुकन्दलाल के व्यवहार से तंग होना पड़ा।
बुरा फंसा व गलती मालूम होने लगी। दया व क्रोध दोनों आते थे।
दोपहर को जल्दी डा० डोशीबाई के अस्पताल में गया। १॥ से ६। बजे तक वहां रहा। आज रेडियम निकाल लिया। भाग्यवती, सफिया वहां आईं।

१३-१२-३८

डा० काशी से मिलने बस में बैठकर गया।
डा० डोशीबाई के अस्पताल से जानकीदेवी जूहू, १० बजे करीब कमल-नयन, मदालसा के साथ आई। उसके रहने व आराम की व्यवस्था।
कमल आज मेल से वर्धा गया। उससे बातचीत, भावी प्रोग्राम की सूचना आदि।

१४-१२-३८

रामेश्वर अग्रवाल से मुकन्द आयरन की स्थिति समझी।
भंवरलाल (उदयपुरवाले), केशव रुइया वगैरा आये।
जयरामदास दौलतराम से खार में मोटवानी के घर मिलते हुए तथा लोहे के कारखाने होते हुए, कालबादेवी-आफिस। बच्छराज कम्पनी लिमिटेड के बोर्ड की सभा हुई, देर तक काम चला।
मुकन्दलाल की पूरी स्थिति बोर्ड के सदस्यों को समझाई। कमलनयन डाय-रेक्टर चुना गया।

बम्बई-वज्रेश्वरी, १५-१२-३८

सुबह जल्दी तैयार होकर मदालसा के साथ वज्रेश्वरी मोटर से गये। जाते

समय अंधेरी-पवई के रास्ते गये। वापस आते समय घोड़बंदर, ठाणा, वोरीवली होते हुए शाम को छः वजे के करीव पहुंचे। आते-जाते समयं ठाणा-आश्रम में ठहरे थे। परन्तु स्वामी वहां नहीं थे। बावा सा० सोमण मिले ।

वज्रेश्वरी में गंधक के गग्म पानी के झरने हैं। कई लोग जाते हैं, खासकर चमड़ी के रोग, लकवा, डायबिटीजवालों को ज्यादा लाभ होता है। झरने का स्थान गंदा रहता है। इसकी व्यवस्था करनी है। डा० कोठावाला ने एक सेनेटोरियम बना रखा है। रहने व खुराक के पांच रुपये लेता है। यह स्थान सुन्दर व साफ है, वहीं स्नान-भोजन-आराम किया।

१६-१२-३८

सफिया का फोन आया; डा० रजवअली की मृत्यु की दुःखदायक खवर मिली।

डा० रजबअली के घर, सुबह करीव ४ घंटे व रात में कोई २।। घंटे, सव मिलकर ६-७ घंटे विताये। जैनावेन व वच्चों से बातचीत। हिम्मत आदि। डा० रजवअली के चले जाने से ऐसा लग रहा है कि घर का एक सच्चा प्रेमी, मित्रता के योग्य सज्जन पुरुष चला गया। रजवअली ६८ वर्ष के थे।

माणिकलाल वर्मा व उनके साथ कई लोग, उदयपुर (मेवाड़) सत्याग्रह के वारे में विचार-विनिमय करने आये।

रात में फिर रजबअली के घर गया, श्री जैनाबेन व वालकों से बातचीत, की, हिम्मत बंधाई। आगे की योजना आदि पर बातें, विचार।

१७-१२-३८

इंडस्ट्रियल प्लानिंग कमेटी का सेक्रेटेरियट में उद्घाटन। वहां जाना पड़ा। सुभाषवावू व जवाहरलाल के व्याख्यान के बाद वापस।

खादी-भण्डार में एक गरम बंडी सिलाई।

सर इब्राहीम ने बुलवाया; भाड़े आदि के बारे में देर तक बातचीत।

१८-१२-३८

सादुल्लाखां, आबिदअली व श्री कौल (कण्ट्राक्टर) मिलने आये। यहीं भोजन।

स्पेनिश रिलीफ कमेटी के लिए कांग्रेस हाउस गये। जवाहरलाल नेहरू भी थे।

रात में बहुत-से मेहमानों के साथ भोजन, घूमना, ब्रिज।

१९-१२-३८

घूमना, राधा गांधी साथ में। उसके भविष्य के जीवन के सम्बन्ध में बातें, समुद्र-स्नान।

लतीफ रजबअली मिलने आया। उसके साथ जैनाबेन से मिलना—दो बार बातचीत।

डा० डोशीवाई दादाभाई को जानकी देवी को दिखाया। उसने सब ठीक बताया। तीन महीने तक नियमित जीवन रखने से पूरा लाभ पहुंचेगा, कहा।

घनश्यामदासजी बिड़ला से देर तक फोन पर बातचीत। वायसराय व यंग से जयपुर के बारे में जो बातें हुईं, वे उन्होंने कहीं।

अकबर, रजबअली, डा० काशी, अवसरे, मणी, सूरसिंग वगैरा से बातें। लीलावती मुंशी जानकी से मिलने आईं।

२०-१२-३८

डा० खरे को पत्र लिखवाया। पन्तजी को व जयपुर तार भेजे।

डा० रजबअली के घर। वहां मिनोचेर मंचरशा हीरालाल एण्ड कम्पनी के सालीसीटर ने पांचों लड़के, एक लड़की व जैनाबेन के साथ उनका विल (वसीयतनामा) पढ़कर बताया।

ट्रस्टों की हकीकत बतलाई। यूसुफ, लतीफ, सलीम, रोशन, अकबर कुलसम व जैना हाजर थे। बाद में केशवदेवजी, आबिदअली भी आ गये थे।

घनश्यामदास बिड़ला से मिलकर जुहू।

जीवनलाल भाई, रामजी भाई व केशवदेवजी से मुकन्दलाल के कारखाने व नई कम्पनी के बारे में विचार-विनिमय।

२१-१२-३८

घूमना—सलीम रजबअली साथ में। उससे परिचय, बातचीत। दामोदर का वर्धा से फोन आया, हैदराबाद के बारे में।

लाला मुकन्दलाल, विद्याप्रकाश, आबिदअली वगैरा आये। आज सुबह व शाम को व रात में भी बहुत देर तक विचार-विनिमय होकर, आखिर लाला मुकन्दलाल ने जो दो योजनाएं दी थीं, उसमें से एक मंजूर की गई; उनकी प्रसन्नता से व बाद में मि० अम्बालाल सालीसिटर को बुलवाकर रात में १२ बजे तक शर्तें नोट हुईं।

घनश्यामदासजी बिड़ला आये, यहीं पर भोजन किया। जयपुर प्रजामंडल के बारे में देर तक बातचीत, विचार-विनिमय, चिरंजीलाल मिश्र से भी बातचीत।

सफिया, मरियम, भाग्यवती, दानी, केदारनाथजी वगैरा आये। बातचीत।

२२-१२-३८

घूमना। रामेश्वर, गोवर्धन, सलीम से बातें। 'लोकशक्ति' वाले आये।

मुकन्दलाल, विद्याप्रकाश, केशवदेवजी, आबिदअली, रामेश्वर अग्रवाल आदि से विचार-विनिमय। कल के ठहराव के अनुसार लाला मुकन्दलाल व विद्याप्रकाश ने थोड़ा फर्क करके सही कर दी, मैंने भी सही कर दी, याने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

मुकन्द आयरन वर्क्स के बोर्ड की सभा हुई। उसमें उपरोक्त पत्र पढ़ा गया; खुलासे के बाद नोट किया गया।

आज दोपहर के दो बजे करीब भोजन। सिर में दर्द व भारीपन। थोड़ी थोड़ी देर आराम।

केशवदेवजी, जीवनलालभाई व रामजीभाई से देर तक विचार-विनिमय, नई कम्पनी शुरू करने के बारे में तथा मुकन्दलाल के फैसले के बारे में।

श्री चिरंजीलाल मिश्र से जयपुर प्रजामंडल के बारे में विचार-विनिमय।

२३-१२-३८

रामेश्वर अग्रवाल से बातें, उसके काम के बारे में व चि० शान्ता के बारे में।

माणिकलालजी वर्मा (उदयपुरवाले) मिलने आये।

हरजीवनभाई के दोनों खाते उठा देने का निश्चय। पच्चीस सौ रुपयों की नैतिक जिम्मेवारी उनकी रहेगी।

मुकन्द आयरन वर्क्स के बारे में मुकन्दलालजी, विद्याप्रकाश, जीवनलालभाई,

रामजीभाई, केशवदेवजी वगैरा से विचार-विनिमय करके मसविदा तैयार किया।

बच्छराज कम्पनी व मुकन्द आयरन वर्क्स लिमिटेड के बोर्ड की सभाएं हुईं।

सुभाषबाबू से मिलना व देर तक बातचीत हुई। थोड़े दुःखी व चिन्तित दिखे।

सिंधिया कम्पनी के नये मकान का उद्घाटन। सरदार का प्रभावशाली भाषण हुआ।

सिंधिया का तारीफ कुछ ज्यादा हुई।

चुन्नीलाल माईदास (तारवाले) मिलने आये।

२४-१२-३८

मुकन्दलाल-विद्याप्रकाश के मामले में आज भी पूरा समय देना पड़ा।

जीवनलालभाई, रामजीभाई, पूनमचन्द के साथ कम्पनी बनाने का निश्चय। पांच लाख की पेडअप प्राइवेट कम्पनी। तीन लाख के शेयर जीवनलालभाई व मित्र, दो लाख बच्छराज कम्पनी के। मुकन्द आयरन वर्क्स का काम उसके जिम्मे किया।

डा० रजबअली के घर जैनाबेन से मिलना। ट्रस्टी मैं नहीं बन सकता, यह उसे समझाकर कहा।

सरदार व सुभाष से सरदार के घर पर मिलना। बाद में कम्पनी के आफिस में गये।

नागपुर मेल से सेकण्ड में वर्धा रवाना; जीवनलाल, दीक्षित, नवलचन्द नासिक तक साथ में।

वर्धा, २५-१२-३८

धामनगांव के बाद उमाशंकर दीक्षित से बातचीत।

वर्धा पहुंचकर पैदल ही बच्छराज-भवन। कमला, झेंबू, सावित्री, बच्छु से मिलकर—ज्ञान हेडा से मिलते हुए बंगले।

सेगांव जाकर बापू से बातचीत—सुभाष के आने के बारे में; नारायणदास बाजोरिया व गो सेवा मंडल की चर्चा; जयपुर व अकाल परिस्थिति; बापू का भावी प्रोग्राम व स्वास्थ्य; नागपुर मिनिस्ट्री व उनके अलाउंस के

बारे में।
मेहमानों से मिलना, बातचीत।
मिश्रजी के दो बार फोन।
दुर्गाशंकर मेहता की स्त्री की मृत्यु हुई।
अलाउंस का खुलासा।

२६-१२-३८

सुबह डा० मन्नू त्रिवेदी (पूनावाले) से बातचीत।
सावित्री ने अपनी स्थिति व भावी रहन-सहन के बारे में बातचीत की। बम्बई साथ जाने का विचार।
'सर्व धर्म परिषद' तिलक हाल में हुई। पूज्य जाजूजी, किशोरलालभाई, कुमारप्पा व कमल के भाषण हुए।
लक्ष्मीनारायण मंदिर ट्रस्ट कमेटी की बैठक हुई। आज देवला के पुंडलीकराव हरिजन को ट्रस्टी मुकर्रर किया। दो-तीन वर्ष के विचार-विनिमय के बाद यह कार्य हुआ।
पू० बापू को अपने जन्म-दिन के रोज लिखे पत्रों की नकलें व असली पत्र पढ़ाये; बापू के नाम का, सरदार के नाम का, जानकीदेवी का, उसका जवाब व राधाकृष्ण का। बापू कल पत्र लिखकर भेजेंगे।
शंकरलाल बैंकर का जन्म-दिन। उन्हें आज पचासवां वर्ष शुरू हुआ।
केसर, सागरमलजी, मदन कोठारी, मन्नू त्रिवेदी, शांताबाई वगैरा से बातें।

वर्धा २७-१२-३८

सुभाषबाबू मेल से आज आ गये; देर तक उनसे बातचीत; जयपुर स्थिति पर विचार-विनिमय। उन्होंने बापू की राय, ठीक बताई।
बच्छराज जमनालाल व जमनालाल सन्स की सभाएं हुईं।
राजकोट का फैसला होने के समाचार सुभाषबाबू ने बताये। खुशी हुई।
बापू का खानगी पत्र मिला। उसकी नकल उमा ने की। उन्हें जवाब भेजा।
पत्र-व्यवहार की सफाई।
सुभाषबाबू बापू से मिलकर आये। ज्वर के कारण आज उनका मद्रास जाने का प्रोग्राम रद्द किया। प्रो० रंगा भी आये।
नागपुर मेल से सेकंड क्लास में बम्बई रवाना। चि० सावित्री, कमल,

वच्छू, सागरमलजी, विट्ठल साथ में।

बम्बई, २८-१२-३८

रात में चि० सावित्री, वच्छू (राहुल) को बहुत ही अच्छी तरह से प्यार से व नियमित रूप में दूध वगैरा संभालती रही, यह देखकर सुख मिला। दादर उतरकर जुहू। केशवदेवजी व आबिदअली से मुकन्दलाल वगैरा के बारे में स्थिति समझी।

लाला मुकन्दलाल, विद्याप्रकाश, जयप्रकाश (छोटा लड़का) जुहू आये, थोड़ी देर बातचीत।

सरदार वल्लभभाई से सुबह फोन से व बाद में राजकोट के बारे में मुद्दे की बात समझ ली। बाद में जयपुर की स्थिति पर देर तक विचार-विनिमय हुआ। बापू ने जो सलाह दी, वह कही।

रजबअली के घर जैनाबाई से व मुकन्दलालजी पित्ती के यहां पन्नालालजी पित्ती से हैदराबाद की बातें।

सागरमल बियानी के साथ फ्रण्टियर से जयपुर रवाना।

सवाई माधोपुर, गुरुवार, २९-१२-३८

'जन्म-भूमि' व 'टाइम्स' पढ़ा। राजकोट का वर्णन पढ़कर सुख मिला। सवाई माधोपुर में उतरकर जयपुर राज्य के स्टेशन को जाते समय, रास्ते में ही, रायबहादुर दीवानचन्द, डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल, ने ता० १६ दिसम्बर १९३८ का सेक्रेटरी कौंसिल आफ स्टेट, जयपुर की ओर से नोटिस दिया।[1] उस समय डी० एन० चक्रवर्ती, सुपरिंटेंडेंट पुलिस, हसनअली सब-इंस्पेक्टर व लक्ष्मीनारायण तहसीलदार सवाई माधोपुर हाजिर थे। बाद में मि० एफ० एस० यंग इंस्पेक्टर जनरल भी आ गये। बहुत देर तक बातचीत। उन्होंने अपनी दयाजनक हालत कही। उन्होंने एक पत्र घनश्यामदासजी के नाम लिखकर दिया व खास तौर से आग्रह-पूर्वक प्रार्थना की कि दस रोज का समय मुझे और दीजिये। महाराज कलकत्ते में हैं। सर बीचम भी दौरे पर हैं। टेलीफोन की भी उन्होंने कोशिश की, पर मिल नहीं पाया, इत्यादि। बाद में बड़े स्टेशन से तार वगैरा किये। दीवानचन्द व चक्रवर्ती बातें करते रहे। अन्त में देहली जाने का निश्चय।

---

१. इस नोटिस की नकल पृष्ठ २६६ पर है।

नई दिल्ली, ३०-१२-३८

करीब छः बजे सुबह दिल्ली पहुंचे। बिड़ला हाउस की मोटर व आदमी आये थे, वहां गये। घनश्यामदासजी, रामेश्वरदासजी, सर बद्रीदासजी गोयनका आदि से मिलना। घूमना। प्रतिबन्ध लगाने की स्थिति पर विचार।

हीरालालजी शास्त्री, हरिभाऊजी वगैरा आये। प्रतिबन्ध व जयपुर प्रजा-मंडल की स्थिति पर बहुत देर तक विचार-विनिमय होता रहा, रात में ९ बजे तक। बारडोली में ता० ४ को बापू से मिलकर फैसला करने का निश्चय। प्रेस स्टेटमेंट आदि। शास्त्रीजी की बातचीत से दुःख पहुंचा। मेरी भी गलती थी।

नई दिल्ली, ३१-१२-३८

घूमना—सर बद्रीदास व रामेश्वरदास बिड़ला साथ में।

जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय।

काकासा० व हरिभाऊजी मिलने आये।

घनश्यामदासजी सर ग्लैंसी से मिले। पूरी खातरी हो गई कि मेरे जयपुर-प्रवेश-प्रतिबन्ध में गवर्नमेंट आफ इंडिया का हाथ है। सर ग्लैंसी से, मैंने जापानी कपड़े के व्यापार में पैसे कमाये, आदि बातें पूछीं।

हरिजन कालोनी में पूज्य लक्ष्मी वगैरा से मिला। हरिभाऊजी के पिता से मिलना हुआ। सरस्वतीबाई के यहां भोजन। बाद में प्रदर्शनी देखी।

१. जमनालाल को दिये गये नोटिस की नकल—

Notice

(Seal of Jaipur state)
To

Seth Jamnalal Bajaj
of Wardha (C. P.)

Whereas it has been made to appear to the Jaipur Government that your presence and activities within the Jaipur State are likely to lead to a breach of the peace, it is considered necessary in the public interest and for the maintenance of public tranquility to prohibit your entry within the Jaipur State.

You are, therefore, required not to enter Jaipur territory until further orders.

By Order of the Council of State
M. Altaf a. Khan
Secretary, Council of State
Jaipur

Jaipur
Dated the 16th of December 1938

१६३६

नई दिल्ली, १-१-३९

सुबह घूमना। सर बद्रीदास, रामेश्वरदास बिड़ला साथ में।

रामेश्वरदास बिड़ला से मुकन्द आयरन वगैरा सम्बन्धी व्यापारिक बातचीत।

घनश्यामदास बिड़ला से खानगी बातें—मित्रों के मतभेद व व्यवहार के सम्बन्ध में।

चि० रामगोपाल केजड़ीवाल, शान्ता, सिद्धगोपाल, माधोप्रसाद चौधरी, सुशीला, राजेन्द्रलाल, राजेश्वरी, नरेन्द्रलाल वगैरा मिलने आये, बातचीत।

जुगलकिशोरजी ने नई दिल्ली में लक्ष्मीनारायण व बुद्ध भगवान का जो मन्दिर बनवाया था, उसे भली प्रकार देखा। मन प्रसन्न हुआ। सुख मिला।

सर शादीलालजी से बहुत देर तक सीकर-जयपुर के भावी प्रोग्राम पर बातचीत।

राजकुमारी अमृतकौर, रानी लक्ष्मीबाई, अगाथा हेरिसन से जयपुर की परिस्थिति की चर्चा।

२-१-३९

सर बद्रीदासजी, रामेश्वरदास के साथ घूमना। डा० अग्रवाल (आंखवाले) भी आ गये थे।

रामेश्वरदासजी बिड़ला से शुगर फैक्टरी सब एक जगह करने पर विचार। बैंक के बारे में मुझे उत्साह नहीं; मुझे सफलता मिलना कठिन मालूम देता है।

पूज्य बा कल नहाने गईं तो उनको मूर्च्छा आ गई। उन्हें देखने गये।

घनश्यामदासजी व वियोगी हरिजी से हरिजन कालोनी के लिए सहायता की चर्चा।
भुवालीवाले डा० कक्कड़ मिलने आये।
सीकर के रावराजाजी की ओर से श्री सख्तसिंह व मूलचन्द आये। सारी स्थिति समझी। उन्होंने कहा कि राजपूत व रावराजाजी आपके कहे अनुसार चलने को तैयार हैं, आदि।
मिस अगाथा हेरिसन सर ग्लैंसी से मिली। उसने अपनी बातचीत का हाल कहा। सी० एफ० एण्ड्रूज व अगाथा से देर तक हम लोगों की बातचीत।
जयपुर प्रतिबन्ध, त्रावनकोर, वायसराय से मुलाकात, जयपुर जाना, आदि की बातें।
जयपुर प्रजामण्डल के प्रस्ताव आये, वे प्रेसवालों को बुलवाकर दिये।
देवदास से बातचीत।
रामगोपाल व शान्ता से लाहौर जाने के बारे में बातें। कृष्णकान्त मालवीय मिलने आये।

नई दिल्ली, ३-१-३९

भागीरथजी कानोडिया ६ बजे फ्रण्टियर मेल से बारडोली के लिए रवाना हुए। स्टेशन पर एण्ड्रूज, मिस अगाथा हेरिसन, सरस्वतीबाई, मुरलीधर वगैरा आये। सेकण्ड की टिकिट ली।
ट्रेन में एक सुन्दर व होनहार जर्मन यहूदी नवयुवक से बातचीत। प्रेम व दया आई।
सवाई माधोपुर से हरिश्चन्द्र वकील, भालचन्द्र, हंसजी राय साथ हुए। रतलाम से हरिभाऊजी, हीरालालजी शास्त्री, हरलालसिंह व शंकरलाल साथ हुए।
सूरत उतरे करीब पौने चार बजे। वहीं स्टेशन पर सोये।

सूरत-बारडोली, ४-१-३९

जयपुर के मित्रों से बातचीत। दिमागी उलझन साफ नहीं हो पाई। हीरालालजी ज्यादा जोश व उत्साह में थे तथा सभी मित्रों की राय थी कि अब लड़ने के सिवाय दूसरा कोई उपाय बाकी नहीं रहता है।

बापू से भोजन के समय बातें हुईं। उनको मि० यंग से सवाई माधोपुर में जो बातें हुईं, घनश्यामजी की सर ग्लैंसी से हुई मुलाकात, वायसराय को उनके लिखे पत्र व मिस अगाथा हेरिसन की सर ग्लैंसी से हुई मुलाकात तथा वायसराय को हेरिसन भी पत्र लिखनेवाली है, वगैरा बातों से पूरी तरह परिचय करवाया। आपस में भी जयपुर के मित्रों से देर तक विचार-विनिमय।

शाम की प्रार्थना के बाद पू० बापू से करीब १। घंटे जयपुर के मामले के बारे में, जयपुर के मित्रों के साथ विचार-विनिमय। बापू ने सारी स्थिति समझी। मित्रों को थोड़ा निरुत्साह हुआ, परन्तु उसकी जरूरत थी।

सरदार से मिलकर उन्हें भी स्थिति समझाई व लड़ने के सिवाय अब दूसरा उपाय नहीं रहता, यह जोर देकर कहा। बापू से स्वीकृति व आशीर्वाद दिलाने के लिए भी कहा।

बारडोली, ५-१-३९

पू० बापू के साथ घूमे—सरदार भी साथ थे। बापू ने पहले राजकोट के बारे में व बाद में जयपुर के बारे में मेरी स्थिति, उत्साह व विचार समझे। मैंने उन्हें आग्रहपूर्वक प्रतिबंध तोड़ने के पक्ष की दलीलें व उससे मुझे किस प्रकार मानसिक शांति मिल सकेगी, वगैरा कहा। बापू से भोजन के समय फिर थोड़ी देर व बाद में दो बजे से मित्रों के साथ बातचीत। मसविदा बनाया।

पाटीदार जीन प्रेस में आज जयपुर मित्रों के साथ पोक (हुड्डा) खाया व आपस में जयपुर-स्थिति पर विचार। मैंने मेरी स्थिति बहुत ही साफ तौर से उन्हें बतलाई। इन सबों का आग्रह था कि "सब प्रकार की जोखम उठाकर भी लड़ाई लड़नी ही चाहिए। हम सब पूरी तरह से तैयार हैं। आपकी आज्ञा का पूरा पालन करेंगे, आप हमारे सत्याग्रह के नेता रहेंगे," वगैरा कहा।

बारडोली, ६-१-३९

जयपुर लड़ाई के विचार की योजना चलती रही।

बापू के साथ घूमना। भोजन के समय भी बापू से थोड़ी बातें। बाद में २ बजे से करीब ३।। बजे तक बापू के पास जयपुर के मित्रों के साथ स्टेटमेंट

वगैरा का मसविदा तैयार किया। प्रेसीडेंट कौंसिल आफ स्टेट के नाम पत्र तैयार हुआ, परन्तु देरी होने से रजिस्ट्री आज नहीं हो सकी। कल भेजने का निश्चय। सीकर के बारे में व वर्तमान में मैं क्या कर रहा हूं, इसका भी एक सार्वजनिक वक्तव्य तैयार किया।

शाम को बापू के साथ घूमा, प्रार्थना के बाद थोड़ी देर उनके पास विचार-विनिमय।

बारडोली, ७-१-३९

बापू के साथ प्रार्थना। बापूजी को आज २२० तक ब्लड-प्रेशर हो गया।

लीलावती से बातचीत; बापू की स्थिति के बारे में विचार-विनिमय।

जयपुर-प्रतिबंध के बारे में सरदार व घनश्यामदासजी की राय का मैंने थोड़ा इशारा किया।

राजकुमारी ने जयपुर-सीकर की फाइल पढ़कर प्रेसीडेंट कौंसिल आफ स्टेट के नाम एक ड्राफ्ट तैयार किया। बापू ने उसे सुधारकर ठीक कर दिया। उसे सोमवार ता० ९ को बारडोली से भेजने का निश्चय हुआ।

प्रेसीडेंट कौंसिल को प्रतिबंध के बारे में, बापूजी ने जो पत्र तैयार किया था, जिसमें सुधार वगैरा किये गये थे, वह पत्र (अल्टीमेटम) आज छोटूभाई के मार्फत रजिस्ट्री द्वारा भेजा गया।

शास्त्रीजी, हरिभाऊजी व शंकरलाल वर्मा के साथ जयपुर लड़ाई की रचना।

बापू से दो बजे थोड़ी देर के लिए मिलना। प्रेस को वक्तव्य भेजा। ५ की गाड़ी से बम्बई के लिए सूरत रवाना।

८-१-३९

बांद्रा उतरकर जुहू पहुंचे।

केशवदेवजी, जीवनलालभाई, रामजीभाई वगैरा से मुकंद आयरन व मुकंद सन्स के बारे में देर तक विचार-विनिमय।

जुहू, ९-१-३९

सुबह घूमना—मणीलाल नानावटी व बालचन्द भाई से बातचीत, हिन्दुस्तान हाउसिंग कम्पनी व जयपुर वगैरा के बारे में।

जयपुर प्रजामंडल व वहां की स्थिति के बारे में, मदनलाल जालान व श्री-

निवास बगड़का, भालचन्द्र शर्मा वगैरा से बातचीत। पीरामलजी बगड़का मिलने आये।

जयपुर-निवासियों की आज जाहिर सभा भूलाभाई देसाई के सभापतित्व में ठीक हुई। भूलाभाई, हरिभाऊजी, हरिश्चन्द्रजी, शास्त्रीजी, मदनलाल जालान, श्रीनिवास बगड़का, भालचन्द्र शर्मा वगैरा के सुन्दर भाषण हुए, सो सुने।

मुकन्द संस के बारे में जीवनलालभाई से आखिर में फैसला हुआ।

जुहू, १०-१-३९

हरिभाऊजी, हरिश्चन्द्रजी, शास्त्रीजी साथ में सागरमलजी बियाणी सीकर से आये। उन्होंने वहां की स्थिति सुनाई।

हठीसिंग की यहां जवाहरलाल की उपस्थिति में कमला मैमोरियल की मीटिंग हुई।

गुलाबबाई को डा० पुरन्दरे को दिखाया। उन्होंने साफ कहा कि गर्भ बिल-कुल नहीं है।

नवाब फख्रयार जंग बहादुर की आंख का आपरेशन करवाया। उनसे मिले, कल फिर मिलना है। हैदराबाद स्टेट की थोड़ी बातें।

जवाहरलालजी ने नीबू डालकर चाय पिलाई। बातें। मेहरअली वगैरा मिले।

मौलाना आजाद अपनी स्थिति कहने लगे। सभापति न बनने का कारण। मैंने तो उन्हें बनने को कहा; अपनी स्थिति भी कही।

जैनाबेन रजबअली से बातें।

जुहू, ११-१-३९

बालचन्द्र भाई व मणीलाल नानावटी के साथ घूमना। जयपुर-स्थिति पर विचार-विनिमय।

केशवदेवजी नेवटिया से जीवन कम्पनी तथा बच्छराज कम्पनी वगैरा के सम्बन्ध में बातें।

मदनलाल जालान, श्रीनिवास बगड़का, केशवदेवजी, हरिभाऊजी, हरिश्चन्द्रजी, भालचन्द्र, सागरमलजी आदि से जयपुर की लड़ाई के बारे में विचार-विनिमय।

नवाब फखयार जंग बहादुर से डागा अस्पताल में मिला। हैदराबाद की स्थिति पर बातचीत।
बच्छराज कम्पनी की सभा हुई। जीवन कम्पनी (जीवनलाल कम्पनी) का एग्रीमेंट-पत्र स्वीकार हुआ।
जयपुर से १२३ नम्बर से पीरामलजी बगड़का का टेलीफोन आया। आशा कम बताई।
चिरंजीलाल मिश्र को १७० नम्बर पर फोन किया। बातचीत हुई।

जुहू-बारडोली, १२-१-३९

दादर में केशवदेवजी, प्रह्लाद, हरिश्चन्द्रजी शास्त्री से जयपुर के सम्बन्ध में बातचीत।
८॥ की एक्सप्रेस से बारडोली के लिए रवाना, हरिभाऊजी व रामकृष्ण साथ थे।
बारडोली में कल्याणजी भाई से बातें। वर्किंग कमेटी में बैठना, सुनना।
प्रार्थना के बाद बापू ने मेरी मानसिक स्थिति के बारे में पूछा। उन्होंने जो पूछा, उसका सच्चा व साफ जवाब दिया।
देवदासभाई से बहुत देर तक बातचीत, विचार।

बारडोली, १३-१-३९

बापू से मानसिक स्थिति के बारे में थोड़ी बातें।
बारडोली के तार आफिस से केशवदेवजी को बम्बई फोन किया, जयपुर के बारे में।
देवदासभाई व प्यारेलाल से मानसिक स्थिति वगैरा के बारे में देर तक विचार-विनिमय।
सरदार वल्लभभाई को भी मानसिक हालत व कमजोरी की स्थिति का थोड़ा परिचय दिया।
वर्किंग कमेटी की चर्चा में भाग लिया।
बैरिस्टर चुडगर का तार आया। कुंवर हरदयाल सिंह के बारे में टेलीफोन पर उनसे बात करनी पड़ी। एक घंटा वहां लगा।
वर्किंग कमेटी ने जयपुर के बारे में प्रस्ताव पास किया। हरिजन के लेख की नकल पढ़ी।

१४-१-३९

हरिभाऊजी साथ घूमते हुए बातें। बाद में पं० जवाहरलाल से जयपुर स्थिति पर बातचीत, विचार-विनिमय। बापू व सरदार से, जयपुर के बारे में बातचीत।

जयपुर से पूर्णचन्द्र आये। उन्होंने वहां की स्थिति कही। उन्हें पत्र वगैरा दिये। प्रश्नों के उत्तर दिये।

हैदराबाद स्टेटवालों को बापू से मिला दिया व उनकी बातचीत भी करा दी।

जयपुर के बारे में तार, पत्र, फोन वगैरा किये।

राजकोट के बारे में श्री ढेबर, नानाभाई, जयंतीलाल, जोवनपुत्रा से बापू से व सरदार से जो बातचीत हुई व सुनी, उसमें भी थोड़ा भाग लिया।

बापू से थोड़ी बातें। देर बहुत हो गई थी।

१५-१-३९

सुबह पू० बापू से जयपुर व मेरी मनःस्थिति पर थोड़ी देर बातें। बाद में सरदार से भी। श्री बैरिस्टर चुडगर नवसारी से मोटर से आ गये। उनसे बातचीत। सीकर रावराजा कुंवर हरदयालसिंह व जयपुर में सर बीचम सेंट जॉन से जो बातचीत हुई वह सब समझी। उन्होंने मेरे नाम एक पत्र लिखकर दिया, वह मैंने बापू को दे दिया। हरिश्चन्द्रजी बम्बई से आये, जयपुर गये।

सर आगा खां से जयपुर के मामले में देर तक बातचीत। बातचीत उन्होंने स्वयं शुरू की। मैंने उन्हें सर बीचम से चुडगर की हुई बातचीत का पत्र पढ़ाया। 'हरिजन' का अंक भी दिया। उन्होंने कहा कि उन्होंने जयपुर-महाराज से बातें की थीं, फिर और करेंगे। मुझे बम्बई में मिलने को कहा।

पू० बापू से थोड़ी बातचीत। उन्हें चुडगर का पत्र ठीक मालूम हुआ। सीकर रावराजा का केस कमजोर है। अपनी लड़ाई में उसे नहीं मिलाने का निश्चय।

जुहू, १६-१-३९

जुहू पहुंचे। घूमते समय जानकी से बारडोली में बापू से व अन्य मित्रों से

जो बातचीत हुई, वह थोड़े में कही। सन्तोक वहन से फोन पर बातें। रात में ८ बजे मथुरादास व केशव के सामने खुलासेवार बातें।
मेरी समझ से तो मामला निपट गया।
जयपुर के बारे में केशवदेवजी, मदनलाल जालान, श्रीनिवासजी बगड़का से बातचीत, योजना।
सुव्रतावहन के बंगले पर, जयपुर के बारे में, पीरामलजी बगड़का से बहुत देर तक बातचीत। उनकी वृत्ति देखकर उनके प्रति प्रेम व दया-भाव उत्पन्न हुआ, मैंने उन्हें दिलासा दिलाया।
सर बद्रीदासजी गोयनका से जयपुर की स्थिति पर ठीक विचार-विनिमय। बाद में उन्होंने मिल के बारे में आदमी भेजा।
सुव्रतावहन से जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय, सहायता। मौलाना आजाद व जैनाबेन से बातचीत।

१७-१-३९

मणीभाई नानावटी से जयपुर के सम्बन्ध में बातचीत। बाद में केशवदेवजी, मदनलाल वगैरा से भी।
मथुरादास, देवदास, महादेवभाई मिले व कल रात की बातों से सन्तोक-बहन वगैरा को पूरा सन्तोष नहीं हुआ आदि दुःख पहुंचानेवाली बातें। उनसे फिर मथुरादास के घर मिलना।
जयपुर के साहूकार मित्रों से चेम्बर में मिलकर बातचीत।
हीराबाग में—जयपुर के बारे में सभा। राजा गोविन्दलालजी पित्ती सभापति।
मैं बोला। ठीक बोल सका।
मारवाड़ी सम्मेलन में जयपुर के कार्यकर्त्ताओं से देर तक बातचीत।

१८-१-३९

सुबह चि० केशव गांधी को फोन किया। बाद में महादेवभाई, देवदास आये। बातचीत, केशव को पत्र लिखा। एक प्रकार से दुःख का अन्त हुआ।
श्री घनश्यामदासजी बिड़ला से जयपुर-स्थिति पर फोन से देहली बातचीत की। उन्होंने वाइसराय से ता० २३ को मिलने का कहा। कलकत्ता आना नहीं हो सकेगा। मुझे वहां बुलाया।

१७० नम्बर पर जयपुर टेलीफोन किया, परन्तु मिश्र नहीं मिले।

सुव्रतावहन से जयपुर प्रजामंडल के संबंध में सहायता के बारे में बातचीत। उसने मदद करने को कहा।

केशवदेवजी, मदनलाल जालान, हरिभाऊजी, प्रेमचन्द वगैरा से जयपुर प्रजामंडल के बारे में विचार-विनिमय। कई मित्रों को फोन किया, विश्वम्भरजी महेश्वरी, गोविन्दरामजी सेकसरिया, रामदेव पोद्दार आदि।

हीरावाग में जयपुर के सम्बन्ध में बहनों की सभा हुई। कृष्णाबाई सिंघानिया सभापति। जानकी देवी, सुव्रतावहन, शान्ताबहन पित्ती, मदनलाल, श्रीनिवास बगड़का व मैं बोले।

सेण्ट्रल बैंक में श्रीनिवास ट्रस्ट के बारे में सही की।

नागपुर मेल से थर्ड में सब वर्धा रवाना।

वर्धा, १९-१-३९

वर्धा पहुंचे। स्टेशन से बंगले तक पैदल।

जयपुर की स्थिति पर पू० जाजूजी व अन्य घरवालों से विचार-विनिमय।

घटवाई से ना० प्रा० कां० के बारे में विचार-विनिमय।

कृष्णाताई से व शांता से महिला आश्रम के बारे में बातें।

श्रीमन्नारायण से मा० शिक्षामंडल व विद्यालय की स्थिति। प्रो० मलकानी व श्रीनारायण अग्रवाल (घामनगांववाले) के बारे में विचार-विनिमय।

जयपुर कौंसिल ऑफ स्टेट को, ता० ९ को बारडोली से सीकर के कैदियों के बारे में जो लिखा था, वह आज यहां से प्रकाशित करने को अखबारों को दिया।

जयपुर के बारे में विचार-विनिमय जारी।

वर्धा में पीछे से व्यवस्था, मेहमान वगैरा के बारे में, गेस्ट हाउस बन्द करना, चौका बंगले में रखना, वगैरा देर तक बातें।

२०-१-३९

कलकत्ता व रामकिशनजी को पत्र लिखवाये।

केसरबाई ने अपनी स्थिति व मनोदशा का चित्र कहा। उसे सांत्वना दी। उसमें लोभ की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है, यह देखकर थोड़ा दुःख हुआ। नर्मदा से मिलने-जुलने की दृष्टि से वह कलकत्ता रहना चाहती है।

बारडोली में पू० बापूजी से व महादेवभाई तथा देवदास से जो बातें हुईं, उनपर पौनार में जानकीदेवी से विचार-विनिमय। भविष्य में पहले मुजब संयम का निश्चय करने में ही समाधान व उत्साह रह सकता है, इत्यादि।

विनोबा से राधाकृष्ण को जयपुर-लड़ाई के लिए लेने का निश्चय। बुद्धसेन के बारे में विचार। विनोबा का उत्साह खूब था।

उमा ने इन्दू का पत्र व उसके जवाब में उसने जो पत्र दिया, वह पढ़कर बताया।

नागपुर प्रान्तीय कार्य का विचार-विनिमय। काकासा०, किशोरलाल भाई, जाजूजी से बातें।

महिला-आश्रम में प्रार्थना। बाद में जयपुर की स्थिति समझाई।

२१-१-३९

नागपुर रवाना। मदनलाल कोठारी, विट्ठल साथ में। वर्तमान पत्र देखे। नागपुर तक गिरधारी से जयपुर के बारे में बातें। पूनमचन्द बांठिया से नागपुर बैंक के बारे में, तथा अम्बुलकर से नागपुर कांग्रेस संबंधी बातचीत। नागपुर स्टेशन पर मौलाना आजाद सवार हुए सेकंड में। पूनमचन्द रांका, पन्नालाल, छगनलाल भारुका से, मौलाना को सभापति होना चाहिए, यह विचार किया।

बिलासपुर से रामगढ़ तक मौलाना आजाद से सेकण्ड क्लास में बातचीत। रात में चक्रधरपुर में स्टेशन पर जयपुर के कुछ लोग आये। उठना पड़ा, और उनके लिए कुछ बोलना पड़ा।

बिलासपुर में भी थोड़े लोग आये थे।

कलकत्ता, २२-१-३९

नागपुर मेल से थर्ड क्लास में कलकत्ता पहुंचे। स्टेशन पर ठीक भीड़ थी। लोग स्वागत के लिए आये थे। भागीरथजी कानोडिया के घर ठहरे। विचार-विनिमय, प्रचार-कार्य की व्यवस्था।

१ बजे कार्यकर्ता जयपुर के सम्बन्ध में मिलने आये।
सिक्खों के गुरुद्वारा में जयपुर के बारे में स्वागत-भाषण।
रात में हनुमानप्रसादजी पोद्दार के यहां जयपुर-सत्याग्रह में भाग लेने के बारे में विचार-विनिमय। ज्यादा लोग नहीं आ सके—विवाहों के कारण।
श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार व उर्मिलादेवीजी से बातचीत। जयपुर-सत्याग्रह के लिए लक्ष्मणप्रसादजी की तैयारी मालूम हुई।

२३-१-३९

जयपुर-सत्याग्रह के बारे में विचार-विनिमय। कुछ जयपुर-वासी श्रीमन्तों के यहां सहायता के लिए गये। उन्हें समझाया। रुपये तो ये लोग देंगे, परन्तु इनका पूरा उत्साह न देख थोड़ा खराब लगा।
रामकुमारजी भुवालका के घर भोजन। वसन्तलाल मुरारका की लड़की व उसकी माता से व रामकुमारजी के भतीजे से बातें।
चि० पार्वती, श्यामसुन्दर के घर बातें। श्यामसुन्दर को सत्याग्रह में भेजने के बारे में।
श्री देवीप्रसाद डालमिया, रामकिशन डालमिया, दुर्गाप्रसाद खेतान, लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार, उर्मिलादेवी पोद्दार वगैरा से जयपुर-सत्याग्रह के संबंध में ठीक विचार—बातें।
महेश्वरी भवन में सुभाषबाबू के सभापतित्व में जयपुर के बारे में ठीक उत्साहदायक सभा हुई।

२४-१-३९

जयपुर संगठन के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।
सिद्धराज ढड्ढा से जयपुर-सत्याग्रह की चर्चा। उसने थोड़े समय बाद तैयारी को कहा।
बिड़लों के यहां भोजन, जयपुर की लड़ाई के बारे में बातें। सबों ने प्रेम व उत्साहपूर्वक सुना।
प्रभुदयालजी, सीतारामजी, भागीरथ जी, रामकुमार भुवालका, लक्ष्मीनिवास से जयपुर के बारे में विचार-विनिमय।
सरदार वल्लभभाई का तार आया। सुभाषबाबू व पट्टाभि के चुनाव के

वारे में। सुभाष के स्टेटमेंट का खण्डन ठीक करने की परवानगी। मौलाना आजाद से फोन पर वातें व सुभाषवावू से बहुत देर तक वातें; उन्हें समझाने का काफी प्रयत्न किया, न खड़े रहने के वारे में। कांग्रेस को तो हानि पहुंचेगी, साथ में उन्हें भी। कई प्रकार से समझाया।

शाम को जवाव देने को कहा। दुःख पहुंचा, नई चिन्ता। रामकिशन डालमिया से बातें। नागपुर मेल से वर्धा रवाना—टाटानगर में बहुत-से लोग आये।

वर्धा, २५-१-३९

हरिभाऊजी से जयपुर के वारे में बातचीत।

मोहनलाल बाकलीवाल ने राजनांदगांव की स्थिति समझाई।

नागपुर में—वेंकटराम (डेली न्यूज वाला) मिला। ऐसोसिएटेड प्रेस का जयपुर का तार वताया। थोड़ा निरुत्साह। विरदीचन्दजी वगैरा मिले।

वर्धा पहुंचे। स्टेशन से सीधे बोरगांव। दरवारीलालजी ने सत्य आश्रम के कुएं की नींव का मुहूर्त करवाया।

पूनमचन्द रांका से नागपुर प्रान्तीय कमेटी के वारे में देर तक विचार-विनिमय। घटवाई, अम्बुलकर, गोपालराव भी थे।

जयपुर फोन किया। वहां की स्थिति समझी।

धोत्रे ने महिला आश्रम के वारे में पत्र भेजा, विचार रहा।

२६-१-३९

जाजूजी, किशोरलालभाई से मिलना, वातें। सुबह प्रार्थना। गांधी चौक में झंडा-वन्दन।

सेगांव में भी झंडावंदन हुआ; थोड़ा भाषण देना पड़ा।

मास्टर जवाहरमलजी से महिला आश्रम के काम के बारे में काकासा० के सामने वातचीत।

चि० रमा की सगाई चि० श्रीनिवास रुइया के साथ आज बंगले पर हुई।

श्री कानूनगो, रेवेन्यू मिनिस्टर व यूरोप से मिस्टर व मिसेज टरनर आये। उनके साथ रात्रि-भोजन।

अनसूया के स्वभाव आदि के वारे में उससे व अन्य घरवालों से विचार-विनिमय। मैंने अपनी समझ कही।

रजिस्ट्रार कोर्ट में मैंने आम मुखत्यार पत्र—कमल, केशवदेवजी,

चिरंजीलाल, गंगाबिसन को दिया। महिला आश्रम का दस्तावेज आज रजिस्टर नहीं हुआ। मा० शिक्षामण्डल की इमारत का सेल डीड रजिस्टर हुआ। मथुरादासजी मोहता, पुखराज वगैरा से बैंक के बारे में बातें।
बाबा साहेब, घटवाई, अम्बुलकर से नागपुर प्रां० कां० के बारे में विचार-विनिमय।
स्वतन्त्रता-दिन मनाया गया। जयपुर-विदायगी का सभारम्भ उत्साहजनक व भावपूर्ण हुआ।
मन्दिर में उत्सव। शुभ मुहूर्त में रात में एक्सप्रेस से विदा। मन में उत्साह।
अकोला में पुरुषोत्तम झुंझनूवाला व सीता मिले।

बारडोली, २७-१-३९

जलगांव में रिषभदास के घर आराम।
जलगांव में सार्वजनिक सभा हुई, जयपुर की परिस्थिति पर भाषण।
अमलनेर-स्टेशन पर सभा। भाई प्रताप सेठ वगैरा आये। जयपुर-स्थिति पर भाषण। विदाई। रेल में भविष्य के काम के बारे में विचार-विनिमय। शालिग्रामजी वगैरा आये।
नान्दुरबार से—हीरालालजी शास्त्री, चिरंजीलालजी मिश्र शामिल हुए। उनसे वहां की स्थिति समझी, मैंने अपने विचार कहे।
बारडोली स्टेशन पर सरदार आये। बापू को व सरदार को सुभाष व मौलाना की बातचीत का सारांश कहा।
बापू ने मसविदा तैयार करके सुबह देने को कहा।
बम्बई से १० बजे के बाद दामोदर का फोन आया। जयपुर सरकार व वहां के मुसलमानों में मस्जिद के दरवाजे के बारे में लड़ाई हुई। सात जने गोली में मारे गये। कई घायल हुए, इत्यादि। यही खबर श्री मुंशी ने भी कही। विचार रहा।

बारडोली, २८-१-३९

सीकर के बारे के कागजात देखे। सरदार से जयपुर-स्थिति पर बातें।
बापू को रात में टेलीफोन द्वारा प्राप्त जयपुर में मुसलमानों व जयपुर-सरकार के बीच लड़ाई होने व उसमें सात आदमी गोली लगने से मारे जाने व कई के घायल होने के समाचार कहे।

इस हालत में भी ता० १ का जाना निश्चय।
वापू से स्टेटमेंट बनाकर दिया, सवों को पसन्द आया।
बापू से सुबह घूमते समय जयपुर, मेरी मन:स्थिति, दीपक आदि के बारे में बातें। बापू ने थोड़े में मन:स्थिति के बारे में समझाया। मैंने भी कहा कि उत्साह का विश्वास तो होता है।
बापू ने शुद्ध सत्याग्रह के उदाहरण आदि दिये।
जयपुर सत्याग्रह कौंसिल की रचना, अन्य विचार-विनिमय।
महादेवभाई से दीपक के बारे में बातचीत।
कान्ती पारेख ने अपनी हालत कही, दया व दु:ख हुआ।

बम्बई, २९-१-३९

जुहू पहुंचे।
मणीलाल नानावटी से घूमते समय जयपुर, बड़ौदा, राजकोट के बारे में बातें।
पेरीनबेन, गोपीबेन वगैरा आईं। हिन्दी-प्रचार के बारे में बातचीत।
और कई मित्र लोग आये। जयपुर के सम्बन्ध में श्री उमादत्त नेमाणी ने काम करने का, खासकर रुपये जमा करने में मदद देने का, निश्चय बताया।
मारवाड़ी विद्यालय में वार्षिक उत्सव। सर पुरुषोत्तमदास ने जयपुर की लड़ाई की सफलता व मेरा स्वागत किया। ठीक बोले।
ईस्ट इंडिया इमारत में जाहिर सभा। बहुत ज्यादा भीड़ थी। ठीक स्वागत, ब्रेलवी सभापति।

३०-१-३९

रतलाम, कोटा, बयाना, सवाई माधोपुर, मथुरा, भरतपुर वगैरा में जनता ने स्वागत किया।
रास्ते में—मदनलाल जालान, राधाकृष्ण बजाज, दामोदर, आबिदअली, मदनलाल कोठारी, सत्यनारायण सराफ आदि से जयपुर-सत्याग्रह के बारे में विचार-विनिमय। थोड़ी देर ब्रिज खेली।
देहली पहुंचे। स्टेशन पर स्वागत। पार्वतीदेवी डिडवानिया के यहां ठहरने की व्यवस्था। चि० रामकिशन आ गया।
हरिभाऊजी, हीरालालजी शास्त्री वगैरा से थोड़ी देर बातचीत।

३१-१-३९

घनश्यामदास, रामेश्वरदास बिड़ला से बातें। वायसराय के सेक्रेटरी से जो बातें हुईं, वे उन्होंने कहीं। कोई आशा नहीं दिखाई दी, तो भी उनका आग्रह था कि अगर मुझे छोड़ दें तो, कुछ दिन बाहर रहना बहुत जरूरी है। सर शादीलाल से बातें; प्रिंसेस प्रोटेक्शन एक्ट आदि के बारे में।
लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया व सरस्वतीदेवी से बातें, उन्होंने रुपयों की मदद देना स्वीकार किया।
प्रजा-मण्डल के कार्यकर्ताओं से देर तक विचार-विनिमय।
प्रेस-प्रितिनिधियों को मुलाकात दी। ठीक प्रश्नोत्तर हुए।
सुराणाजी के घर स्वागत।
जाहीर सभा—ठीक हुई, मानपत्र आदि। मेरा भाषण भी सुन्दर, प्रभावशाली व मुझे सन्तोष हो, ऐसा हुआ। बिड़लों से मिलना।

जयपुर, १-२-३९

वर्धा फोन किया। जानकी व कमल से बातें।
प्रार्थना। जयपुर के लिए स्टेशन पर विदाई। कई मित्र व कार्यकर्ता लोग स्टेशन पर मिलने व विदा देने आये। शुभ मुहूर्त, उत्साही वातावरण। बहुत-से प्रेस-रिपोर्टर साथ थे।
'स्टेट्समैन', रायटर, ए० पी० आदि के प्रतिनिधियों से रेल में बातचीत।
प्रायः सभी स्टेशनों पर लोग आते रहे। थोड़ा बोलना भी पड़ा। बांदीकुई में कुछ लोग गड़बड़ मचाना चाहते थे, पर नहीं मचा सके। जयपुर स्टेट के स्टेशनों पर ज्यादा साफ बोलता था।
वनस्थली के लोग, कपूरचन्दजी, चिरंजीलाल अग्रवाल, मिश्र वगैरा आये, बातचीत।
जयपुर में खूब भीड़ थी, बहुत हार वगैरा पहनाये गये। स्टेशन पर ही बोलना पड़ा।
सर बीचम जयपुर को जलियांवाला बाग बनाना चाहते हैं, आदि।
स्टेशन की सीढ़ियों के पास ही स्टेट की सुन्दर मोटर व मि० यंग साथ ही खड़े थे। मि० ब्रेलवी रेलवे सुपरिंटेंडेंट, मिस्टर बेग ने गिरफ्तार किया। डी० आई० जी० के साथ रवाना।

सवाई माधोपुर वापस। वहां से फिर मथुरा के लिए रवाना।

मोह, मथुरा, आगरा, २-२-३९

सुबह करीब पांच बजे ठाकुर फूलसिंह पुलिस इन्स्पेक्टर ने रा० ब० दीवानचन्द, डी० आई० जी० से कहा कि ड्राइवर को नींद आ रही है। थोड़ा आराम लेना जरूरी है। इसलिए मोह डाक-बंगले में ठहरे। करीब सवा घंटे सोया। मुंह-हाथ धोया और बाद में फिर मोटर से रवाना हुए। यहां भी पता नहीं चला कि ये कहां ले जा रहे हैं। बाद में मालूम हुआ कि मथुरा ले जाते हैं। कल रात-भर से, यानी जयपुर स्टेशन से जयपुर स्टेट की मोटर में डी० आई० जी० व फूलसिंहजी के साथ, वे जहां-जहां ले गये, वह सब मिलाकर करीब साढ़े तीन सौ मील से ज्यादा प्रवास हुआ। रात में शिवदासपुर स्टेशन के पास याने सांगानेर के आसपास के स्थान में ले गये। तब तो यही मालूम हुआ और डी० आई० जी० ने भी साफ कहा था कि अब आपको यहीं ठहरना पड़ेगा।

मथुरा से डी० आई० जी० वगैरा वापस जयपुर चले गये।

श्री हीरालालजी शास्त्री, हरिश्चन्द्रजी व हरिभाऊजी वगैरा गाड़ी में साथ हो गये। उनसे बातचीत।

आगरा—लक्ष्मी की मां (जौहरीजी) के यहां ठहरे, आराम किया। हीरालालजी, हरिश्चन्द्रजी, राधाकृष्ण, हरिभाऊजी वगैरा से बातचीत। योजना। वर्धा, देहली को फोन।

आगरा, ३-२-३९

कपूरचन्दजी पाटनी, चिरंजीलाल अग्रवाल (जयपुरवालों) से देर तक बातचीत। परिस्थिति समझी व उन्हें कहा कि तुम लोग अपने को गिरफ्तार कराना जल्दी शुरू करो।

चिरंजीलाल मिश्र का स्टेटमेंट नुकसान पहुंचानेवाला था, मैंने खुलासा किया।

जाट नेता हरलालसिंह, देवराज आदि से देर तक बातचीत।

जयपुर के मित्र वापस जयपुर गये।

कई जगह रात में १२ बजे तक टेलीफोन करते रहना पड़ा। जयपुर सूचना कर दी कि मैं कल रात को सीकर के लिए फुलेरा होकर जाने का प्रयत्न

करूंगा। और भी जगह सूचना की।

घनश्यामदास व महादेवभाई ने कहा कि 'अभी और थोड़े रोज नहीं जाना चाहिए। जयपुर कौंसिल को पत्र देना चाहिए,' इत्यादि। पर मुझे पसन्द नहीं आया। बापू का तार आ गया कि तुम्हें जाना चाहिए। उससे मुझे सन्तोष हुआ। बापू को लगा होगा कि मैंने देर क्यों की। परन्तु सारा हाल उन्हें मालूम होने से सन्तोष मिलेगा। आगरा में जाहिर सभा हुई। ठीक थी।

आगरा, ४-२-३९

प्रयागनारायणजी वकील के घर धर्मनारायणजी (मैनपुरीवाले) के साथ भोजन। सुशील (राजा) लड़का होनहार मालूम हुआ।

महादेवभाई का पत्र लेकर आदमी आया। पढ़कर चोट लगी।

जवाहरलालजी नेहरू, गोविन्दवल्लभ पंत, काटजू, घनश्यामदास व महादेवभाई तथा वर्धा को दो बार फोन किया।

आखिर बापू की, मेरा मन हो उस मुताबिक करने की, इजाजत आ गई। सुख मिला।

जाट नेताओं से लड़ाई के प्रोग्राम की योजना व चर्चा। विद्यार्थियों से व कार्यकर्ताओं से बातें।

भार्गवजी के यहां भोज दिया गया। आगरा के खास-खास आदमी आये थे। आज सुबह आगरा के दो सी० आई० डी० को बड़े जौहरी ने पकड़ा; ठीक रौनक रही।

पुलिस अधिकारी माफी मांगने आये। फोन से ठीक कार्य हुआ। ऑफिस का मकान व छावनी का स्थान देखा।

रात में ९।। बजे की गाड़ी से रिजर्व सेकंड में सीकर के लिए रवाना। बांदी-कुई में डिब्बा कटने की शंका हुई, पर नहीं कटा। इसी प्रकार रात में जयपुर पहुंच गये। साथ में हरिभाऊजी, दामोदर, मदन, रामकृष्ण, चन्द्रभाल जौहरी, विट्ठल तथा वकील कपूर आदि थे।

जयपुर, ५-२-३९

जयपुर से हीरालालजी शास्त्री, कपूरचन्दजी, हरिश्चन्द्रजी आदि फुलेरा तक साथ में आये। जयपुर में मि० यंग व अन्य अधिकारी स्टेशन के बाहर

मोटर वगैरा लेकर खड़े थे। फुलेरा में सांभर से जनता ठीक आई। व्याख्यान। वहां से डिब्बा रींगस की गाड़ी में आकर लगा। स्टेटमेंट तैयार किया। रास्ते में ठीक स्वागत।

रींगस में भीड़ ज्यादा थी। जयपुर से मुझे गिरफ्तार करने स्पेशल ट्रेन, हथियारबन्द पुलिस व मिलिट्री के साथ ठीकरिया बावड़ी गई। ठीकरिया बावड़ी में डिब्बे में डी० आई० जी० आये और मुझे कहा कि आप गिरफ्तार हैं, डिब्बा वापस जयपुर जायेगा। और बातें भी कीं। मैं वहीं पर उतर गया और कहा कि मुझे तो सीकर जाना है। आप बलपूर्वक मुझे डिब्बे में डाल सकते हैं। इस पर उन्होंने याने डी० आई० जी० चक्रवर्ती व दूसरे अधिकारियों ने कहा कि इस बार आपको जयपुर के बाहर जाने की नौबत नहीं आयेगी। आपका मुकदमा आज नहीं तो जल्दी ही हो जायेगा। तब मित्रों ने भी आग्रह किया कि, जब इतना कहते हैं तो मान लेना ठीक है। चक्रवर्ती ने हाथ लगाकर उठाया। पर डी० आई० जी० ने गाड़ी चलने पर बातचीत का ढंग बदलना शुरू किया। जयपुर वेस्ट पर मि० यंग आये। उनसे बात हुई। उन्होंने कहा कि आपकी जयपुर से बाहर नहीं भेजे जाने की व आपको कहां रखा गया है, यह सूचना मित्रों व घर के लोगों को देने की बात वाजिब है। मैं सर बीचम से बात करके आपके पास आता हूं। मुझे 'छपरवाड़ा' ले गये जो वहां से करीब ४५-५० मील है। थकावट व सिर-दर्द होने लगा।

छपरवाड़ा, ६-२-३९

सुबह करीब १।। बजे मि० यंग आये। डी० आई० जी० ने उठाया और कहा कि अभी यहां से चलना होगा। बाद में मि० यंग ने बताया कि कल जो दो बातें आपने कही थीं, सर बीचम उनको नहीं मानते। अब मैं लाचार हूं। मुझे हुक्म मिला है कि अभी आपको यहां से बाहर भेज दिया जाय। मैं नहीं बता सकता कि किस जगह। बहुत देर तक बातचीत होने के बाद यह निश्चित हो गया कि सर बीचम ने मुझे जयपुर के बाहर निकालने का हुक्म दिया है। मैंने जाने से इन्कार किया और कहा कि आप बल-प्रयोग करके ले जा सकते हैं। इसपर पूरा बल-प्रयोग करके मुझे मोटर में डाला। मि० यंग की इच्छा बल-प्रयोग करने की नहीं थी, परन्तु मौका ऐसा ही

आ गया। मुझे वहां से डी० आई० जी० दीवानचन्द के साथ मोटर में रवाना किया गया। थोड़ी रगड़ आई; श्वास १०-१२ मिनट तक जोर से चलता रहा। थकान भी मालूम हुई। बाद में मुझे जयपुर लाये। वहां से ८६ मील दूर अलवर स्टेट में या गुड़गांव में या देहली में छोड़ने का हुक्म है, ऐसा डी० आई० जी० ने कहा। मैंने कहा कि जयपुर के बाहर मैं अपनी खुशी से मोटर से नहीं उतरूंगा। देर तक विचार करने के बाद उन्होंने मुझे जयपुर स्टेट में वापस इस्माइलपुर चौकी पर लाकर बैठा दिया। चक्रवर्ती करीब २॥ बजे आये और कहने लगे, अब आपको जयपुर में ही रखने का हुक्म मिला है। यहां से डेढ़-दो घंटे का रास्ता है। पर रास्ता बहुत लम्बा था। २॥। बजे रवाना होकर रात में ८॥ बजे भाड़ौती पहुंचे।

भाड़ौती (जयपुर), ७-२-३९

सुबह २ बजे सु० पु० श्री चक्रवर्ती ने उठाया और कहा कि मुझे हुक्म आया है कि आपको अभी यहां से ले जाया जाय। मेरे इनकार कर देने पर फिर बल-प्रयोग करके चक्रवर्ती व सिपाहियों ने मुझे मोटर में डाला। वहां रास्ते में चक्रवर्ती ने आर्डर पढ़कर सुनाया। उसकी नकल देने का कबूल करके फिर इनकार कर गया। भरतपुर व आगरा की सरहद पर चिकसाना कस्टम नाका, जो भरतपुर स्टेट का है, वहां पर मुझे जबर्दस्ती गाड़ी से नीचे उतारा। मोटर का नं० १२३ था। थोड़ी रगड़ व बायें हाथ की बीच की अंगुली में चोट आई, जिसके कारण खून भी निकला। धोती व कपड़ों पर छींटे लगे। बाद में वहां मुंह-हाथ धोया। वहां से दो-तीन फर्लांग पर स्टेशन था। वहां मोटर गाड़ी का कोई बन्दोबस्त नहीं था। चि० रामकृष्ण को साइकल पर अछनेरा भेजा। मैं चिकसाना फ्लैग स्टेशन से रेल में बैठा। स्टेशन-मास्टर गुजराती सज्जन था। अछनेरा व आगरा में भीड़, स्वागत। आगरा पहुंचकर सब जगह टेलीफोन, तार किये, स्थिति समझी। ११ बजे करीब सोया। इन दो रातों व एक दिन में मुझे करीब पांच सौ मील मोटर में घूमना पड़ा।

आगरा, ८-२-३९

सरदार वल्लभभाई से छः मिनट तक फोन पर बात चीत। जयपुर कीस्थिति बतलाई, बाद में श्री मुंशी से भी फोन पर देर तक बातचीत हुई। दिल्ली में

रामेश्वरजी विड़ला से वातें। वह आज वम्वई रवाना हुए। वनारस में घनश्यामदास विड़ला से फोन पर वातें। उन्होंने मुझे फिर से जयपुर स्टेट में न जाकर वाहर से ही संगठन का काम करने की सलाह पहले मुजब दी। पिलानी की ओर जाना भी उन्हें पसन्द नहीं आया। विद्यार्थी वगैरा में उत्तेजना फैलेगी। डा० गोपीचन्द से लाहौर फोन करके पंजाब-सरकार की नीति के वारे में भी पूछताछ करवाई। चन्द्रभाल जौहरी को जवाहरलालजी को खवर करने प्रयाग व लखनऊ भेजा। कार्यकर्त्ताओं से वातचीत। कपूरचन्दजी व हरिश्चन्द्रजी से वातें। दामोदर ने दिल्ली के वारे में सूचना दी।

आगरा में जाहिर सभा हुई। जयपुर के सम्बन्ध में हरिभाऊजी, कपूरजी, दामोदर, जौहरीजी (चन्द्रधर) और मैं वोले।

आगरा, ९-२-३९

सुवह मित्रों से विचार-विनिमय। रींगस होकर ता० १२ को पहुंचने का विचार। उसकी तैयारी। कानूनी प्रश्नों पर मित्रों से देर तक विचार-विनिमय होता रहा। दामोदर दिल्ली गया।

शाम को हिन्दुस्तान हाउसिंग के मकानात देखे, थोड़ा घूमा।

श्री उर्मिला (महिलाश्रम वर्धा वाली) वर्धा गई। उसके हाथ वापूजी, कमल व शान्ता के नाम पत्र भेजे।

वर्धा से फोन पर वापू का संदेश आया। जानकीदेवी स्वास्थ्य के कारण अभी नहीं जा सकेगी, ऐसा वापू ने कहलवाया।

१०-२-३९

चन्द्रधर जौहरी इत्यादि मित्रों से विचार-विनिमय।

दामोदर का दिल्ली से फोन आया व आदमी पत्र लेकर आया। जयपुर से फोन आया। मेरे प्रोग्राम का भार उनपर ही छोड़ दिया। वहां परसों बहुत जोरदार सभा हुई। हालत सुनकर सुख मिला।

हरलालसिंह, देशराज वगैरा मिलने आये।

डेडराजजी व सुलतानसिंह सीकर से आये। सारी स्थिति समझी। किसानों से तथा राजपूतों से किसी प्रकार की सौदेवाजी न करने की नीति स्पष्ट की। आंदोलन में अगर किसीको भाग लेना हो तो वह हमारे प्रोग्राम के

अनुसार बिना शर्त भाग ले, अन्यथा हम लड़ लेंगे।
रींगस का प्रोग्राम बदलने के कारण सिर थोड़ा भारी मालूम देने लगा।
बापू के नोट में यंग के बारे में जो गलत खबर छपी, उस संबंध में उनको तार-पत्र भेजे।
हरिभाऊजी व राधाकिसन से देर तक बातचीत। स्टेटमेंट वगैरा तैयार किये।

११-२-३९

दामोदर देहली से आया। वहां की हालत व भूलाभाई से हुई बातचीत कही।
ओम्‌दत्तजी व पालीवालजी से देर तक बातचीत। चन्द्रभाल जौहरी, इलाहाबाद व लखनऊ होकर आये। वहां की स्थिति सुनी। जवाहरलाल का पत्र पढ़ा, उन्हें पूरी स्थिति की जानकारी नहीं दी गई। थोड़ा बुरा लगा।
बम्बई से हनुमानप्रसादजी पोद्दार (कलकत्तावाले) व रामेश्वरदासजी बिड़ला का फोन आया।
राममनोहर लोहिया व चन्द्रभाल जौहरी से बातें। राधाकृष्ण व हरिभाऊजी को जो सूचना देनी थी, वह दी।
गुलाबबाई वर्धा से शाम को हरगोविन्द के साथ आई व ये लोग जल्दी ही मोटर से डेडराजजी व मदन कोठारी के साथ भरतपुर के रास्ते जयपुर रवाना हुए।
जौहरी, राममनोहर, ओम्‌जी, विट्ठल वगैरा आगरा कार्यालय की दूसरी मोटर से रवाना हुए।
मैं, चिरंजीलालजी मिश्र (दलपति) के साथ रात में १०-२० पर प्रोफेसर सेठजी के घर से आगरा से जयपुर के लिए मोटर से रवाना। रात भर मोटर में। बहुत कम सोने को मिला।

मोरांसागर, १२-२-३९

(तीसरी बार गिरफ्तार) आगरा से जयपुर २०० मील;
जयपुर से मोरांसागर १०६ मील;
आगरा से कल रात १०-२० पर श्री चिरंजीलाल मिश्र (प्रथम दलपति)

जयपुर, व छुट्टनलाल की मोटर में चि० दामोदर व रामकृष्ण के साथ रवाना हुए। दूसरी मोटर में राममनोहर लोहिया, चन्द्रभाल जौहरी, विट्ठल व ओम्‌जी थे। आगरा, मथुरा, डीग रोड व अलवर होते हुए बेराटनगर पहुंचे। वहां सु० पु० फूलसिंहजी ने करीब ३॥ बजे सुबह गिरफ्तार किया। आमेर में मि० यंग, आई० जी० पी०, स्पेशल मजिस्ट्रेट, चक्रवर्ती व पुलिस के दस्ते ने स्वागत किया। मि० यंग ने कहा कि इस बार आप स्टेट में ही रखे जायेंगे, आपको बाहर बिल्कुल नहीं भेजा जायेगा। फूलसिंहजी ने तो कहा कि अगर इस बार आपको बाहर भेजा जायेगा तो मैं नौकरी छोड़ दूंगा। मुझे चिरंजीलालजी मिश्र की मोटर से उतरवा-कर मि० यंग ने अपने साथ बैठाया व जयपुर से रामगढ़ के जंगल के रास्ते से, दौसा-लालसोट होते हुए, करीब १०६ मील के चक्कर से, ११-२० बजे करीब, मोरांसागर पहुंचाया। मुंह-हाथ धोया व थोड़ा नाश्ता किया। स्नान के बाद करीब २ बजे भोजन किया—मूंग की दाल, रोटी व आलू का साग।

दामोदर व रामकृष्ण को वापस भेजा। विट्ठल आ गया। वह स्थान बहुत ही एकान्त व सुन्दर मालूम हुआ। मि० यंग ने कहा कि मुझे स्टेट प्रिजनर रखने का हुक्म है। मित्रों के पास (जेल में) नहीं रख सकते।

मुझे अपना रसोइया वगैरा रखने को कहा। पर मैंने इनकार कर दिया तथा बाहर से खाने का सामान वगैरा भेजने की भी मनायी कर दी।

१३-२-३९

रात में नींद ठीक-ठीक आई। पर बीच में झूठा संदेह हो गया कि रात को फिर कहीं ले जावें; इससे कुछ समय तक विचार रहा।

सुबह मैदान में निपटना, बाड़ियों में से सेंगरी व बैंगन, छः आने के लिये।

बाद में जगन्नाथ व रामप्रसाद आये। जगन्नाथ ने मशहूर मीणा डाकू पकड़ा था, उसका नाम भी जगन्नाथ है।

ठाकुर खुशालसिंह, पुलिस सब-इंस्पेक्टर से आध्यात्मिक व सेवा आदि के संबंध में विचार-विनिमय।

चर्खा काता।

शाम को रामप्रसाद के साथ बन्द के ऊपर घूमा।

भजन, रामायण वगैरा।
आज का दिन शांति से कटा। यहां गांव नजदीक न होने से सामान आदि मिलने में कठिनाई होती है। भोजन वगैरा की भी अभी बराबर व्यवस्था नहीं हो सकी है। दाल-आटा वगैरा की व्यवस्था कल तक, सम्भव है, हो जायगी। अधिकारी व सिपाहियों का व्यवहार प्रेमपूर्ण है व इज्जत करते हैं।

१४-२-३६

रात में सिपाहियों की गड़बड़ के कारण नींद में थोड़ी खलल पड़ी। वैसे नींद सात घंटे से ज्यादा हो गई।
आज डेरे पर ही निवृत्त होकर घूमा, साथ में रामप्रसाद। साग, हरी मिर्च वगैरा लाये। जापानी व्यायाम किया। चर्खा।
भोजन में बाजरे की रोटी व छाछ का रायता मिला। दाल नहीं थी।
थोड़ी देर शतरंज। शाम को घूमकर आया। रामप्रसाद व जगन्नाथ साथ में थे।
प्रार्थना, भजन।
भोजन में मूंग की दाल, रोटी व दूध।
आज भी जयपुर से सामान, अखबार वगैरा कुछ भी नहीं आये।
आश्रम-भजनावली के सिवाय पढ़ने को कोई और पुस्तक नहीं थी।

१५-२-३९

रामप्रसाद के साथ मोरांसागर की परिक्रमा की—करीब पांच मील। चर्खा। मस्तक व्यायाम। बाद में शतरंज दो बाजी।
जयपुर से रामसिंह १२३ नम्बर की मोटर लेकर आया। यंग सा० का पत्र, अखबार ता० १४ व १५ के 'हिन्दुस्तान टाइम्स', 'हिन्दुस्तान' व 'सैनिक' तथा सर्वोदय के सात अंक। यंग सा० के पत्र का जवाब हिन्दी में दिया। जानकी के नाम पत्र व वर्धा के लिए तार भी लिखकर दिया। रामप्रसाद व जगन्नाथ के साथ ये लोग वापस गये।
रात में देर तक अखबार पढ़ता रहा।

१६-२-३९

सुखराम हवलदार के साथ करीब चार मील घूमा।

आज फलाहार किया। एकादशी के रोज नहीं किया था, क्योंकि उस रोज फलाहार की कोई व्यवस्था नहीं थी।

'सर्वोदय' प्रथम अंक पढ़ना शुरू किया।

१७-२-३९

प्रार्थना, भजन। सर्वोदय पढ़ा।

सुखराम के साथ ७ से ९ बजे तक घूमा, करीब पांच मील।

चर्खा। जापानी व्यायाम।

आज मोरांसागर तालाब का पानी नगर में छोड़ना शुरू हुआ। थोड़ी देर तक उसे देखा। फिर शतरंज।

'सर्वोदय' प्रथम अंक पूरा किया। दूसरा अंक शुरू किया। देर तक पढ़ता रहा।

डि० सु० पु० ने आज स्याही व घूमने की छड़ी की व्यवस्था की। तुवर की दाल तथा वरतनों की व्यवस्था अभीतक नहीं हो सकी। लिफाफे, कागज, कार्ड वगैरा मंगाने को कहा।

आज चप्पल पर चप्पल चढ़ गई। इसकी वजह से जल्दी ही दूसरी मुसाफिरी होने की सम्भावना है, ऐसा कहा गया।

१८-२-३९

प्रार्थना। सर्वोदय पढ़ा।

पांच मील से ज्यादा घूमना हुआ, सुखराम साथ में था।

चर्खा। सर्वोदय दूसरा अंक पूरा किया। तीसरा अंक शुरू किया।

शतरंज। आज सागर का पानी, नहर में पानी जाने के कारण, बहुत कम होता हुआ मालूम हुआ।

'सर्वोदय' अंक ३, पृष्ठ ३२ पर आया :

"वापूजी १९०८ की दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह की लड़ाई में जेल में थे। वहां उन्हें खबर मिली कि 'बा' ज्यादा बीमार हुई। वापू की उमर उस समय करीब ४० वर्ष की थी। वापू ने लिखा कि "तेरी बीमारी का तार मि० वेस्ट ने दिया। मेरा हृदय व्यथित है। मैं रोता हूं। परन्तु तेरी सेवा के लिए वहां आ नहीं सकता। सत्याग्रह की लड़ाई में मैंने अपना सब-कुछ अर्पण कर दिया है। कुछ भी वचा नहीं...। मैं निश्चयपूर्वक कहता हूं कि

अगर तुझे इस दुनिया से कहीं चल बसना पड़े, तो मैं तेरे पीछे दूसरी पत्नी नहीं करूंगा। ईश्वर पर दृढ़ विश्वास रखकर प्राण-विसर्जन करना।"

१९-२-३९

पांच मील घूमा। चर्खा।

निर्दोष दान और श्रेष्ठ कला का प्रतीक 'खादी' नामक लेख पढ़ा।

बापू के पत्र में से पृष्ठ ३७, अंक ३ में यह आया :

१. अपने प्रति करुणा करके सब जीवों को समान मानकर उनपर करुणा करे और अपने किसी प्रकार के भी सुख के लिए ज़ीव-हानि करते हुए कांप उठे।

२. देह की उपेक्षा न करते हुए मृत्यु का जरा भी भय न रखे।

३. देह अत्यन्त धोखेबाज है, ऐसा मानकर इसी क्षण से मोक्ष की तैयारी करे।

२०-२-३९

आज सर्द हवा थी। थोड़ी-थोड़ी छींटें भी आ रही थीं। सुबह तीन मील से ज्यादा घूमना नहीं हुआ। शाम को ठीक हो गया।

चर्खा—शतरंज, 'सर्वोदय' का चौथा अंक पढ़ा।

मि० यंग व जानकी को पत्र लिखे।

२१-२-३९

यंग सा० के नाम पत्र भेजा। जयपुर से लाने के सामान की फेहरिस्त भंवरसिंह को दी, पांच मील घूमा, रामदास जाट साथ में।

चर्खा। सर्वोदय का चौथा अंक पूरा किया। शतरंज। दोपहर को भी चर्खा काता।

जयपुर से रामप्रसाद पत्र, अखबार व सामान लाया।

लालसोट से डाक्टर कन्हैयालालजी गुप्त आये। उन्होंने वजन लिया; २०५ रत्तल हुआ, छाती वगैरा तपासी। कब्जी के लिए पेराफीन तेल वगैरा भेजने को कहा।

रात में देर तक अखबार पढ़ता रहा।

वर्धा से खबर आई कि विट्ठल का भाई सालोड में मर गया। विट्ठल ने कहा कि वहां उसके जाने की जरूरत नहीं। वह बहुत कष्ट पा रहा था।

अच्छा हुआ, कष्ट से मुक्त हो गया।

२२-२-३९

लालसोट से नाई आया, बाल कटवाये। मूलचन्द नाई होशियार नवयुवक है।

तार व पत्र रामप्रसाद के हाथ भेजे। अखबार देखने में ज्यादा समय गया।

रामप्रसाद, सुखराम, रामसिंह व पहाड़ी हिदायतजंम जयपुर गये।

थोड़ा चनों का होला खाया।

गुडा ठाकुर का बगीचा देखा, उसमें अमरूद कच्चे थे।

चर्खा। खुशालसिंहजी ने 'हरिजन-सेवक' पढ़कर सुनाया।

२३-२-३९

साढ़े पांच मील घूमा, गढ़ के बगीचे तक। साग लाया।

भोजन ठीक तौर से हुआ।

चना व गेहूं का होला भूनकर खाया।

बन्द पर घूमा। सागर का पानी निकल जाने से मछलियां बहुत ज्यादा परिमाण में मरी हुई देखीं और पक्षियों का हाल भी दयाजनक व शोचनीय हो रहा था। पारधी लोग सारस तथा अन्य पक्षियों को पकड़ने के लिए जाल डाले बैठे थे।

खुशालसिंहजी से कहा कि सब परिस्थितियों का विचार करते हुए आपको यहीं संतोष मिल सकेगा। आप भी संतोष प्राप्त करने की कोशिश करें, इत्यादि।

चर्खा काता। अखबार पढ़े।

२४-२-३९

पैदल मोरध्वज नगर याने मोरां गये, रास्ते में बायां पैर दुखने लगा, तो भी धीरे-धीरे कुंड व मंदिर पर पहुंच गये। कुंड में साधारण गरम पानी था। वह बहुत ही साफ व निर्मल था। बहुत देर तक स्नान किया, मन प्रसन्न हुआ। मोरध्वज राजा की कथा सुनी। वापस लौटते समय आधा मील करीब पैदल, बाद में साढ़े तीन मील करीब मोटर में बैठे। आज यहां आने के बाद पहली बार मोटर में बैठा। पैर में दर्द न होता तो बैठने की इच्छा नहीं थी। मोरां कुंड पर गाय चमक कर आई; कुत्ते ने उसे चमका

दिया था। उससे चोट पहुंचती, पर ईश्वर ने बचा दिया।

२५-२-३९

कौंसिल आफ स्टेट जयपुर के मंत्री के नाम पत्र लिखकर श्री कुशलसिंहजी को दिया।

कुम्हारों की बारात देखी। गधों के ऊपर बीन व बीनणी, सात-आठ वर्ष की उमर के थे। बीनणी घूंघट किये हुए थी। गेस्ट हाउस के सामने से जाने लगे तो बीन व बीनणी को गधे के ऊपर से उतार लिया। कई गधे व मनुष्य थे।

कई दिनों से विचार हो रहा था कि वायसराय के जयपुर आने के बारे में कौंसिल आफ स्टेट को पत्र लिखू कि इस समय उनका आना प्रजा व राज्य के हक में ठीक नहीं रहेगा। जयपुर राज्य में भयंकर अकाल पड़ रहा है। दूसरी ओर वायसराय के स्वागत में लाखों रुपयों का रोशनी आदि में नाश होगा। मैंने तो यह भी सोचा कि वायसराय जबतक जयपुर में रहें, उसके विरोध में उपवास रखूं। बाद में कई कारणों से पत्र नहीं भेजा। मेहतरों के भजन व गायन सुने। नारायण मेहतर ने बहुत ही सुन्दर व भावपूर्ण भजन सुनाये।

२६-२-३९

भंवरसिंह राजपूत (मान बावड़ी, रेवाड़ी के पास बेगराजजी गुप्ता के गांववाला) के साथ जानकी व कमल को पत्र भेजा। मुलाकात वगैरा के बारे में व रुपया जमा करने के बारे में लिखा।

रामप्रसाद २४, २५ ता० के अखबार व सामान लेकर आया। नियमित अखबार नहीं आता, इस बारे में उसे कहा।

डाक, तार व चिट्ठियां जो आईं, वे देखीं।

ता० २३ का राजेन्द्रबाबू का तार आज मिला, अन्य कई पत्र मिले। कमल को व केशवदेवजी को पत्र लिख भेजे। केशवदेवजी को तार भी लाहौर बंसल के पते से भेजा। बापू को केलनबैक की बीमारी के बारे में वर्धा तार भेजा।

कलकत्ता के गवर्नर लार्ड ब्रबोर्न के मरने की खबर पढ़ी, बुरा मालूम हुआ। पी० डी० शर्मा व बी० पी० शर्मा, शर्मा-बन्धु एरोप्लेन पायलट की मृत्यु के

समाचार पढ़कर दुःख हुआ ।

२७-२-३९

गाजर का हलवा ठा० कुशलसिंह ने बहुत प्रेम से बनवाया था, सो लिया ।
आज आगरा से यहां आने के बाद, सारे बदन में तेल-मालिश करवाई । दर्द कुछ कम मालूम दिया ।
'क्षात्रधर्म', जिसे अजमेर से श्रीनारायणसिंहजी निकालते हैं, देखा । श्री केसरीसिंह जी (कोटावालों) की कविता सुन्दर व भावपूर्ण मालूम हुई ।
एच० जे० टॉड (भरतपुरवाले) के जयपुर के दीवान होने की खबर छपी है । वह भरतपुर में १९३६ से कौंसिल के प्रेसिडेण्ट का काम करते हैं ।
ता० १ को किसान-दिन मनाने का कमेटी ने तय किया, ठीक जंचा नहीं । जयपुर-दिन तो ता० १२ को ही हर महीने मनाना ठीक रहता, खैर...।
जयपुर के भविष्य के बारे में रात में सोते हुए व सुबह खूब विचार मन में चलते रहे । खुद के भावी जीवन के बारे में भी मन में विचार होता रहा । एक प्रकार से भविष्य उज्ज्वल दिखाई देता है । दूसरी ओर से विचार करने पर अन्धकार ही दिखाई देता है । कांग्रेस में सुभाष ने अपनी हालत बिगाड़ ली, उसे कलकत्ता में, भविष्य के परिणाम की जो बातें कही थीं, वे सब हो रही हैं ।

२८-२-३९

जयपुर महाराज से मिलकर उन्हें भविष्य के बारे में कहने की तीव्र इच्छा हुई ।
वर्तमान बम्बई-घटना का विचार करने पर साफ मालूम देता था कि इन्साफ नहीं हो सका । महादेवभाई के व अन्य मित्रों के व्यवहार से चोट तो जरूर पहुंची, परन्तु आगे मेरे लिए परिणाम ठीक निकलेगा, इसी एक आशा पर सहन करना व कड़वा घूंट पीना उचित समझा । बापू के अनुयायियों में उदारता, सेवा एवं प्रेम की वृत्ति तो दिखाई देती है, परन्तु न्याय (जस्टिस) का माद्दा कम रहता दी दिखता है । ऐसे विचार आये सो नोट कर लिये । मेरे अन्दर इतना नीचापन व हलकी वृत्ति इन वर्षों में क्यों हुई ! विचार करने पर कई बातें दिखाई दीं, परन्तु साफ कारण समझ में नहीं आया ।

मुझे विनोबा के सम्पर्क में अधिक रहना चाहिए। उसीसे मेरा मार्ग साफ व निष्कंटक हो सकेगा और जीवन में असली उत्साह प्राप्त हो सकेगा।

बापू के प्रेम का व उदारता का ख्याल करता हूं तो अपने को बहुत नीचा, नालायक समझने लगता हूं। बापू को समय बहुत कम मिलता है, इसलिए उनसे भी कई बार न्याय के मामले में गलतियां होती दिखाई देती हैं, परन्तु उनके मन में द्वेष, ईर्ष्या व किसीका बिगाड़ हो, ऐसी वृत्ति न होने से उसका परिणाम ज्यादातर ठीक ही आता है।

'सर्वोदय' का छठा अंक पढ़ा। चाक मिट्टी की खदान देखी। मीणों की गरीबी देख हृदय रो उठा।

'सर्वोदय' छठा का अंक पूरा हुआ।

१-३-३९

किशोरलालभाई का आन्ध्र का भाषण ठीक था। कल से कुछ चिन्ताजनक खबरें मिलने का आभास मन में आ रहा है।

किशोरलालभाई लिखते हैं, "आत्मा की शुद्धि और जागृति के लिए हमें, आत्मा को कमजोर करनेवाले सब दुर्गुण छोड़ने चाहिए। जैसे—
(१) शराब, अफीम, चरस, गांजा, भांग आदि नशीली चीजों का त्याग;
(२) व्यभिचार तो नहीं ही करें। अपने गृहस्थाश्रम में भी संयम रखें;
(३) तेज व मसालेदार खुराक, उत्तेजक तमाशे (नाटक, सिनेमा, गान, नाच) आदि, तथा शिकार व क्रूर खेलों को न देखें; (४) चोरी न करें, (५) जुआ न खेलें; (६) झूठ न बोलें; (७) शरीर, कपड़े, मकान, आंगन तथा गांव साफ रखें; (८) हमेशा काम में लगे रहें; (९) अज्ञान को बुरा मानें व सदा ज्ञान की खोज में रहें; (१०) लालच न करें, दूसरों को हानि पहुंचाकर अपना लाभ न करें; (११) किसी का बुरा न चाहें, अपने पड़ोसियों आदि से प्रेम व उदारता रखें तथा (१२) नम्र और ईश्वर-परायण रहें।

"अस्पृश्यता रही तो हिन्दू-धर्म न रहेगा। देहात नष्ट हुए तो हिन्दुस्तान भी नष्ट हो जायगा।"

'सर्वोदय' का सातवां अंक पूरा किया।

चि० दामोदर व राम, रामप्रसाद क्लर्क के साथ आये।

दामोदर व राम ने भविष्य की विनोदी बातें तथा वर्किंग कमेटी की रिपोर्ट आदि का हाल कहा।

पू० बापूजी राजकोट पहुंच गये। अब आशा है, वहां का मामला सुलट जायगा। जयपुर का भी २५ अप्रैल तक सुलट जाने की आशा है।

अखबार देर तक पढ़ता रहा। शास्त्रीजी वगैरा की भूख-हड़ताल व उसका समाधान हुआ, यह जानकर शान्ति हुई।

२-३-३९

'सावधान' व 'जयवन्त' केस के फैसले पढ़े।

बापूजी का राजकोट का वर्णन व स्टेटमेंट देखे। राजकोट का फैसला जितना जरूरी है, उतना ही उनका त्रिपुरी (कांग्रेस) में जाना भी।

३-३-३९

डेरे पर ही घूमा। मेहतर के बालकों से भजन व गायन सुने।

ता० २५-२ का 'हरिजन' पूरा पढ़ा। लेख 'A good Samaritan' Dr. Chesterman वाला का पढ़ा।

प्रतिवर्ष मृत्यु—२ लाख स्त्रियों की मृत्यु प्रसूति में; १ लाख चेचक से; ३६ लाख सब प्रकार के बुखारों से; १० लाख कोढ़ी हैं व ६ लाख अन्धे हैं। त्रावणकोर की स्थिति पूरी पढ़ी। लीमडी की पढ़कर तो आश्चर्य व दुःख हुआ। जयपुर पर बापू का छोटा नोट, सच्ची स्वदेशी, सद्गत गिरिजाबाबू वगैरा।

ता० १८-२ का 'हरिजन' पढ़ना शुरू किया। नई भजनावली में से दो भजन पुरानी में लिखे।

श्रीकुशलसिंहजी ने तुलसी-रामायण सुनाई; यहां के मेहतर के लड़के बुद्धी ने भजन सुनाये।

४-३-३९

खड़िया मिट्टी की खदानें देखते हुए, गांव के पास से होते हुए, करीब पांच मील से ज्यादा घूमा। करीब ११ बजे डेरे पर आया। रास्ते में एक मीणे के यहां से खातरी बन्ध गाय का घी एक रुपया का सवा सेर लिया। एक छोटी हांडी ली। किसनलाल मीणा के लड़के ने पहुंचा दिया। चौकीदार मीणे व किसान मीणों का भेद व सामाजिक ऊंच-नीच का भाव समझा।

आज दिन को सोये तो सपना आया कि वेंकट तालाब में डूब गया व बहुत मुश्किल से निकल पाया; मदन उसे निकालने गया तो उसका पता नहीं लगा।

'हरिजन' पढ़ा; जानकीदेवी, मदालसा, उमा वगैरा के नाम पत्र लिखकर रखे।

विट्ठल का सिर दर्द करता था। कुशलसिंहजी ने उसके सिर में बहुत प्रेम से मालिश की। सज्जन पुरुष हैं।

५-३-३९

एक बूढ़ा गूजर, ७० वर्ष का, संवत १९२६ की साल में पैदा हुआ मिला। गाय-भैंसें चरा रहा था; साथ में छोटे-छोटे बालक थे। उससे बातें करके सुख मिला। उसने कहा, राजा के पाप से हम सबों की यह खराब हालत हो रही है, इत्यादि। वह तो गढ़वाले ठाकुर भवानीसिंहजी को ही राजा समझता है। जयपुर महाराज का नाम तो इधर बहुत ही कम लोग जानते हैं। विद्या का प्रचार नहीं के बराबर है। बूढ़े को समझाकर एक रुपया होली के निमित्त दिया।

मेंहदीपुर के बालाजी की जात्रा का किस्सा श्री कुशलसिंहजी ने सुनाया। जयपुर राज्य में भूत-प्रेत की बाधाओं के लिए यह स्थान प्रख्यात माना जाता है। पीरामलजी (बगड़वाले) भी वहां ताज़ीम मिलने के बाद प्रसाद करने गये थे, इत्यादि। यहां से यह स्थान चौदह मील है।

जैनियों का महावीरजी का मेला व मीणों का व गूजरों का मेला चैत्र सुदी १५ को होता है। हजारों की संख्या में स्टेट के बाहर के लोग आते हैं।

बाहर चबूतरे पर बैठकर कई ग्रामों की होली के दर्शन किये। प्रार्थना; सब छोटे-बड़े लोगों के साथ में भोजन—मूंग, चावल, दूध व मालपूआ। मेहतर के तीन बालक भी भोजन करने नीचे बैठे। मुसलमान, राजपूत, जाट, गूजर, बनिये, कायस्थ साथ में ऊपर बैठे।

जयपुर रियासत का भूगोल थोड़ा समझा।

६-३-३९

आज भी जयपुर से पत्र व अखबार नहीं आये, याने ता० १-३ के बाद से कोई खबर नहीं मिली।

प्रेसीडेंट कौंसिल ऑफ स्टेट व श्री यंग के नाम पत्र लिखकर भेजने को दिये। जानकी को पत्र व तार वर्धा व एक कार्ड राधाकिसन को आगरा भेजा। पत्रों की नकलें वगैरा करने में रात के सवा दस बज गये।

आज पहली बार चने की दाल का साग खाया (बराबर नहीं बन पाया था)।

श्री कुशलसिंहजी ने कहा—"गड़वाले ठाकुर भवानसिंहजी कहते थे कि इधर बाघ आया हुआ है। आप मैदान जावें तो ख्याल रखें।" बाघ देखने की इच्छा हुई।

७-३-३९

बापू ने आज २-१६ पर फास्ट छोड़ा।

कल कौंसिल प्रेसीडेंट, मि०यंग व घर के लोगों को जो पत्र व तार लिखे थे, उन्हें आज सवेरे रामनाथ सिपाही लेकर गया।

घूमा, मेघासिंह हवलदार साथ में। रास्ते में बाघ के खोज मिले। डेढ़ मील पर एक गांव की गाय उसने कल मार डाली। छोकरों ने बाघ को देखा। एक आदमी को साथ लेकर वहां की तराई में बाघ की गुफा देखी। दूसरी गुफा में उसके पांवों के ताजा चिह्न भी मिले। अन्दर से वास भी आती थी; बाघ उसके अन्दर है ऐसा कहना पड़ा। उस गांव में गये तो एक बूढ़ा करीब ८०-८५ वर्ष का मिला। उससे बात करके उसे थोड़ी मदद की। इन गांवों में यह चर्चा है कि "वन्दे पर एक सीकर-खेतड़ी का महाजन नौ करोड़ का आसामी है। वह कहता है कि लगान बहुत ज्यादा है, कम किया जाय। उसे यहां लाकर रखा गया है। हमेशा नंगी संगीनों का पहरा रहता है। किसी को देखने नहीं देते। उसके लिए खाने वगैरा का सामान रोज जयपुर से आता है। हमारी भलाई की कोशिश करता है। बड़ा धर्मात्मा है। हम तो उसका कहना करने को तैयार हैं, इत्यादि। हम पर बहुत जुल्म हो रहा है।"

आज मन उदास व बेचैन रहा, स्वास्थ्य के कारण व जयपुर से सात रोज से कोई खबर न मिलने के कारण भी।

किशोरलालभाई का लिखा लेख 'सुवर्ण नी माया' पूरा किया।

८-३-३९

आज वर्धा में कमला को लड़की हुई, ६.४३ पर।

रात को जोरकी खांसी आई। करीब १ बजे सांस (दम) घुटने लगा। कठिनाई से सांस आने लगा। लेसवा का काढ़ा विट्ठल ने बनाया, वह लिया, बाद में नींद आई। चौखा गूजर, जो सत्तर वर्ष का है उसका घर, उसके सोने-बैठने की जगह देखकर आश्चर्य और उसके प्रति श्रद्धा व मान बढ़ा। उसकी स्त्री अन्धी हो गई है। वह भी सत्तर के करीब है।

रामप्रसाद क्लर्क ने मि० यंग का पत्र लाकर दिया व पांच तार व पत्र भी लाया। अखबार भी लाया। रात को ११।। बजे तक पढ़ता रहा।

बापू के उपवास करने की व छोड़ने की व राजकोट का मामला सुलटने की खबरें पढ़कर सुख मिला। दो-तीन रोज से मन में जो निरुत्साह था, वह चला गया।

९-३-३९

मि० यंग के कल ता० ८-३ के पत्र का जवाब लिखकर व पांच तार व राजकुमारी, जानकीदेवी को पत्र लिखकर रामप्रसाद के साथ भेजा।

विट्ठल ने आज सवेरे करीब पांच बजे बघेरा या नार देखा।

१०-३-३९

'तिमिर मां प्रभा' (The light shines in darkness के अनुवाद) का दूसरा अंक पढ़ा; उसका मन पर ठीक परिणाम हुआ। कुछ बातें छोड़कर, (याने व्यक्तिगत कमजोरी आदि) ऐसा लगा कि यह पवित्र पुस्तक मेरे लिए ही लिखी गई हो, प्रायः बहुत-सी घटनाएं मिलती-जुलती हैं।

गढ़ के ठाकुर भवानसिंहजी ने एक बघेरा (चित्ता) पकड़ा, उसे देखने गया। पकड़ने का मचान व व्यवस्था देखकर नया अनुभव मिला। बघेरे को जब छोड़ा गया तो उसने इस तरह घुड़की दी कि डर मालूम हुआ। उसे भली प्रकार देखा। वह परसों से पानी व खाना कुछ नहीं खाता है। खूब दुखी है। दया भी आई। जंगल सुन्दर है।

भोजन के बाद मि० यंग आई० जी० पी० (करीब १२।। बजे) आज प्रथम बार यहां आये और कहने लगे, "आपका पत्र मुझे रात को २ बजे पढ़ने को मिला और मैं यहां आ गया।" उन्होंने चिरंजीलाल अग्रवाल से व अन्य

मित्रों से लामा में जो बातें हुईं वे कहीं। अचरोल ठाकुर साहब भी उनसे मिलकर आये। आखिर में फैसला क्या हुआ, यह उसे मालूम नहीं और कहा कि "समझौते का वातावरण हो रहा है। मैं स्टेट गजट लाना भूल गया। वहां से भेज दूंगा।"

मेरे जयपुर-जेल में रहने के प्रश्न पर देर तक विचार-विनिमय हुआ। उसने कहा कि मुझे तो पसन्द है। वहां बात करके मैं आपको लिखूंगा। महाराजा सा० से मिलने की भी बातचीत हुई। ता० १२ को शाम तक खुलासेवार पत्र आ जायगा।

११-३-३९

रात को २।।। बजे से ही नींद खुल गई। भले-बुरे विचार आने लगे।

चार बजे प्रार्थना, 'तिमिर मां प्रभा' का तीसरा अंक पढ़ना शुरू किया, पांच बजे पूरा हुआ। हृदय-द्रावक है। वीरेन्द्र की भूमिका सुन्दर तो है, पर विचारणीय है।

घूमते हुए पहाड़ पर चढ़कर कोचर गांव, जहां मन्दिर व बस्ती है, गये। यह स्थान बन्दा से करीब छः मील है। वहां आराम किया। डेरे से रोटी आई।

बाजरे की रोटी, साग, प्याज खाया, आधा-पेट ही। थोड़ी देर बाद सबों को खिलाकर वापस पैदल ठहरते हुए अमारवा आये। धूप पड़ने लग गई थी, वहां आराम, भजन वगैरा हुए। मोटर आने में देर हो गई।

'तिमिर मां प्रभा' का चौथा व पांचवां अंक व आखिर का सार पढ़ा। पुस्तक पूरी हुई। कई बातें विचारणीय हैं।

१२-३-३९

करीब सवा घंटे घूमा।

पू० बापू को पत्र दिल्ली भेजने के लिए तैयार किया।

जयपुर से यंग सा० का पत्र व ता० ९-३ का नोटीफिकेशन व अखबार लेकर सवार डेरे पर आया। थोड़े आराम के बाद श्री यंग को पत्र लिखा। बापू के पत्र में नोटीफिकेशन व श्री यंग के पत्र के आधार पर बढ़ाया। नकल की।

बिड़ला के यहां तार भिजवाया कि बापू के पहुंचते ही पत्र उन्हें दे दिया

जाय।पत्र सवार के हाथ जयपुर भेजे। मन में विचार-विनिमय होता रहा, कोई साथ में न रहने से पत्रों के मसविदे वगैरा में थोड़ी अड़चन अनुभव होती थी।

श्री यंग ने लिखा है कि कल ता० १३ को वह आवेंगे, नहीं तो पत्र भेजेंगे।

कल पेटी में से दस रुपये का नोट चला गया, इसकी रिपोर्ट विट्ठल ने डि० सु० श्री कुशलसिंहजी से की। रात तक तो पता नहीं चला, सुबह मालूम हुआ कि जो पुलिस पहरे पर थी उन्हीं में से ही चोरी का नोट वापस मिला। मैंने डि० सु० से कह दिया कि इसकी रिपोर्ट अवश्य करनी चाहिए।

१३-३-३९

रोडा व जामरा दो गांव देखे। दोनों अच्छे मालूम हुए। धनजी पटेल (जामरावाला मीणा) देर तक साथ आया। जिज्ञासु मालूम हुआ।

आज वासोड़ा (शीतला सप्तमी) था। ठंडी रोटी तो नहीं मिली परन्तु बाजरे की गरम रोटी व रबड़ी खाई।

जयपुर से सवार के हाथ अखबार व कमला तथा जानकी के पत्र ता० ७-३ के लिखे आये, पढ़े।

'विदाय वेलाये' (खलील जिब्रान के 'दि प्राफेट' का अनुवाद) पढ़ना शुरू किया। नौ बजे के करीब जल्दी सो गये।

१४-३-३९

'विदाय वेलाये' ध्यानपूर्वक एक घंटा पढ़ी।

साढ़े चार मील घूमा। एक पांच बच्चों की मां को, जिसका पति मर गया, कपड़ा व एक रुपया दिया; मीणा जाति की थी।

अब्दुल रहीम मोटर-ड्राइवर का आग्रह दीखा तो दो बाजी शतरंज की खेलीं।

चर्खा। तुलसी-रामायण कुशलसिंहजी ने पढ़ी।

१५-३-३९

चविदाय वेलाये' पूरा किया।विचारणीय और जीवन में रस पैदा करनेवाली पुस्तक है।

खलील जिब्रान—सन १८८३ में सीरिया देश में माउंट लेबनान में जन्मे और सन १९३१ में उनकी मृत्यु हुई।

अखबार व चिट्ठियां आज जल्दी आ गईं। श्री यंग का पत्र ता० १४-३ का पढ़ा। उसका जवाब लिखकर मेघाराम के हाथ भेजा। चि० उमा को भी पत्र लिखा। चर्खा संघ के चुनाव का फार्म भरकर भेजा।

लार्ड लिनलिथगो (वायसराय) ने राजाओं की सभा में परसों जो भाषण दिया, वह पूरा विचारपूर्वक पढ़ा। एक तरह से भाषण ठीक कहा जा सकता है।

पंडित जवाहरलाल का पत्र पूरा पढ़ा।

बापू कल रात को जयपुर होकर दिल्ली गये होंगे। मेरा पत्र उन्हें मिल जायगा, ऐसा यंग ने लिखा है। मनुष्य-कर्त्तव्य पर विचार हुआ।

'सर्वोदय' पढ़ना शुरू किया। बाद में चर्खा काता, परन्तु बराबर नहीं चला। सुस्ती रही।

१६-३-३९

आज कुशलसिंहजी से राजपूत, बनिये आदि का विवाद चालू हो गया। राजपूत मनोवृत्ति का पता लगा। इतने शान्त व ईश्वर से डरनेवालों की भी जब यह स्थिति है तो अन्य राजपूतों की तो बहुत ही विचारणीय होगी। इस प्रकार के विवाद से लाभ के बदले हानि व मनोमालिन्य ही होने का डर है। भविष्य में सावधानी रखने का निश्चय। अपनी भूल के लिए दुःख हुआ।

दाहिने पांव में, जहां पहले कलकत्ता, बम्बई व वर्धा में दर्द हुआ था, आज दर्द होना शुरू हुआ। डा० गुप्ता लालसोटवाले आये, तपासा। वजन २०० रत्तल हुआ।

श्री यंग सा० आये। उनसे देर तक बातचीत। उन्होंने कहा कि प्राइम मिनिस्टर आपको मोरांसागर ही रखना चाहते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि आपने महात्माजी को पत्र भेजा उसका जवाब आते ही मैं लेकर आऊंगा या उसी समय भेज दूंगा। वहां तक आप ठहरें। कौंसिल आपको जवाब भेजनेवाली है।

ता० ९ के नोटीफिकेशन। हरिश्चन्द्र शर्मा के बारे में चर्चा। उन्हें कॉफी पिलाई। आज प्रथम बार मैंने भी कॉफी पी।

१७-३-३९

भजनावली में से कुछ श्लोक, जो प्रिय मालूम हुए, उतारे। 'सर्वोदय' का आठवां अंक पूरा किया।

आज मूंग की दाल व मूली का साग बहुत ही स्वाद मालूम हुआ। साग तीन बार लिया। और भी लेने की इच्छा रही।

दो-तीन पत्र लिखकर रखे, अखबार देखे, वायसराय के जवाब में राजाओं की ओर से जाम सा० का भाषण पढ़ा। 'स्टेट्समैन' व 'मैंचेस्टर गार्जियन' की आलोचना पढ़ी, ठीक थी।

कुशलसिंहजी से कल के बारे में खुलासा बात कर भविष्य के रहन-सहन का स्पष्टीकरण किया।

आज के 'हिन्दुस्तान' में, पटियाला के ज्योतिषी शालिग्राम शर्मा ने ३३ प्रश्नों पर भविष्य जाहिर किया है।

१८-३-३९

भजन छांटना व लिखना। जयपुर राज्य का नूतन भूगोल पूरा किया।

'सुख आणि शान्ति' (पीस एण्ड हैपीनेस), मूल लेखक लार्ड एवरी, पी० सी०, का मराठी-अनुवाद (अनुवादक महादेव हरि मोदक) आज से पढ़ना शुरू किया।

आज घी न होने से बिना घी की रसोई हुई। कल से प्रायः मौन ही रहता है। चर्खा काता।

रात को ९ बजे रामप्रसाद श्री यंग का, पू० बापूजी का सीलबन्द, चि० राधाकृष्ण का व अन्य पत्र तथा अखबार लेकर आया। पहले सब पत्र पढ़े, बाद में देर तक अखबार पढ़ता रहा। राजकोट बापूजी को ठीक हैरान कर रहा है। उन्हें फिर वापस राजकोट जाना पड़ेगा, आदि। बापूजी के स्वास्थ्य का विचार आया; परमात्मा सब ठीक करेगा।

यूरोप की हालत गम्भीर होती जा रही है। हिटलर खूब जोरों से बढ़ता जा रहा है। देखें, क्या होता है!

बापू की सूचनाओं पर लेटे-लेटे देर तक विचार; शान्ति मिली।

१९-३-३९

बापू व श्री यंग के नाम पत्र लिखे। नकलें कीं व रामप्रसाद के साथ जयपुर भेजे।

साथ में दूसरे पत्र—चि० राधाकृष्ण व जानकीदेवी के नाम लिखे। श्री केशवदेवजी के पत्र में राजेन्द्र बाबू का आया हुआ पत्र व उसका जवाब तथा रामेश्वरदासजी के नाम पत्र भेजा। चि० लतीफ व अकबर के नाम भी पत्र भेजे। कर्वे यूनिवर्सिटी को वोट-पत्र भेजा।

घूमना न होने के कारण व अन्य विचारों से आज एक ही बार भोजन किया। शाम को दूध ही लिया।

'स्टेट्समेन' में यूरोप का वातावरण ध्यान देकर पढ़ा। अपनी जीवनी थोड़ी देखी; इसमें बहुत फर्क की आवश्यकता है।

कुशलसिंहजी ने भोजन के समय व बाद में अलवर महाराजा व सर वायली की बुद्धिमत्ता के संस्मरण सुनाये।

मास्टर जवाहरमलजी के उर्दू के नोट समझने का प्रयत्न किया, कुछ लिखा भी।

'सुख आणि शांति' पढ़ना शुरू किया।

२०-३-३९

यहां का मंदिर पहली बार देखा। नीचे तक जाकर आया। बाद में चबूतरे पर थोड़ा घूमा।

'सुख आणि शांति' पढ़ी। धूप में पांव की मालिश।

श्री कुशलसिंहजी ने खुलासा किया कि मुझे, व्यक्तिगत तो किसी से द्वेष न था और न रहेगा।

आज रात में १२॥ बजे तक भोजन वगैरा हुए। १ बजे के लगभग सोया।

२१-३-३९

'सुख आणि शांति' पढ़ता रहा।

कई दिनों से पेट साफ नहीं हुआ। यहां का पानी ठीक नहीं है। जांच करने से मालूम हुआ कि यहां यह शिकायत प्राय: बहुतों को है। रात को सोते समय अरंडी का तेल आधा औंस लिया।

आज भी एक ही बार भोजन किया व शाम को दूध-पपीता लिया। सुबह

भोजन में चने की दाल थी। उससे भी पेट में थोड़ा भारीपन व बेचैनी मालूम हुई।

ता० १८ के बाद आज अखबार व पत्र आदमी के साथ आये। हिन्दुस्तान टाइम्स केवल एक ही रोज का आया। हिन्दुस्तान, सैनिक, अर्जुन व जय-प्रजा, जयपुर सरकार ने बन्द कर दी। ता० १७-३ से स्टेटस्मेन आना शुरू हुआ।

ता० १६-३ के सत्याग्रह के समाचार हिन्दुस्तान में पढ़ने से मालूम हुआ कि जयपुर सरकार अभी समझौते के लिए तैयार नहीं है। पूरा दमन करके देखना चाहती है।

यूरोप की स्थिति के समाचार रात को देर तक पढ़ता रहा।

२२-३-३९

आज से नया संवत् चालू हुआ है, मन से विचार।

श्री कुशलसिंगजी के साथ मोटर में मोराकुंड गये। कुंड में देर तक स्नान। तूंबा बांधकर गुलाब सिपाही के साथ कुण्ड के अन्दर घूमे।

चि० कमल व काका सा० को पत्र लिखा।

शाम को ता० २१ का 'हिन्दुस्तान टाइम्स' व स्टेट्समेन आये। जयपुर सत्यागृह कौंसिल ने पू० महात्माजी की आज्ञा से सत्याग्रह स्थगित किया। देखें, अब ऊंट किस करवट बैठता है ?

पक्षी यहां बहुत सुन्दर होते हैं। आज शिकारी ने कनेडियन हंस दिखाये जिन्हें सुरखाव या हंजा भी कहते हैं ये हजारों की संख्या में बाहर के मुल्कों में जाते हैं। पकड़ने वालों को एक के पीछे चार रुपये मिलते हैं। सुन्दर पक्षी हैं। ये 'हवाशाल' नाम का पक्षी भी पकड़ कर लाये थे। इस पक्षी की चर्बी वायु हरने के लिए मशहूर दवा समझी जाती है।

'सारस' पक्षी हमेशा जोड़े से रहता है, इसके बारे में विचित्र व महत्व की किंवदंती है।

'सुख आणि शांति' पढ़ी। चर्खा काता।

२३-३-३९

'सुख आणि शांति' आज पूरी की। पुस्तक अवश्य विचारणीय है। मनुष्य इससे ठीक लाभ उठा सकता है। मुझे भी फायदा पहुंचना सम्भव है। ऐसी

याद पड़ती है कि मैंने इसे २०-२५ वर्ष पहले भी पढ़ा था।
'मधुकर' (विनोबा का लिखा) शुरू किया।
साढ़े पांच के करीब चि० राधाकृष्ण, दामोदर, गुलाबबाई, हरगोविन्द, रामप्रसाद (पुलिस क्लर्क) के साथ श्री यंग का पत्र लेकर आये। सबोंसे मिलकर प्रसन्नता हुई। देर तक बातचीत, पूरी तरह से सारी स्थिति समझी। पू० बापूजी ने जिस उद्देश्य से सत्याग्रह स्थगित किया, वाइसराय से जो बातें हुईं, भविष्य में अगर सत्याग्रह चालू करना पड़े तो बापू की इच्छा, उसमें कठिनाई वगैरा का विचार किया। आज की मुलाकात खानगी थी।

२४-३-३९

राधाकृष्ण से देर तक बातचीत—मानसिक स्थिति तथा सत्याग्रह के सम्बन्ध में।
मि० यंग के पत्र का जवाब लिखवाया व सन्देश का जवाब भिजवाया।
नौ बजे करीब चि० राधाकृष्ण, दामोदर, गुलाबबाई, हरगोविन्द नाश्ता करके जयपुर रवाना हुए।
अखबार देखे। आज कुछ बेचैनी व शरीर में हरारत मालूम होने लगी।
शाम को दूध के साथ कुनैन ली।
कुशलसिंग रामकृष्ण परमहंस का जीवन-चरित्र पढ़ते रहे।
चि० राधाकृष्ण व श्री यंग की बात हुई। उसमें उन्होंने जयपुर स्टेट के सामने बड़ौदा का आदर्श, वर्तमान व भविष्य का, रखने की जो बात एक तरह से पहले ठीक समझी थी, वह अब मंजूर नहीं।
मि० यंग से बात करने से कोई लाभ नहीं दिखाई देता, उसे समझना भी एक बड़ा भारी प्रश्न हो रहा है।
पू० बापूजी को सत्याग्रहियों के बारे में नई प्रतिज्ञा व मेरे विचार कहला दिये।
मेरे लिए तो यह सम्भव नहीं है। मेरी समझ से तो बापू के सिवाय और किसीके लिए खासकर जयपुर में तो और कोई मिलना कठिन ही है।

२५-३-३९

८-१० रोज के बाद आज बाहर घूमकर आया था। करीब दो मील घूमा।

पांव में दर्द कम मालूम हुआ। रात को खांसी भी कम आयी, नींद ठीक आ गई।

'मधुकर' थोड़ा पढ़ा। आज कई दिनों बाद भोजन में रुचि मालूम हुई। कल बेचैनी व हरारत मालूम होने के कारण कल शाम को व आज सुबह भी कुनैन ली। चर्खा काता।

जयपुर के साधु-संन्यासियों के नाम नोट किये, उनके बारे में देर तक विचार। उनकी जीवनी सुनी।

श्री कुशलसिंगजी रामकृष्ण परमहंस को जीवनी पढ़ते रहे।

२६-३-३९

मेघाराम हवलदार के साथ घूमे। दो ढाणियों में से एक में एक मीणा बूढ़ा बहुत दिनों से बीमार था। उसकी हालत देखी। एक रुपया दिया व थोड़ी खादी दी। मोनू गुजर के ऊपर से नार (बाघ) कूदा, उसे चोट लगी, वह भी देखी। आदमी बहादुर मालूम हुआ। उसने कहा, बघेरे से तो कुश्ती लड़ने को तैयार रहता हूं।

श्री यंग० सा० का पत्र लेकर भंवरसिंह आया। पढ़ने से आश्चर्य व दुःख हुआ। इस प्रकार के पत्र का पहले तो जवाब न देना ही ठीक समझा। परन्तु भोजन के बाद फिर पढ़ा तो जवाब देना जरूरी मालूम हुआ। उनकी दो दफे की मुलाकात का मुख्य सारांश लिखा। नकल की। रात को डि० सा० को दिया। अब तो काफी समय तक यहां रहना होगा। ठीक है।

सारस पक्षियों के बहुत से जोड़े देखे, इनका वर्णन सुनकर व देखकर आश्चर्य व शिक्षण लेने योग्य मालूम दिया। इनके बारे में अधिक जानकारी करनी चाहिए।

अखबार देखे। स्त्री कैदियों को छोड़ दिया गया। बापूजी प्रयाग गये। सत्याग्रहियों के छोड़ने के समाचार पढ़े।

२७-३-३९

सुखा गुजर जो ८० वर्ष के ऊपर की उम्र का था, मिला। बहुत ही सज्जन मालूम हुआ। आंखों से नहीं दीखता था। उसे जबरदस्ती एक रुपया दिया। एक बूढ़े गाडीया लोहार को एक दिया। गाडीया लोहारों का आदर्श बहुत ही उत्साह बढ़ाने वाला है। ये लोग चोरी नहीं करते, भीख

नहीं मांगते, घर नहीं बनाते, भूखे रह जाते हैं, परन्तु अपने प्रण पर कायम रहते हैं।

कल रात को यंग सा० के नाम जो लम्बा पत्र लिखा था, वह रामनाथ के साथ आज जयपुर गया। जानकी को भी पत्र भेज दिया।

जयपुर से अखबार आये, सुभाषबाबू का स्टेटमेंट पढ़कर बुरा मालूम हुआ। रात को चर्खा कातते समय श्री कुशलसिंगजी रमण महर्षि की जीवनी पढ़कर सुनाते रहे।

'म्हणशर' शेखावाटी (जयपुर) में भयंकर दुर्घटना के समाचार पढ़े। ठा० नारायणसिंगजी की अर्थी के चलावे के समय छज्जा टूट जाने से १५ स्त्रियां व पांच बालक तो उसी समय मर गये। बाकी कई घायल हुए। दुःख हुआ।

दिल्ली में दो कालेज के विद्यार्थी-मित्रों ने आत्महत्या की, शोचनीय वातावरण!

२८-३-३९

चर्खा काता। श्री कुशलसिंगजी ने रमण महर्षि का जीवन पूरा किया। दोपहर को चर्खा चलाते समय फिर कुशलसिंगजी ने रामकृष्ण परमहंस की जीवनी पढ़कर सुनाई।

ऊपर की पहाड़ी पर घूमने गये। गढ़ के ठाकुर मिले।

जल्दी ही नौ बजे के करीब सो गये। आज अखबार वगैरा नहीं आये।

२९-३-३९

प्रार्थना के बाद रामायण में से रामजन्म का प्रसंग पढ़ा। फिर पैदल रेवाशा होते हुए मोराकुंड। रेवाशा में भी एक छोटा-सा सुन्दर कुण्ड है व एक सुन्दर स्थान भी है। मोराकुंड में देर तक स्नान। १२ बजे डेरे पर पहुंचे। भोजन के बाद रामनाथ अखबार लाया था। वे पढ़ें; आराम, बाद में दूसरे रोज के जो अखबार आये, वे पढ़े।

महात्माजी ने त्रावणकोर-कांग्रेसवालों को ता० २७ के अखबार में जो संदेश भेजा है उसका सारांश है—"Watch, Wait and pray." अंत में कहा

The tremendous implications of non-violence, and I

promise that its practice in "Thought, word and deed" will hasten the progress towards their goal, as nothing else will.

ता० २८ के अखबार में सिग्न्योर मुसोलिनी कहते हैं—"Believe, obey and fight." This is the dogma of Signor Mussolini.

पंजाब में सन् १९३८ में आत्महत्याएं हुईं, जिनमें ४०९ मस्तक्की खरावी से, दुख से १२, वीमारियों से ९७, घर के झगड़ों से १६७, प्रेम के कारण ५४, बुख से १०, आर्थिक अड़चनों से ९, काम नहीं मिलने से २४, व अन्य कारणों से ३६।

३०-३-३९

घूमे करीव साढ़े छः-सात मील, मेघाराम हवलदार व पुना चमार (जमादार) साथ में। पूना के गांव (गुजर कोस्ता) गये; उसका घर वगैरा सव देखा। वाद में 'जगरामपुर' गये। एक वृद्ध व्राह्मण जिसका जन्म सं० १९१६ में हुआ था, उससे मिले।

वह १७ वर्ष से अन्धा है। उसने वहुत प्रेम से वातें कीं; नाम शिवनारायण है। उसे एक रु० दिया।

श्री कुशलसिंगजी ने रामकृष्ण परमहंस की जीवनी सुनायी।

रात को भी चर्खा कातते समय रामकृष्ण परमहंस की जीवनी पूरी सुनी।

रामकृष्ण की जीवनी में से खासकर आखिर के प्रश्न व उत्तरों से साधक मनुष्य ठीक फायदा उठा सकता है।

राजाजी के जेल डायरी की प्रस्तावना गुजराती में पढ़ी।

शाम को चबूतरे पर देर तक शांति से विचार करता रहा। रात को आंधी आई व विजली खूव चमकी, थोड़ा पानी भी आया।

३१-३-३९

घूमना, करीव तीन मील। कुण्डीला, वाद में वाडा में वूढ़े भोमा मीणा को एक रु० दिया। यह सव तीर्थ करके आया है। इसके दो लड़के हैं। वे इसकी वरावर सेवा नहीं करते, हाल जाना। एक चालाक वूढ़े ने एक रुपया उधार लेकर दोनों लड़कों की वहुओं से खूब सेवा करवाई। दरवाजा वन्द करके वह दो घंटे तक रुपये बजाता रहा। दोनों वहुओं ने समझा कि वूढ़ा वहुत कमाकर

लाया है सो सेवा करने से मिल जायेगा। बूढ़े ने वह रुपया तो उधार वाले को वापस दे दिया और मरे दम तक भ्रम ढका रक्खा।

एक आदमी ने कहा कि लाट ने जयपुर महाराज से कहा, महाराज बाबू शिवराज (स्वराज) तो हमको देना ही पड़ा, तो आप भी क्यों नहीं देते, दे दीजिये। ये लोग अपनी गद्दी तो छीनते नहीं वगैरा वगैरा।...बड़े लाट से मेरी (जमनालालजी की) वहन मिली है। लाट ने या गांधीजी ने जयपुर महाराज पर सवा लाख का दंड कर दिया, क्योंकि मेरा वजन उनकी देख-रेख में कम हो गया, आदि कई तरह की विनोदी अफवाहें—चारों तरफ फैल रही हैं। मुझे जिस प्रकार से रखा जा रहा है—महाराज की खास मोटर, संगीन सिपाहियों का पहरा, वड़े-से-बड़े आफीसर संभालने आते हैं, खाने-पीने का सामान जयपुर से आता है, इत्यादि चर्चा भी खूब फैली हुई है। कई तो मुझसे ही पूछ बैठते हैं कि बन्दे पर जिस करोड़पति सेठ को रखा है, उसके दर्शन कैसे हो सकते हैं? इन बातों से ठीक विनोद व दु:ख होता है।

कामठी का ब्राह्मण आ निकला। इसकी बहन अंबारा में ब्याही है।

बागवान की चाची (मुसलमान) को चर्खा कातते देखा। मैंने भी वहां थोड़ा काता।

कुशलसिंगजी रामायण सुनाते रहे।

१-४-३९

रासना का मंदिर वगैरा देखा। वहां का महंत पहले ब्राह्मण था अब संजोगी माना जाता है। उसने जोगी स्त्री रख ली है। मंदिर बहुत ही गंदा कर रखा है। इसलिए जो कुछ देने की इच्छा थी, वह नहीं रही। एक गंगाविसन नाम के बूढ़े बीमार मीणा को, जो ८० के करीब का था, एक रु० दिया।

बापू का ब्लड प्रेशर फिर बढ़ गया यह जानकर थोड़ी चिन्ता हुई। बापू दिल्ली में ही हैं।

राजकोट का फैसला ठीक हो गया, ऐसा अंदाज से मालूम होता है।

बापू का ब्लड प्रेशर २७ मार्च को २२०-११२ था, राजकोट के उपवास के बाद १६०-९० हो गया था, जो ठीक समझा जाता था। कांग्रेस व देशी

रियासतों की चिंता के कारण ही ऐसा हुआ दीखता है।

इंदौर के वर्तमान महाराजा ने भी यूरोपियन मिस मार्गरेट लॉलर के साथ विवाह कर ही लिया। विनाशकाल आ गया दिखता है। अच्छा नवयुवक मालूम देता था; भाषण तो अच्छा किया है।

कलकत्ता हाईकोर्ट में भुवाल-केस की अपील चल रही है। स्त्री विभावती देवी व कुमार रामेन्द्रनारायण राय। यह केस दिलचस्प व बोध लेने योग्य है।

कालेज की लड़की कु. सुजाता सरकार (वय २१) का केस पढ़ा। यह समाज की वर्तमान शिक्षा की दु:खदायक हालत बतलाता है। चर्खा।

ता० ३०-३ के हिन्दुस्तान टाइम्स ने देशी रियासत—खासकर जयपुर पर नोट लिखा है।

सत्याग्रहियों को छोड़ने के बारे में श्री भूलाभाई ने श्री जिन्ना को ठीक जवाब दिया। सत्यमूर्ति ने भी।

ओम् मण्डली का प्रकरण पूरा समझ में नहीं आया।

त्रावणकोर में सत्याग्रहियों को छोड़ दिया गया।

२-४-३९

अपनी जीवनी प्राय: पढ़ डाली; दूसरी लिखनी पड़े तो सुधार की बहुत आवश्यकता है। यह बात वाजिब मालूम होती है कि जीवित आदमी की जीवनी जहां तक बने, वहां तक न लिखी जाये।

मैं अपने दोषों का ख्याल करता हूं तो शर्म, लज्जा व दु:ख से मन भर आता है। मनुष्य को हमेशा सत्संग व उत्तम पुस्तकों आदि के पठन व विचार करते रहने की, हमेशा मरते दम तक, जरूरत समझनी चाहिए।

चर्खा काता।

डिप्टी सुपरिन्टेण्डेण्ट आज उदासीन व चिंतित दिखाई देते थे। उनके साथ मन बहलाने को दो बाजी बाहर चांदनी में चबूतरे पर शतरंज खेला।

३-४-३९

एक ब्राह्मण-स्त्री अपनी बहू को लेकर माताजी के यहां जा रही थी, घाटी पर मिल गई। उसका पति, जिसका नाम भोगीलाल है, बाजार चान्दोड़ में हमाली करता है। स्त्री बहुत ही सरल व भोली दिखाई दी। इसके लड़के

का नाम दुर्गा है। शायद ये लोग दान-भिक्षा नहीं लेते।

आज तीन दिन के अखवार एकसाथ आये; देखे, वापू ने जयपुर, रच-नात्मक कार्य व सत्याग्रह की शर्तों पर लिखा।

श्रीमती सरोजनी नायडू ने वायसराय के साथ पार्टी में भोजन किया।

यूरोप की स्थिति। लखनऊ में जो दंगा हुआ, उसमें मुझे तो कांग्रेस वालों की गलती ज्यादा दिखाई दी। सभा के सभापति डा० सप्रू थे। सर श्रीवास्तव की भी चालाकी तो है।

वर्तमान दुनिया की हालत से भविष्य ठीक नहीं दिख रहा है; चारों ओर अशांति पैदा हो रही है।

४-४-३९

रास्ते में कुछ मुसलमान मिल गये। उन्होंने दो गायन सुनाये।

मोरागढ़, जहां सव इन्स्पेक्टर रहते हैं, के कुएं का पानी अनाज हजम करने में ठीक है। आज से वह मंगाना व पीना शुरू किया।

पूर्णिमा थी। सो रात में वाहर चबूतरे पर १२ वजे तक रहे; शतरंज भी खेली।

कुशलसिंगजी ने मक्खी उड़ाने के वारे में, चार मूर्खों के व्यवहार की सुन्दर वार्ता (कहानी) कही। मूर्ख नौकर व मित्र से वड़ी भारी हानि उठानी पड़ती है। इन्हें वार्ताएं बहुत आती हैं।

५-४-३९

सामने की पहाड़ी की ओर जंगल में घूमते रहे। झाड़ों पर भूरे, काले व लाल फूल (पलाश के) खूव फूले हुए देखे, सुहावने मालूम होते थे। पांच मील से शायद ज्यादा घूमना हुआ।

राजाजी की जेल डायरी, थोड़ी देर सुवह व शाम को पढ़ी।

चर्खा। ता० ३ के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' व 'स्टेट्समेन' रात में पढ़े।

आज शाम को परमात्मा का चिंतन ठीक हुआ, मन को शांति व समाधान मिला।

अखवार में—जयपुर के मुसलमानों ने हिजरत शुरू कर दी। ता० २-४ को लगभग ५५० मुसलमानों ने रिवाड़ी के टिकट कटाये। सात डिब्बे रिजर्व थे। कई हजार मुसलमानों ने कुरान की सौगंध खाकर प्रतिज्ञा की

है कि गोलीवार का व मस्जिद का समाधान-कारक फैसला नहीं हुआ तो ता० २१-४ से सत्याग्रह शुरू करेंगे।
जयपुर अधिकारियों की मूर्खता की कमाल है।
ता० १-४ का हिटलर का भाषण पढ़ा। भाषण ठीक मालूम हुआ। ब्रिटिश सरकार की उसने ठीक खबर ली है। उसने कहा है:
Speaking of those who divide the nations into virtuous and non-virtuous, Herr Hitler said, "For 300 years Britain acted unvirtuously and now in her old age she speaks of virtue."
उसी तारीख को मुसोलिनी ने कहा:
"If there is no sufficient space for us, some-one must give it to us," "neither printed paper nor ink will stop us, because above them are our will and our blood."

६-४-३९

घूमना, करीब चार घंटे, अंदाज सात माइल। लोडा की ढाणी तक, जहां ब्राह्मणों की गुवड़ी है; कुछ लोग चान्दोड़ गये हुए हैं, वहां रास्ते में जाते-आते सात-आठ ढाणियां आईं। एक बूढ़ी व अंधी ब्राह्मणी को एक रु० दिया।
आज सारस पक्षी के पचासों जोड़े खेत में दाने चुगते हुए देखे। एक गूजर ने बहुत प्रेमपूर्वक आग्रह किया कि पावेक दूध पीलो।
लालसोट से मूलचन्द नाई आया। बाल काटे। भोजन में आज घी नहीं था। दामोदर ब्राह्मण से कहा कि वह आज से सामान मोरा से ले आया करे। भंवरसिंह व रामनाथ सामान लाने में बहुत ही लापरवाही करते हैं। कई दिनों से ये लोग घड़ी-घड़ी सामान के बहाने बामनवास मोटर ले जाते हैं और वहां दारू वगैरा पीते हैं, जिससे पैसा व समय बिगड़ने की सम्भावना है।
श्री कुशलसिंगजी से कह दिया कि उपरोक्त दोनों सी० आय० डी० वालों का समय प्रायः दारू पीने, तीतर वगैरा पक्षी मारने व पत्ते खेलने और सोने में बीतता है। इनसे दूसरे अधिकारी—हवलदार व सिपाही भी डरते हैं, क्योंकि ये लोग ऊपर के अधिकारियों के मुंह लगे हैं और उन्हें डर

लगता है कि ये झूठी चुगली या शिकायत कर देंगे।
कुशलसिंगजी ने रामायण सुनाई। चर्खा काता।
कुशलसिंगजी ने एक बादशाह की बोधदायक कहानी कही, जो एक भड़-भूजे के यहां नौकर था। कुशलसिंगजी से गुरु-प्राप्ति पर भी ठीक विचार-विनिमय होता रहा।

७-४-३९

टेकड़ी की परिक्रमा की, पांच मील से ज्यादा घूमना हुआ, एक जूने पीपल के नीचे आराम लिया, गूजरों की रिवाज समझी।
तुलसी रामायण का पाठ किया।
आज दूसरे कुएं से पानी मंगाया था। पानी का स्वाद तो खराब था, परन्तु पेट को साफ करने में मदद करता मालूम हुआ।
चर्खा काता। राजाजी की जेल डायरी पढ़ी।
कुशलसिंगजी ने, रात को लुहार के यहां काम करने वाले राजा की वार्त्ता कही। एक दूसरी वार्त्ता भी कही। दोनों अच्छी थीं।

८-४-३९

आज रेवाशी की घाटी से, ऊपर पहाड़ पर चढ़े। वहां से दो मील करीब हरदेव नाम का एक बूढ़ा गूजर मिला, जिसकी उम्र ९०-९५ के करीब होगी।
इसे आंख से दिखता नहीं, कान से सुनाई भी बहुत कम देता है। बड़ा सरल व सीधा आदमी मालूम हुआ। इसके लड़के का नाम रणजीत गूजर है। हरदेव के पास एक पांच-सात वर्ष की लड़की सेवा में रहती है। गूजर बालक बघेरे वगैरा से नहीं डरते। बहादुर होते हैं।
हरदेव के लिए रोज नीचे से भोजन व पानी आता है।
यहां रहने से घूमने की हिम्मत व अभ्यास ठीक बढ़ रहा है।
मेहतर के बालक ने सुन्दर भजन सुनाये।
अभ्यंकर मेमोरियल के लिए दादा धर्माधिकारी को पत्र लिखा।

९-४-३९

घूमते हुए आज पानी की तलाश करने निकले। जहां से पानी आता था, वह कुआं खराब निकला; उसमें खूब बदबू आती थी, पानी निकलता भी

नहीं था। दूसरा कुआं गुढ़ा के बाग में देखा। हजारी (मोना लड़का) बीमार था, वाड़ा में उसको देखा। उसकी मां आंखों की तकलीफ से बहुत ज्यादा पीड़ित है।

मेरे नाम कुछ पत्र गंगापुर की डाक से आये हैं, वे मुझे जयपुर से इजाजत आने पर शायद दिये जायेंगे।

भंवरसिंह व रामनाथ की लापरवाही तथा दारू आदि के बारे में डि० सु० (श्री कुशलसिंगजी) से बात करते समय क्रोध व गरमागरमी। मेरी विचार-पद्धति व इनकी विचार-पद्धति में इस बारे में बहुत ज्यादा फर्क है। मेरी यह समझ होती जाती है कि ये अपने नीचे के लोगों पर दूसरी धाक तो नहीं ही रख सकते, परन्तु नैतिक धाक भी नहीं रख सकते।

इनके कहने में और करने में काफी फर्क दिखाई देता है। इन्हें मेरे अंदर दो दोष खास तौर से दिखाई देते हैं; एक तो यह कि मैं छोटी-छोटी बातों का ज्यादा ख्याल करता हूं, दूसरे मुझे बड़ाई ज्यादा पसन्द है। हो सकता है, यह सच हो, परन्तु इस कारण इनकी योग्यता तो नहीं बढ़ पाती।

पान में कत्था ज्यादा पड़ गया था, ऐसी मन में शंका पैदा हो जाने से, बिना कारण ही दूसरे पर अन्याय न हो जाय, इसलिए पान न खाया जाय तो अच्छा है, यह तय किया।

राजाजी की जेल डायरी पढ़ी। मन को थोड़ा समाधान मिला।

१०-४-३९

'मधुकर' में पढ़ा—'स्वच्छतेचें इन्द्रिय आवरा।' घूमने, भंवरसिंग व मिश्री साथ में।

रेवाशा के बगीचे में समाधि पर बैठे, परमात्मा का चिन्तन किया। रणजीत गूजर को मेरे फेरने की माला, उसके बृद्ध पिता हरदेव गूजर के लिए दे दी। आज रणजीत गूजर की मां मिली। बूढ़ी होशियार व बहादुर मालूम हुई। डूंगर पर ढोर चरते हैं उसका भी महसूल लेना शुरू कर दिया; दुःख से यह फरियाद की।

एक बूढ़ा राम बगुस तमोली जिसका जन्म सं० १९२० के आसपास हुआ होगा, कहने लगा कि इन अंग्रेजों ने रेल चलाकर सत्यानाश कर दिया। चारों तरफ से स्वर्ग से भी पान आने लग गये। हम लोगों का रोजगार

मारा गया। राज्यवाले भी बहुत अन्याय करते हैं, महसूल बढ़ा दिया। आदि।

भंवरसिंग राजपूत सिपाही (सी० आय० डी०) ने होली के समय से जो लापरवाही का व अनुचित व्यवहार शुरू कर रखा था, वह उसने आज सब स्वीकार किया और रामनाथ की संगत से दारू पीना शुरू कर दिया, उस कारण सब अनुचित बातें हुईं, कोचर पहाड़ का किस्सा तथा अन्य बातें कहीं। उसने विश्वास दिलाया कि वह न दारू पियेगा, न इस तरह का कोई कसूर करेगा। उसे भली प्रकार समझाया; मन को समाधान मिला। मेरी भी आंख में पानी आ गया।

राजकोट का फैसला पढ़कर सुख व समाधान मिला। बापूजी फिर वाय-सराय से मिलकर राजकोट गये।

जयपुर में खादी प्रदर्शनी ता० ९-४ को भूलाभाई के सभापतित्व में होने वाली थी।

जयपुर से मुसलमान जा रहे हैं।

चर्खा कात रहा था तो डि० सु० कुशलसिंगजी ने एकाएक कहा कि कमलाबाई व सावित्रीबाई आपसे मिलने आई हैं, मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि कमला व सावित्री इस हालत में कैसे आई होंगी। पर बाद में देखा तो ब्रिजलालजी बियाणी की स्त्री सावित्रीबाई व लड़की कमला व भागीरथजी कानोडिया व मदनलाल कोठारी रामप्रसाद के साथ आये हैं। सबोंसे मिल-कर सुख मिला। बातचीत,विनोद, भोजन। ता० १० के अखबार भी आ गये।

प्रताप सेठ का प्रेम अद्भुत है। बापूजी राजकोट पहुंच गये।

इटली ने अलबानिया पर कब्जा कर लिया।

जयपुर की खादी प्रदर्शनी ठीक हुई। सर बिचम ता० १७ को जाने वाले हैं। मि० टॉड आवेंगे, जयपुर अधिकारी सख्त हैं। कोई निश्चय नहीं कर पाते। लामा के मित्रों को वहां की हवा-पानी आदि अनुकूल नहीं। भागीरथजी की समझ है कि तीन-चार सप्ताह और लगेंगे। घनश्याम-दासजी बिड़ला की समझ है कि शायद अधिक समय भी लग सकता है। उनको प्रजामंडल के कार्यों से व सत्याग्रह से, समाधान नहीं है। खर्चा बहुत

ज्यादा हुआ और मैं जाकर अन्दर बैठ गया। मेरी लड़ने की वृत्ति है, आदि उनके विचार हैं।

मैंने कहा कि उनकी वृत्ति व कार्य-पद्धति में व हम लोगों के पद्धति में काफी फर्क है। मैंने यह तो पहले ही कह दिया था कि जिनको असंतोष हो, उनसे सहायता न ली जाये। मि० यंग की बात का कोई मूल्य नहीं। परमात्मा सब ठीक करेगा, इसका मुझे पूरा विश्वास है।

ठीक अनुभव मिल रहा है। जयपुर राज में खूब काम करना होगा।

चि० शान्ताबाई का पत्र आज मिला। चि० नर्मदा ने राधाकृष्ण के नाम जो पत्र लिखा वह पढ़ा। चिन्ता व दु:ख हुआ। परमात्मा इसे आरोग्य व सुखी करे। ऐसी हालत में आपरेशन करना भी ठीक नहीं; भावी जो होने वाला है, वह होगा। चिन्ता करने में क्या लाभ ! केशर प्रेम व मूर्खता के कारण दु:खी होगी

११-४-३९

घर के लोगों को पत्र लिख रखे।

शतरंज खेली। उमरावसिंह मेरे से अच्छी खेलते हैं।

उमरावसिंह अलीगढ़ जिले के राजपूत हैं। तोतारामजी राठी का ग्राम व इनका गांव एक ही है।

यहां यंग सा० के पास जो क्लर्क हैं, वे होशियार मालूम होते हैं।

ता० ११ का जो अखबार आया वह भी पढ़ा। बापू ने अपने लेख में वायसराय से मिलना, राजकोट के बारे में उपवास करना, त्रिपुरी नहीं जाना, फेडरल कोर्ट के चीफ जज से फैसला करवाना, दिल्ली इतने रोज न बैठे रहना, इत्यादि बातों का खुलासा किया।

उपवास के बारे में बापू की नकल दूसरा कोई न करे तो अच्छा है।

सुभाष का स्टेटमेंट; गरीब बेचारे सुभाष ! रहा-सहा सब भ्रम दूर होते देख बुरा भी लगता है, दया व क्रोध भी आता है।

रामदुर्ग स्टेट (जो कर्नाटक में है) में जनता की ओर से हुई भयंकर हिंसा के समाचार पढ़कर दु:ख व चिन्ता हुई। इस घटना का विचार करने पर तो एक बार स्टेटों का सत्याग्रह स्थगित किया गया, यह ठीक हुआ। अन्यथा रोष, द्वेष, उत्तेजना ज्यादा फैल जाती व बाद में सम्भालना कठिन

हो जाता।

१२-४-३९

आज माता का मेला, रासना के आते 'आंबड़ा' में था। बन्दे से करीब पांच मील। वह देखा।

वहां जयपुर राज्य की या इस जिले की चीज बहुत थोड़ी मालूम हुई। मिट्टी के बरतन व टोकरियां वगैर तथा थोड़ा लोहे का सामान भी था। बाकी तो विदेशी वस्तुएं बहुत ज्यादा थीं। इस जिले की गरीब जनता-जनार्दन के ठीक दर्शन हुए। उनके रीति-रिवाज भी देखे। गरीबों में भी लोगों को उत्साही व आनन्दी देखकर शिक्षा मिली। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियां ज्यादा बहादुर व मेहनती हैं।

इन मेलों में मर्द व औरतें अश्लील गीत गाती हैं। मैं तो सुन ही नहीं सका। नाच तो बराबर देखा ही नहीं। उसमें सुधार होकर अच्छे गीत व उपदेशपूर्ण भजन-गायन आदि की प्रथा हो जाये तो ठीक हो।

उपरोक्त ग्राम घूला ठाकुर सा० का है, जो खेड़े के पास ही है। उन्हींके तम्बू में बैठे रहे। जल्दी वापस आने का इरादा था, परन्तु साथियों की तैयारी नहीं थी।

पैदल आना चाहता था, परन्तु उमरावसिंह ने राज्य के ऊंट देवता पर बिठाकर भेजा। प्रेमपूर्वक आग्रह करके ऊंट महाराज पर सामने के आसन पर बैठा। थोड़ी दूर चलने पर ऊंटजी एकाएक बैठ गये। सवार ने समझा कि यह दूसरे ऊंट को देखकर बैठ गया। सच बात तो यह मालूम देती थी कि ऊंटदेव मेला छोड़कर जाना बिलकुल नहीं चाहते थे। बाद में पीछे के आसन पर बैठा। ऊंट ढीला तो था ही, साथ में इतने धीरे चलता था कि पीछे के आदमी जो पैदल चलते थे वे आगे चले गये। मैं भी तंग आ गया।

१३-४-३९

मिश्री, चारण लड़का, जो करीब दस वर्ष का है, उसे मेले के लिए दो आने इनाम में दिये थे, उसने हिसाब बताया—टोपी २, कंठी ३ का १, कांच १, चने १, ककड़ी १, पुड़ी (पापड़ी) १, लूंजी (आलू) १। इस प्रकार उन पैसों का हिसाब बताया।

रामनाथ अखबार व पोस्ट लाया। ता० १२-४ का अखबार देखा। राज-

कोट ठाकुर फिर गड़बड़ी कर रहा है, यह देखकर आश्चर्य व चिंता शुरू हुई। विश्वास होता है कि आखिर में सब ठीक हो जायेगा। बा के स्वास्थ्य का ठीक होने का समाचार मिला।

हैदराबाद स्टेट-कांग्रेस के करीब चार सौ कैदियों को ता० १०-४ को छोड़ दिया गया। यह एक तरह से ठीक हुआ।

यूरोप का वातावरण काफी अशांत होता जा रहा है।

इस वर्ष का भविष्य विश्व भर के लिए बहुत ही अशांत व चिन्ताकारक मालूम हो रहा है।

आज राष्ट्रीय सप्ताह का आखिरी दिन है; विचार आते रहे।

'सर्वोदय' देखना शुरू किया। विनोबा का प्रवचन ठीक नहीं छपा। कई पृष्ठ दुबारा लग गये। गांधीवाद-साम्यवाद के प्रश्न-उत्तर ठीक हैं।

रामदुर्ग स्टेट के संबंध में श्री गंगाधरराव देशपांडे का स्टेटमेंट देखा; अच्छे राजा के होते हुए भी ऐसी घटना हुई! आश्चर्य है।

चि० नर्मदा, गंगाविसन, शान्ता, मदू, जानकी देवी को पत्र लिखे।

१४-४-३९

घूमने गया, देवराम साथ में। चार, साढ़े चार मील के करीब। एक बूढ़ा ७० वर्ष का मिला। उसके यहां पोता हुआ; खाने को कुछ नहीं। एक रुपया दिया। राजाजी की जेल डायरी, जिसका गुजराती अनुवाद जुगतराम दवे ने किया, ता० २१-१२-२१ से २०-३-२२ तीन महीने की है। राजाजी तीन मास जेल में रहे, उस समय के उनके कई अनुभव विचारणीय हैं।

'मधुकर' आज ठीक पढ़ा गया। चर्खा भी शाम से पहले काता। उमराव-सिंह के साथ आज शतरंज भी ठीक खेला गया, मन लगा।

उमरावसिंह ने कहा कि भवरसिंह अपने काम से जयपुर जा रहा है; पत्र वगैरा भेजने हों तो लिख दें; सो पत्र लिखे। कल रात को जो पत्र लिखे थे वे उमरावसिंह ने अरजेंट भिजवाने को कहकर वामनवास जाकर पत्र जयपुर भेजकर आया। इन पत्रों में चि० नर्मदा के आपरेशन के बारे में नर्मदा व गंगाबिसन को लिखा है, चि० शान्ता, मदालसा व उमा के प्रोग्राम के बारे में भी लिखा है।

१५-४-३९

भंवरसिंह के हाथ पत्र भेजे—पू० बापूजी को राजकोट, महादेवभाई को दिल्ली, केशवदेवजी, बम्बई, नवीनचन्द्र खांडवाला, वी० एम० जोशी पूना, व डब्ल्यू० एस० सालपेकर, देहली।

नवीनचन्द्र खांडवाला डाक्टर्स बंगलो सांताक्रुज को तार भी भेजा।

साढ़े छः बजे घूमने रवाना हुए, रामनाथ सिपाही साथ में। सवा दस बजे पैदल ही वासनवास पहुंचे। वापस आते हुए, जो मोटर भंवरसिंग को छोड़ने गई थी, उसमें आये। मोटर के मीटर में वामनवास से बन्दा सात मील एक फर्लांग निकला। रामनाथ वगैरा नौ मील कहा करते थे।

वामनवास जाते समय रास्ते में, बापू को पत्र लिखा, उसपर विचार चलता रहा। हृदय भर आया। श्री भरतजी की चौपाई—हृदय हेरि हारेउ सब ओरा। एकहि भांति भलेहिं भल मोरा।। गुरू गुसाइं साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिणामू।। यह याद आती रही।

अलवर स्टेट में सरदार नाथासिंह की ता० ४-४ को ९६ वर्ष की उम्र में, मृत्यु हुई। पहचत्तर वर्ष पहले मिलिट्री में दाखिल हुआ था। छ: फुट से ऊंचा था, और घूमते समय सीधा चलता था।

ता० १४-४ के 'प्रजामित्र' में 'सीकर में भारी जुल्म' की खबर आई कि तहसीलदार ने पूर्णा गांव लूट लिया और मारपीट की ज्यादतियों आदि की खबरें थीं।

आखिर में रावराजा व सीकर-काण्ड के सात जनों को एक वर्ष की सजा सुना दी गई। एक शिव भगवान को छोड़ दिया गया।

जयपुर-दरबार ने कमेटी का एलान किया है।

राजकोट का अभी तक कोई रास्ता नहीं बैठा है—और यूरोप की हालत चिंताजनक हो रही है।

१६-४-३९

घूमने, रेवाशाकुंड पर स्नान, समाधि पर प्रार्थना। मेघाराम साथ में। आज छः मील से ज्यादा घूमना हुआ, थकावट मालूम देने लगी।

'मधुकर' आज पूरा किया, बहुत ही उपयोगी है। दादा से कहना इसका सुन्दर हिन्दी अनुवाद अवश्य करवाना चाहिए। मेरे लिए तो कई प्रकरण

विचारणीय व लाभकारक हैं।

दूध का प्रयोग शायद कल से बन्द करना पड़े। एनिमा वगैरा का यहां साधन नहीं व फल भी नहीं मिलते।

बालकों के लिए ठाकुर राजबहादुरसिंग का लिखा 'स्वामी रामतीर्थ' ठीक है। बालकों को व बड़ों के लिए भी उपयोगी है।

ठाकुर भवानीसिंगजी उमरावसिंग से मिलने आये थे।

''सर्वोदय' अंक ६ पृष्ठ ३२ गांधीजी ने कहा है—

'जिसने बंधुत्व की भावना को हृदयस्थ कर लिया है, वह यह नहीं कहेगा कि उसका कोई शत्रु है।''

१७-४-३९

हजारी मीणा के विवाह की तैयारी चल रही है। टीबड़ेवाला कुंवा देखा, इसका पानी ठीक बतलाते हैं।

एक बूढ़े मीणा ने मेरी उमर पूछी; मैंने पचास कहे, तो उसने कहा कि मैंने तो १०७ सुनी है।

मेवाराम हवलदार ने रामनाथ सिपाही के दारू पीने की शिकायत के बारे में मुझसे पुछवाया। मैंने रामनाथ को उसकी लापरवाही, दारू पीने व शिकार वगैरा में वह और भंवरसिंग किस तरह पागल हो गये थे, यह बतलाया। यह भंवरसिंग का दोष बतलाता है, भंवरसिंग इसका। श्री उमरावसिंग ने भंवरसिंग को बहुत ज्यादा झूठ बोलनेवाला बताया। उन्होंने कहा कि वह राजपूत नहीं, बारी है। यह सुनकर आश्चर्य हुआ। बाद में उन्होंने एक-दो घटनाएं इसकी और भी बतलाईं। इनकी राय में भंवरसिंग से रामनाथ सच्चा है।

'सर्वोदय', अप्रैल का ६ वां अंक, आज पूरा किया। डा० पट्टाभि ने प्रो० गिल्बर्ट मरे का उतारा नीचे मुजब दिया—

''ऐसे आदमी के साथ सावधानी से पेश आओ, जिसे न तो वैषयिक सुखों की रत्ती-भर भी परवाह है न आराम, प्रशंसा या पद-वृद्धि की, बल्कि जो केवल उस काम को करने का निश्चय कर लेता है, जिसे वह ठीक समझता है। ऐसा आदमी भयंकर और दुःखदायी शत्रु है, क्योंकि उसके शरीर पर तो तुम आसानी से विजय प्राप्त कर सकते हो, पर उसकी आत्मा पर

तुम्हारा जरा भी कब्जा नहीं हो सकता।"
रात को देर तक ता० १५-१६ के अखबार पढ़ता रहा। चि० राधाकिसन का स्टेटमेंट ता० १६-४ के हिन्दुस्तान में छपा है। वह मेरी वर्तमान मनः-स्थिति के खिलाफ पड़ता है। उसे पत्र लिखना है। राजकोट का रास्ता नहीं बैठा व यूरोप में लड़ाई के बादल जोर के हो रहे हैं।

१८-४-३९

रामनाथ ने अपनी स्थिति, दारू पीने की, लापरवाही आदि की सफाई दी। समाधान तो नहीं हुआ; पर मैंने जो भंवरसिंग को कहा था, वही इसे कह दिया।
अखबार देखे। नेतरामसिंग आदि किसान-मित्रों की हालत ठीक नहीं है, यह पढ़कर चिन्ता हुई।
चि० राधाकिसन के नाम पत्र लिख रखा।
डा० भवानीसिंगजी (गढ़वालों) से धार्मिक व सामाजिक रूढ़ि आदि पर विचार-विनिमय।
राजकोट में ग्रामिये (भयात) लोगों ने बापू की प्रार्थना के समय भद्दा प्रदर्शन किया, वह पढ़कर दुःख व आश्चर्य हुआ। मुझे तो अब विश्वास हो रहा है कि राजकोट ठाकुर का व दरबार वीरावाला का विनाश-काल नजदीक आ रहा है। वहां के मुसलमानों को लीग (जिन्ना) के लोगों ने भड़काया, मालूम देता है। राजकोट का मामला बड़ा पेचीदा बन गया है। दूसरी स्टेटों पर इसका बुरा असर पड़ेगा।
सर वीचम का चार्ज ता० १५-४ को मि० टॉड (भरतपुर के पोलिटिकल एजेण्ट) ने ले लिया।
कलकत्ता में आल इंडिया की सभा हो रही है; भविष्य ठीक नहीं मालूम दे रहा है।

१९-४-३९

मेवाराम (जाट) हवलदार की बदली हो गई।
भला व ईमानदार दिखता है। उमरावसिंग (राजपूत) भी आज चला गया। वह होशियार व भला मालूम दिया।
आज अन्न न लेने का पांचवां रोज है। कल से आज ताकत व उत्साह ठीक

मालूम होता है।
उमरावसिंह के साथ एक बाजी शतरंज, बाद में चर्चा।
चि० कमलनयन, जगदीश पोद्दार, चिरंजीलाल बड़जाते, मदन कोठारी मिलने आये, व्यापार, इनकम टैक्स, जाने-आने के बारे में (गर्मियों में) सलाह-चर्चा की। मोराकुंड गये। वहां स्नान किया, इन सबों का भोजन हुआ। बाद में सब वापस गये।
डा० गुप्ता (लालसोटवाले) आये। वजन किया १९१ पौंड हुआ। डा० ने कहा कि कल से थोड़ा अनाज शुरू करें, पानी ठंडा पीकर देखें व फल तथा दही ज्यादा लें। उन्होंने और सब तपास कर कहा कि सब बहुत ठीक है; (याने पहले से भी ठीक है)।
अखबार ता० १८-१९ के आये, सो पढ़े। राजकोट की हालत खराब होती जा रही है। अखबार वालों ने बापू को कोसना शुरू कर दिया। प्रजा में भी भेद डाला जा रहा है। मुझे तो इसमें वहां के पोलीटिकल एजेण्ट व वायसराय की नीति पर भी सन्देह होने लग गया है; जयपुर के कारण भी।

२०-४-३९

टोडा व टुण्डला जाकर आये। रास्ते में एक बूढ़ी (मीनी) नंगे पैरों से तेजी से जा रही थी। मुझे देखकर रास्ते से हट गयी। मैंने पूछा कि बुढ़िया, कहां जाती है? उसने गांव का नाम बताया और कहा कि मैं तेजी से इस-लिए चलती हूं कि पीछे दिन चढ़ने पर जमीन गरम हो जायेगी।
मैंने पूछा, जूती क्यों नहीं पहनती? (यहां प्रायः सभी स्त्रियां जूती पहनती हैं।) उसने कहा कि इस साल खेती पकी नहीं, जूती कहां से लेती? उसकी बातचीत, चेहरा, हिम्मत, रंगरूप देखकर मुझे 'मां' की याद आई। मैंने उसे रोक कर जूती के लिए एक रुपया दिया। मन-ही-मन व ऊपर से प्रणाम किया, आंख भर आई।
(कल चिरंजीलाल छोड़ दिये गये।) 'विविध-वृत्त' ता० १६ अप्रैल, पृष्ठ १८ में डा० श्री ना० बारवे (पूना वाले) का 'अर्धवट गांधी-विनोबा भावे' नामक लेख पढ़कर आश्चर्य व बुरा मालूम हुआ। इन्होंने पहले भी कुछ लेख लिखे हैं। मौका लगे तो उन्हें पढ़ना है। श्री हरीभाऊ फाटक ने इनकी

बहुत तारीफ की थी।

आज पांच रोज बाद बारह बजे के बाद अन्न का भोजन शुरू किया। दलिया, कढ़ी, साग, दो फुलके। संतरा, आम और दोपहर को आंवला। शाम को दूध, एक आम, एक केला, ६-७ लुकाट व आधा पपीता लिया।

कातते समय छिपकली ऊपर (हवादान) से पेट पर पड़ी व नीचे उतर कर चली गई।

कुशलसिंगजी ने कहा, यह बहुत अच्छा सगुन हुआ है; अब आप जल्दी ही चले जायेंगे। छिपकली का नीचे से ऊपर चढ़ना बुरा सगुन समझा जाता है; ऊपर से नीचे उतरना अच्छा।

२१-४-३९

जायरा में धन्नू मीणा के घर गये। वह तो मिला नहीं, उसकी स्त्री व लड़का गंगाबिशन मिला, उसके घर बैठे।

गोविन्दसिंग राजपूत दूर तक साथ आये। यहां धन्नू भगत व गणेश भगत रहते हैं, उन्होंने इनका परिचय बताया।

मुसलमान बनजारों से मिलना। रोटी रखने की दो पिटारियां लीं। एक रुपया दिया।

कुंवरीलाल मीना (बाडवाला) मिलने आया।

२२-४-३९

आखातीज के कारण जायरा में धन्नू भगत (मीणा) व गणेश भगत (खंडेलवाल महाजन) को मिलने गये। रामनाथ सिपाही साथ में। धन्नू तो विवाह में गया था। उसके लड़के गंगाधर, गंगाबिशन, (सरपंच) हरगोविंद, व उसकी स्त्री मिली। आज पहले से ही विचार कर गये थे कि इनके प्रेमपूर्वक निमंत्रण से शुद्ध अन्न मिलेगा तो खावेंगे। श्री कुशलसिंगजी भी भंवरसिंग के साथ आ गये।

धन्ना भगत के घर भोजन। उम्मीद तो जौ की रोटी व राबड़ी की थी, परन्तु दुर्भाग्य से सीरा, पूड़ी व मिरची डाला हुआ साग था। थोड़ा पानी पिया।

गणेश खंडेलवाल, उमर ७५ के ऊपर, दमे व दस्तों की बीमारी से कष्ट पा

रहा था। इसका छोटा भाई, जो ७० के करीब का है, वह भी कष्ट पा रहा था। गणेश की दूसरी स्त्री खूब सेवा करती थी। लड़का छाजू भी सेवा-भावी व सदाचारी है। गणेश भगत की हालत बहुत ही खराब है, तो भी स्वाभिमान है।

इसी गांव में एक जीवन (माली) जिसका जन्म सं० १८९७ के आखिर में हुआ, १०० के करीब का है, उससे मिले। उसकी मां सौ वर्ष के ऊपर की होकर मरी। एक ब्राह्मण भी यहां सौ वर्ष के करीब होकर तीन वर्ष पहले मरा। इस गांव में बूढ़े बहुत हैं। यहां का वातावरण, धन्ना के कारण, अच्छा हो रहा है।

बुद्धि (मेहतर के लड़के) ने इकतारे पर सुन्दर भजन सुनाये। अखबार आये। ता० २०-४ के अखबार में राधाकिसन ने प्रजा मंडल की ओर से ता० १२ जयपुर सरकार ने कमेटी कायम की, उसके विरोध में स्टेटमेंट निकाला है। यह जल्दी निकलना चाहिए था।

२३-४-३९

मीणा कोलता तक जाकर आये, सात-साढ़े सात मील। मीणा कोलता में जयमाल मीणा सज्जन पुरुष है, उसके घर थोड़ा दूध लिया। पुष्पा मीणा ९० वर्ष के करीब का, अंधा है। उसे एक रु० दिया। यहां वरोडे में रहने वाले गौड़ ब्राह्मण हैं।

गूजर कोलता के पुष्यु जमादार (चमार) की लड़की का विवाह था, उसने आग्रह किया तो वहां गये। बरातियों ने दो अच्छे भजन सुनाये।

कल से याने आखा तीज के, इतने ज्यादा विवाह इधर हो रहे हैं कि इस जंगल में भी चारों ओर सैकड़ों बींद की चहल-पहल हो रही है। ८ वर्ष से लगाकर २०-२५ वर्ष के बींद व ६ वर्ष से लगाकर १३-१४ वर्ष की बीनणियां।

ता० २१-४ का 'हिन्दुस्तान' देखा। बापूजी को राजकोट में ज्वर हो रहा है। राजकोट तो बापूजी की पूरी ताकत ले रहा है। मि० जिन्ना व डा० आम्बेडकर भी जान लेने वहां पहुंच गये हैं। श्री राजा (हरिजन नेता) ने भी मद्रास से हल्ला मचाना शुरू कर दिया, बापूजी ता० २६ को कलकत्ता पहुंचने वाले हैं।

सुभाष व जवाहरलाल ता० १९-४ को बिगवाड़ी (झरिया) में मिले, बातें। बहुत सी जगह आग से, मोटर दुर्घटना से—बंगाल में बहुत हानि हुई। यह वर्ष बहुत ही भयंकर बीत रहा है।
In view of the grave international situation, Mr. Winston Churchill to join the cabinet ?

२४-४-३९

दरबारीलालजी की गीता देखी।
चर्खा व शतरंज। शाम को बाड़े तक घूमने गये। चबूतरे पर बैठे।
दामोदर रसौया (दौसा वाले) को स्थाई नौकरी मिल गई। वह सुबह चला जायेगा, दूसरी व्यवस्था करनी होगी।

२५-४-३९

खेड़ा धुलारावजी के जाकर आये; आधे घंटे करीब खेडा में ठहरे। यहां अग्रवाल महाजनों के घर ज्यादा हैं। गंगाधर छीपा जन्म अंध है, जो पीस कर गाय, दुहकर व कुंवे में से लोटा वगैरा निकालकर गुजरान करता है। उसे एक रु० दिया। ओंकार चमार ने भजन सुनाये।
जयपुर से अखबार आये ता० २३-२४ के। राजकोट का रास्ता जल्दी बैठने की कुछ आशा दिखाई देती है।
भंवरसिंह सिपाही (सी० आई० डी०) की बदली हुई। वह आज दुखी था। उसे दुखी देखकर बुरा मालूम हुआ। जोकि यह बहुत ही झूठ बोलता है— यह जात का बारी होकर भी अपने को राजपूत कहता रहा, और भी कई ऐब हैं, तो भी इसके सुधरने की आशा हो गई थी। आज ही से इसने घूमते समय भजन सुनाना शुरू किया था।
जयपुर से यहां, डाक वगैरा के लिए, ऊंट आने की खबर आई है। इससे विश्वास हो गया कि अब यहां आराम से ठीक समय तक रहने को मिलेगा। कुशलसिंगजी से कहा है कि जयपुर से गायों के लिए पानी की व्यवस्था तथा ऊंट पर बैठकर घूमने आदि के बारे में पुछवा लें।

२६-४-३९

जानकी देवी, उमा, पेरीनबेन, लक्ष्मणप्रसादजी, राजेन्द्रबाबू, राधाकिसन को भंवरसिंग के साथ पत्र भेजे।

एक झाड़ के नीचे देर तक बैठे रहे व चूहों का खेल देखते रहे। शेजपुर मीणों के गांव में हनुमानजी के चबूतरे पर बैठे। पीपल व बोर के झाड़ बहुत पुराने मालूम हुए। छाया ठीक थी। नारायण मीणा पटेल मिला। मोटर में वापस आये। बहुत दिनों के बाद मि० यंग का खानगी पत्र, दोसासे भेजा हुआ, मिला।

राजकोट का फैसला नहीं हुआ। बापू कलकत्ता रवाना हो गये।

वर्धा से कालूराम का तार मिला : 'सावधान व चित्रा' केस की अपील जो उन्होंने की थी, खारिज हो गई; नीचे की कोर्ट का फैसला जो अपने पक्ष में था वही कायम रहा।

बिचारे कुशलसिंगजी की, कांग्रेस व उसके कार्यकर्त्ताओं के बारे में, विचित्र कल्पना है। मुझसे पूछते थे आप कितना अलाउन्स लेते हैं? क्या कांग्रेस के पास दो तीन करोड़ रुपये हैं, इत्यादि। लहरी व आरामी जीव हैं; आज-कल तो मस्त रहते हैं।

२७-४-३९

'जैकल व हाइड' पढ़ी उसके पढ़ने से मन में प्रायः विचार आते रहे। भविष्य के जीवन के बारे में भी कई प्रकार के विचार आते ही रहते हैं। किसी जबरदस्त साथी (मित्र) के बिना सफलता कठिन है।

'गांधी सेवा संघ' की १९३८ की रिपोर्ट देखी। कई प्रकार के विचार मन में पैदा हुए।

२८-४-३९

हजारी मीणा से उसके विवाह के खर्च व रीति-रिवाज समझे। पांव में मालिश करवाई।

कई दिनों से हिन्दी अखबार नहीं आता है।

राजकोट के मामले पर बापूजी ने दुखित हृदय से जो स्टेटमेंट दिया, वह पढ़ा। एक बार तो बुरा भी लगा और दुःख भी पहुंचा, तथापि यह विश्वास है कि परमात्मा ने किया तो जल्दी ही कोई समाधान-कारक रास्ता निकल आवेगा। बापू को व सरदार को खूब कष्ट व दुःख पहुंचना स्वाभाविक है। सुभाषबाबू के कारण कलकत्ता का वातावरण खूब गन्दा हो रहा है। सरदार आल इंडिया कां० क० की बैठक में नहीं जायेंगे। बापू का स्टेटमेंट देखा।

एक तरह से यह ठीक है।

वर्तमान में कांग्रेस, देसी रियासत, भारत, व दुनिया की जो हालत हो रही है, उसे देखते हुए तो मेरे लिए कैद में रहने में ही मेरा सब प्रकार से लाभ है (स्वार्थ की दृष्टि से)।

२९-४-३९

धन्नू पटेल से मिले। गणेशजी को देखा, बूढ़े पंडितजी से मिला। बेचारे ज्यादा बीमार हैं। बचने की कम आशा है, परन्तु बचना चाहते हैं। गोविन्द-जी ठाकुर से मिले। इनकी डेढ़ वर्ष की छोटी बच्ची प्यारी मालूम होती है, उसे एक रु० दिया।

डेरे पर आये तो श्री पीरामलजी (बगडवाले) मिलने आये थे। उनके साथ जयपुर के दो जने, एक ब्राह्मण (जो बम्बई में वैद्यक पढ़ता है—हरिश्चन्द्र-जी शास्त्री का सम्बन्धी) व दूसरा खंडेलवाल व्यापारी थे। पुलिस की ओर से उमरावसिंह थे।

पीरामलजी ने कहा, मैं अपनी ओर से ही मिलने आया हूं, परन्तु मैं महाराज साहब से दो बार मिला, प्राइम मिनिस्टर से भी मिला। श्री यंग सा० को तो आपने अपने पास आने की मनाई कर दी। वह महाराज सा० व प्राइम मिनिस्टर की प्रशंसा करते थे। वह कहते थे, अब ये लोग चेत गये हैं। जरूर प्रजा की भलाई करेंगे वगैरा कहते रहे। वर्तमान परिस्थिति पर उन्होंने कहा कि प्रतिबंध तो वे उठा देंगे, परन्तु थोड़ा समय (दो या ज्यादा में चार महीने का) उन्हें देना चाहिए। जो जबानी करार हो जायेगा, उसे जरूर पालेंगे आदि। आखिर में यह निश्चय हुआ कि बिना प्राइम मिनिस्टर व महाराजा से मिले परिस्थिति का खुलासा होना सम्भव नहीं। उनके पूछने पर मैंने कहा, मैं मिलने के लिए बिलकुल तैयार हूं।

३०-४-३९

नीचे बगीचे में, जहां से पानी ऊपर आता है, आज से पानी खींचना शुरू किया, मुहूर्त किया, गायों के लिए।

आज से सुबह जल्दी ही १०।।-११ बजे के करीब भोजन करना शुरू किया। भूख ठीक मालूम हुई।

कुशलसिंगजी ने मुसलमान सन्तों के जीवन चरित्र पढ़े।

४२ दिन वाद कल डाक्टर ने आग्रहपूर्वक कहा कि वजन अब ज्यादा कम होना ठीक नहीं। चिंता बढ़ेगी। विट्ठल का भी यही कहना था, सो आज से ही दूसरी बार भोजन शुरू किया।

१-५-३९

चौरास्ता का मौका देखा। यहां पानी की जरूरत है। मैंने इन्हें कहा कि वोरिंग करके देख लो, पानी लगता है तब तो दो सौ रुपये तक मैं दे दूंगा। ज्यादा नहीं। अगर नहीं लगता है तो वोरिंग के तीस रुपये दे दिये जावेंगे। पर दो शर्तें रहेंगी। पानी निकालने की किसी को मनाई नहीं रहेगी व गर्मियों में खेल भरी रखना होगी; इसकी जिम्मेवारी कमेटी पर रहेगी।

मुस्लिम संतों का परिचय पढ़ा।

जायरा में बूढ़े पंडित, आखातीज को जो मिले थे और जिन्होंने कई उदाहरण व श्लोक कहे थे, वैदक भी करते थे, वे विचारे चल बसे।

२-५-३९

एक बूढ़ा मुसलमान वनजारा मिला। जायरा के वलाई ने भजन सुनाये।

श्री सुभाषवावू ने त्यागपत्र दे दिया। राजेन्द्रबाबू कांग्रेस सभापति बने। सारे समाचार पढ़कर दुःख हुआ।

गंगापुर स्टेट (उड़ीसा) में गोलीबार से तीस आदमी मर गये, चालीस घायल हुए।

शिया-सुन्नी झगड़ा बढ़ ही रहा है। हैदराबाद के आर्य-सत्याग्रह के चार सत्याग्रहियों की मृत्यु जेल में हो गई।

डा० खरे की मूर्खता से भरी हुई खुली चिट्ठी छपी।

जौहरी बाजार की मस्जिद के बारे में ता० २९-४ को जयपुर सरकार ने दूसरा स्टेटमेंट निकाला।

चर्खा। पत्र, अखवार व मुस्लिम संत पढ़े। पीरामलजी बम्बई गये।

यहां योंही कम वोलना होता है, पर आज से विशेष रूप से कम वोलने का खयाल रखना है। इच्छा तो मौन लेने की ही होती है, परन्तु उसके लायक वातावरण हाल में नहीं है।

३-५-३९

बद्री रसोइया को सामान ठीक व किफायत से लाने के लिये समझाया।

घनश्याम गुजर के बाप शिवनारायणजी को पांच रुपये कर्ज दिये। गरीब आदमी है।

ता० २-५ का 'स्टेट्समैन' अखबार मिला। कलकत्ता-कांग्रेस की रिपोर्ट पढ़ी। आखिर में नयी वर्किंग कमेटी में मेरा नाम भी रखा ही गया। विधान राय व प्रफुल्ल घोष नये मेम्बर चुने गये। पं० जवाहरलाल की जगह खाली रखी गई, क्योंकि उन्होंने अभी स्वीकार नहीं किया। कलकत्ते के दर्शकों का व जनता का व्यवहार बहुत ही अनुचित व शर्मजनक रहा। बापू ने जयपुर के कैदियों के बारे में जो लिखा है, वह भी देखा। उसमें मेरा भी उल्लेख किया है। इन दिनों मेरी तो यही इच्छा रही है कि मेरे स्थान बदलने या मुझे कोई साथी देने आदि के बारे में कोई भी कोशिश न हो तो ठीक रहे। अब लगता है, मुझे यहां से जल्दी ही दूसरे स्थान पर ले जायेंगे। चर्खा काता।

'मुस्लिम संत' पुस्तक पढ़ी।

गंगापुर के नाजिम (डि० मजिस्ट्रेट) पं० जयनारायणजी व वामनवास के तहसीलदार के साथ मुकन्द आयर्न वर्क्स के ट्रस्ट डीड पर मेरी सही कराने मणिलाल भट्ट आये। मैंने सही करके दे दी।

४-५-३९

दरबारीलालजी का "निरतिवाद" पढ़ता रहा। गंगापुर नाजिम व वामनवास के तहसीलदार मिलने आये।

मि० टॉड प्राइम मिनिस्टर जयपुर, एकाएक ८॥। करीब मिलने आये। सवा दो घंटे से ज्यादा दिल खोलकर बातचीत हुई। आदमी होशियार, मेहनती व जयपुर में कुछ सुधार करने की इच्छावाले देखने में आये। प्रजा-मंडल व मेरे प्रतिबंध के बारे में देर तक बातें। उनका आग्रह था कि एकबार मुझे दो महीने के लिए ही सही, बाहर जाना चाहिए। बाद में वह सब प्रकार से मेरी सेवा ले सकेंगे। दूसरे प्रजा-मंडल में, बाहर की संस्था में जो काम करते हैं, वे न रहें। मैंने उन्हें ठीक तौर से समझाया कि मेरा इस प्रकार जाना तो असम्भव व प्रजा तथा राज के लिए हानि-

कारक है। प्रजा-मंडल बाहर की संस्था के साथ अफीलियेट (सम्बद्ध) नहीं रखा जायगा। महाराज के लिए लॉयलटी (राजभक्ति) तब ही ली जा सकती है जब महाराज भी प्रजा की सेवा व उनके साथ न्याय करने की प्रतिज्ञा करें। बाहर की संस्था से तो खासकर मेरा ही सम्बन्ध आता है, अतः मेरे लिए यह शर्त नहीं मानी जा सकती है। कई उदाहरण दिये गये। उन्होंने सब नोट कर लिये। आखिर में जाते-जाते भी कहते गये कि ईश्वर के लिये मैं उनकी बात कबूल कर लूं। शायद जल्दी ही मोहनपुरा-जेल में अन्य साथियों से मुझे मिलावेंगे। बाकी के लोगों को छोड़ भी देंगे। मैंने तो उनसे कहा कि मैं अगर इतना नुकसान पहुँचाने वाला हूं तो मुझे अकेले को ही रखें, औरों को छोड़ दें। मैंने सर बीचम व चक्रवर्ती के बारे में भी कहा, इनके बारे में कौंसिल को जो पत्र लिखा था, वह भी कहा। उनसे सत्याग्रहियों के बारे में यह कहा कि किसी जिम्मेदार सत्याग्रही ने बहुत करके (मोहनपुरा में) कहा बताते हैं कि हम तो यहां मौज उड़ाते हैं, खूब माल खाते हैं और मजा करते हैं। एक औरत (स्त्री) की कमी है, वह और ले आओ। मुझे तो इस बात का बिलकुल विश्वास हो नहीं सकता था। मैंने तो उन्हें कहा कि आप पूरी जांच करें। ऐसी बात हो नहीं सकती। मुझे तो लगता है कि सी० आई० डी० वालों ने बदनाम करने को यह रिपोर्ट दी होगी। मैंने कहा कि अगर यह साबित हो जाय तो वह व्यक्ति प्रजा-मंडल में बिलकुल नहीं रह सकता। मैंने झूठी रिपोर्ट वगैरा के अपने अनुभव भी कहे। जयपुर के अधिकारियों के बारे में भी कहा व सीकर की परिस्थिति व उस सम्बन्ध में मैंने जो काम किया, वह भी बताया।

चर्खा काता। 'मुस्लिम संत' पढ़ी।

५-५-३९

दरबारीलालजी का 'निरतिवाद' पूरा किया। ठीक मेहनत करके बुद्धिमानी के साथ लिखा गया है। अब 'सर्वोदय' पढ़ना शुरू किया। गडमोरा के दोनों भाई जो पंडित वैद्य व ज्योतिषी हैं, आये। बड़े भाई सज्जन पुरुष मालूम हुये।

६-५-३९

गडमोरा के पंडितजी को 'रमण महर्षि' व 'रामतीर्थ' पढ़ने को दिया।

बागबान व उसके लड़के व स्त्री की तकरार का किस्सा सुना।
नारायण मेहतर ने भजन सुनाये व लिखाये।
श्री कुशलसिंगजी के पास से उर्दू सीखना शुरू किया। चर्खा काता, मुस्लिम संतों के चरित्र पढ़े।
श्री भवानीसिंह जी व प्रभूजी (लालसोट के ब्राह्मण) मिले। प्रभुजी मस्त-राम हैं। उनसे चिंतन व विचार-विनिमय।
मुस्लिम संत तपस्वी जुन्नेद ने कहा है कि—"ईश्वर के आश्वासनों की कथा-वार्ता तो ऐसी असाधारण फौज है, जो दुर्बल को वलवान और निराश को आशावान बनाती है। कुरान शरीफ में भी कहा है कि 'ऐ मुहम्मद ! तुम्हारे आगे पूर्वकाल के साधु-सन्तों का दर्शन इसलिए किया जाता है कि तुम्हारा मन वलवान, आशान्वित और तेजस्वी वने।"

७-५-३९

जयपुर सरकार ने सत्याग्रहियों को छोड़ना शुरू कर दिया है। राजकोट का रास्ता नहीं बैठ रहा है। वृन्दावन (चम्पारन) में दिया वापू का भाषण पढ़ा।
नाथू खण्डेलवाल (मोरावाला) आया। उससे जायरा कुएं के बारे में बातें। वह घूम-फिर कर कुएं वनवाता है। उसे एक रुपया जूतों के लिए दिया।
भंवरीलाल (प्रभूजी) सनाढ्य ब्राह्मण (लालसोट वाले जन्म सं० १९६२) के वाप का नाम रामकुमार; दादा का नाम रामनाथ; भाई कन्हैया, उमर करीव २० वर्ष। रामलीला में काम करता है। भंवरया (प्रभूजी) के माता-पिता छोटी अवस्था में चले गये; दादा रहे। दमे की बीमारी १०-१२ वर्ष की उमर में हो गई; विवाह कर दिया गया; स्त्री नहीं आई; गैरचलन हो गई। एक महाजन ने धोखा दिया, रुपया जेवर खत्म हुआ—व्यापार के नाम से। छोटे भाई कन्हैया की स्त्री उससे बड़ी उम्र की थी। गंगापुर के एक मुसलमान ने उड़ाई; मुकदमा चला। बाद में जयपुर के आर्य समाज ने उसका दूसरे से विवाह कर दिया। भंवाय, (प्रभू) ने ठीक संगत की मालूम देती है। वह वरेली में पांच वर्ष रहा।

८-५-३९

तूफान इतने जोर का था कि वाहर वैठकर प्रार्थना करना कठिन हो गया। घूमना सम्भव ही नहीं रहा। अवतक ऐसा तूफान रात-भर व दिन में भी पहली वार देखा।

दाहिने गोडे में दर्द वैसे ही रहा, कम नहीं हुआ। अगर यह दर्द नहीं गया तो पूरी तकलीफ हो जायेगी। यहां तो किसी प्रकार के उपचार का साधन नहीं है। वैसे एक प्रकार से तो ठीक है।

चि० राधाकिसन को महत्व का पत्र लिखा। विश्वनाथ वायदे, मोहनी खेडिया को पोस्टकार्ड लिखा।

उर्दू पढ़ना; चर्खा, 'मुस्लिम संत' में यूसुफ हुसेन, अल हुसेन नूरी वगदादी, हुसेन मन्सूर इन तीनों संतों का जीवन-चरित्र पढ़ा। मन्सूर का चरित्र पूर्ण सत्याग्रही जैसा था। इन सव सन्तों के जीवन में अहिंसा व सत्य कूट-कूट कर भरा हुआ है।

९-५-३९

प्रार्थना के वाद चवूतरे पर वैठे-वैठे एकाग्र विचार; वाद में थोड़ा नीचे जाकर घुड़ोंवालों के वगीचे तक घूमना। आज दर्द थोड़ा कम मालूम दिया; पांच मील घूमा। पानी भी खींचा, रामनाथ साथ में।

मदन कोठारी ने जो दो सौ रुपये भेजे, उसकी पहुंच व राधाकिसन को जो पत्र कल लिखा था, वह उसे भेजा और राधाकिसन के पास पहुंचाने को लिखा।

कांग्रेस की रसीद पच्चीस हजार की आई, उस पर जे० वजाज सही करके केशवदेवजी के पत्र में भेजी। कुशलसिंगजी (डी० ई०) से कहा कि जयपुर में रजिस्ट्री करने को लिख दो। उन्होंने कहा कि जयपुर वाले परवाह तो करते नहीं, कल उन्होंने रजिस्ट्री नहीं की व जोखम हुई तो मुझे साफ झूठ वोलना होगा। हमारा पुलिस का नियम यह है कि अपने ऊपर या अधिकारी पर जोखम या जवावदारी आती हो तो झूठ बोल देना। इतने भले आदमी की भी यह हालत देख कर विचार हुआ। चोट पहुंची।

कुशलसिंगजी को समझाकर प्रेमपूर्वक कहा कि आप कांग्रेस की अनुचित टीका न किया करें। अगर करने की इच्छा है तो उसे पहले पूरी तरह से

समझ लेना चाहिए। कांग्रेस में बड़े-बड़े महापुरुष, त्यागी, सेवाभावी सज्जन हो गये हैं। उन्हें भला-बुरा कहने से क्या लाभ, इत्यादि समझाया। आखिर में इन्होंने स्वीकार किया कि मैं समालोचना नहीं करूंगा। मैंने कहा कि कोई भी हिन्दुस्तानी, जिस संस्था के प्रताप से आज लोग मनुष्य समझे जाने लगे व थोड़ा सिर ऊंचा हुआ है, व उसीके जरिये भविष्य में भी भारत को लाभ पहुंचना संभव है, उस कांग्रेस पर जब अनुचित टीका या आरोप करता है, तब मुझे चोट व दुःख पहुंचता है।

१०-५-३९

कुशलसिंगजी के साथ ग्यारह पीपा पाणी खेंचा।

मुस्लिम सन्त अब्दुल्ला खफीफ पारसी, मुहम्मद अली हकीम तरयोब्बी, तपस्वी अबदुल्ला, अल हाफिज खुरासानी वाली किताब आज पूरी हुई। तीस सन्तों के चरित्र इसमें हैं। श्री कुशलसिंगजी ने बहुत ही प्रेम व भक्ति से इसे सुनाया।

करीब ११॥ के विट्ठल ने कहा कि यहां से अभी चलना पड़ेगा। बाद में मालूम हुआ कि जयपुर से लारी लेकर हरचरनदास पुलिस क्लर्क आये। रात को दो बजे रवाना होने को कहा गया। सामान की व्यवस्था की। इनाम वगैरा दिये तथा खादी आदि बांटी। गायों के लिए पानी की खेल भरी रखने की व्यवस्था आदि को कहा।

स्नान व प्रार्थना के बाद बराबर ढाई बजे मोटर से रवाना।

मोरासागर में तीन महीने रहने मिला। इस भूमि से प्रेम हो गया।

कनवितों का बाग, ११-५-३९

मोरांसागर से २॥ बजे निकल कर लालसोट डाकबंगले ४ बजे के करीब पहुंचा। वहां मोटर में पेट्रोल वगैरा भरा। डाक बंगला घूमकर, बाहर से देखा। दौसा होते हुए पुराना घाट के रास्ते 'कनवितों का बाग' (ठाकुर साहब नरवाडों का बाग) जो जयपुर से चार-पांच मील की दूरी पर व सड़क से एक मील अन्दर है, सुबह ६॥ बजे पहुंचे।

थोड़ी देर बाद सामान व विट्ठल लारी में आया। यहां का हवा-पानी ठीक बताते हैं। इमारत वगैरा जूने ढंग की व बेमरम्मत हैं।

पीरामल जी (बगडवाले) आये। उनकी प्रेसिडेंट जयपुर कौंसिल मि०

टाड से, व महाराजा से जो वातें हुईं, उन्होंने कहीं। उन्होंने यह भी कहा कि टॉड सा० आप से मिलकर खुश हुए हैं। वह आप चाहते हैं, उससे ज्यादा सुधार करना चाहते हैं, इत्यादि। मैंने उनके कहने पर समझौते की कुछ शर्तें उन्हें लिखकर दीं और ठीक तौर से समझा दिया, खासकर यह कि "मुझपर व प्रजा-मंडल पर का वेन (प्रतिबंध) बिना शर्त उठा लिया जाये। अगर महाराज सा० व प्रेसिडेंट वचन दें तो दो मास तक मांगों के वारे में जोर का प्रचार न करके सत्याग्रह स्थगित रखा जाये। दो मास में संतोषकारक परिणाम नहीं आया तो प्रजा-मंडल जो उचित समझेगा, वह कार्रवाई करेगा। अगर अधिकारियों को यह स्वीकार हो, तो मैं अपने मित्रों से सलाह करके निश्चित जवाव दे सकूंगा।"

अख़बार पढ़े। ता० १०-५ के 'हिन्दुस्तान' में सरदार का भाषण है—जयपुर की चर्चा भी है। वापू के स्टेटमेंट, राजेन्द्रवावू, सुभाष व सरदार के भाषण वगैरा पढ़े।

जयपुर पुलिस के तीनों बड़े अधिकारियों ने मि० यंग, डी० आई० जी०, व दीवानचन्द व चक्रवर्ती के जाने की वात सुनी। श्री कुशलसिंगजी को दौसा जाने का हुक्म आया।

१२-५-३९

लूणियावास तक जाकर आये। एक खाती की मां, जो वहुत बूढ़ी, वहरी व अंधी थी, उसे एक रुपया दिया। चौकीदार भवराज का घर देखा।

कुशलसिंह से वातें। उनके साथ देर तक शतरंज खेली, क्योंकि यह अव जाने वाले हैं। उर्दू सीखी। चर्खा काता। यहां भी गरमी ठीक पड़ती है। जयपुर से आम आये, पर ठीक नहीं निकले।

आजतक तीन महीनों में सूत ३२ लट्टी (६४० तार—८५३ वार के हिसाब से) हुईं; याने २७२९६ रोज में ३०६।।। वार रोज का औसत आया।

१३-५-३९

घाटी-खटीकों के गांव (हरदेवाठेकेदार के बाग) की ओर घूमकर आये। रामनाथ व गोविन्दा (छोकरा) साथ में। मोती खटीक मिला, जो बूढ़ा है, उसके दो जवान लड़के मर गये, आंख से दिखता नहीं, वहुत खराव हालत है। उसे एक रुपया दिया।

जगन्नाथ मीणा को चार आने रोज से पानी भरने वगैरा के लिए रखा।
बाबा—लच्छीरामजी वैद्य, बीमार हो जाने के कारण, नहीं आ सके।
डेडराजजी व प्रह्लाद परसों छोड़ दिये गये। वे लोसल (फतेहपुर) गये।

१४-५-३९

खोमें, जहां नागोरी मुसलमान ज्यादा संख्या में रहते हैं, वहां एक मीणा राजा चान्दो नाम का हो गया था। वहां के इमाम बक्स बूढ़े से. जो गदर के समय १८-२० वर्ष का था, देर तक बातचीत। यह सौ वर्ष के ऊपर का हो गया है। उसने राज्य की घोर निंदा की, खासकर शिकार खाने व जंगलात के बारे में और भी बातें कहीं। नाहर, बघेरे कई मनुष्यों को खा गये। ५-७ दिन पहले ही कई गायों व एक गुजर को खा गये। कुछ महीने पहले दो-तीन आदमियों को खा गये। उसे एक रुपया दिया। करीब ११ बजे मि० टॉड प्राइम मिनिस्टर व ठाकुर हरीसिंग होम मिनिस्टर, मिलने आये। करीब २। घंटे बातचीत होती रही। १-२० पर गये। बातचीत का सारांश यह कि किस प्रकार परस्पर विश्वास व सहकार बढ़ें। बिना शर्त मुझे व प्रजा-मंडल के मुख्य कार्यकर्ताओं को छोड़ दें तो फिर क्या स्थिति पैदा हो। मुझे दो संस्थाओं में से एक में रहना चाहिए, आदि मुद्दों पर चर्चा। मैंने कहा कि विश्वास तो दोनों ओर से किया जाना चाहिए। प्रजामंडल के अस्तित्व को स्वीकारना ही चाहिए। इसके बीच में मेरा प्रश्न नहीं लाना चाहिए, अगर विश्वास बढ़ाना हो तो। जयपुर दरबार के अन्य कार्यों पर विचार-विनिमय हुआ। मैंने उदाहरण के तौर पर शिकारखाने व जंगलात खाते के बारे में जोर से विरोध किया। वर्तमान कैबिनेट का तथा पुलिस खाते का विरोध तो पहले ही किया था, आज भी किया। आखिर में यही ठहरा कि मुझे मेरे साथियों से मिलकर उनकी पूरी स्थिति समझ लेने दी जाये। महाराज से मिलकर उनका मानस भी समझ लिया जाये। अगर महाराज प्रजा के साथ प्रजा की भलाई व न्याय करने की लॉयलटी लेंगे तो फिर हमें विशेष अड़चन नहीं आयेगी। अचरोल ठाकुर ने कहा कि मैं तो आपके लड़के के समान हूं। मेरे पिता जीवित होते तो ५१-५२ के होते।" उन्होंने बहुत प्रेम दिखाया। मैंने कहा कि आपमें कोई भी लायक नहीं है।

१५-५-३९

लुणियावास (हरीपुरा) की दो अनाथ मां-बेटी (वैश्य) को एक रुपया दिया। अचरोल ठाकुर हरीसिंगजी (होम मिनिस्टर) को पत्र भेजने का विचार। मसविदा बनाया तो श्री मूलसिंगजी (मेरोली रींगस) सुपरिंटेंडेंट पुलिस जयपुर, ने आकर कहा—दरबार मुझसे पांच बजे मिलने वाले हैं। मेरे लिए मोटर आयेगी और जहां मिलने का स्थान निश्चय हुआ है, वहां ले जायेगी। मूलसिंगजी सु०पु० जयपुर, पांच बजे आये। वह मुझे प्राइम मिनिस्टर के बंगले पर ले गये। साढ़े पांच को वहां पहुंचे। अचरोल ठाकुर सा० पहले वहां आये। बाद में ५.४० के करीब महाराज सा० आये। मि० टॉड, ठा० हरीसिंगजी और मैं—इन चार जनों की बातें शुरू हुईं। दरबार ६-५० तक रहे। बाद में टॉड व हरीसिंगजी से बातें हुईं। महाराज के साथ दिल खोलकर बातें हुईं। उन्होंने यही कहा कि जूनी बातें सब भूल जायें, आगे का रास्ता बैठाओ। मैं सब तरह से सेवा करने व न्याय करने को तैयार रहूंगा, उनकी मंशा तो यह मालूम हुई कि वह ता० १८ को गर्मियों के लिए बाहर जाना चाहते हैं, उसके पहले रास्ता साफ हो जाये तो उन्हें शांति रहेगी। प्रजा-मंडल सीकर कैदी, भावी विधान (कांस्टीट्यूशन) आदि पर विचार-विनिमय हुआ। कल राधाकिशन व हीरालालजी वगैरे मित्र-लोग आयेंगे। परसों १० बजे दरबार से व ९॥ बजे प्राइम मिनिस्टर व हरीसिंगजी से मिलना ठहरा। आज की बातों की नोट—

(१) अगर मुझे मिलने का मौका दिया जाता तो प्रजा-मंडल पर व मुझपर प्रतिबंध लगाने का मौका नहीं आता। यह भयंकर भूल राज से नहीं होती।

(२) कई वर्षों से प्रयत्न करने पर भी मेरी आपसे दिल खोलकर बात नहीं हो सकी, यह दुःख की बात रही।

(३) सीकर की सेवा का यह इनाम मिला !

तीनों प्रश्नों का जवाब—'जूनी बातें भूल जायें, व नये सिरे से विश्वास रखकर काम शुरू किया जाये। मैं सब तरह से तैयार हूं।'

(४) आपके मिनिस्टरों ने अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं किया। मुझपर यह असर है कि उनमें सच्चाई व हिम्मत की कमी है व राजा व प्रजा की बदनामी न हो, इसकी भी उन्हें परवाह नहीं है, नहीं तो यह मौका नहीं आता।

(५) यह सब अचरोल ठाकुर के सामने कहा गया। पंडित अमरनाथ अटल ने प्रिंसेस चेम्बर में जो स्टेटमेन्ट दिया व जिसका बीकानेर महाराज ने उल्लेख किया, उस बारे में कहा।

(६) राज्य में व कर्मचारियों में काफी परिवर्तन करना होगा। उन्होंने कहा कि करेंगे। मैंने कहा कि जंगल व शिकारखाने पर सुना है, आपके मामा साहब हैं। मैंने उनकी बहुत बदनामी सुनी है। रिश्तेदार के नाते उनसे प्रेम है तो अपने पास से उन्हें मदद कर दें, परन्तु इस प्रकार की वृत्ति के आदमी को जवाबदार जगह पर बिलकुल न रखा जाये। वह हंसे और कहा कि 'मुझसे किसी ने शिकायत नहीं की।' इस पर मुझे जो कहना था, वह कहा।

(७) प्रजा-मंडल की पूरी सहायता लेने के बदले मुझे कांग्रेस से अलग हो जाना चाहिए, इस पर ठीक चर्चा हुई। मैंने कई उदाहरण दिये। रिफार्म कमेटी जल्दी मुकर्रर होनी चाहिए। उन्होंने कहा, 'हां बड़ौदा या मैसूर का आदर्श रखा जाये।' अचरोल ने कहा, 'कॉपी क्यों की जाये? हम अपना अलग ही विधान बनावें। शायद हमारी नकल दूसरे करें।'

१६-५-३९

ठाकुर कुशलसिंगजी (सर्कल इंस्पेक्टर) आज यहां से दौसा चले गये। उनकी जगह यहां सरदारसिंग पहाड़ी (टेहरी राज्य वाला) हवलदार आया।

हीरालालजी शास्त्री, हरिश्चन्द्रजी शर्मा, चिरंजीलाल अग्रवाल, केवल इन तीनों को ही श्री गाजी हुसेन सु० पु० सी० आई० डी० लेकर आये। प्रजा मंडल की वर्किंग कमेटी के अन्य सदस्यों को नहीं लाये। इनका चुनाव भी अधिकारियों ने ही कर लिया। आजतक की सारी परिस्थिति इन्हें समझाई व इनके मन की स्थिति समझी। इस समय मेरा प्रजा-मंडल से हटना मुमकिन नहीं, असम्भव है, ऐसा इन्होंने कहा। देर तक विचार-विनिमय होने के बाद यह निश्चय हुआ कि जेल में वर्किंग कमेटी के जितने मेम्बर हैं, उनसे एक बार मिलकर विचार-विनिमय करना आवश्यक है। मुझे तो पूरा अधिकार है ही।

राधाकिसन के साथ भोजन किया। पन्ना को लड़का हुआ। वृन्दावन सम्मेलन आदि का हाल समझा।

१७-५-३९

आज जयपुर महाराज से व प्राइम मिनिस्टर से मिलने जाना है। सो उसके पाइंट नोट किये।

श्री आई० जी० साहव (कोटेवाले) एकाएक मिलने चले आये। सरदारसिंग व रामनाथ ने उन्हें विना परवानगी नहीं मिलने का कहा। इनकी आपस में कहासुनी भी हो गई। मैंने उन्हें समझाकर कहा कि आप इत्तला करके आराम से पधारेंगे तो ठीक रहेगा।

श्री मुकर्जी लेने आये। जल्दी स्नान व भोजन करके नौ बजे रवाना। पहले मेयो हास्पिटल गये। वहां गोडे का, जहां दर्द था, एक्सरे लिया। श्री यंग का फोन आया। उनसे मिलने उनके लड़के के घर गये। वहां ठाकुर हरीसिंगजी मिल गये। थोड़ी देर बातचीत होती रही—समझौते आदि के बारे में।

प्राइम मिनिस्टर की कोठी पर १०।।। बजे पहुंचे। वहां शिवप्रसादजी खेतान, इंजीनियर, सर्जन वगैरे, नये अस्पताल की मीटिंग के लिए बैठे हुए थे।

११ से १ बजे तक, याने दो घंटे, प्राइम मिनिस्टर मि० टॉड, होम मिनिस्टर हरिसिंगजी व जयपुर महाराज मानसिंगजी से बातचीत हुई। करीब सवा बारह बजे तक तो तीनों के साथ बात हुई। उसमें मेरे नोट किये हुए प्रायः सभी प्रश्नों पर चर्चा व खुलासा हुआ। आखिर प्रजा-मंडल के नाम में परिवर्तन करने के बारे में देर तक वाद-विवाद होता रहा। मैंने इनकार कर दिया। सीकर कैदी क्यों छोड़ने चाहिए, इसका खुलासा किया। महाराज के ध्यान में आया। बाद में महाराज से अकेले में पौन घंटेके करीब बातें हुईं। उन्होंने अपनी अड़चनें बताईं। ठीक परिणाम हुआ। उन्होंने कहा कि अचरोल ठाकुर को मैं पूरा अधिकार देकर जाता हूं।

१८-५-३९

श्री हरीसिंगजी (होम मिनिस्टर) को कल शाम को मिलने के लिए पत्र भेजा था। वह आज यहीं पर मिलने आने वाले हैं। टब बाथ, स्नान वगैरे से जल्दी निवृत्त।

हरीसिंगजी ८-५० को मिलने आये। १०-१५ को वापस गये। मुलाकात

के नोट्स नोट बुक में लिखे हैं।

महाराज सा० व प्राइम मिनिस्टर के साथ मुलाकात का समय निश्चित करके मुझे सूचना देने को कह गये। मुझे श्री आई० जी० ओंकारसिंगजी (कोटावालों) के घर जाकर ठहरने को कहा। बुलाने व बात करने के लिए वह स्थान नजदीक पड़ेगा। दिवान कोटा के यहां चला गया। उन्होंने मोटर भेजकर ठाकुर हरीसिंगजी को बुलवा लिया। समझौते आदि की वह देर तक चर्चा करते रहे। मैंने कहा, पहले आप महाराज सा० या प्राइम मिनिस्टर की राय जान लें। वह अगर आपके हाथ से फैसला करना पसन्द करते हों तो फिर मुझसे बातें करना ज्यादा ठीक रहेगा, क्योंकि मैं इस समय दूसरी हालत में हूं। तभी होम मिनिस्टर का फोन आया कि महाराज सा० आज यूरोप जा रहे हैं। अतः अभी समय नहीं है। मैं और प्राइम मिनिस्टर आपसे मिलेंगे।

१९-५-३९

चि० राधाकिसन को आज से मेरे पास रहने की इजाजत मिली।

चि० शान्ताबाई व काशिनाथजी महिला-आश्रम के काम के लिए आये। देर तक विचार-विनिमय। आज पूरा काम नहीं हो सका। उनका दोनों समय यहीं भोजन हुआ। उनके साथ मदनलाल कोठारी व श्री रतनबहेन शास्त्री भी आये थे।

डेडराजजी खेतान व चि० प्रहलाद पोद्दार मिलने आये। प्रह्लाद का विनोद। चि० पन्ना के लड़का हुआ, उसका तार मिला।

प्राइम मिनिस्टर ने कहलाया कि मैं कोटावाले आई० जी० सा० से मिलने जाऊं। मैंने कहलाया कि उनसे मिलने के पहले आपसे व होम मिनिस्टर से मिलना जरूरी है। उनसे मैं किस हैसियत से मिलूं, यह मुझे समझ लेना चाहिए। जवाब नहीं मिला।

पत्रों के जवाब मदनलाल से लिखवाये—बापूजी, खान सा० व सावित्री को। केशवदेवजी को पचास हजार की रसीद सही करके भेजी।

उमरावसिंग को सब पत्र भेजने को दिये।

२०-५-३९

ता० १९-२० के अखबारों में बापू के व राजकोट ठाकुर के स्टेटमेंट देखे।

चि० शान्ताबाई व श्री काशिनाथजी महिला-आश्रम के काम के लिए आज भी आये, छात्रवृत्ति वगैरे का निर्णय। महिला-आश्रम से मेरा नैतिक सम्बन्ध बिलकुल न रहे तो मुझे शांति मिलेगी, यह मैंने काशिनाथजी, शान्ताबाई व राधाकिसन को समझाकर कहा। चर्खा काता। शाम को भोजन करके शान्ता व काशिनाथजी गये।

पूज्य बापूजी ने वृन्दावन (चम्पारन-बिहार) में 'गांधी-सेवा-संघ' के अधिवेशन में जो भाषण दिया वह ता० १३ मई के 'हरिजन सेवक' में से लिया—"सत्याग्रही की ईश्वर में जीवित श्रद्धा होनी चाहिए। यह इसलिए कि ईश्वर में अपनी अटल श्रद्धा के सिवाय उसके पास कोई दूसरा बल नहीं होता। बगैर उस श्रद्धा के सत्याग्रह का अस्त्र वह किस प्रकार हाथ में ले सकता है ? आप लोगों में से जो ईश्वर में ऐसी जीवित श्रद्धा न रखते हों, उनसे तो मैं यही कहूंगा कि वे 'गांधी-सेवा-संघ' को छोड दें, और सत्याग्रह का नाम भूल जायें।"

२१-५-३९

जोगियों ने 'गोपीचन्द' वगैरा सुनाया। लाला दुनीचन्द (अंबालावाले) मिलने आये। उनके लड़के का विवाह इंदौर में हुआ, इस सम्बन्ध में व महाराजा इंदौर से उसके विवाह आदि के बारे में जो बातें हुईं वह बताते रहे। यहां खान बहादुर अब्दुल अज़ीज जो रेवेन्यू मिनिस्टर हैं, उनके बारे में बताया कि वह पंजाब के अच्छे प्रभावशाली व्यक्तियों में व सरकारी बड़े नौकरों में से हैं। इनका उनसे परिचय है। यह उनसे मिलने वाले भी हैं।

पीरामलजी (बगड़वाले) को भेजने के लिए पहले भी कहलाया था। आज फिर तपास की तो मालूम हुआ कि वह चले गये हैं। प्राइम मिनिस्टर ने कहलाया बतलाते हैं कि मैं चाहूं तो पीरामलजी को बम्बई से व आई० जी० ओंकारसिंगजी को कोटा से बुलाया जा सकता है।

होम मिनिस्टर हरीसिंगजी को पत्र लिखकर भेजा। पत्र की कापी नोटबुक में है। सरदारसिंग जबानी जबाब लाया कि कल सुबह प्राइम मिनिस्टर से मिलकर जवाब भेजेंगे।

स्टेट्समेन ने बापू के राजकोट स्टेटमेंट पर एक लम्बा अग्रलेख लिखा है।

२२-५-३९

बूढ़े मुसलमान माली से बातचीत।

जयपुर राज्य प्रजा मंडल का विधान देखा।

राजकोट का आखिर में ता० २०-५ को अंत हुआ। बापूजी भी दरबार में शामिल हुए व ठाकुर सा० के साथ जलूस (प्रोसेशन) में भी गये।

राजकोट में कमेटी बनी—

१. वीरावाला (प्रेसिडेंट) २. जन्मशंकर मुरारजी पंड्या, ३. दौलतराव एन० वकील, ४. जीवनसिंग जाड़ेजा, ५. कालीदास मोतीचन्द पारिख, ६. हाजीदादा हाजी वलीमुहम्मद, ७. मोहनलाल एम० टांक, ८. हिपटु अली वलीमोहम्मद, ९. लक्मीचन्द हुखमीचन्द डोशी, १०. गोकुलदास डायाभाई।

नागपुर प्रान्तिक का चुनाव हुआ। पूनमचन्द रांका प्रेसीडेंट; एन० वाय० शरीफ व चतुर्भुजभाई वाइस प्रेसीडेंट; पन्नालाल देवड़िया, बजरंग ठेकेदार सेक्रेटरी मनचरजी अवारी ट्रेजरर; गोपालराव काले, घटवाई, खुशालचन्द, कन्नमवार सदस्य।

२३-५-३९

करीब ५ बजे सन्देश आया कि प्राइम मिनिस्टर मि० टॉड ने अपने बंगले पर मुझे मिलने बुलवाया है।

स्नान व भोजन करके और फाइल तैयार करके ठीक दस बजे प्राइम मिनिस्टर के बंगले पहुंचे। वहां होम मिनिस्टर अचरोल भी हाजिर थे। १०-५ से १२-५, बराबर दो घंटे तक बातचीत। शुरू में तो रुख कड़ा व लापरवाही का मालूम दिया। बाद में खूब चर्चा हुई। पर समझौते की आशा नहीं दिखाई दी। आखिर में यह फैसला हुआ कि वर्किंग कमेटी के अपने बारह साथियों से, जिनका नाम मैंने उन्हें लिखकर दे दिया है, और जो जेल में हैं, उनसे पहले मिलने की व्यवस्था करें। उनका क्या कहना होता है, यह जानकर फिर उसपर विचार किया जाय।

डेरे पर आया। थोड़ा विश्राम के बाद चर्खा। बातचीत नोट की।

मुकर्जी आये। उन्होंने कहा कि प्राइम मिनिस्टर सा० का हुक्म हुआ है कि राधाकिसन आपके पास नहीं रह सकते।

राधाकिसन ने कहा कि जानकी देवी कल सुवह आ रही हैं। दिल्ली का व वर्धा का तार था। खुशी हुई।
अधिकारियों का बर्ताव सख्त हुआ है। नजदीक में समझौते की कोई आशा नहीं दिखाई देती। राधाकिसन गया। थोड़ा बुरा मालूम हुआ।
रात को एक मुसलमान ने गाने सुनाये।

२४-५-३९

जल्दी तैयार हुआ। जानकी देवी की राह देखी। सरदारसिंग से जानकी के यहां भोजन वगैरे के बारे में पूछ लेने को कहा। 'सन्त तुकाराम' (हिन्दी) व 'जयपुर डायरेक्टरी' देखी। जानकी देवी की ११॥ बजे तक राह देखी। वह भी नहीं आई और यहां की मोटर सरदारसिंग लेकर गये थे, वह भी नहीं आई। तव विचार-तरंग आने लगे। वाद में अकेले ही भोजन। जव नींद खुली तो १॥-१॥। बजे के करीब जानकी व डा० चोइथराम बैठे हुए दिखाई दिये। दोनों से मिलकर खुशी हुई। ५॥ बजे के करीब दोनों वापस गये।
जानकी वर्धा से अकेली ही आई। विनोबा ने यहां आने की सलाह दी तो वह दूसरे ही रोज रवाना होकर आ गई।
मुकर्जी से कह दिया कि अगर जयपुर सरकार समझौता चाहती है तो मुझे मिलने-जुलने का पूरा सुभीता देना होगा। पं० लादूराम के सिवा राधा-किसन, देशपांडे से भी मिलने की जरूरत पड़ेगी। अगर वह नहीं चाहते हों तो मुझे कुछ कहना नहीं है।
जानकी से कहा कि मुलाकात की इजाजत दे दी है। सुवह ८ बजे आकर शाम को चली जाना।

२५-५-३९

कल रात से मौन शुरू किया—रात को ८॥ बजे से सुवह प्रार्थना तक।
जानकी आई। साथ में भोजन।
दिन-भर जबतक जानकी रही, एक सी० आई० डी० का आदमी बैठा ही रहा, भोजन के समय को छोड़कर।
उमरावसिंग पुलिस क्लर्क कहने आया कि आई० जी० कोटावाले आ गये हैं। आप चाहें तो उनसे मिल सकते हैं। मैंने कहा कि 'अगर प्राइम

मिनिस्टर मुझे कहें कि 'आप इनसे मिलकर समझौते की बात करें, हम इन्हें नियुक्त करते हैं, तो मैं मिलना पसन्द करूंगा, अन्यथा नहीं।' उन्होंने कहा कि आप लिखकर दे दीजिये, मैंने कहा कि जवानी संदेश का जवाव जबानी मिलेगा। लिखा हुआ सन्देशा आवेगा तो उसका जवाव लिखकर मिलेगा। उसने कहा कि यंग सा० नैनीताल से आ गये हैं, पन्तजी ने आपको वन्दे कहलाया है।

राधाकिसन का आना क्यों वन्द किया गया, इसकी चौकसी की। गलत व झूठी रिपोर्ट का यह नतीजा है।

जानकी भोजन कर साढ़े सात वजे करीव गई। आज प्रथम वार पापड़, पापडी, तुवर की दाल खाई।

ता० २५-५ के 'हिन्दुस्तान टाइम्स' में, पूज्य वापू ने राजकोट की जाहिर सभा में भाषण देते हुए कहा—

"There is not a single person in the whole world who does not deserve our love. To achieve unity of soul is the greatest purushartha, I am after."

'हिंदुस्तान टाइम्स' ता० २५-५

२६-५-३९

प्रार्थना के वाद मौन खोला। घूमना। रात से दूध वढ़ाया। दोनों समय मिलाकर एक सेर दूध लेना तय किया। जानकीजी का प्रताप! 'सन्त तुकाराम' (हिन्दी दूसरा भाग) पढ़ा।

जानकी आज नहीं आ सकी। सरदारसिंग ने कहा कि प्राइम मिनिस्टर व यंग सा० दोनों गैरहाजिर थे। १२ वजे तक पता नहीं लगा।

Kings mssage to his people—Winnipeg May 24.

"It is not in power and wealth alone, nor in dominion over other peoples that the true greatness of an Empire consists. Those things are but an instrument—they are not an end or an Ideal. The end is freedom, Justice and peace in equal measure for all, to secure against an attack from—without or within."

"It is only by adding to the spiritual dignity andmatirial happiness of human life in all its myriad homes that an Empire can claim to be of service to its own peoples and the world."

२७-५-३९

आठ सेर भर का एक मतीरा एक मालिन ने दिया। उसे एक रु० दिया।

'संत तुकाराम' का तीसरा और चौथा भाग पूरा हुआ। रात को पांचवां भाग शुरू किया।

जानकी आई। उसे रोज दो घंटे के लिए आने देने का लिखा। इजाजत मिली। भोजन करके वापस भेजना पड़ा। कल शाम को धूप में नहीं आएगी।

'हरिजन सेवक' पढ़ा। थोड़ी वर्षा हुई। वाद में गरमी का जोर हुआ।

मौन में एक प्रकार से शान्ति तो मिलती है।

२८-५-३९

काना मीणा की ढाणी गये, उसकी मां को एक रु० दिया।

जानकी देवी मिलने आई। ५ से ७॥ तक यंग सा० से जो बात हुई वह सरदार सिंग बताता रहा।

मौन लिया।

अखबार में कृपलानी का भाषण देखा व पं जवाहरलाल के लेख जो 'नेशनल हेरल्ड' के लिए लिखे, वे देखे। इसपर से उनकी मन की स्थिति का साफ पता चलता है। राजकोट के बारे में समझना तो सबों के लिए कठिन है। सरदार को वहुत कड़ुआ घूंट पीना पड़ रहा है। अगर परिणाम ठीक आ गया। तब तो सब बातें भूलकर परिणाम की तरफ देखकर बापू के प्रति लोगों की श्रद्धा और बढ़ेगी, अन्यथा देशी रियासतों का मामला और ज्यादा पेचीदा हो जायेगा।

२९-५-३९

'तुकाराम' पढ़ा।

जानकी देवी आई। 'मोरध्वज,' 'सीता-स्वयंवर' वगैरा गाकर सुनाया। अच्छा मालूम दिया।

रात को ९ बजे के करीब यंग सा० का पत्र मिला।
आज दिन भर मौन रखा। शायद जीवन में यह प्रथम वार हो।

३०-५-३९

प्रार्थना करके, मौन खोला। इस प्रकार के मौन का यह पहला ही मौका है। ठीक मालूम हुआ।
सरदारसिंग ने जानकी के मुलाकात के वारे का दूसरा हुक्म वताया—एक दिन छोड़कर आने का। एक्सरे रिपोर्ट व खर्च के अलाउन्स वगैरा के वारे में आज जोर देकर कहना पड़ा।
यंग सा० का कल रात को जो डी० ओ० नं० ४१६ आया था, उसका जवाव लिख भेजा।
उनको एक दूसरा पत्र भी लिख भेजा, जिसमें अलाउन्स, एक्सरे रिपोर्ट, साथी, हिन्दी अखवार आदि के बारे में लिखा।
मौसम में आज प्रथम वार आमरस लिया। ठीक मालूम हुआ।

३१-५-३९

प्रजामण्डल व जयपुर सरकार के वारे में ही देर तक विचार चलते रहे। वाद में परमात्मा का चिंतन शुरू किया। तव नींद आई।
सुवह फिर मदालसा व श्रीमन् आने वाले हैं, सो उनके विचार आते रहे।
श्रीमन्नारायण, मदालसा व जानकी आये। दोनों समय यहीं भोजन किया।
श्रीमन् से नवभारत विद्यालय, शिक्षा-मण्डल, महिला-आश्रम आदि के वारे में देर तक विचार विनिमय। अन्य वातें भी होती रहीं। उमा के सम्बन्ध के वारे में भी।
गिरफ़्तार होने के वाद आज प्रथम वार कढ़ाई की पूरी खाई। आमरस व फजीता भी जानकीजी के प्रताप से मिला।
देशी रियासतों के वारे में स्टेट्समेन के संवाददाता की ओर से छपा जवाहरलाल का स्टेटमेंट पढ़ा। स्टेट्समैन ता० ३१-५-३९ उसमें जवाहरलालजी ने कहा है :

"But we must remember that Seth Jamnalal Bajaj is still a prisoner in Jaipur, that in Bharatpur satyagraha is going on and in a large number of states fierce repres-

sion is in progress."

U.P. officers on Deputations Ministry Against Grant of extension.

"Lucknow : 'The latter difficulty may be felt particularly in regard to officers in the employ of Indian States whose system of government and executive methods are, in the opinion of the Ministry, out of time with modern times. Recently Jaipur affairs brought into prominence an official of U P. Government who though personally popular had to carry out orders of his govt. against Seth Jamnalal Bajaj and others."

—स्टेट्समैन ३१-५-३९

१-६-३९

बहुत जल्दी आंख खुल गई। शायद दो-तीन बजे होंगे। जयपुर प्रजामण्डल व अधिकारियों के विचार आते रहे। देर तक एक प्रकार का कार्यक्रम मन में तैयार हुआ। बाद में ईश्वर की प्रार्थना ठीक तौर से हुई। घूमने लुणियावास तक जाकर आये। एक खंडेलवाल वैश्य गणेशी बहुत तकलीफ में है उसकी व्यवस्था करना। जानकी, मदालसा, श्रीमन् को इसकी हालत देखने भेजना है।

जानकी, मदालसा, श्रीमन् आये। भोजन, विनोद। आम खूब चूसे। बाद में सब लोग सो गये। आज से खाने आदि का अपना इन्तजाम शुरू किया। मदालसा अपना चर्खा, जिस पर बापू ने वृंदावन में काता था, छोड़ गई, और मेरा ले गई। चर्खा ठीक भी कर गई।

श्रीमन् से 'नव भारत विद्यालय' की आर्थिक हालत व हिन्दी-प्रचार के बारे में चर्चा।

एक गाय पीपल के झाड़ के पास पड़ी थी। जानकी ने कहा तो उसे उठवाकर लाये। भूख से मर रही थी। पांवों में ताकत नहीं रही; जोर देकर पानी पिलाया।

शाम को भी जानकी वगैरा लुणियावास जाकर आये।
सरदारसिंग ने इजाजत दी सो यहीं भोजन किया और चले गये।
ता० १-६ के हिन्दुस्तान में ता० ३०-५ का ए० पी० का तार छापा था।

"Negotiations in Jaipur; No breakdown; Slow progress. Natural." यह स्टेट की ओर से सूचना दी गई लगती है।

२-६-३९

गाय को देखा।
दूदू ठाकर के भाई ठा० गंगासिंहने जो जयपुर लांसर्स में लेफ्टीनेन्ट थे, पोलो के नामी खिलाड़ी थे और हाल ही में जिनका विवाह हुआ था, वन्दूक से जयपुर में अपनी हत्या कर ली। पढ़कर व सुनकर दुःख हुआ।
शम्भूनाथजी वकील जयपुर की सेशन जज पंडित दुर्गासहाय से चकचक हुई। देखें, क्या परिणाम आता है।
महादेवभाई का राजकोट का भाषण पढ़ा। दरबार वीरवाला 'राजकोट सुधारक कमेटी' के प्रेसिडेंट नहीं होंगे, यह पढ़कर आश्चर्य हुआ।
राधाकिसन, दामोदर, गुलावचन्द कासलीवाल वापू से मिले।
राधाकिसन वापू के साथ वम्बई गया।
आज भी न यंग सा० का व न अचरोल ठाकुर का जवाव आया।
चर्खा। 'संत तुकाराम' पढ़ा। श्री यंग को सीकर के वारे में पत्र लिखना है। उसका मसविदा वनाना।
मीरा ने राजकोट की पढ़ाई पूरी कर दी। मृदू को देखकर खुशी हुई। वापूजी के स्वास्थ्य व प्रोग्राम की तथा राधाकिसन के प्रोग्राम आदि की चर्चा, वृन्दावन सम्मेलन का वर्णन वगैरा की चर्चा हुई। प्रार्थना व भजन के वाद वापस गये। मौन लिया।

३-६-३९

'तुकाराम' पढ़ा। उमा आज ही सीलोन से दिल्ली होती हुई यहां आ पहुंची है। शाम को हरिभाऊजी, गुलाबचन्द कासलीवाल वकील व दामोदर मिलने आये। हरिभाऊजी से इन्दौर की व ग्वालियर की हालत समझी। हरिभाऊजी से मिलकर सुख मिला।

ता० ३-६ के स्टेट्समैन से लिया :

Lord Samuel continued…"Provincial autonomy is working on the whole well in the provinces. And it is clearly essential in the States also that the people should be more closely associated with the government. In this respect Mysore and Baroda have set the fullest example." Great changes are needed in many smaller states.

"The British people, Lord Samuel most honestly and sincerely desired the peace, progress and freedom of the people of India. Regarding untouchability strengthened as it was by the energy and influence of Mr. Gandhi was warmly welcomed.

४-६-३९

गणेशी कठीया बीमार था, उसका घर देखा। उसे सुराही लेकर दी।
मेहतर का घर देखा, प्याऊ वाली बुढ़िया का भी।
नाथूलाल ब्राह्मण ने, जो मिरजा नालवाले का चेला है, गोडे का दर्द व पगथली का दर्द देखा। उसने कहा, जोड़ की जगह कमजोर हो गई है। तेल लगाने से ठीक हो जायेगी।
वर्धावाले सीताराम पिपलवा, चम्पालाल शर्मा, द्वारका जोशी, केशवदेव जोशी, सत्यनारायण वैद्य, गोविन्द पिपलवा, खेमराज पिपलवा जेल से छूटे। वर्धा जाते हुए मिलने आये।

५-६-३९

पत्र लिखे—केशवदेवजी, नर्मदा, सौभाग्यवती, कमलनयन, रामनरेशजी त्रिपाठी आदि को। जानकी व उमा आये। भोजन दोनों समय साथ किया। कनवितो के बगीचे के आम खाये। १५ सेर आम मैनपुरी भिजवाये, व सेर ११ यहां खाने के लिए रखे।
चर्खा। उमा से उसके सम्बन्ध के बारे में विचार-विनिमय।
आज भी शाम को घाटी के खटिक भजन करने आये। दो रु० दिये।

६-६-३९

राधा किसन का बम्बई का कलका दिया हुआ तार मिला। आनन्दीलालजी पोद्दार का लड़का रामनिरंजन ता० ४-६ को चल बसा। दुःख हुआ।
बापूजी का देसी रियासतों के बारे का स्टेटमेन्ट पढ़ा। जयपुर अधिकारी इसका एक बार गलत मतलब लगायेंगे। बापू जब जयपुर के बारे में खुलासा करेंगे तब साफ हो जायेगा।
यंग साहब को सीकर के बारे में जो पत्र भेजना है, उसका पूरा मसविदा तैयार हुआ। उनसे दामोदर, मदन, या उनके यहां के किसी अंग्रेजी जानने वाले की मदद के लिए पुछवाया, परन्तु सन्तोषजनक जवाब नहीं मिला।

७-६-३९

कंदयोगाम में माधोजी ठाकर मिले। भूरा मीणा की मां बड़ी जबरदस्त है। जानकी, उमा, मीरा, मृदुला आये। साथ में भोजन।
उमा को यंग सा० को लिखे पत्र की स्वच्छ नकल करने को दी।
शाम को सागरमलजी बियाणी व दामोदर आये। हरचरण दास के साथ सागरमलजी को जयपुर में गाय के घी व शक्कर व स्वदेशी के काम की दुकान की तपास करने को कहा। दामोदर को जामरे के कुंए के बारे में समझाया। दो सौ रुपया धन्ना, गंगाविसन, पटेल को देने को कहा, शर्तें समझाईं। मीरा व उमा ने गायन व सितार सुनाई।
आज के हिन्दुस्तान टाइम्स में पं० जवाहरलाल का दक्षिण अफ्रीका को संदेश :

This is the empire to which we have misfortune to be tied. The sooner this empire ends, the better for humanity, the sooner we cut away from it the better for us. India is weak today and cannot do much for her children abroad, but she does not forget them and every insult to them is humiliation and sorrow for her. Aud a day will come when her long arm will shelter and protect them and her strength will compel justice for them. Even today in her weakness the will of her people cannot be ultimately

ignored. To our countrymen in South Africa, I say that we are with you in every act of courage that you perform in honour of India and her dear name. It is never right to submit to evil and national humiliation, and every attempt to improve these must be resisted, whatever the consequences. Dead nations submit to dishonour, but we are a living and proud people and I would rather, that—we face extinction than submitted to dishonour." Reuter and A.P.I.

८-६-३९

रात को विचित्र स्वप्न के कारण नींद में बाधा। जानकी ने कलकत्ता में किसी बड़े सनातनी आदमी की लड़की से राम की सगाई बिना मुझे पूछे व राम को लड़की दिखाये बिना कर डाली। लड़की वाला विवाह की जल्दी करने वर्धा आया। देर तक विचार चलता रहा। स्वप्न में ही खूब बोल-चाल व लड़ाई भी हो गई।

श्री यंग साहब को दामोदर को भेजने व एक्सरे व रिपोर्ट पत्रों के जवाब के लिए पत्र भेजा।

पूज्य बापूजी आज सेगांव (वर्धा) पहुंच गये होंगे।

श्री एफ० एस० यंग को सीकर के बारे में बारह पेज का पत्र भेजा।

सरदारसिंह के साथ—दामोदर की शाम तक राह देखी। उसे यंग सा० ने नहीं भेजा।

चर्खा। यंग साहब ने रामनाथ द्वारा जवाब भेजा कि प्राइम मिनिस्टर बीमार हैं। एक-दो रोज में दो-तीन सप्ताह के लिए आबू जाने वाले हैं। रिपोर्ट जल्दी भेजने वाले हैं। दामोदर का खुलासा शाम तक करने वाले हैं। भोजन के बाद 'संतवाणी' देखी।

९-६-३९

सरदार सिंह ने बताया कि यंग० सा० को मेरा बारह पन्नों का पूरा पत्र उनकी हाजिरी में रामप्रसाद ने पढ़कर सुनाया। सीकर के सम्बन्ध में यंग साहब ने कहा है कि वे आज जवाब भेजेंगे।

चर्खा कातते समय चि० उमा से बातचीत। पढ़ाई में उत्तमा (रत्न) करने का निश्चय हुआ। कोई होनहार योग्य युवक मिल जाये तो सगाई की जा सकती है, अन्यथा जल्दी नहीं है। उमा की इच्छा तो, दो वर्ष बाद विवाह हो तो ठीक रहेगा, ऐसी मालूम हुई। वह गरीब व अग्रवाल जाति के बाहर भी निरामिष-भोजी के साथ सम्बन्ध करने को तैयार है। मीरा मूंदड़ा वर्धा-महिला- आश्रम का ही काम करना चाहती है। दामोदर को भी वर्धा में ही सार्वजनिक काम दिया जाय तो ठीक रहेगा, ऐसी इसकी इच्छा है। दामोदर से बात करना होगा।

लुणियावास गये। सरदार सिंग साथ में। गणेशी व शिवगौरी को जानकी की ओर से पांच रुपये सहायता में दिये।

'संतवाणी' सुनी। सरदार सिंग व ड्राइवर सुना रहे थे। ड्राइवर अच्छी संगत किया हुआ मालूम दिया।

आज आसलपुर गांव में जोर की आग लगी। जान-मान की बड़ी हानि हुई, सुना। दुःख हुआ।

१०-६-३९

सरदार सिंग के हाथ श्री यंग व जानकी देवी के नाम ये दो पत्र भेजे।

आसलपुर की आग से भारी हानि हुई, उस बारे में उमरावसिंग राजपूत के साथ बाग में घूमना। भंवरसिंह व सीकर के कुमार हरदयाल सिंह की बातें करते रहे।

और हाल सुना।

यंग सा० की ओर से जगन्नाथ व रामप्रसाद ने आसलपुर की आग का वर्णन लिख भेजा। काफी हानि हुई, वहां मदद की जरूरत है।

अलाउन्स के बारे में यंग सा० को पत्र भेजा।

अबदुल्ला खान को १८ महीने की सख्त कैद की सजा मिली। बाप प्राइम मिनिस्टर है। ठीक उदाहरण है।

पू० राजेन्द्र बाबू को कांग्रेस के खजानची व वर्किंग कमेटी की सदस्यता का अपना त्यागपत्र भेजा।

काशिनाथजी (महिला-आश्रम वालों) को पत्र भेजा। उन्हें हिम्मत रखने को लिखा। काका सा०को महिला-आश्रम के सभापति बनने के लिए लिखा।

लिखा।

११-६-३९

नया कोट व पायजामा पहनकर करीब तीन मील घूमे। सरदारसिंग साथ में।

जानकी आई। भोजन साथ में। दोपहर को साढ़े तीन बजे करीब गुलाब-बाई, हरगोविन्द, पन्ना, वुद्धीसेन की स्त्री, उमा, मीरा, मृदुला आये। जलेबी वगैरा वनाई। शाम को सब साथ में भोजन। गुलाव, पन्ना से थोड़ी बातें। उमा व मीरा ने गायन सुनाये।

रात में सन्तों की वाणी पढ़ी।

आज जयपुर में कैद हुए बराबर चार महीने हो गये।

आज का मिलाकर सूत ४३ लटी हुई याने ३६६७९ वार सूत हुआ। दर रोज ३०५ वार का औसत आया।

१२-६-३९

रोपाडा (खौरी) गांव में छाजू मीणा को एक रुपया दिया।

श्री यादवजी वैद्य, नन्दकिशोरजी व नाथूलाल आये। यादवजी (बम्बई वालों) को कहना पड़ा कि गोड़े का दर्द निकल जायेगा। उन्होंने नन्दकिशोरजी को दवा बता दी। बाद में वह बम्बई गये।

जानकी व दामोदर ने यहीं भोजन किया। दामोदर को सीकर की स्थिति अलौंस व मुलाकात के बारे में यंग सा० से बात करने के लिए नोट करा दिया।

दामोदर व मदनलाल के द्वारा यंग सा० ने कहलाया था कि जमनालालजी ने मुझे वहां से निकलवाया। उन्होंने यह कहा कि उनको गवर्नमेन्ट आफ इंडिया के बड़े अधिकारी ने लिखा है कि जमनालालजी ने यू० पी० सरकार को बहुत जोर देकर लिखा कि यंग व चक्रवर्ती को वापस बुला लिया जाये। तब मुझे वापस बुलाया गया है। उस बारे में दामोदर को सारी स्थिति समझाई और कहा कि हां, यह बात ठीक है।

१ डा० खान सा० के लड़के। डा० खान सा० सीमा प्रांत में उन दिनों मुख्य मंत्री थे।

'सर्वोदय', अखबार व पत्र पढ़ ।

१३-५-३९

श्री केशवदेवजी व आविद अली को खासकर 'आर्य भवन' की गड़बड़ी के बारे में पत्र लिखे । इस घटना का खयाल रखकर व्यापार बन्द कर देना ही ठीक है। जहां तक कोई बराबर संभालने वाला न हो, वहां तक पूरी जोखम है, वगैरा जो विचार भी आये, वह सब लिख भेजे ।

बीच में दो घंटा मौन छोड़ना पड़ा, १० से १ तक । गुलाव व दामोदर के कारण ।

दामोदर ने कहा कि आज यंग साहब से ८ से ११ तक, तीन घंटे, बातें हुईं । सीकर के पत्र के बारे में उन्होंने यह तो कबूल कर लिया कि मेरे पत्र में जो बातें लिखी हैं वे सत्य हैं । अपने वादे के बारे में उनके मन में थोड़ी झिझक-सी थी । उन्होंने यह भी कहा कि "जयपुर सरकार ने मुझसे (जमनालालजी से) मिलने व पत्र लिखने की मनाई कर रखी है । मैं (यंग) यह पत्र होम मिनिस्टिर के पास तर्जुमे के साथ भेज रहा हूं । वहां से जवाब आने पर पत्र के बारे में अभिप्राय लिख सकूंगा ।" एलाउन्स की बात उन्होंने स्वीकार की कि इसका फैसला हो जाना चाहिए । मुलाकातों के बारे में लिखकर मांगा है । मैंने (जमनालालजी ने) उनके बारे में यू० पी० सरकार को दूसरी बार की घटना के बाद लिखा, इसपर उन्होंने (यंग ने) विश्वास किया । उन्हें यहां से जाने का व चक्रवर्ती के चले जाने का काफी दुःख है ।

१४-६-३९

खोदरी (रोपाडो) सुखा माली (अन्धा, उमर सौ करीब) को एक रु० दिया; और देने की जरूरत है । साढ़े चार मील घूमना हुआ ।

आज स्टेट्समैन में पढ़ा कि नागपुर के पास ता० १२-६ को ग्रान्डट्रंक एक्सप्रेस की दुर्घटना हुई । उसमें चि० राधाकिसन भी था; राधाकिसन का तार मिला—

Serious Railway accident. Saved. No injuries. Reaching Thursday.

तार मिल जाने से चिन्ता मिटी, ईश्वर का धन्यवाद !

काशिनाथजी को महिला आश्रम वर्धा के पते पर पत्र भेजे । जवाहरमलजी मास्टर व माणिकलालजी की लड़कियों की छात्रवृत्ति तथा लीलावतीं वगैरा के बारे में दो पोस्टकार्ड भेजे ।
सरदारसिंग के साथ शाम को मीणा की ढाणी की ओर घूमने गये । वहां से माली सुखदेवा (हरलाल का बेटा), जिसका बाग दौसावाले वकील ने नीलाम में अढ़ाई हजार रु० में लिया, उसने सारी हकीकत कही ।
'सन्तवाणी' थोड़ी देखी ।

१५-६-३९

सुखदेवा हरदेवा माली का बाग, जिसे दौसावाले ने खरीदा, आज फिर ठीक तौर से देखा ।
राधाकिसन मिलने आया । रेल-दुर्घटना का वर्णन सुनाया । डब्बे में से खिड़की पर चढ़कर नीचे गिट्टी पर कूदना पड़ा । पर चोट वगैरा बिलकुल नहीं आई । परमात्मा की अजब लीला है । बापूजी व अन्य मित्रों के समाचार कहे ।
किशोरलालभाई को संघ के ट्रस्टी पद का व तीसरे दर्जे की सदस्यता का त्यागपत्र लिखकर भेजा ।[1]
कमल को केशवदेवजी के पत्रों की नकल व कटिंग भेजी । यंग सा० को उनके पत्र का जवाब भेजा ।
जयपुर के बारे में बापूजी का स्टेटमेन्ट पढ़ा ।
ग्वालियर महाराज ने ठीक रिफार्म जाहिर किये ।
जानकी के साथ विचार-विनिमय । पर उससे दोनों को दुःख पहुंचा । मैं उसे कहे बिना नहीं रहता, यह मेरी कमजोरी है और वह इस उमर में अपना स्वभाव केवल मेरे कहने से कैसे बदल सकती है । उदारता, त्याग, सेवावृत्ति यह उपदेश से नहीं पैदा होते हैं और मुझे उसे उपदेश करने का अधिकार भी तो नहीं है ।
शाम को भोजन में जानकी ने गुलाबजामुन बनाये । उसे यह मिठाई बहुत पसन्द है, ऐसा उसने बताया । भोजन के बाद जानकी व उमा गये ।

१ देखिये जमनालालजी के पत्र-व्यवहार, भाग ३, पृष्ठ ५५ ।

१६-६-३९

आज हिन्दी अखबार भी आये। देखे। कटिंग काटना है।

बाग में रहने की इमारत के सामने कुआं है, उसमें ४०-५० रुपये लगाने से एक चरस दिन भर चले, इतना पानी हो जायेगा, यह हनुमान पुरोहित (रूपगढ़वालों) ने कहा। इस ठिकाने के कामदार कानसिंहजी आये। उनसे तय हुआ कि पचास रुपये तक मैं दूं। यह वे मेरे जमा कर लेंगे और लगान आने पर दे देंगे। इतवार से काम शुरू होगा। इस कुएं में पानी हो जाने से सबों को आराम हो जायेगा।

१७-६-३९

आज बगीचे के सारे काम करने वाले छोटे, बड़े व सिपाई वगैरा कोई पचीस लोगों का भोजन, सीरा-साग कराये। आठ रुपये खर्च आये।

अमावस्या के कारण जानकी व उमा के साथ खीर खाई।

यंग सा० ने आखिर आज एक मास बाद एक्स-रे रिपोर्ट भेजी। यंग साहब को ता० ७-६ को जो १२ पन्नों का लम्बा पत्र भेजा था, उसका अंग्रेजी तर-जुमा भी उन्होंने भेजा।

स्टेट्स के बारे में राजेन्द्रबाबू का स्टेटमेंट :

"If things are left where they are, one may take it that federation is dead...It is to be doubted very much, if the conditions insisted upon by the princes will be fulfilled."

१८-६-३९

गंगाबकश की गाय देखने गये। गाय को खड़ी कराई। उसे थोड़ी ताकत आई, ऐसा मालूम हुआ। खड्डा खुदाने की बात हुई। सेवला मीणा बुड्ढे को एक रुपया दिया।

दामोदर आया। मि० यंग को ता० ७-६ को जो लम्बा पत्र खास तौर पर सीकर के बारे में लिखा था, उसका अंग्रेजी ठीक नहीं हुआ था। उसे ठीक किया। इसमें करीब अढ़ाई घंटे लग गये। दामोदर को एक्स-रे रिपोर्ट, जानकीजी का प्रोग्राम, व शिकार जंगलात के बारे में समझाया। दामोदर को पैदल ही जयपुर जाना पड़ा, बिना खाये बुरा तो लगा, परन्तु दूसरा उपाय नहीं था।

श्री हुकमतराय के डी० आई० जी० होने की खबर सुनकर खुशी हुई सज्जन व निष्पक्ष व व्यवस्थित काम करने वाले समझे जाते हैं। आई० जी० पी० की जगह पर सी० पी० से रिटायर्ड अंग्रेज के आने की सुनी। तपास को कहा।

विट्ठल, गोपाल, सूरज, कल्याण, ये चारों और जगन्नाथ मिलाकर पांच-परमेश्वर यहां विराज रहे हैं। सूरज व गोपाल का दो-दो रुपये महीना व एक समय का भोजन निश्चित किया।

१९-६-३९

'नवीन चिकित्सा-विज्ञान' का एक प्रकरण पढ़ा। अखबार देखे, पत्र लिखे, कमल, वर्धा दुकान व केशवदेवजी को। चर्खा।

रुधा माली को मोतीझरा निकला। ये लोग बहुत ही खराब तरह से रहते हैं। कुवें में पानी दिखाई देने लगा। तीन रुपये खर्च हुए।

शाम को भोजन में अमरस बनाया तो उसमें शक्कर की जगह नमक पड़ गया!

२०-६-३९

सरदारसिंग से मोटर के बारे में पूछने को कहा। दामोदर की घटना को लेकर थोड़ी चर्चा। उसे समझाकर कह दिया था कि तुम्हें जो आर्डर हो, उस मुताबिक चलना चाहिए। मुझे साफ बता देना चाहिए कि यह हुक्म है। लेखी हुक्म मिल जाये तो ज्यादा ठीक रहे, और गैरसमझ का मौका नहीं हो।

कल्याण रसोइया से बातचीत। उसकी स्थिति समझी, छुआछूत व बीड़ी के बारे में भी। आदमी तो गरीब व भला मालूम देता है।

डा० खान सा० का छोटे लड़के जॉनखान (बैरिस्टर) उम्र २६ वर्ष, की मृत्यु का समाचार पढ़कर दुःख हुआ। इसकी माता को तो भारी चोट पहुंचेगी। डाक्टर सा० इससे आशा भी बहुत रखते थे। इसके ऊपर खर्च भी बहुत किया था। तार भेजा।

जयपुर महाराजा का लन्दन में गंभीर मोटर एक्सीडेन्ट हो गया। बाल-बाल बचे। ईश्वर को धन्यवाद। तार भिजवाया।

चन्द्रधर जौहरी (आगरावाले), इन्द्रमोहन, द्वारकादास भैया, दामोदर,

छोटनलाल वगैरा मिलने आये। मामूली वातचीत व नाश्ता। करीब साढ़े पांच आये व साड़े सात को चले गये।

कामदार ठाकुर करनसिंह आये। कुएं के वारे में वातचीत। मैंने कहा कि पचास रुपये तक की वात थी, वहां तक तो मैं तैयार था। अव अढ़ाई सौ रुपयों की आप वात करते हैं। तो पहले जोवनेर ठा० सा० की राय ले लेनी चाहिए कि आपको मुझसे कर्ज लेना या मुझे आपको देना ठीक रहेगा क्या?

२१-६-३९

भोजन करते समय जानकी, उमा व द्वारकादास भैया आये। उमा को जोर का बुखार चढ़ गया। उसे शाम तक यहीं रख लिया गया।

सूत की ४४ गुंडी (वार ३७५३२) कपड़ा वनाने के लिए द्वारकादास के साथ भेजी। नालवाड़ी में या गोविन्दगढ़ में व्यवस्था कर लेंगे। पहले चर्खा-संघ में जमा करवा देंगे।

सरदारसिंग की सलाह से होम मिनिस्टर अचरोल ठा० को पत्र लिख दिया, दर्द व खर्च के हिसाव के वारे में।

२२-६-३९

गोड़े में दर्द रहने के कारण घूमना तो हुआ नहीं। दवा और दूध लेकर सो गया। करीब डेढ़ घण्टे वाद होम मिनिस्टर अचरौल ठा० को सरदारसिंग के हाथ पत्र भेजा; इलाज की व्यवस्था व खर्च के हिसाव के वारे में लिखा।

सरदारसिंग ने आकर बताया कि श्री यंग ने मेरे पत्र के साथ ही खुद ने भी सविस्तार एक पत्र लिखकर साइकल पर होम मिनिस्टर के यहां भिजवा दिया। इलाज, खर्च (एलाउन्स) मोटर, फर्नीचर आदि की वातें उन्होंने लिख भेजीं।

आज दोनों समय रोटी व साग, लुई कुने के लेख अनुसार, वनवाये। स्वाद भी लगी। सन्तोष मिला।

पत्र लिखे—हिन्दुस्तान हाउसिंग कंपनी का धामा का दावा, वच्छराज जमनालाल का दावा, रामेश्वरदास व्रिरला, प्रभुदयालजी, नर्मदा, श्री यंग सा० को १२ हाफुस आम भेजे।

पू० वापूजी को रामेश्वरदासजी के पत्र में जो छोटा-सा नोट भेजा, उसमें

दामोदर को लिखा।
राधाकिसन मिला। उसे कहा कि मेरी चिन्ता का कारण नहीं। मुझे जितना ज्यादा रहने को मिलेगा, उसमें मेरा तो लाभ है ही, साथ में रचनात्मक काम को भी लाभ पहुंचेगा, इतना ही लिखा। सारे पत्र सरदारसिंग के हाथ यंग सा० के यहां भिजवा दिये। चर्खा।
रुधा माली को मोतीझरा निकला, उसके इलाज व पथ्य की व्यवस्था।

२३-६-३९

विचित्र सपने आये—जंगलात व शिकारखाने वाले श्री भैरूसिंहजी को अन्याय से बचाने के लिए, आश्रम में बछड़े पर जो प्रयोग किया गया, वह प्रयोग, इनपर किया। बहुत लिखा-पढ़ी व कोशिश की। बाद में यह प्रयोग दूसरे के हाथ से कराने के बदले मैंने खुद ही करना न्याय्य व उचित समझा, क्योंकि उसकी सजा भी भोगने के लिए मुझे ही तैयार रहना चाहिए; बिचारे किसान क्यों भुगतें, वगैरा। दूसरे सपने में श्री यंग सा० बड़े डाक्टर व एक दूसरे अंग्रेज अधिकारी के साथ आये। यहां की कुर्सियों पर बैठ नहीं सके, गिर गये, इत्यादि। विनोद भी हुआ। दोनों खासे लम्बे सपने थे। मि० यंग व होम मिनिस्टर के पत्र मिले।

He is detained under the pleasure of His Highness the Maharajasahib of jaipur.

यंग साहब ने दामोदर को बताया कि इस प्रकार मेरे बारे में कौंसिल ने निश्चय किया है।
आज दोनों गोडों के व नीचे के जोड़ का एक्स-रे फिर से लिया गया। कर्नल विलियमसन ने ब्लडप्रेशर, आंख, छाती, नाड़ी ठीक-तौर से तपासी। ब्लडप्रेशर ज्यादा बढ़ा हुआ मालूम हुआ। १७८ ऊपर का व १०५ नीचे का। नाड़ी ७३। डा० ने कहा कि गोडे का दर्द एकदम नहीं मिटने वाला है। उसमें नई हड्डियां निकल रही हैं। बिजली के इलाज से थोड़ा आराम मिल सकता है।
उन्होंने नक्शा खींचकर बताया और कहा कि अभी तो सप्ताह में दो बार बिजली का इलाज लेना होगा। अस्पताल में ११। से १।। बजे तक रहना पड़ा। विलियमसन तपास रहे थे कि इतने में ही श्री यंग का फोन आया।

उन्होंने रिपोर्ट बहुत नरम करके लिखी होगी, ऐसा लगता था।

ब्लड प्रेशर ज्यादा बढ़ गया, इससे एक बार थोड़ी चिन्ता हुई। कारण मालूम नहीं हुआ। मैं तो समझता था कि ब्लडप्रेशर मामूली-सा होगा और गोड़े का दर्द भी मिट जायेगा। खैर, जो होना होगा, सो होगा; चिन्ता से क्या लाभ, जबकि मरने तक की पूरी तैयारी की हुई है। केवल विचार, घूमना-फिरना बन्द हो जाने का या अपंग होकर पड़े रहने का, हुआ। मैंने तो कर्नल विलियमसन से कहा कि आपरेशन से ठीक हो सकता हो तो मेरी उसकी भी तैयारी है। वह हंसने लगा। १० रोज बाद फिर तपासेगा। कहा कि तेल-पट्टी लगाने में हर्ज नहीं।

हृदय नारायणजी (मैनपुरीवाले), दामोदर, मदन कोठारी, चि० उमा मिलने आये।

विलियमसन की रिपोर्ट व इलाज के बारे में तथा अन्य विचार।

शिकारखाने व जंगलात के जुल्म आदि के बारे में परसों फिर एक नौजवान मुसलमान को दिन के समय बाघ के खा डालने की खबर सुनी। दो रोज पहले एक बघेरा व कल कई सुअर इस बाग के अन्दर भी आ गये थे। खलबली मची रही। इस बारे में समझ कर कहा।

२४-६-३९

८॥ बजे अस्पताल, बिजली के इलाज के लिए रवाना। बराबर नौ बजे बिजली की ट्रीटमेन्ट शुरू की। बिजली दाहिने गोड़े में लगाई गई। सिर तक ठीक पसीना आया। गरमी तो बहुत मालूम दी, पर डा० भवानी सिंहजी भटनागर ने कहा कि जितना सहन हो सके, उतना लाभ है। कल जो एक्स-रे लिया था, देखा व समझा। वह कान में थोड़ी देर अल्ट्रा वायलेट—ये डा० सज्जन पुरुष मालूम हुए।

बाघ ने परसों जिस मुसलमान युवक को जखमी किया था, उसकी हालत की तपास की। शायद वह बच जायेगा।

होम मिनिस्टर अचरोल ठा० को पत्र भेजा। अखबार पढ़े।

श्री यंग सा० ने कल ता० २३-६ को जो डाक्टरी जांच हुई, उसकी यह रिपोर्ट भेजी—

State Medical Department, Jaipur (Rajasthan)

Mayo Hospital, 23-6-39
I have examined Seth Jamnalal Bajaj and find that he is suffering from chronic osteo- arthritis of both knees and ankles, more severe in the right knee. His blood pressure 178-105 slightly raised but this need not cause anxieties as his heart is very good and his general condition is most satisfactory. Appropriate treatment has been prescribed.
H. W. Williumson, M.D.M.R.C.P,F.R.C.S.(Edinburg) Lt. Col. I.M.S.

२५-६-३९

रात को नींद कम आई। दर्द तो ज्यादा नहीं था, परन्तु बेचैनी मालूम होती रही। करीब २ बजे मुंह-हाथ धोकर कुर्सी पर स्मरण, ध्यान करता रहा।

जून मास के 'सर्वोदय' से बापू के भाषण में से उतारा :

"अपने प्रतिपक्षी से जल्दी समझौता करो.
अगर किसी के बारे में तुम्हारे दिल में कुछ गुस्सा हो तो उस पर सूर्य को न डूबने दो। सूर्यास्त के पहले ही उसके पास चले जाओ और उससे बातचीत कर लो।" बापूजी कहते हैं, "मेरे लिए ये वाक्य वेद-वाक्य से कम कीमती नहीं हैं। यही अहिंसा की जड़ है। अहिंसा को हिंसा के मुंह में चले जाना है।"

ता० २५-६ को अखबार देखे। राजेन्द्रबाबू का भाषण, फारवर्ड ब्लाक के प्रस्ताव। बापू का स्टेट के बारे का खुलासा। ए० आई० सी० सी० के प्रस्ताव वगैरा पढ़े। जानकी के दौरे का वर्णन भी पढ़ा।

जानकीजी, उमा, हृदयनारायणजी, केशरलाल कटारिया आदि मिलने आये। आसलपुर का वर्णन, नथमलजी का कटरा, हरलाल माली का बाग, गौशाला आदि के बारे में बातें। जानकी ने अपने दौरे का वर्णन सुनाया।

२६-६-३९

कल्याण रसोइया (मोरा वाले) को ता० ४-७ तक के लिए घर जाने की छुट्टी दी। ता० ५-७ को काम पर नहीं जायेगा तो पगार काटी जाने का

कहा।
पगार का निश्चय किया। जयपुर राज्य में (देश में—राजपूताना में) रहें वहां तक आठ रुपया मासिक मिलेगा। वर्धा—बम्बई, गोला की ओर जाना हुआ तो गीला दश, सूका पंद्रह। बारह महीने में एक महीने की वेतन के साथ छुट्टी। ये शर्तें उसने स्वीकार कीं। जून तक की उसे पगार दी। खर्च के लिए एक रु० व बच्चों के लिए एक रु० दिया।
गूजर माली के छोकरे को ८-१० रोज हुए एक रुपया देकर बन्द किया।
गोपाल सेठ को भी जून तक एक रुपया दिया। आगे दो रुपये महीना व खाना देने को कहा। जगन्नाथ मीणा रसोई करेगा वहां तक वहीं खायगा।
हकीम (ड्राइवर) के खाने का इन्तजाम अलग करने को सरदार सिंह से कहा। बदली चाहता हो तो बदली करा दी जाय।
सरदार सिंह की छुट्टी एकाएक मंजूर हो गई। वह गया व उसकी जगह उमरावसिंह राजपूत (अलीगढ़ वाला) आया। सरदार सिंह के जाने से थोड़ा बुरा मालूम दिया।

२७-६-३९

कल ७॥ बजे जो मौन लिया था वह आज २४ घंटे बाद खोला। उमराव-सिंह से थोड़ी बातें। ८॥ बजे अस्पताल गये। डा० भटनागर ने बिजली की ट्रीटमेन्ट दी बीस मिनट तक। जानकी, दामोदर वहां आये। शास्त्री के छोटे लड़के श्याम को, उमरावसिंह की परवानगी से साथ ले आये। श्याम बड़ा नटखट बालक है। यंग सा० ने ६ आम व ६ सेव भिजवाईं। अखबार देखे। आज एकादशी व्रत (निर्जल) किया। बीस घंटे बाद, रात को बारह बजे बाद पानी पिया जब नींद आई।
दूधागाय जिसे लड़के नीचे से उठाकर लाये थे और जानकी ने जिसे ता० १ जून को मरने की हालत में देखा था, वह आज २७ दिन के बाद प्रातः-काल शुभ-मुहूर्त में स्वर्गधाम पधार गई।
व्यापार में दक्षता रखने को फतेहचंद से कहा। सीकर जाने, जानकीजी व उमा का आने का अनसूया को लिखा। शास्त्रीजी को स्वास्थ्य ठीक रखने को कहलवाया। घनश्यामदासजी बिड़ला के पत्र का जवाब भेजा। बम्बई भी पत्र भेजा।

उमराव सिंह ने कहा कि मुसलमान सत्याग्रही खूब संख्या में माफी मांग रहे हैं। उनके नेता चौमूवाला ने भी माफी मांग ली है, इत्यादि। इन लोगों की समझ है, यह आन्दोलन जल्दी खतम हो जायेगा।

२८-६-३९

भोजन करके उठे तो जानकी सीकर जाते हुए मिलने आ गई। उसे मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता है। हिम्मत व उत्साह रखकर जाने का कहा। उमरावसिंह का वर्ताव ठीक रहा। इन्हें लाया भी व बाद में पहुंचा भी दिया।

कपूरचन्दजी पाटनी के घर से इनकी पत्नी, सुभद्र कुमार, सुभद्रा, विमला, दो छोटे बालक मिलने आये। सात बालकों में पांच मिलने आये। बालकों से विनोद, पढ़ाई वगैरा बातें, खुशी हुई।

२९-६-३९

काना दूधवाले की ढाणी के पास तक घूमकर आये। एक मकान गिरी हुई दशा में देखा। काना से कहा, सौ रुपये तक मिले और उसमें कोई झंझट न हो तो ले लेंगे।

श्री केशवदेवजी का लम्बा पत्र आया। खण्डूभाई के मामले का समाधानकारक खुलासा नहीं हुआ। उन्हें फिर लम्बा पत्र लिखा। आज पत्र लिखने में करीब पांच घंटे लगे। थकान मालूम देने लगी। कई पत्र लिखे।

Harijan—24th June 39—How far ? (By Gandhiji) In case like Jaipur, of course, there can be no question of lowering. The demand it-self is in the lowest pitch. There is no room in it for lowering anything. In essence it is one for civil liberty consistant with the observance of non-violence is the first step towards Swaraj. It is the breath of political and social life. It is the foundation of freedom. There is no room there, for dilution or compromise. It is the matter of life. I have never heard of water being diluted.

३०-६-३९

दामोदर व मदन कोठारी आये। यंग सा० का पत्रव्यवहार बतलाया। बम्बई से डाक्टर बुलाने को कहा। मैंने मना कर दिया। अखबारों में न लिखने व मित्रों को भी चिंतित न करने का ख्याल रखने को कहा। यह भी कहा कि बीमारी की ज्यादा लिखा-पढ़ी करोगे तो उसका बहाना बनाकर मुझ पर लगा प्रतिबन्ध शायद हटा लें। वह मुझे ठीक नहीं लगेगा।

नन्दकिशोरजी वैद्य आये। ब्लड प्रेशर व दर्द के बारे में देर तक बातचीत होती रही। वे श्री यादवजी को सारी स्थिति लिखकर उनकी राय मंगावेंगे। श्री लच्छीरामजी से भी बात करेंगे।

मीरा मूंदड़ा का पत्र मिला। गिजूभाई के देहान्त के समाचार पढ़कर दुःख हुआ।

वर्धा दुकान का पत्र आया। बद्रीनारायण जी गनेडीवाल (फतेहपुर वालों) का देहान्त अषाढ़ सुदी २ सोमवार को फतेहपुर में हुआ, यह लिखा। बुरा मालूम हुआ। इनके बारे में व्यवस्था करने के इन दिनों दो-तीन बार विचार आये।

देहरादून-दिल्ली एक्सप्रेस दुर्घटना के थोड़े नाम आये। उसे देखकर शंका हुई कि उसमें रामगढ़ (सीकर) के बुधामाली का लड़का गणपत तो नहीं है ?

मदनलाल कोठारी अपने घरेलू मामले में बात करने आया। मैंने उसे कहा कि तुम आकर वहां का मामला बिलकुल साफ कर डालो। फिर तुम्हें ट्रेनिंग के लिए किसी कड़क आदमी के पास रखेंगे, जिससे तुम्हारा आलस्य चला जाय। उसने कहा कि मुझे तो सार्वजनिक सेवा ही करनी है। तब उसे साफ समझाया कि सेवा में तो कष्टों को आप होकर निमंत्रण देना है। रुपये का मोह छोड़ना है। रात-दिन घर-कुटुम्ब का मोह छोड़ हाथ में लिये हुए काम को पूरा करना होता है। इसके कई उदाहरण दिये।

उमराव सिंह विट्ठल को सिनेमा दिखाने मेरी परवानगी से ले गया। बाद में ठीक नहीं मालूम हुआ।

१-७-३९

ठीक दो बजे अस्पताल पहुंचना। डा० भटनागर ने बिजली गोड़े में लगाई।

पच्चीस मिनट गरमी ज्यादा लगती रही; जल गया, फफोले आ गये। पांव सूज गया। डा० विचारा घबरा गया। वास्तव में दोष तो मेरा ही था। ज्यादा गरमी हुई तो मुझे बन्द करने को कहना चाहिए था। मलहम लगाने का दिया। डा० विलियमसन मुझे तो नहीं मिले। दामोदर से मिले। पांव में जलन होती रही। मलहम लगाया। शाम को व रात को भी जलन व दर्द कम तो हुआ, पर नींद पूरी नहीं आई; पांव में जो बड़ा-सा फफोला हो गया, उसके फूटने के डर के कारण।

जयपुर महाराज के मिलिटरी सैक्रेटरी श्री सुमेरसिंहजी का पत्र आया। महाराज ने तार के लिए धन्यवाद भेजा।

द्वारकादास भैया का पत्र पढ़कर थोड़ा बुरा लगा। इस पत्र से उसके प्रति भाव कम ही हुआ।

२-७-३९

डा० भवानी शंकर भट्ट आये। फफोलों में से पिचकारी से पानी निकाला। सेंककर मरहम-पट्टी की। डा० सज्जन व शुभचिंतक मालूम हुए। कल डा० विलियमसन देखने वाले हैं।

दामोदर व प्रह्लाद वैद्य (सीकरवाले) मिलने आये। दामोदर ने यंग का पत्र-व्यवहार वतलाया। थोड़े पत्र लिखवाये।

३-७-३९

फफोले में थोड़ा दर्द।

कर्नल विलियमसन ने तपासा। ब्लड प्रेशर १६२-११० है। उसने फिर यूरोप (जर्मनी) जाने का आग्रह किया, नहीं तो जुहू में रहने को कहा। गौरीलालजी की तबीयत का हाल जानने के लिए वर्धा तार भिजवाया।

४-७-३९

भूलाभाई (लालसोट वाले) के साथ साढ़े सात बजे अस्पताल। डा० विलियमसन ने घाव देखा। थोड़े चिन्तित दिखाई दिये। वहीं अस्पताल में रखने का विचार किया, परन्तु स्थान खाली नहीं था।

वजन १६८ रत्तल हुआ। आज भी विलियमसन का कहना हुआ कि यूरोप जाना जरूरी है। मैंने तो कह दिया कि मेरी इच्छा नहीं है। पर आपके जो भी विचार हों, वह लिखकर दे दें। दामोदर महात्माजी से कह देगा। कम्पा-

उण्डर को मेरे पास ही रखने का निश्चय हुआ।

घर आये। आराम किया। आज छाती में दर्द (भारीपन) मालूम होने लगा। थोड़ी देर विचार आया। मोटर भी यहां नहीं थी व कोई जवाबदार आदमी भी हाजिर नहीं था। वाद में दर्द चला गया।

आज के अखबार से उतारा---

Prime Minister of England, said, "We are living in critical and dangerous times. We are ourselves a peaceful nation, and we desire no quarrels with anyone. But let no one make the mistake of supposing that we are not ready to throw whole strength in the scales if need be, to resist aggression whether against ourselves or against those whose independence we have undertaken to defend."

किशोरलालभाई के पत्र का जवाव लिखा, द्वारकादास भइया के पत्र का जवाव भी।

५-७-३९

किशोरलालभाई को कल जो पत्र लिखा था, वह भिजवा दिया। दामोदर मिल गया। वापू को सन्देश, डा० विलियमसन का जवाव व देहली वगैरा के वारे में वातें हुईं। उसने आज भी श्री यंग से जो वातें हुईं, वह कहीं। श्री यंग के मार्फत विलियगसन की रिपोर्ट मिली। वह रिपोर्ट इस प्रकार है:

Jaipur 4th July

Dear Mr. Damodardas,

Many thanks for your letter. It is evident from the symptoms and the X Ray pictures that Seth Sahib must have been suffering from Arthritis for sometime, probably years. As you now, the disease is not dangerous to life, but is a source of pain and inconvenience to the patient, and is apt to get worse as he gets older. With regard to the blood pressure if this continues to rise it will, of course, be a grave menace to Seth Sahib's life though at the present time and probably for the next few years there is no immediate danger. 'A Stitch in time saves nine' and I think that if he could have specialised treat-

ment now it would save him a great deal of pain and chronic ill-health in the years to come. I have been considering the question of giving him gold injection for the arthritis, but these have to be given under very careful supervision and are not so effective in the type of the disease from which he suffers as they are in the other type; so I think it is better to try other things first. In the present state of the medical knowledge both arthritis and the tendency to high blood pressure are best treated at a spa on some similar establishment that specialises in these complaints. the ones I know to be good being as follows :

1. Bad Nauheim, Germany
2. Aix Les Baines, South of France
3. Aix La Chapelle, Belgium
4. Bath Harrogate or Droitwich, England.

If it is impossible for Seth Sahib to visit any of these places he should live in a place with an equable climate, at or near sea level where he could be under the care of a specialist. I have arranged for a compounder to look after him, but as I have to take this man away from his normal work of looking after poor patients, whom I do not wish to suffer, and as the hospital is very full, I can not spare him for long.

Yours sincerely
(Sd) H. W. WILLIUMSON

आज इस बाग के जामुन प्रथम बार खाये।

६-७-३९

मेयो अस्पताल साढ़े सात पहुंचे। डा० गैरहाजिर थे। रामनिवासबाग मोटर में से ही, कैद होने के बाद, घूमकर देखा। श्री हंस राय बीमार होकर अस्पताल आये। तलाश किया, परन्तु बीमारी का पता नहीं लगा। डा० विलियमसन से (उसके आफिस में) मोटर में घूमने के बारे में (दर्द

के कारण) वात हुई, वह उसने मंजूर की। डा० नाजत (गोवानी पुलिस वाले) हाजिर थे।

उमराव सिंह के हाथ श्री यंग को पत्र भेजा।

७-७-३९

अस्पताल में दो व्यक्ति वघेरों से घायल हुए दाखिल हुए। वहुत ही शोचनीय स्थिति यहां के किसानों व जनता की हो रही है। इसका जल्दी इलाज करना होगा।

कल्याण रसोइया (मोरा वाला) व बुद्धी मेहतर (हरिजन लड़का) आया। इसकी पगार, रोटी और चार रुपये महीना, तय किया।

कान्हा मिला। दूधवाले के वड़े लड़के, जिसका नाम खीमा था, की जगह प्रह्लाद रखा गया। यह लड़का ठीक मालूम होता है।

८-७-३९

होम मिनिस्टर से फोन पर वात हुई। वात तो ठीक की, परन्तु परिणाम अभी तक कुछ नहीं आया। नये आई० जी० पी० टेलर सुनने में आ रहा है कि विचित्र से हैं। होम मिनिस्टर ने कहा कि सब घर वालों को इजाजत मिल गई। पर टेलर ने केवल मां को चार घंटे की मिलने की इजाजत दी। मैंने राधाकिसन से कह दिया कि अगर सबों की इजाजत न दे तो सबों को सीकर भेज दें। गौतम को देखकर सुख मिला। वहुत ही प्यारा व होनहार निकलने की आशा होती है। अनुसूया, वुद्धीसेन व नारायण को भी देखा।

पू० मा, अनसूया, गौतम, भाभी (राधाकिसन की मां), गणपति, वुद्धीसेन, नारायण जाजू, राधाकिसन, लछमण कुणवी नौकर (सालोडवाला) इतने मिलने आये।

भोजन। मां की तबीयत वहुत नरम मालूम हुई। मां वगैरा को मुलाकात में जो दिक्कत पड़ी उससे बुरा तो वहुत लगा। मेरी व मां की ऐसी हालत में भी मां को दो रोज भी मेरे पास रखने की इजाजत नहीं मिली। अधिकारियों के हृदय थोड़े ही होता है। राधाकिसन ने वघेरों के कष्टों के दुःखदायक किस्से सुनाये।

९-७-३९

मां, अनसूया, गौतम, दामोदर, लछमन नौ वजे वाद आये।
दामोदर को परवानगी मिलने में देर हुई। दामोदर ने, वापूजी से तवीयत वगैरा की जो वातचीत हुई, वह कही। डा० विलियमसन के पत्र का जवाव ठीक कर दामोदर से लिखवाकर व सही करके उमराव सिंह के हाथ भेजा।

१०-७-३९

डा० विलियमसन को मेरा पत्र मिल गया। कम्पाउण्डर को वापस करने को मैंने कह दिया।
डेरे आने पर ९। वजे श्री हरिसिंहजी (अचरोल ठाकुर होम मिनिस्टर) व श्री पीरामलजी वगड़वाले मिलने आये। ११। वजे वापस गये। श्री हरिसिंहजी का आग्रह था कि मैं इलाज के लिए भारत के वाहर नहीं जाना चाहता तो जुहू (वम्बई) जाऊं। उन्होंने कहा कि सर वाजपेयी भी ब्लड-प्रेशर के कारण जुहू गये हैं। तवीयत ठीक रहेगी तो सव ठीक होगा। कमाई कर सकेंगे वगैरा, कहते रहे। मैंने उन्हें डा० विलियमसन का दामोदर के नाम का पत्र व मेरा दिया हुआ जवाव पढ़ा दिया और समझाकर कह दिया कि यूरोप तो मैं स्वतंत्र होता तो भी जाना पसन्द नहीं करता। इस हालत में तो जाने की कल्पना भी नहीं हो सकती।
जुहू भी कैसे जा सकता हूं? पीरामलजी ने कहा कि जुहू में उनका वंगला, जमीन वगैरा वहुत अच्छी जगह पर है। वह तो आज ही अपने साथ ही मुझे ले जाना चाहते थे; पर मैंने कह दिया कि प्रतिवन्ध विना शर्त हटने के वाद ही ५-७ दिन के वाद भले ही कुछ दिन के लिए अपने डाक्टर मित्रों से मिलने आऊं, अन्यथा पावन्दी हटने पर भी, जहां तक सन्तोषकारक रास्ता नहीं वैठता, वहां तक मुझे तो यहीं रहना होगा। अपना कारण भी उनको समझा दिया।
प्रजामण्डल की तथा अन्य शर्तें जो पहले वताई हुई हैं, वह तो हैं ही। उनके अलावा शिकारखाना व जंगलात के वारे में भी मेरे विचार व भावना ठीक तौर से उन्हें समझाकर वताई। वह आज मि० टॉड से मिलने जायेंगे और ता० १३ को मेरे पास आकर सूचना दे देंगे।
हरिभाऊजी व दामोदर मिलने आये। उन्हें आज की मुलाकात का सारांश

कहा।

११-७-३९

स्वामी लच्छीरामजी (राजवैद्य) की कल दोपहर को मृत्यु हो गयी। समाचार सुनकर दुःख हुआ।

रतनदेवी शास्त्री, रामेश्वर अग्रवाल (रींगस) कमल चौधरी, धन्नारायण दानी, दामोदर मिलने आये। चर्खा कातते हुए बातचीत। दामोदर से पत्र लिखवाये। करीब सात-आठ पत्र लिखे गये। धन्नारायण दानी ने आर्य भवन का किस्सा बतलाया।

कमल चौधरी का शिकारखाने व जंगलात का काम करने का निश्चय।

१२-७-३९

आज थोड़ा पैदल चले बाद में अस्पताल गये। डा० विलियमसन व सेन ने घाव देखा।

चमड़ी काटकर निकाली। दवा बदली। घाव के आसपास, जहां खाज आवे वहां चन्दन का तेल लगाने को कहा। पैदल घूमने की मनाई। दिन में तीन बार ड्रेसिंग करने को कहा।

डा० सेन ने कहा कि घाव ठीक होने में पंद्रह रोज लगेंगे, पूरा आराम देते रहेंगे तो।

होम मिनिस्टर यहीं हैं। आबू नहीं गये।

देर तक पत्रों के जवाब लिखे, जानकीजी को व अन्य को।

आज प्रथम बार मोटर में घूमने के लिए गये। डा० विलियमसन ने इसके लिए यहां के अधिकारी से कहा। पर मोटर में घूमने में आनन्द नहीं आया, बेचैनी-सी मालूम हुई।

मि०बी०सी०टेलर का खत मिला, अपमानकारक व असमाधानकारक था।

१३-७-३९

आज डा० विलियमसन ने चमड़ी उतारी। घाव बढ़ता ही जा रहा है। जलन व खाज दोनों हैं। आज करीब दो घंटे लग गये, जली हुई जगह के इलाज में व गोड़े में बिजली देने में। मौन के कारण बातें लिखकर हुईं। डा० भटनागर को काफी चिन्ता हुई। यह जखम ठीक तकलीफ देता मालूम दे रहा है। शरीर के भोग !

शाम को वाघ की गर्जना सब लोगों ने सुनी। मैं नहीं सुन सका।
रात को १२ वजे तक वर्षा हुई। अन्दर सोना पड़ा। बुद्धा ने भजन सुनाये।

१४-७-३९

श्री वी० सी० टेलर का पत्र सायकल सवार लेकर आया। वह कल नौ वजे मिलने आने वाले हैं। होम मिनिस्टर का सन्देश भी उसी समय कहने वाले हैं।
होम मिनिस्टर अचरोल को व श्री टेलर को पत्र भेजे—मुलाकात की गड़-वड़ी के वारे में। चर्खा काता।

१५-७-३९

वी० सी० टेलर (आई० जी० पी०) मिलने आये। ९ वजे से १० वजे तक रहे। इन्होंने होम मिनिस्टर का सन्देश कहा। मेरे कहने पर यह लिखकर दिया। मुलाकात का खुलासा किया, अलाउन्स की चर्चा। ये इन्दौर स्टेट से आये हैं और सी० पी० सर्विस के हैं। आठ-दस रोज में मिलते रहेंगे। होम मिनिस्टर का सन्देश इस प्रकार है :

The Three conditions for release are not approved, especially the one that the reason of his release on medical grounds should not be mentioned in the release notice.

होम मिनिस्टर व श्री टेलर, दोनों के पत्र तैयार हुए।
'सावधान' व 'चित्रा' का हायकोर्ट ने फैसला कर दिया। 'सावधान' को ५००) रुपये का दंड और 'चित्रा' को ६ महीने की सजा।

१६-७-३९

जानकी व उमा जल्दी आये। प्रार्थना के वाद मोरों व कवूतरों को जवारी खिलाई।
आज अस्पताल नहीं गये। लेकिन बरोल की ढाणी तक पैदल घूम कर आए। वहां स्त्रियों ने जानकी व उमा को गीत सुनाये।
होम मिनिस्टर व टेलर के पत्र उमराव सिंह के हाथ भेजे।
भोजन के वाद, आबिद अली, श्रीनिवासजी बगड़का व दामोदर आये।
थोड़ी देर वाद—रतनजी, राधाकिसन, नेमीचन्द कासलीवाल आये।

दामोदर ने श्री टेलर के पत्र का जवाव भेजा, वह ठीक नहीं मालूम हुआ। श्री टेलर ने लिखा है कि नजदीकी कुटुम्वी स्त्रियों को दिन में मिलने आने में कोई रुकावट नहीं रहेगी।

गोरीलालजी वजाज की मृत्यु वर्धा में आज शाम को ६।। वजे हुई।

१७-७-३९

श्री टेलर (आई० जी० पी०) को जो पत्र भेजा, उनका मतलव पूछा कि दुरुपयोग तो नहीं होगा। इस वारे में स्पष्ट खुलासा लिख भेजें।

गौरीलालजी वजाज की मृत्यु वर्धा में कल शाम को ६।। वजे हुई, इसका तार आया, कहा। तार व पत्र भेजा। आखिर विचारे गये, उन्हें तो शांति हो गई।

१८-७-३९

आविदअली मिलने आया। हाउसिंग व मुकुन्द आयर्न की वातें कीं। उसे जल्दी ही वापस जाना पड़ा, क्योंकि रामनाथ व उमरावसिंह ने कहा कि दो घंटे की ही परवानगी है। वास्तव में इनकी लहर की वात है।

१९-७-३९

सुबह ही मालूम हुआ कि रात में ३ वजे के करीव वघेरा या वाघ पड़ोस के माली की गाय मार गया। मोटर में वहां जाकर मौका देखा। यह घटना यहां से सौ कदम के फासले पर हुई। कई तरह से गाय को खाया। बुरा तो वहुत ही मालूम दिया। इस गरीव किसान की सव गायों में यही अच्छी व मोटी-ताजी थी। वाद में मालूम हुआ कि परसों रात को याने सुवह तीन-चार वजे के करीव, यहां से २।।-३ फर्लांग पर, एक माली की झोंपड़ी में से वाघ खूंटी सहित वकरी को ले गया व सड़क के उस पार ले जाकर दूसरे वाघों के साथ उसे खाया। खोजों पर से पता लगा। पुरुष, स्त्री, वच्चे वहीं सोये हुए थे। उन्होंने अपना दु:ख वर्णन किया।

जानकी व उमा से वातें; पत्र लिखवाये।

हिन्दुस्तान टाइम्स ने जयपुर पर अग्रलेख लिखा है।

२०-७-३९

राधाकिसन को रामकिसन डालमिया ने मिलने वम्वई वुलवाया था। वाद में टेलीफोन से खवर मिली कि जाने की जरूरत नहीं रही। वह यहां मिल-

कर सीकर चला गया। उसके साथ झुंझुनूं से शिक्षामंडल के इंस्पेक्टर आये थे।

कमल, शंकरलाल बैंकर, देशपाण्डे, दामोदर, आविदअली वगैरा आये। शंकरलाल व कमलनयन ने स्वास्थ्य के बारे में, खासकर बिजली से पैर जल गया उस बारे में, लम्बा-चौड़ा व्याख्यान सुनाया। देर तक चर्चा करते रहे। बाद में हाउसिंग कंपनी के बारे में व मुकन्द आयर्न तथा नागपुर बैंक से त्यागपत्र देने का फैसला हुआ। नागपुर में हाउसिंग मकान बनाने का इन्द्रमोहन व द्वारकादास का हाल थोड़ा समझा। बुरा तो लगा। चर्खा काता।

२१-७-३९

अस्पताल में डा० भटनागर ने ड्रेसिंग व नीचे के हिस्से में बिजली का सेंक किया। वहीं शंकरलाल बैंकर, कमल, जानकी व उमा भी आ गये। घाव देखकर शंकरलाल को ठीक नहीं लगा। जानकी व उमा तो मेरे साथ आ गये। कमल ११ बजे आया। भोजन साथ में किया। आज दाल बाटी चूर्मा बनाया था।

जानकी को उमा के बारे में तथा थोड़ा और समझाने का प्रयत्न किया। वह रो दी। मुझे भी बुरा तो लगा। आखिर ठीक-ठाक हो गया। चि० उमा को भी थोड़े में समझाया।

वे लोग सवा दो बजे की गाड़ी से जाने के लिए यहां से गये। कमलनयन पहुंचाने गया। मिलने कल फिर आयेगा।

२२-७-३९

कमल से बातचीत होती रही। उसे कहा कि तुम मेरे स्वास्थ्य के बारे में जो रिपोर्ट दो, वह मुझे दिखाकर दे सकते हो। झुनझुनूं-जेल के बारे में मैंने उसे कहा कि वह बहुत ही खराब हालत में है। व्यापार सम्बन्धी बातें। अखबार।

सीसम का पेड़ बाग वालों से दस रुपये में खरीदा। जितना उन्होंने कहा, उतना ही दिया। गुला खाती (रूपगढ़ वाला) ने पलंग, टेबल आदि फर्नीचर बनाने का काम शुरू किया।

२३-७-३९

मोटर में घूमते हुए सिटी स्टेशन व कल्याणजी के मंदिर की ओर होते हुए

आये। डाक बंगले वाले दीखे तो नहीं। बंगले को ही नमस्कार कर लिया। रामनाथ साथ में।

कमलनयन, दामोदर, कुमारी सुभद्रा पाटणी, उसकी माता व कमलकुंवर मिलने आये। शाम को भोजन करके वापस गये।

श्री रामचन्द्र (अहीर) ने, जो यहां के चार्ज में है, दो भजन सुनाये। स्वामी परमानन्दजी की व रेवाड़ी आश्रम की बातचीत करते रहे।

२४-७-३९

साढ़े सात बजे अस्पताल। नीचे के जोड़ में बिजली लगाई व ड्रेसिंग किया।

वापस लौटते समय चितोड़ा ठाकर के बाग की ओर घूमने गये तो बाघ की आवाज साफ सुनाई दी। मुझे तो लगा कि बहुत नजदीक खड्डे में है; पर वह पहाड़ी में जानवर खा रहा था, ऐसा सबों का कहना था।

शंकरलाल बैंकर, कमल, देशपांडे व बाद में दामोदर तथा रामप्रसादजी (दौसावाले) मिलने आये। रमण महर्षि के विषय में बातचीत।

२५-७-३९

अस्पताल से वापस लौटते समय गीजगढ़ का बाग व मंदिर, जहां मंगल को मेला भरता है, देखा। श्री ओमदत्तजी, अंगदजी, श्याम सुन्दरलालजी (कामट वाले वैद्य) मिलने आये। देर तक बातचीत व विचार-विनिमय। प्राकृतिक चिकित्सा करने का निश्चय हुआ।

२६-७-३९

कमलनयन, दामोदर व कुमारी विमला पाटणी आये। दामोदर ने बहुत से पत्रों के जवाब लिख दिये। कमल से वर्धा दुकान का आंकड़ा तथा अन्य व्यापार के संबंध में बातचीत। श्रीकृष्ण प्रेस, चांदा मैच फैक्टरी आदि के बारे में भी।

प्राइम मिनिस्टर मि० टॉड ने दो बार बाघ मारने का हुक्म जारी किया, यह हुक्म स्टेट-पब्लिसिटी ऑफिस से दामोदर को पत्र लिखकर दिया।

दामोदर ने, आसलपुर के ठाकुर ने जिन रुपयों को देने का कहा था उनके बारे में व सांवर के मुसलमान नाजीम से जो बातें हुईं, वे बताईं। नाजीम भला आदमी बतलाया जाता है।

२७-७-३९

मौन व्रत।

घूमने, दौसा रोड बाग से १२॥ मील (जयपुर के) से सत्रह मील के पत्थर तक। यहां एक काला सांप, दो-अड़ाई हाथ लम्बा, देखा। मारने नहीं दिया।

दौलतपुरा के मीणा को बाघ ने बीस रोज पहले मार डाला। एक और को जखमी कर डाला। वह अस्पताल में है। दुली (शाहजानपुरा) के सेठ का नाम गंगासहाय ब्राह्मण का नाम भी गंगासहाय है। पहले जयपुर से बारह मील तक कोई हिंसक जानवरों को नहीं मार सकता था। भैंरू-सिंहजी के बाद अब पंद्रह मील की हद मुकर्रर की गई है।

डाक बंगले के मित्रों को दूर से दूरबीन द्वारा व नजर फेंक कर देखा। मोटर नहीं ठहरी, इस कारण सबों को पूरी तौर से नहीं देख पाया। दर्द के कारण खड़ा हो नहीं सकता था।

बासी (मोहनपुरा) डाक बंगला जयपुर से करीब १६॥ मील पर है।

सोन्या मीणा, वक्रतुण्ड व पागल है। उसे चार आने दिये।

मई व जुलाई का 'सर्वोदय' पढ़ा। चर्खा काता व अखबार देखे।

सरदार वल्लभ भाई—"गन्दे काम से आत्मघात बेहतर है।"

विनोबा—"जो धनिक अपने आसपास लोगों की परवाह न करता हुआ धन इकट्ठा करता है वह धन प्राप्त करने के बदले अपना वध प्राप्त करता है।"

यहां पढ़ाने के लिए मास्टर के बारे में श्री बी० सी० टेलर का पत्र आया।

२८-७-३९

अस्पताल में डा० भवानीसिंह और भटनागर नहीं आये। विलियमसन सीकर चले गये। बाद में सिस्टर, डा० ज्वालाप्रसाद व प्रभुदयालजी को लाई। उन्होंने वही दवा चालू रखी। पट्टी गीली रहनी चाहिए, यह कहा। वापस आते हुए नागोरियों की खो होकर आये। बुड्ढा इमाम वगरा मिला। शिकारखाने व जंगलात की स्थिति समझी। चर्खा काता।

दामोदर मिलने आया। श्री बी० सी० टेलर के कल के व आज के पत्र का जवाब लिखवाया। टेलर का आज का भी पत्र, मोटर में घूमने के बारे में, ठीक नहीं मालूम दिया। जबतक मोटर के मामले का व घूमने का

स्पष्ट खुलासा न हो जाय, तबतक मोटर में न बैठने का विचार किया। होम मिनिस्टर को मि० टेलर के आज के आये हुए पत्र की नकल व मेरे जवाब की नकल भेजने का निश्चय किया। श्री रामचन्द्र की रिपोर्ट बराबर होती तो श्री टेलर को मोटर के बारे में पत्र लिखने की जरूरत नहीं पड़ती।

२९-७-३९

श्री रामचन्द्र (एल० एच० सी०) के साथ श्री बी० सी० टेलर को दो पत्र व होम मिनिस्टर को एक पत्र भेजा। श्री टेलर की ओर से जवाब आया। जवाब ठीक नहीं था। रामचन्द्र कहता था कि उसपर वह बहुत ज्यादा नाराज हुए।

श्री गणेश नारायण सोमाणी व उनकी पत्नी मिलने आये। सोमाणीजी ने राजपूताना रेजीडेन्ट मि० कोरेफील्ड (आबूवालों) से जो बातचीत मेरे बारे में हुई, वह कही। ए०जी०जी० की राय में मैं अनडिजायरेबिल (अवांछनीय) व बहुत जिद्दी आदमी हूं। मुझे जयपुर राज्य के बाहर कोई काम नहीं है क्या ? यहां आने की इतनी जिद क्यों ? इतने बड़े अधिकारी की मनोदशा का पता चला। सोमाणीजी की राय है कि मेरे पर लगे प्रतिबंध में ब्रिटिश अधिकारियों का पूरा हाथ है। बदनाम वे महाराजा को करते हैं। सोमाणीजी ने कहा कि उनकी अपनी इच्छा जयपुर के लिए सेवा करने वाली संस्था की मदद करने की है।

कमल, दामोदर व पूनमचन्द बांठिया मिलने आये। नागपुर बैंक के बारे में देर तक बातचीत। चतुर्भुज भाई (मूलजी जेठावाले) डायरेक्टर हो गये। नागपुर का काम बढ़ाने के बारे में व मैं हाल में त्यागपत्र न दूं, इस बारे में विचार।

३०-७-३९

नाथू मीणा (सिपाही) के पेट में एकाएक बहुत ज्यादा दर्द हो गया। फ्रूट साल्ट व सोडा गरम पानी में नारायण कम्पाउन्डर ने दिया। बाद में उसे मोटर में पुलिस अस्पताल ले गये।

रामचन्द्र, लेंस हेड कान्स्टेबल का एकाएक तबादला हो गया। इसने अपने हाथ से ही अपने को मूर्ख बनाया। इसकी जगह श्री सुलतानुलहक्क

कान्स्टेवल आया। यह फसिउल्लाखां का आदमी है।

सुवह कमलनयन, सागरमल वियाणी, हरिभाऊजी, भागीरथीवहेन, चि० शकुन्तला, माधव, शीला, बाबू वगैरा आये। बातचीत। कमल को वर्किंग कमेटी की व्यवस्था के लिए, वर्धा जल्दी जाने को कहा। मेहमान, अतिथियों की सेवा व स्वागत की मेरी जो दृष्टि है, वह समझाकर विस्तार से कही। भोजन करके ये लोग वापस गये। हरिभाऊजी से श्री वापना के वारे में लम्वी-चौड़ी वातें हुईं, मित्तल के वारे में भी। वाद में 'सस्ता साहित्य मण्डल' के वारे में चर्चा। अजमेर कांग्रेस से अलग रहना नहीं ठीक वतलाया।

मंगलचन्दजी डालमिया आये। कमल ने उनका फैसला उनकी इच्छा के अनुसार किस्त करके करने को कहा।

शाम को दामोदर, वंशीधरजी शर्मा (श्रीमाधोपुरवाले) राजरूपजी टांक, देवीशंकरजी तिवारी, नागर, सोहनमलजी गोलेच्छा वगैरा आये। स्वास्थ्य के वाद शिकारखाना व जंगलात की चर्चा की व उसमें दिलचस्पी लेने को कहा।

रात को हकीम ड्राइवर के साथ शतरंज।

३१-७-३९

पोलिश (पोलैंडवासी) मि० एडम कारपिस्की और वेराण्ड जिकेएनी दोनों वर्फ की आंधी के कारण हमेशा के लिए हिमालय की गोद में शान्ति से सो गये, नन्दा देवी के पास २०५०० फुट की ऊंचाई पर ता० १८ या १९ जुलाई को। कितनी सुन्दर मृत्यु है।

गोहाटी वाले टी० फूकन चल वसे, तार भेजा।

डा० गिल्डर शरावबन्दी के काम में उत्साह व हिम्मत बता रहे हैं।

सुवह कमल, राधाकिसन, दामोदर, गुलाबचन्द, पूनमचन्द वांठिया, हरि-कृष्ण चौकड़ीवाल मिलने आये। शाम को रतनवहन, शास्त्री, श्याम, वंशीधरजी शर्मा, मास्टर रामप्रतापजी नेचरोपैथ (बगरू ठाकुर का रास्ते वाले) व शिवभगवान (सीकरवाला) आये। रामप्रतापजी से प्राकृतिक चिकित्सा के वारे में विचार-विनिमय होता रहा।

श्री टेलर के दो पत्र आये। वे एक प्रकार से अपमानजनक थे। कर्नल

विलियमसन इतना कमजोर व असत्य बोलने वाला है, यह जानकर बुरा मालूम हुआ। कर्नल विलियमसन ने दामोदर से कहा कि सेठ साहब को डाक बंगले के कैदियों से नहीं मिलना चाहिए था। ये लोग कितनी गैर-समझभरी व झूठी रिपोर्ट देते हैं। मामूली व सीधी बात को कैसा रूप बनाते हैं, यह इस घटना से मालूम हुआ।

कमल आज वर्धा जायेगा। उसे मेहमानों के बारे में व टेलर के व्यवहार आदि की बातें समझाकर कहीं। इसका जीभ पर काबू नहीं है, इसका दुःख है।

१-८-३९

सुलतानुलहक्क से तपासकर बताने को कहा कि ट्रीटमेन्ट कौन देनेवाला है, क्योंकि मैं तो अस्पताल जाने वाला नहीं हूं। बासी डाक बंगला के सामने घूमने गये उसकी चौकसी करते हैं, तो मुझसे क्यों नहीं कहते? सामान-चीज-वस्त की व्यवस्था, यहां से तार-पत्र भेजने की व्यवस्था, मुलाकात के लिए आने वालों के समय का खुलासा आदि बातों को पूरी तौर से व स्पष्टतौर से मुझे बताना चाहिए था।

राधाकिसन मिलने आया। भोजन करके मि० बेल के साथ वापस गया। दामोदर आया। उसका सारा समय आई० जी० पी०, होम मेम्बर आदि को लिखे जाने वाले पत्रों के मसविदे बनाने व लिखने में गया। समय हो जाने के कारण अधूरा काम छोड़कर उसे वापस जाना पड़ा।

दामोदर ने ता० २-७ को श्री यंग को जो पत्र लिखा था, उसकी नकल पढ़ने से लगा कि वह बराबर नहीं था। बहुत-सी गलतियां थीं व असलियत के विपरीत था।

बुरा तो लगा, परन्तु उपाय क्या? यंग के ता० ६ के जवाब का अर्थ जो श्री टेलर करते हैं, वह बराबर नहीं है। खैर।

श्री टेलर का आज फिर पत्र आया। पूछा है कि बुद्धी को रखने में इजाजत ली थी क्या? अब ये लोग लड़ाई छेड़ना चाहते हैं, भूल कर रहे हैं।

२-८-३९

आज नारायण कम्पाउण्डर को मेरे इलाज के बारे में सारी स्थिति समझने के लिए अस्पताल भेजा।

दामोदर आया। श्री टेलर, होम मिनिस्टर व कर्नल विलियमसन के पत्र

पूरे हुए। उनकी नकल करके तीनों को सुलतानुलहक्क के साथ भेजे। इन सबोंकी नकलें टेलर के मार्फत दामोदर को भिजवाई। इसमें काफी समय गया।
गोड़े में दर्द कम मालूम दिया।
मैंने कंपाउंडर को वापस जाने का कहा तो सुलतानुलहक्क ने कहा कि कल सुवह ले जाऊंगा।
आज दोपहर में सपना आया कि महादेव भाई व पू० वापू मुझे देखने आये हैं। उनसे स्वास्थ्य व जयपुर की स्थिति के वारे में वातचीत। बाद में उनकी ए० जी० जी० (राजपूताना रेसीडेन्ट) से मिलने जाने की तैयारी हुई कि इतने में आंख खुल गयी। आज जयपुर महाराजा ने एक बाघ को मारा। पर एक ठाकुर को वाघ ने जख्मी कर दिया, ऐसा सुना। यह बाघ वड़ा था व इसने भी वहुत से मनुष्यों व जानवरों को हानि पहुंचाई थी। शिकारखाने के वारे में जयपुर दरवार का नोटीफिकेशन देखा। असमाधान-कारक है।

३-८-३९

किशोरलालभाई का पत्र तो राम के पत्र में भेज दिया। वैसे आज वहुत से पत्रों के जवाव पूरे किये।
कल जो राजपूत, महाराज की शिकार के समय घायल हुआ था, वह अस्पताल में मर गया।
दामोदर ने कहा कि मोहनपुरा के लोगों ने भूख हड़ताल शुरू कर दी है, इस कारण आज सारा दिन उसका उसको निपटाने में चला गया। सारी स्थिति जानी।
डा० विलियमसन ने आज फिर दामोदर से कहा कि सेठ साहव को वासी-डाक बंगले की ओर नहीं जाना चाहिए था। उन्हें कल पत्र लिखकर सारी स्थिति साफ करनी होगी। पूरी जांच किये विना ये लोग निर्णय कर वैठते हैं। प्राइम मिनिस्टर तथा अन्य अधिकारियों की यह समझ है कि मैं उस मोहनपुरा कैंप-जेल में घूमने गया था। विचित्र लोग हैं ये!
दामोदर देर से आया, इसलिए भोजन करके वापस चला गया। दामोदर को पत्र-व्यवहार की सारी नकलें टेलर साहव नें भेज दीं।

रात को बघेरा की व ढाणी के लोगों की आवाज सुनी। बघेरा कुवें के पास वाली ढाणी में आया था।
यहां से भी आदमी भेजे। हल्ला होने से चला गया।

४-८-३९

रात को नींद कम आई। जयपुर राज्य की वर्तमान स्थिति के बारे में विचार चलते रहे। आज कर्नल विलियमसन व महाराज साहब को पत्र भेजने का निश्चय किया।
श्री महाराज साहब को पत्र रामनाथ सिपाही के साथ भेजा।
चि० उमा, दामोदर व राधाकिसन मिलने आये।
डा० विलियमसन ने दामोदर से वसी डाक बंगले की ओर घूमने जाने के बारे में दो बार बात की। उसपर उन्हें पत्र लिखकर सारी स्थिति साफ की। पत्र की नकलें नहीं हो सकीं। इस कारण पत्र कल भेजा जावेगा।
कमल का उमा को वर्धा बुलाने का तार आया। उसकी ता० ३० को फिर परीक्षा होने का लिखा। वह आज फोन करने वाली है। अगर, जिन विषयों में फेल हुई है, उतने ही विषयों की परीक्षा होगी तब तो वह जायेगी। इसका मन देहरादून जाने का ज्यादा है।
'डेली न्यूज' का नाम ता० १-८ से 'नागपुर टाइम्स' रखा गया। इसमें ता० ३-८ का जयपुर शिकारखाने का पूरा लेख ठीक ढंग से आया है।
अगस्त का 'सर्वोदय' आया।

५-८-३९

चि० उमा व राधाकिसन मिलने को आये। राधाकिसन बहुत करके आज रामकिसन डालमिया के काम के लिए बम्बई जायेगा।
मदनलाल कोठारी आज आ गया। वह, दामोदर, मदन जोशी व मास्टर रामप्रताप शाम को आये। रामप्रतापजी ने घाव का इलाज शुरू किया। खोपरे के तेल की पट्टी लगाई। घाव को ठंडे पानी से धोया। बाद में ऊपर ठंडे पानी की गीली पट्टी लगाकर पट्टी बांधी। एक डेढ़ घंटे तक ठंडा पानी डालते रहने को कहा। जो जलन रहती थी, वह शाम को कम हो गई और पैर में आराम मालूम होने लगा।
दामोदर ने श्री टेलर के पत्र की नकल की। आज कर्नल विलियमसन का

हाथ का लिखा हुआ पत्र आया। उसमें अस्पताल में आने के बारे में व मोटर की छोटी-सी घटना को भूल जाने को लिखा। श्री टेलर का पत्र, बुद्धि हरिजन की स्वीकृति का, बिना मांगे आया।
पंडित हीरालालजी व अन्य मित्र शाम को छोड़ दिये गये, यह मालूम हुआ। शायद मेरा भी प्रतिबंध वाला आर्डर आजकल में वापस लें लेंगे, या फिर दो-चार महीने तक और चलावें। मेरी दृष्टि से व रचनात्मक काम की दृष्टि से भी मेरा अभी अन्दर रहना ही ठीक (लाभदायक) है।
शहर में भी अफवाह है कि मुझे ता० ७ को छोड़ने वाले हैं। बहुत तरह की ऐसी गप्पें आती रहती हैं।

६-८-३९

मुकन्दगढ़ से शुभकरण नेवटिया का तार आया। जानकी व राधाकिसन को एकदम बुलाने का लिखा। सीकर तार व चिट्ठी भेजने की व्यवस्था की। मदन कोठारी को वापस भेजा। चि०रामेश्वर की मां ने क्यों बुलाया, समझ नहीं सका। सीकर भी तार आया था, ऐसा ओम कहती थी। पांव का ड्रेसिंग, कल शाम के जैसा, उमा की मदद से किया। शाम को रामप्रताप-जी अकेले ही आये और उन्होंने भाप से घाव का सेंक किया। बाद में ठंडे पानी से धोकर गीली पट्टी बांधी।
महादेवभाई वगैरा को पत्र भिजवाये। डा० विलियमसन के पत्र का जवाब तैयार किया। कल जायगा। उमा, राधाकिसन चार बजे चले गये। कल्याण, सुखा, बुद्धि वगैरा भी जलूस देखने गये।

७-८-३९

डा० विलियमसन के नाम व अन्य पत्र सुलतान के जरिये भेजे। कर्नल विलियमसन ने पत्र की नकल होम मिनिस्टर व श्री टेलर (आई० जी० पी०) को भेजी।
चि० उमा तांगे में आई। बातचीत—स्वभाव व गुणदोषों के बारे में।
शाम को मदन कोठारी, रामप्रतापजी मास्टर, उनका कम्पाउन्डर, गीता व दामोदर आये। मुझे छोड़ने के बारे का वातावरण हो रहा है, ऐसा कहा। विचार करके देखने से तो अभी न छूटने में ही सब प्रकार से लाभ है। परन्तु बार-बार ये बातें आते रहने से स्वतंत्र होने की इच्छा भी कई बार

हो जाया करती है व स्वतंत्र होने के वाद के प्रोग्राम भी दिमाग में चलने लगते हैं।

दामोदर का दिल्ली जाने का विचार है। श्री जोवनेर ठाकुर से दामोदर ने जो वातें कीं, उसका सार कहा। होम मिनिस्टर से फोन पर जो वातें हुईं, वह कहीं। मैंने तो कहा कि इन विचारे निस्सहाय व कमजोर मिनिस्टरों को ज्यादा सताने से क्या लाभ है।

दामोदर ने वताया कि वीकानेर महाराज जयपुर आये हुए हैं।

देर तक अखवार देखता रहा। थोड़ी वर्षा हुई।

वनस्थली की पढ़ाई व भावी कार्य के संवंध में गीता से वातें।

८-८-३९

वीकानेर महाराज के नाम का पत्र तैयार किया।

उमा आई। उसने कहा कि शायद आज सुवह तो मैच भी थी। सो वीकानेर महाराज चले भी गये होंगे, फिर भी उनके नाम का पत्र श्री टेलर के मार्फत भिजवा दिया। यहां से चले गये हों तो वीकानेर भेजने का लिख भेजा।

आज के अखवारों में मुझे छोड़े जाने का आन्दोलन शुरू हुआ, खासकर 'हिन्दुस्तान टाइम्स' की टिप्पणी ठीक नहीं मालूम दी।

उमा ने वताया कि शिकारखाने के वारे में मतभेद होने के कारण प्राइम मिनिस्टर कल एकाएक चले गये। महाराज ने भैरूंसिंह का पक्ष लिया, वगैरा।

आफीसर-इन-चार्ज ने भी कहा कि यह वात ठीक है। वह कल मोटर से दिल्ली चले गये। उनका सामान भी गया। उनकी मेम सा० वाकी वचा सामान लेकर वाद में जायेंगी।

उमा ने यह भी वताया कि सव हिन्दुस्तानी मिनिस्टरों ने एकमत होकर मेरी रुकावटें दूर करने के वारे में राय दी। आखिर का फैसला महाराज करने वाले हैं।

कलकत्ता से कमल का तार आया। चि० सावित्री को कल ता० ७ अगस्त को वच्ची हुई। वजन ६।। रतल; रंग आदि सावित्री के माफिक। चेहरा राहुल सरीखा लिखा।

कर्नल विलियमसन डा० प्रभुदयाल जी को लेकर ९ वजे आये। १० वजे वापस गये। एक घंटे तक तपासते रहे। ब्लडप्रेशर १६५-११० बतलाया। जख्म देखा। मैंने तो कह दिया कि घाव का इलाज तो कुदरती उपचार से कर रहा हूं; खोपरे का तेल व पानी की गीली पट्टी का। वह वेसलीन लगाना चाहते थे, पर मैंने कहा कि खोपरे का तेल ही ठीक रहेगा। ऐसा लगता है कि इन्हें स्टेट अधिकारियों ने भिजवाया होगा—इनकी रिपोर्ट लेकर प्रतिबंध वापस लेने का निमित्त बनाने के लिए।

बापू का तार आया। जिसमें उन्होंने डा० भरूचा को महादेवभाई के साथ भेजने का लिखा। यह भी लिखा कि परवानगी लेकर रखो। उनको तार वापस भिजवा दिया कि फिलहाल उन्हें भेजें।

दामोदर के द्वारा पत्रों की नकलें होम मिनिस्टर को भेजीं।

९-८-३९

श्री बी० सी० टेलर (आई० जी० पी० जयपुर) करीब १२-१५ बजे आये। मुझे दूर से ही 'सेठ साहब उठो, जागो' वगैरा कहकर सोते से जगाया। बाद में उन्होंने होम मिनिस्टर का आर्डर दिखाया। मेरे मांगने पर उसकी नकल करके व सही करके दी। थोड़ी देर इधर-उधर की गप्पें मारीं। अपने दोनों पावों में रूमेटिज्म (गठिया) हुआ वह बताया। दामोदर को आते ही फोन करने को कहा।

फरासखाने का सामान रखने के लिए होम मिनिस्टर को फोन करने को कहा। एक शिकारी के लिए भी कहा। दामोदर ने छूटने के तार वगैरा भेजे।

मित्र लोग ६-७ मोटरों में आ पहुंचे। आज ही जलूस निकालने का आग्रह करने लगे। मैंने १५ ता० के बाद का कहा। आखिर मित्रों ने कल निकालने का निश्चय किया। आज दिन में ज्यादा-से-ज्यादा आदमी मिलने आये।

१०-८-३९

रात को सो तो जल्दी गये, परन्तु नींद देर तक नहीं आई। आगे का प्रोग्राम का विचार व योजना देर तक चलती रही। आज के प्रोग्राम के बारे में भी विचार आते रहे।

हीरालालजी, रतनजी, उमा, मदन कोठारी, दामोदर, डेडराजजी आये। बाद में हंस डी० राय, हरिश्चन्द्र शर्मा, कपूरचन्द पाटणी भी आये। आज के प्रोग्राम व स्टेटमेन्ट के वारे में विचार-विनिमय।

सीकर से जानकी, गुलावबाई, अनसूया, गौतम आये। स्टेटमेंट तैयार करके भेजा। दोपहर को चिरंजीलाल अग्रवाल कुटुम्ब सहित आये। देर तक रहे। सोमाणीजी वगैरा भी आये।

शाम को ५.४५ को जलूस के लिए रवाना हुए—चार मोटरों में। जैन मंदिर वालों ने स्वागत किया। बाद में थोड़ी देर सोहनमलजी गोलेछा की हवेली पर ठहरे।

जलूस दरवाजे से शुरू हुआ व आजाद मैदान में पूरा हुआ। प्रजा-मण्डल कार्यालय में ठहरना पड़ा। वहां वहुत ज्यादा भीड़ थी। जूने व बूढ़े लोग कहते वतलाये कि जयपुर में इस प्रकार का यह पहला ही जलूस है। फूल के हार, खादी के हार व गोटे के हारों की तो गिनती ही नहीं थी। जयपुर की जनता ने आशा से वहुत ही ज्यादा प्रेम व श्रद्धा प्रजामण्डल व मेरे प्रति दिखाई। कई जगह रोशनी वगैरा भी हुई थी। आजाद मैदान में सभा वहुत ही ठीक हुई। लाउडस्पीकर की व्यवस्था होने से मैं वैठे-वैठे ठीक वोल सका। मुझे जितनी वोलने की आशा थी, उससे ज्यादा वोला। मैंने अपनी समझ से परिस्थिति ठीक समझाई व साफ की। मुझे लगा कि भाषण ठीक हुआ। सीकर का जिक्र स्टेटमेन्ट में तो आ गया, पर भाषण में रह गया। वकील मित्रों पर टीका थोड़ी कड़ी हो गई। वाद में थोड़ा वुरा तो लगा। दूसरे मौके पर ठीक कर लिया जायगा।

११-८-३९

आज मौन रखा। उम्मीद थी कि पूरी शान्ति मिलेगी। परन्तु चि० रामेश्वर नेवटिया की माता व आगरावाले श्री प्रयागनारायणजी की लड़की, लड़का, दामाद वगैरा के मोटर से आ जाने के कारण तथा जयपुर से भी कई मित्रों—बंशीधर शर्मा, देशपांडे, दुर्गाप्रसाद आदि के मिलने आ जाने के कारण लिखकर वातें करनी पड़ीं। तो भी थोड़ा आराम तो मिला ही। रात में वर्धा के फोन की देर तक राह देखी, बाद में रामेश्वर की माता को मोटर से प्रजामण्डल में इनकी बहन के पास भिजवाया।

आगे के प्रोग्राम के बारे में विचार आते रहे।

आगरा (रेल में) १२-८-३९

प्रार्थना के बाद मौन खोला। हीरालालजी शास्त्री व दामोदर आये। देर तक प्रजामण्डल के कार्य व प्रोग्राम की बातें करते रहे। शिवप्रसादजी खेतान मिलने आये।

करीब १॥ बजे कपूरचन्दजी पाटनी व देशपांडे आये। वर्धा से बापू का फोन आया कि मुझे एक बार वहां उन्होंने जल्दी बुलवाया है। वह मुझे डा० विधान को भी दिखाना चाहते हैं। सरदार व राजेन्द्रबाबू भी वहीं हैं। एक बार पहले तो नहीं जाने का ही विचार किया, पर बाद में कपूरचन्दजी व देशपांडे आदि की राय वहां हो आने की होने से जाने का निश्चय किया।

मोटर से आगरा व वहां से ग्राण्ड ट्रंक से वर्धा जाने का निश्चय। कपूरचन्दजी ४॥ बजे छुट्टनलाल की मोटर लेकर आये। ४-४० को कनवितों के बाग से आगरा के लिए रवाना हुए। साथ में जानकी, उमा, दामोदर। विट्ठल को लाचारी से सामान आदि के लिए पीछे छोड़ना पड़ा।

जयपुर से आगरा १४० मील है। आगरा ९ बजे पहुंचे। साढ़े चार घंटे लगे। जौहरी के यहां दूध लिया। मित्र लोग इकट्ठा हो गये थे। उनसे बातचीत। आगरा छावनी से इन्टर में वर्धा रवाना। स्टेशन पर भी प्रयागनारायणजी के घर के लोग आये थे।

जयपुर से आते समय मदन कोठारी वगैरा को पीछे के काम की सूचना दे दी। हीरालालजी शास्त्री को वापस बुलाने का किसी ने तार दे दिया, यह जानकर बहुत बुरा लगा। लोग बहुत बेजवाबदारी से काम करते हैं। वर्धा भी, मुझसे बिना बात किये ही 'हां' कर दी कि मैं आ रहा हूं।

वर्धा, १३-८-३९

नागपुर स्टेशन पर पूनमचन्द रांका, घनश्यामसिंह गुप्ता वगैरा कई मित्र लोग व कांग्रेस सेवा संघ के श्री सालवे उनकी स्त्री वगैरा आये थे। कमल भी वर्धा से आ गया था।

वर्धा स्टेशन पर राजेन्द्रबाबू (राष्ट्रपति), सरदार, कृपालानी, पट्टाभि, देव, शंकरलाल, पूज्य बा, महादेवभाई तथा कांग्रेस म्युनिसिपैलिटी,

महिला आश्रम, विद्यालय आदि के मित्र लोग आये। मन में प्रेम से भावना जागृत हुई। किशोरलालभाई, जाजूजी वगैरा भी थे। जलूस की तैयारी की थी; पर मैंने इनकार कर दिया।

बंगले पहुंचकर स्नान किया। फिर सरदार, महादेवभाई व बा के साथ सेगांव गया। प्रार्थना में शामिल। बाद में पू० बापू को स्वास्थ्य तथा जयपुर की स्थिति का थोड़े में वर्णन सुनाया। रास्ते में सरदार व महादेवभाई को भी सुनाया था।

वापस घर आये। आज बहुत दिनों के बाद यहां वर्षा होने से सबों को खुशी हुई। बापू को भी।

आज करीब डेढ़ महीने से ज्यादा दिनों बाद, शाम को सरदार, राधाकिसन व जानकी की इच्छा होने से व मन की कमजोरी के कारण मूंग, चावल व जलेबी का भोजन किया।

सरदार से डालमिया व ए० सी० सी० मर्जर के समझौते की सारी स्थिति समझी। वर्किंग कमेटी ने बोस के बारे में जो ठहराव किया व लड़ाई के समय कांग्रेस की नीति क्या होगी, उस बारे में जवाहरलाल का पूरा सहयोग था। जवाहरलाल बोस के लिए एक वर्ष चाहते थे। लड़ाई के ठहराव का ड्राफ्ट जवाहरलाल का था। बोस के संबंध का बापू का। देर तक इसी बारे में बातें होती रहीं। मेरा त्यागपत्र स्वीकार नहीं हुआ।

वर्धा, (रेल में) १४-८-३९

जवाहरलालजी को कमल के बारे पत्र भेजा।

जयपुर प्रोग्राम आदि के बारे में पत्र भेजा। बापू ने कमल को चीन जाने की सलाह नहीं दी। कमल ने जवाहरलालजी को तार कर दिया। सावित्री व लक्ष्मण प्रसादजी की इनकारी आ गई थी।

सरदार के आग्रह के कारण आज ही बम्बई चलकर डाक्टरों से परीक्षा करा लेने का निश्चय करना पड़ा।

सरदार, राजेन्द्रबाबू से व राधाकिशन से डालमिया व ए० सी० सी० मर्जर की स्थिति समझी।

नागपुर मेल से जानकी, दामोदर, विट्ठल, डा० महोदय, सरदार वल्लभभाई के साथ रवाना। सेकण्ड क्लास की दो टिकट लीं। सरदार से रास्ते

में कांग्रेस, नागपुर मिनिस्ट्री, जयपुर, राजकोट की स्थिति आदि के बारे में विचार-विनिमय होता रहा।

बंबई, १५-८-३९

बम्बई में बहुत से मित्र लोग स्टेशन पर आये थे—बिड़ला, डालमिया, गोविंदलालजी, डागाजी, बेगराजजी, श्रीनिवासजी वगैरा। बिड़ला हाउस में ठहरा।

डा० जीवराज डा० भरुचा को लेकर आये। उन्होंने तपासा। खून, पिशाब, दांत, वगैरा तपास कर रिपोर्ट मंगाई। शाम को देसाई ने दांत के कई फोटो लिये। डा० शाह ने गला, नाक, पांव का जखम वगैरा देखा। जखम का ड्रेसिंग किया। उन्होंने अपनी राय दी। डा० खम्बाटा, हाड वैद्य व जीनाभाई देसाई ने भी इस रोग के बारे में अपनी राय दी। ज्यादा चिन्ता का कारण नहीं बताया। रामकिसन डालमिया से उनकी स्थिति समझी।

लक्ष्मणदासजी डागा से भी। भाग्यवती दानी, पन्नू, खण्डू देसाई मिलने आये।

१६-८-३९

सरदार वल्लभ भाई आये। रामकिसन डालमिया भी। उनसे बातचीत। डा० शाह के यहां सरदार को बवासीर में इंजेक्शन दिया।

१७-८-३९

जमनादास गांधी, मूलजीभाई व राधाकिसन से बातें। ज्योतिभूषण, महेश-चन्द्र (जसवंतराय) डा० पुरुषोत्तम पटेल, डा० जीवराज मेहता, डा० भरुचा वगैरा आये।

१८-८-३९

डा० दास, होमियोपैथ, मिलने आये। देर तक बातचीत। एक महीना उनकी दवा लेकर देखने का विचार—बापू से सलाह करके। इनकी राय हुई कि दांत नहीं निकालने चाहिए। कन्हैयालाल मुंशी, होम मिनिस्टर—बम्बई आये। देर तक बातें करते रहे।

राजा नारायणलाल पित्ती आये। श्री रामेश्वरदास बिड़ला व इनकी शक्कर मिल की गन्ने के क्षेत्र के झगड़े के बारे में। मैंने उन्हें आखिर कहा कि नहां

फैसला करके भेज दें। उन्होंने स्वीकार कर लिया। वे कहते थे, मैं कर दू, परन्तु यह संभव नहीं था।
रामेश्वरजी, हीरालाल शाह तथा अन्य मित्र आये।
मुकन्द आयर्न का बम्बई का कारखाना जीवनलालभाई के आग्रह के कारण देखा। माटुंगा में केशवदेवजी के साथ भोजन। वहीं पर बच्छराज कम्पनी, शुगर कम्पनी, फैक्टरी कम्पनी, मुकन्द कम्पनी आदि के बारे में विचार-विनिमय। केशवदेवजी, रामेश्वर, कमलनयन, जीवणलालभाई, फतेहचन्द व रामेश्वर अग्रवाल थे।
डा० रजबअली के घर जैना बहन व लड़कों से मिलना।
वर्धा रवाना।

वर्धा, १९-८-३९

वर्धा स्टेशन पर दीपक चौधरी (कलकत्तावाला) जाता हुआ मिला।
घनश्यामसिंह जी गुप्त नागपुर से आये। उनकी दूसरी लड़की शकुन्तला (बी० एससी० बी० टी०) भी आई। सब मिलकर बापूजी के पास सेगांव गये। बापूजी ने डा० भरुचा, डा० जीवराज व डा० मेहता की रिपोर्ट ध्यान-पूर्वक सुनी। विचार-विनिमय के बाद पूना रहकर डा० मेहता की देखरेख में इलाज कराने की बापू ने सलाह दी। जयपुर जाना जरूरी है इसलिए एक महीने तक इच्छा हो तो, डा० दास की होमियोपेथी की चिकित्सा करके देख लूं। बापूने कहा कि अनाज खाना एक बार बन्द कर दो व फल, साग, दूध लो। आज से शुरू तो किया है।
राजेन्द्र बाबू, पं० रविशंकर शुक्ल, द्वारकाप्रसाद मिश्र व घनश्यामसिंह गुप्ता से देर तक बातचीत होती रही।

२०-८-३९

गिरधारी, कृपलानी व पूनमचन्द बांठिया से हिन्दुस्तान हाउसिंग व नागपुर बैंक के बारे में बातें।
बापू के पास जाकर आये। उनसे ११॥ से १ बजे तक जयपुर के सम्बन्ध में व स्वास्थ्य के सम्बन्ध में बातचीत। जयपुर के बारे में प्रजामंडल के नाम में थोड़ा परिवर्तन करना जरूरी मालूम हो तो कर लिया जाये। जयपुर राज्य प्रजामण्डल के ऑफिस बैरर दूसरी राजनैतिक संस्था के सदस्य नहीं

हों यह वात बिलकुल स्वीकार न की जाय। अगर अधिकारी लोग लड़ना ही चाहते हों तो अपन लड़ेंगे। थोड़े चुने हुए आदमियों को लेकर मुझे स्वास्थ्य के लिए व संचालन के लिये वाहर रहना जरूरी रहेगा। त्रावण-कोर में सत्याग्रह करने की मैं इजाजत देने वाला हूं। वाहर के लोगों की सलाह सहायता के प्रश्न के विरोध के बारे में बापू को कहा। दीपक, राधा, मेरे त्यागपत्न, कांग्रेस-सभापति, गांधी-सेवा-संघ के सभापति आदि के वारे में वापू से विचार-विनिमय।

दुर्गावहन, आशावहन, कृष्णदास गांधी आदि तीनों बीमारों को देखा।

जाजूजी, श्रीमन्, गंगाबिसन वगैरा से व्यापार व विद्यापीठ आदि के बारे में विचार-विनिमय।

किशोरलालभाई से गांधी-सेवा-संघ व मेरे त्यागपत्न-सम्बन्धी वातें।

महिला आश्रम में प्रार्थना, बहनों से परिचय।

चि० उमा से पढ़ाई व सगाई की वातें। उमा का विचार वर्धा में ही पढ़ने का है।

२१-८-३९

डा० महादेव से दवाखाने, कोढ़ियों व क्षयरोग के बीमारों के इलाज की चर्चा, किशोरलाल भाई, जाजूजी घोत्रे वगैरा साथ में।

रायवहादुर नायडू मिलने आये। दुकान के काम के थोड़े कागजात देखे, चिरंजीलाल के साथ।

गौरीलालजी वजाज की स्त्री कमलादेवी वजाज, भगवानदास वजाज, रामेश्वर, व गौरीलालजी की माता से मिलकर गौरीलालजी की इच्छा पूरी हो ऐसी व्यवस्था।

लक्ष्मी नारायण मंदिर में दर्शन।

चि० शान्ता, उमा, मदू, श्रीमन् व जानकी से उमा की सगाई के सम्बन्ध में विचार-विनिमय।

शिवराजजी, विट्ठलराव वगैरा डी० कौंसिल के बारे में मिले।

२२-८-३९

सुवह जानकी व चि० उमा से बातचीत। खासकर उमा के सम्बन्ध के वारे में। चि० मीरा के यहां मृदुला की जन्मगांठ व दामोदर के स्वास्थ्य के बारे

में बातें।
कमल बम्बई से आया। महेशचन्द्र के बारे में तथा अन्य बातचीत।
महिला आश्रम में तारा भारती के बारे में, खासकर उसके स्वास्थ्य के बारे में, बातें की।
सेगांव में राणी विद्यादेवी व उनकी लड़की तारादेवी से उर्मिला ने परिचय करवाया।
बापू से जयपुर, उमा के सम्बन्ध, नागपुर बैंक, बीकानेर महाराजा, बालकोबा वगैरा के बारे में व कलकत्ता होकर जयपुर जाने के बारे में बातचीत।
चिरंजीलाल बडजाते को बैंक के काम के लिए देना व शिवनारायणजी लच्छधड़ को दुकान का काम देने का तय।
अभ्यंकर मेमोरियल ट्रस्ट की सभा हुई। छगनलाल भारुका मिनिस्टर, देशमुख बैरिस्टर, पूनमचन्द रांका आये। मीटिंग हुई। ट्रस्ट के काम के बारे में विचार-विनिमय।
पवनार जाकर विनोबा से बातचीत; वहां प्रार्थना।

२३-८-३९

द्वारकादास भैया आया। उसकी बातचीत से ऐसा लगा कि उसे अपनी भूल नहीं मालूम देती। इसलिए विशेषत: उसकी इच्छा से यह प्रकरण भी गंगाविसन के सुपर्द किया।
किशोरलाल भाई व जाजूजी आये। बातें।
विद्यावहन, तारा देवी व जानकी के साथ आज प्रथम बार मगन संग्रहालय व मगनवाड़ी देखी।
श्री छगनलाल भारुका हिंगणघाट से वापस आया। बातें, विनोद। खासकर गुप्तजी की दुर्घटना का वर्णन उन्होंने बताया। दु:ख हुआ।
श्री शुक्ल, मजिस्ट्रेट के सामने, मैंने व चि० शान्ताबाई ने श्रीनिवास ट्रस्ट की ओर से आम मुख्त्यार-पत्र, रामगढ़ के दो जनों को दिया, उसपर सही की। महिला आश्रम में चि० मृदुला (मीरा की लड़की) की जन्मगांठ मनाई। दूध, फल वहीं पर लिया। श्री काशीनाथजी, वासन्ती, तारा से। आश्रम के सम्बन्ध में बातचीत।

श्री शकुन्तला दानी, घनश्यामसिंहजी गुप्त की लड़की, से चर्खा चलाते हुए देर तक उसके भावी प्रोग्राम व उसकी बहिन के सम्बन्ध में बातचीत। इनका गोत्र गोभील है।

२४-८-३९

घूमते हुए सुबह पैदल महिला आश्रम तक। रास्ते में विद्यादेवीजी व तारा बहन ने आपबीती की कई बातें सुनाईं, जिससे हंसी खूब आई। बाद में आश्रम में जो उद्योग चल रहा था वह देखा।

ग्रान्ड ट्रंक से श्री प्रीतमचन्द अग्रवाल व राजनारायण अग्रवाल आये।

म्यु० कर्मचारियों ने स्वागत किया। वहां गये। थोड़ा बोले।

पवनार में विनोबा से बातचीत। राजनारायण का परिचय करवाया।

प्रीतमचन्द अग्रवाल व राजनारायण से बातें। दोनों ने उमा से सम्बन्ध करने की अपनी पूर्ण स्वीकृति दी। उमा की महात्वाकांक्षा व इच्छा उन्हें समझाकर कही। बाद में जानकी, उमा, श्रीमन्, मदालसा कमल से बातें।

प्रायः सबों को ही राजनारायण पसन्द आ गये; स्वभाव, वातावरण, वगैरा की विशेष जानकारी।

२५-८-३९

चि० वासन्ती व चारुलता मिलने आये। चारुलता दुखी थी विशेषकर आश्रम में नीलम्मा ने जो वातावरण पैदा किया था उससे। उसे सांत्वना दी। चिन्ता न करने को कहा। श्री प्रीतमचन्द अग्रवाल (मथुरावाले) ग्रान्ड ट्रंक से मथुरा गये। श्री राजनारायण (आगरा वाले) विनोबा के पास कमल के साथ गये।

बाद में मैं बापू से उन्हें व उमा को मिलाकर लाया। बापू ने राजनारायण को उमा के लिए उपयुक्त समझा।

वहां पूज्य बा राजकुमारीजी, मीरा बहन ने भी देख लिया। आशा बहन से जानकी ने मिलाया।

सुबह किशोरलाल भाई व जाजूजी ने देखा था।

आज दूध, फल पर सातवां रोज है। तीन रोज से भूख प्रायः बन्द-सी हो गई है। बापू ने दो रतल मोसम्बी रस, एक रतल अंगूर रस, कम से कम

दो रतल दूध, खजूर बीस तक व साग तथा फल लेने को कहा। दूध में भी सोडा ले सकते हो, यह कहा।
श्री राजनारायण व उमा की आज ठीक बातचीत हो गई। उमा ने कहा कि मुझे पूरा सन्तोष हो गया है। बाद में पू० विनोबा व बापूजी की राय जानी। उन्हें भी पसन्द आ गया। विनोबा व बापूजी के समक्ष यह सम्बन्ध निश्चित हो गया। उन्होंने आशीर्वाद दिया। बाद में रात को सब कुटुम्ब के लोगों ने भी देख लिया। गुड़ वगैरा बांटा।
हैदराबाद के कार्यकर्ताओं से बातचीत। वहां की स्थिति समझी। श्री काशीनाथ राव के बारे में भी कह दिया कि अब वही वहां के नेता रहेंगे।

वर्धा (रेल में) २६-८-३९

जानकी, राजनारायण, श्रीनिवास, दुली के साथ मेल से कलकत्ता रवाना हुए। नागपुर तक ब्रिजलाल बियाणी साथ में। वहां पर छगनलाल, पूनमचन्द आदि मित्र लोग आये।
नागपुर से तीन टिकट सेकण्ड की करवाईं। थर्ड व इन्टर में भीड़ बहुत ज्यादा थी। दुर्ग में घनश्यामसिंह गुप्त आये। गोन्दिया में भी बहुत लोग आये।
रेल में राजनारायण से उनके कुटुम्ब का परिचय व स्थिति समझी।

कलकत्ता, २७-८-३९

नागपुर मेल से हावड़ा पहुंचे। डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष व मित्र-मण्डल स्टेशन पर मिलने आया। लक्ष्मणप्रसादजी के यहां ठहरे। कई मित्र वहां भी पहुंच गये। घनश्यामदासजी बिड़ला व ब्रिजमोहनजी आये। देर तक बातचीत। रात को बिड़ला पार्क में जयपुर के सम्बन्ध में विशेष रूप से विचार-विनिमय, खुलासा।—घनश्यामदासजी को राधाकिसन वगैरा के व्यवहार से असन्तोष रहा। मुझे उनकी उदासीनता के कारण कुछ बातों की जांच करनी होगी।
मारवाड़ी रिलीफ कमेटी के उत्सव में गये। ब्रिजमोहनजी सराफ ने एक्स-रे के लिए पच्चीस सौ रुपये दिये। वहां की व्यवस्था व तरीका देख कर समाधान नहीं हुआ।

डा० प्रफुल्ल घोष से देर तक वातचीत। हीरालाल शास्त्री से भी।

२८-८-३९

राहुल के साथ लेक पर घूमने गये। वहां कई मित्र लोग मिले।

डा० विधान राय ने मेरे एक्स-रे, फोटो व रिपोर्ट देखी। उन्होंने कहा कि सारे दांत निकलवाने की जरूरत नहीं। केवल खराव दांत धीरे-धीरे निकलवा देना ठीक रहेगा। दवा लेने की वतायी।

नर्मदा, गजानन्द, भागीरथी, सीतारामजी, हीरालालजी, व्रिजमोहनजी की स्त्री, गोपा, महाराजा, राजनारायण मिलने आये। मणीवाई पोद्दार व रघुनाथ प्रसादजी पोद्दार भी मिले।

शाम को जानकी, नर्मदा, गजानन्द, श्रीनिवास, वेलूर मठ देखकर आये। रामकृष्ण परमहंस का मन्दिर सुन्दर व रमणीय वना। वर्षा आयी इससे जल्दी आना पड़ा। नहीं तो वहां ज्यादा ठहरते।

ज्वालाप्रसादजी कानोडिया मिलने आये। दांत के लिए सरसों का तेल, नमक व लाल मंजन करते रहने को कहा। दातून नहीं।

महेश्वरी भवन में जयपुर के विषय में जाहिर सभा हुई। डा० प्रफुल्ल वावू सभापति थे। वहां मानपत्र भी दिये गये। मैंने व हीरालालजी शास्त्री ने जयपुर स्थिति पर कहा।

श्री लक्ष्मणप्रसादजी से जाते-आते ठीक वातें हुईं। घर की स्थिति, सावित्री के वर्धा भेजने के वारे में तथा अन्य।

२९-८-३९

दीपचन्द्रजी, किसनलाल व दुर्गाप्रसाद खेतान का कुटुम्व मिलने आया।

विड़ला पार्क गये। वहीं दूध व फल लिये। घनश्यामदासजी व व्रिजमोहन से जयपुर के सम्बन्ध में वातचीत। तीनों वहनों ने रक्षा वांधी। सवों से मिलना। निजी कुटुम्व का-सा व्यवहार देखा। सुख मिला। परमात्मा मुझे उस योग्य वनावे।

सीतारामजी सेकसरिया के यहां हीरालालजी से भी वातें। भगवान देवी ने रक्षा वांधी।

प्रभुदयालजी के घर नर्मदा ने राखी वांधी।

प्रभुदयालजी से उनके व श्रीनिवासजी पोद्दार से चल रहे झगड़े के वारे

में बातचीत।
हिन्दुस्तान हाउसिंग का फैसला जल्दी कर देने को कहा। हुकमीचन्द जूट मिल के बारे में उन्होंने कहा कि तीस-पैंतीस लाख की व्यवस्था हो तो मिल मैनेजमेन्ट हो सकता है।
देवीप्रसादजी खेतान से मिलना, बातचीत। सावित्री, उर्मिला बहन, लक्ष्मणप्रसादजी से देर तक बातचीत।
बनारसीलाल (भागलपुर), श्रीनिवासजी पोद्दार व बालकिसनजी पोद्दार को बुलाकर प्रभुदयालजी का मामला सलटाने को कहा।
शरत् बोस से करीब एक घंटे तक दिल खोलकर बातचीत। सुभाष बाबू किस प्रकार गलत रास्ते जा रहे हैं, यह कहा। उन्होंने भी मेरे विचार व मेरी यह योजना पसन्द की कि वह बापू से दिल खोलकर बात कर लें व उनकी आज्ञानुसार व्यवहार रखें। उन्हें खुद फारवर्ड ब्लाक पर विश्वास नहीं है। सर सुलतान, विधान राय वगैरा के बारे में कहा। देहली मेल से जयपुर रवाना। जानकी, हीरालालजी शास्त्री, श्रीनिवास, दुली साथ में, जयपुर तक दो सेकण्ड के टिकिट लिये।

रेल में, ३०-८-३९

मुगलसराय में कृष्णकान्त मालवीय मिले। पूज्य मालवीयजी के स्वास्थ्य, वाइस चान्सलर आदि सम्बन्धी बातें।
इलाहाबाद में पुरुषोत्तमदासजी टण्डन व रामनरेशजी त्रिपाठी मिले। टण्डनजी ने साहित्य-भवन को लाहौर की संस्था के साथ मिलाने के बारे में योजना बतलाई। जयपुर से जवाब देने का कहा।
कानपुर में पद्मावतजी सिंहानिया, डा० जवाहरलालजी (परिवार-सहित) नेवटिया तथा अन्य मित्र लोग मिलने आये। गाड़ी देर तक ठहरी। यहां से काका सा० व कान्तीलाल झवेरी साथ हुए।
टूण्डला में मदनमोहन चतुर्वेदी का बड़ा भाई (पोस्ट मास्टर) मिला, नायर व उसका लड़का व स्त्री आगरा में मिले।
आगरा में श्री प्रतापनारायण, हरनारायण (हरेश), प्रीतमचन्दजी के छोटे भाई, जो आगरा में वकालत करते हैं, मिले।
काका सा० व श्रीनिवास को हरेश के साथ ताजमहल देखने भेज दिया।

प्रतापनारायण के साथ देर तक वातचीत।

स्नान करने से थकावट कम हुई। सेकण्ड क्लास में भी भीड़ तो हो गयी थी, परन्तु पहले से ही दो सीट नीचे की रिजर्व हो जाने से ठीक रहा। आगरा की ओर वर्षा न होने से अकाल पड़ गया। रास्ते में जानकी से ठीक-ठीक वातें व विचार विनिमय होता रहा।

जयपुर (कनवितों का वाग) ३१-८-३९

सुवह पांच वजे जयपुर पहुंचे। स्टेशन पर मित्र लोग आये। वहां से जानकी, काका सा०, श्रीनिवास, कान्ति झवेरी के साथ कनवितों के वाग पहुंचे।

राधाकिसन से वातें। घनश्यामदासजी विड़ला को जो असन्तोष था, वह उसे वताया। एक तो खासकर यह कि उन्होंने कहा था कि वापू ने सत्याग्रह स्थगित करने का कहा इसपर राधाकिसन ने विश्वास नहीं किया, ऐसी उनकी समझ हुई। दूसरे पिलानी के जिस व्यक्ति ने सत्याग्रह में भाग लिया था उसके वारे में उनकी राय अच्छी वताई थी, उसके विषय में राधाकिसन ने कहा कि उसके वारे में औरों की राय खराव नहीं।" इन वातों से उन्हें विशेष वुरा लगा व चोट पहुंची। राधाकिसन इस वारे में उन्हें हरिभाऊजी से बात करके पत्र लिखेगा। घनश्यामदासजी की गैर-समझ दूर करना जरूरी है। हीरालालजी, कपूरचन्दजी, हंस डी राय, हरिश्चन्द्रजी वगैरा आये। रा० व० अमरसिंह के पत्र का जवाव, श्री महाराज सा० की मुलाकात के वारे में, भेजा। जोवनेर ठाकुर से मदनलाल की जो वातें हुईं वह उसने कहीं।

१-९-३९

आज जयपुर महाराज से मिलना था, उसके ही विचार चलते रहे।

पू० काका सा० से सुवह महिला-आश्रम की जवावदारी तथा हिन्दी-प्रचार के कार्य के वारे में वातचीत। काका सा०, राधाकिसन, कान्ती मेहता व श्रीनिवास सीकर गये।

जोवनेर ठाकुर से मिला। वर्तमान स्थिति पर विचार-विनिमय। प्रजामण्डल का उद्देश्य उन्हें समझाकर कहा। श्री महाराज सा० से टोपी पहनकर मिलने के वारे का खुलासा किया।

आज प्रथम वार रामबाग महल में टोपी पहनकर मेरा (एक जयपुरियन

का) जाना हुआ। रायबहादुर ठा० अमरसिंहजी मिले। अन्य ए० डी० सी० ने प्रेम से स्वागत किया।

श्री महाराजा सा० से १०॥ से १२। तक दिल खोलकर बातचीत हुई। पहले कु० सा० अमरसिंहजी मौजूद थे। बाद में महाराजा से अकेले में ठीक, सन्तोषकारक बातचीत हुई :

(१) पब्लिक सोसाइटीज़ एक्ट रद्द हो जाना चाहिए;
(२) अखबारों पर से रोक उठा देनी चाहिए। खासकर 'हिन्दुस्तान,' 'सैनिक', 'अर्जुन', 'जयप्रजा'।
(३) साप्ताहिक-पत्र यहां से निकालने की स्वीकृति;
(४) शिकारवाले तथा किसान कैदियों को जल्दी छोड़ देने के बारे में;
(५) 'शिकारखाने-कानून' में सुधार, मृत व्यक्तियों के घरवालों की नुकसानी, भेरुसिंहजी को इस पद से हटाना;
(६) शिक्षा-विभाग में सुधार, बिड़ला-कालेज को स्वीकृति, घनश्यामदास जी के बारे में चर्चा;
(७) रचनात्मक-कार्य, खादी व अकाल-कार्य;
(८) हिन्दुस्तानी प्राइम मिनिस्टर;
(९) वर्तमान केबिनेट में सुधार;
(१०) सीकर रावराजाजी तथा अन्य बातें।

२-८-३९

कल महाराजा से जो बातें हुईं उसपर विचार चलता रहा, खासकर प्राइम मिनिस्टर के सम्बन्ध में। डेढ़ बजे ही उठकर प्रार्थना करके नोट लिखने बैठ गया।

जल्दी तैयार होकर जयपुर। जोबनेर ठाकुर सा० से मिलकर सोसाइटीज़ एक्ट को जल्दी ही वापस ले लेने का उन्हें समझाया। उन्होंने स्वीकार किया। कैदियों को छोड़ने, अखबारों पर से पाबन्दी हटाना आदि का महाराजा की वर्षगांठ से पहले सब फैसला हो जाना जरूरी है, यह बताया। उन्होंने अपनी जो राय थी, वह बतलायी।

आज अमरसिंहजी व महाराजा से मिलना नहीं हुआ।

हीरालालजी वगैरा मित्रों से बातचीत।

रात को गोपीनाथजी मास्टर (कोटावाले) व चिरंजीलाल अग्रवाल आये। गोपीनाथजी ने बून्दी महाराज व रावटंसन की हालत आश्चर्यजनक कही।

श्री अगुमजी व कोटा-दरबार का सन्देश बतलाया।

३-६-३९

वहुत समय के वाद लूणियावास तक पैदल घूमने सब लोगों के साथ गये। रास्ते में रा० व० कु० अमरसिंहजी का पत्र मिला। ११।। वजे मुलाकात के लिए बुलाया।

घूमते हुए लौटते में सत्यप्रभा ने अपनी दु:खदायक हालत कही। बुरा लगा, उसे समझाया।

११।। वजे पहले अमरसिंहजी से मिला। सीकर व यंग के पत्र के बारे में वातचीत। श्री महाराजा साहब से मिलकर 'सोसाइटीज एक्ट' जल्दी वापस लेने, कैदियों को छोड़ने आदि का आजकल में ही फैसला हो जाये तो उन-की वर्षगांठ तक वातावरण ठीक कर लिया जाय।

श्री महाराजा सा० से खानगी में प्राइम मिनिस्टर के बारे में विचार-विनि-मय। बड़ौदा दिवान को तार भेजा; मणिलाल नाणावटी के बारे में कहा। गांधीजी वगैरा की वातें कीं।

रहने के लिए मकान जानकी को वताया। पर एक बार तो 'न्यू होटल' में ही आकर रहने का निश्चय रहा।

हीरालालजी वगैरा मित्रों से थोड़ी वातें।

दामोदर को बापना के नाम पत्र देकर बीकानेर भेजा। पत्र, चर्खा।

४-६-३९

सत्यप्रभा से वातें, डायरी लिखी। कबूतर आ गया उसे जवारी खिलाई। सोनी वाई व जानकी देवी से देर तक बातचीत। सोनी वाई को अपनी सारी स्थिति दिल खोलकर कहने को समझाया।

हंस डी० राय से देर तक वातचीत; विवाह-सम्वन्ध, कारभार, कामतानाथ, यूनायटेड प्रेस व जयपुर मेम्बर के बारे में।

न्यू होटल में सामान भेजा, वहां गये। रास्ते में मोटर खराब हुई।

सोमाणीजी मिलने आये, दीवान होने की अतिशय इच्छा। वनीचन्द (दुर्लभ-

जी के लड़के) मिलने आये। खादी योजना पूरी तरह समझ ली। चर्खा संघ का रजिस्टर देखा, संतोष हुआ।
तिवारी को समझाकर संतोष दिया।
सत्यप्रभा ने देर तक भजन सुनाये।

५-९-३९

प्रार्थना, भजन, कबूतरों सहित फोटो ली।
न्यू होटल में रहने आये। तीन कमरे लिये, कई जगह फोन किया।
कु० अमरसिंहजी ने कहा कि महाराजा सा० से कल १२।। बजे मिलने आना है। सन्तोषजनक परिणाम आने की बात कही।
मित्र लोगों से विचार विनिमय देर तक होता रहा। खादी-योजना की बातें।
रात को मस्जिद का दर्वाजा खोदना शुरू हुआ, जिससे हिन्दुओं में अशान्ति है। हरिश्चन्द्रजी व मिश्रजी को प्रजामण्डल की नीति साफ तौर से समझाई व कहा हड़ताल करना ठीक नहीं रहेगा। प्रयत्न करते-कराते रात को इस मामले में ११।। बज गये।
दामोदर बीकानेर से आया। रात को ही ट्रेन से उसे दिल्ली, शिमला भेजा —बापू, घनश्यामदासजी व बापना सा० के नाम पत्र देकर।

जयपुर (न्यू होटल) ६-९-३९

जोबनेर ठाकुर सा० से मिला। उन्होंने सन्तोषकारक बातचीत की। आशा व असरकारक परिणाम आने का कहा।
हरिश्चन्द्रजी, कपूरचन्दजी, हीरालालजी से सोसायटीज एक्ट के बारे में विचार-विनिमय।
श्री महाराजा सा० से १२।। बजे मिला अखबारों का प्रतिबंध उठा लिया। 'सोसायटीज एक्ट' के बारे में महाराज सा० बराबर नहीं समझ पाये। सीकर की स्थिति पर देर तक चर्चा व विचार; कैदियों को छोड़ना, जो नौकरी से हटा दिये हैं, उन्हें फिर से रखना आदि की चर्चा महाराज ने अपनी दिक्कतें कहीं। पोलिटिकल डिपार्टमेन्ट का सम्बन्ध बताया। फिर भी जल्दी ही फैसला करने को कहा। 'सोसायटीज एक्ट' में जो रजिस्टर नहीं करना चाहें, उनकी रुकावट निकाल देने को कहा। खादी, सीकर, जकात, सीकर

रावराजा व कुंअर तथा प्राइम मिनिस्टर के वारे में खानगी में विचार-विनिमय। प्रजा-मण्डल के विधान में से 'जिम्मेदार राज्य-तंत्र वाली (रिसपांसिविल गवर्नमेन्ट) घाटा निकालने के वारे में मैंने अपनी कठिनाई उन्हें समझाई। घनश्यामदासजी विड़ला को पत्र जोबनेर ठा० ने भेजा होगा; कुं० अमरसिंहजी से वातें हुईं, इन चर्चाओं में सव मिलकर २ घंटे लगे।

होटल आकर हीरालालजी, कपूरचन्दजी, हरिश्चन्दजी से चर्चा। जो अड़चनें थीं कहीं।

पुरोहितजी सीकरवाले मिलने आये। रावराजा सा० के वारे में वातचीत। श्री संजीवन गांगुली वगैरा मिलने आये।

७-६-३९

जोवनेर ठाकुर सा० व अमरसिंहजी से वातें। स्थिति आशाजनक मालूम दी। शिमले व दिल्ली वात करने का प्रयत्न फोन पर नहीं हो पाया।

८-६-३९

जोवनेर ठाकुर से सोसायटीज एक्ट के वारे में चर्चा; किसान, सीकर कैदी जन्मदिन के पहले छोड़ने आदि के वारे में।

रा० व० कर्नल कुं० अमरसिंहजी, मिलिटरी मिनिस्टर वनाये गये व श्री रावलजी सा० वेटिंग मिनिस्टर। दोनों से मिला। वधाई दी। अमरसिंहजी ने सोसायटीज एक्ट में जो दुरुस्ती करने का निश्चय हुआ वह वताया। मैंने उन्हें अपनी दिक्कतें वतलायीं। तोरावाटी चौकड़ी ठिकाने में वाघ ने कई मनुष्यों को घायल कर दिया व उपद्रव मचा रहा है, मारने का हुक्म तथा हिंसक प्राणी द्वारा घायल व मारे गये तथा जिनके मवेशी मारे गये उन्हें मदद पहुंचाने आदि के वारे में हीरालालजी से मिलकर स्थिति समझी।

वनारस से घनश्यामदास जी विड़ला का फोन आया। उन्हें तार वगैरा भेजे। सांगानेर का हाथ के कागजों का काम देखा करीब डेढ़ सौ मुसलमान घर पर काम कर रहे हैं। महात्माजी के कारण इनकी धन्धे में उन्नति हुई है। छीपों का काम ठीक नहीं चल रहा। इनके धन्धे में नरमी आ रही है। देशी रंग का प्रचार हो तो इन्हें लाभ पहुंचे। श्री मूलजीभाई

के साथ एरोड्रोम देखते हुए डेरे पर आये।

सीकर वाले पुरोहितजी से रावराजा के समाचार मालूम हुए।

९-९-३९

दामोदर दिल्ली व शिमला जाकर आया। सर वापना से मिल आया, स्थिति कही।

जानकी को ज्वर १०३।। तक हो गया। थोड़ी चिन्ता। स्टेटमेन्ट वगैरा तैयार किया। ठीक बना।

रामबाग महल गया। स्टेटमेन्ट कुंवर अमरसिंहजी ने दो तीन-बार पढ़ा। उन्हें पसन्द आया। एक-दो जगह दुरुस्ती करने को कहा। श्री महाराज सा० से कल १२।। बजे मिलने का तय हुआ। अन्य बातों पर विचार-विनिमय देर तक होता रहा। जयपुर विद्यार्थी-संघ (स्टूडेन्ट्स फेडरेशन) की सभा नथमलजी के कटरे में हुई। वहां मानपत्र व पर्स दी गयी। विद्यार्थियों के प्रश्न-उत्तर ठीक रहे।

१०-९-३९

जोबनेर ठाकुर से मिला। सीकर-किसान व कैदियों के बारे में चर्चा।

घनश्यामदासजी बिड़ला को कलकत्ता फोन किया।

श्री महाराजा सा० से रामबाग पैलेस में मिलना हुआ। मैंने अपना स्टेटमेन्ट उन्हें दिखाया। सुधार कर उसे उन्होंने पसन्द किया। महाराजा सा० को जन्म-दिन के निमित्त भाषण देने पर मैंने जोर दिया। उन्होंने स्वीकार किया। मैंने पाइन्ट नोट करवाये। उन्होंने भाषण तैयार करने वाले को वे पाइन्ट बतला दिये। सीकर कैदियों को छोड़ने में थोड़ी हिचक बतलाई। उसे वह रेजिडेंट से फोन करके दूर कर लेंगे। ताड़केश्वर व घासीराम का वारन्ट वापस लेने को कहा। उन्होंने स्वीकृति दी। भाषण मुझे दिखाने की व्यवस्था करने को कहा। दिवान (प्राइम मिनिस्टर) के बारे में खानगी में बातचीत हुई।

आजाद चौक में जाहिर सभा हुई। लाउड स्पीकर लगाये गये थे। इससे सभा ठीक हुई। मेरा भाषण भी ठीक हुआ। स्टेटमेन्ट पूरा हिन्दी में सुना दिया गया। सत्यदेवजी विद्यालंकार 'हिन्दुस्तान' वाले आये थे। दामोदर दिल्ली गया।

११-९-३९

जयपुर महाराज का जन्म-दिन; अट्ठाइस वर्ष पूरे हुए, उनतीसवां वर्ष चालू हुआ।

ताड़केश्वर, घासीराम तथा जाट-कार्यकर्ताओं पर जो वारंट हैं उस वारे मैं श्री वी० सी० टेलर से बातचीत। उन्होंने कहा कि आप अपनी निगरानी में उन्हें रखें, तो वह गिरफ्तार नहीं करेंगे। महादेवलाल शाह (खण्डेलवाल) मिलने आये। उसका व्यवहार व क्रोध देखा। विचार हुआ।

प्रजामण्डल वर्किंग कमेटी का काम ८।। से ११।। तक होता रहा।

रामवाग पैलेस गया। महाराज के भाषण। किसान व सीकर के कैदियों के छोड़ने के वारे में बातें। उन्हें जेल पर ही छोड़ने के लिए कोशिश की। ताड़ॅकेश्वर व घासीराम के वारंट रद्द करने के बारे में कई बार टेलीफोन करना पड़ा। सोसायटीज एक्ट के बारे में रामवाग पैलेस भी गया। परन्तु वहां कोई नहीं मिले। शाम को वर्किंग कमेटी में थोड़ी देर रहा।

१२-९-३९

वर्किंग कमेटी (प्रजामण्डल की) ८ से ११।। तक हुई। शाम को साधारण सभा (जनरल कमेटी) ७।। से ११।। तर्क हुई। ठीक रही।

५ वजे से ७ बजे तक चि० शान्ता, कमला, वगैरा के साथ कर्नावतों का बाग, जैन मंदिर (छोटेलालजी का) हनुमानजी का मंदिर पटाड़ों में देखे; बाद होटल में आये।

फारवर्ड ब्लाक में अभी तो केवल तीन-चार लोग ही हैं। दुर्गालाल बिजलीवाले, राधा मोहन, गौड़ आदि।

आजकल की घटना जैसे पं०लादूरामजी, हरलालसिंहजी पर, डब्लू०एफ० बील, जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट, की ओर से मार वगैरा पड़ी, उस वारे में प्रश्न-उत्तर उससे पुछवाये।

जोवनेर ठाकुर सा० व कु० अमरसिंहजी से फोन से वातचीत की। महाराज सा० को पत्र भेजे। जानेवाले पत्र का हिन्दी मसविदा बनाया। बील पर कानूनी कार्रवाई करने का भी निश्चय किया गया।

कु० अमरसिंहजी का फोन आया। ताड़केश्वर व घासीराम के वारंट वापस ले लिये गये। रावलजी का फोन आया कि महाराज सा० कल १२।।

वजे मिलेंगे।

१३-९-३९

प्रजा-मण्डल की वर्किंग कमेटी की सभा में शामिल, सुवह ८ से १०॥ तक। दोपहर को साधारण सभा में आध घंटा करीव रहा।

महाराज सा० से १२॥ से १॥ वजे तक वातचीत हुई। सोसायटीज एक्ट सर शीतलाप्रसाद तैयार कर रहे हैं। प्राइम मिनिस्टर के वारे में विचार-विनिमय। अकाल तथा अनाज की दुकानें, मि० वील, जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट का जन्मदिन पर सीकर किसान कैदियों को छोड़ते समय का खेदजनक व्यवहार का हाल लिखकर पत्र दिया। उन्होंने जांच करने को कहा। महादेव शाह वेजवावदार हैं व विश्वासपात्र नहीं हैं, यह उन्हें व कु० अमरसिंहजी को वतलाया। दौसा में पानी की व्यवस्था तथा म्यु० कमेटी व डिस्ट्रिक्ट वोर्ड के लिए कानून वना रहे हैं यह उन्होंने वताया। उन्होंने कहा कि उस कमेटी में काम करूं। मैंने कहा कि मैं यह नहीं कर सकूंगा। पर जरूरत हुई तो प्रजामण्डल की ओर से योग्य व्यक्ति सुझा दिये जावेंगे। अकालराहत कार्य के संबंध में भी उनकी राय रही कि एक वार मैं सव मिनिस्टरों से मिल लूं तो ठीक रहेगा।

ठा० अमरसिंहजी से देर तक बातचीत। कपूरचन्दजी पाटनी का परिचय करवा दिया।

पंडित अमरनाथजी अटल से देर तक बातें। मैंने उनको राजाओं की सभा में दिये गये उनके भाषण के वारे में उलाहना दिया। अन्य बातें भी साफ तौर से हुईं। सर शीतलाप्रसादजी भी वहीं मिल गये। जोवनेर ठा० से वातें, उलाहना। मि० वील को नहीं रखेंगे, जयसिंहजी मुकर्रर किये जायेंगे।

वनस्थली (जयपुर), १४-९-३९

सुवह जल्दी ही एक मोटर व लारी से वनस्थली गये। रास्ते में लोगों ने स्वागत किया। वनस्थली में भी ठीक स्वागत वगैरा का व वालिका-विद्यालय का प्रोग्राम रहा। सभा में किसानों की हालत का परिचय। वालिकाओं व शिक्षक लोगों से परिचय हुआ। रात को ६। वजे करीव निकलकर १२ वजे रात को जयपुर पहुंचे।

महाराज सा० आज हवाई विमान से श्रीनगर गये।

जयपुर (रेल में), १५-९-३९

जोवनेर ठाकुर सा० से फैमीन रिलीफ के वारे में वातचीत। पचीस हजार के जौ मंगाने के लिए कहा, साढ़े वारह हजार का जयपुर में वाकी का दौसा, सवाई माधोपुर, हिंडोन, नीमकाथाना, आदि पांच निजामतों में अढ़ाई हजार मन। वहां की व्यवस्था नाजिम व प्रजामण्डल के कार्यकर्ता मिलकर करें। जयपुर की व्यवस्था भी प्रत्येक चौकड़ी में एक स्टेट अधिकारी व एक प्रजामण्डल का आदमी करे। जयपुर का भार कपूरचन्दजी पाटणी पर छोड़ा गया है यह उन्हें कह दिया।

सर शीतलाप्रसादजी जूनियर मिनिस्टर से सोसायटीज एक्ट के वारे में ठीक तौर से वातचीत। एलाउन्स व सीकर के वारे के भी उन्होंने सुन लिया।

रेवेन्यू मिनिस्टर खानवहादुर से मिला, सीकर तथा शिकारखाने के वारे में उनसे वातचीत हुई। आदमी होशियार मालूम दिये।

शिवप्रसादजी खेतान के यहां अनाज सस्ता मिले, उस वारे में मीटिंग हुई। वातचीत।

डब्लू० एफ० जी० व्राउन, सेटलमेण्ट कमिश्नर का व जोवनेर ठा० का पत्न आया। रेल में जवाव लिखा।

२। वजे सीकर रवाना, हीरालालजी शास्त्री, लादूरामजी, शान्ता, कमला, सत्यप्रभा, दामोदर, मदन, श्रीनिवास साथ में। रास्ते में काफी लोग मिलने आते रहे; स्वागत भी किया।

सीकर में जुलूस व सभा ठीक हुई।

सीकर, १६-९-३९

रावराजाजी की ओर से मिलने का वुलावा आया। ड्योढ़ी पर गया। रावराणीजी का सन्देश आया। मुझे जो कुछ कहना था कहा। श्री भंवरलाल जैन ने रावराजाजी का सन्देश व स्थिति समझाई। शाम को राधामोहन ने।

सीनियर आफीसर से मिलना हुआ। जिन्हें नौकरी से हटाया गया है उनके संवंध में विस्तारपूर्वक बातचीत। जकात, अकाल व रावराजाजी के वारे

में स्थिति समझी। यह सज्जन व सहृदय पुरुष मालूम दिये। ठीक परिणाम लाने में यह मदद करेंगे ऐसा मालूम हुआ।

आज मां के आग्रह (सत्याग्रह) के कारण अनाज शुरू किया। दूध तथा फल से कमजोरी मालूम हो रही थी तथा पेट में हवा भी ज्यादा रहती थी। शाम को थोड़े बाजरे के दाने खाये। मां को तथा घरवालों को सुख, सन्तोष हुआ। सीकर राजकुमार से, लक्ष्मणगढ़ जाने का प्रोग्राम एकाएक बन जाने के कारण, मिलना नहीं हो सका।

हीरालालजी, लादूरामजी, सत्यदेवजी विद्यालंकार, सुभद्रा, दामोदर के साथ २ बजे करीब लक्ष्मणगढ़ रवाना हुए। रात को नौ बजे करीब वहां पहुंचे। रामेश्वरलाल सोढाणी के नोहरे में ठहरे। बाजार में सभा हुई। वहां गये। स्वास्थ्य के कारण तथा थकावट के कारण बोलने का उत्साह कम रहा। मेरा व हीरालालजी का भाषण तो लोगों ने शान्ती से सुन लिया; परन्तु मेरे रवाना होते समय कुछ मूर्ख लोगों ने 'रावराजा को डुबो दिया' आदि की आवाजें कसीं।

लक्ष्मणगढ़, फतेहपुर, १७-९-३९

शंकरलाल कावरा, हरीरामजी जाजोदिया वगैरा मिलने आये। रात की घटना के लिए दुःख प्रकट करने लगे।

छोटी बाई (बिजराजजी की लड़की) मिलने आई। सात बजे करीब फतेहपुर के लिए रवाना हुए। वहां आठ बजे पहुंचे। श्री बद्रीनारायणजी की छत्री में ठहरे। वहां से जुलूस में फतेहपुर शहर में घूमकर श्री सीताराम जी पोद्दार के बाग में मुकाम किया। यहां की जनता का उत्साह ठीक मालूम दिया।

रामवल्लभजी नेवटिया के नोहरे में ४ बजे तक गांव के लोग म्युनिसिपल कमेटी व जकात वगैरा को लेकर मिलने आये।

बद्रीनारायणजी गनेडीवाल का देहान्त हो गया। उनके घर शोदेई बाई, नारायणीबाई वगैरा मिलीं।

शाम को जाहिर सभा हुई। मैं करीब एक घंटा बोला। खादी-प्रदर्शनी, खोलते हुए खादी के बारे में, सीकर, प्रजामण्डल व जयपुर समझौते के बारे

में बातें स्पष्ट तौर से अपनी भाषा में कहीं।

फतेहपुर, १८-९-३९

रामवल्लभजी के नोरे में कार्यकर्ताओं की देर तक सभा हुई। थोड़ी गरमा-गरमी भी हुई।

सुबह बाग में ज्वालाजी भरतिया व किसनदयालजी जालाण मिलने आये। सीकर व प्रजमण्डल के बारे में बातचीत।

म्युनिसिपल कमेटी के बारे में तहसीलदार, भगत, रामजीवन वगैरा मिलने आये।

डा० शर्मा (भरतिया अस्पतालवाला) मिलने आया। होशियार मालूम दिया।

स्त्रियों की सभा में थोड़ा बोला। स्योदेई बाई से थोड़ी बातें।

खादी प्रदर्शनी देखी।

फतेहपुर, रामगढ़, १९-९-३९

सीताराम पोद्दार के दादा से मिलना।

ज्वालाप्रसादजी भरतिया से जयपुर व सीकर के बारे में बातचीत। प्रजा-मण्डल को कम-से-कम ग्यारह हजार व अधिक-से-अधिक इक्कीस हजार देने को कहा। उन्होंने प्रजा-मण्डल के बदले वनस्थली-बालिका-विद्यालय को देने का अधिक उत्साह बतलाया। आंकड़ा निश्चित नहीं हुआ।

भीमराजजी दूगड़, मटरूमलजी खेमका व भगत से फतेहपुर म्युनिसिपल कमेटी के बारे में बातें। ता० २२-२३ को पूरा अधिकार लेकर सीकर आने का कहा।

दो मोटरों में रामगढ़ रवाना। बंसीधरजी रामगोपालजी के बगीचे में ठहरे।

फतेचन्द ने ठीक खातिरदारी की। वहां से जुलूस के साथ सूरजमलजी रुइया की हवेली में ठहरे।

बालचन्दजी शास्त्री व जानकीदासजी (दादूपंथी) की मृत्यु के दो रोज के अन्दर हुई। वहां बैठने गये।

रात को जाहिर सभा हुई। देर तक व्याख्यान हुए। लोगों को हीरालालजी का व्याख्यान ज्यादा पसन्द आया।

मुकुन्दगढ़-झुनझनू, २०-९-३९

रात को देर से १२।। वजे, सोये। सुबह साढ़े तीन वजे उठे। तैयार होकर जल्दी रामगढ़ से रवाना हुए।

मंडावा पहुंचे। जाहिर सभा में आध घंटे बोलना पड़ा।

बातचीत, अकाल की स्थिति समझी।

मुकुन्दगढ़ वालों ने जुलूस भी निकाला। वे-टाइम होते हुए भी सभा में उत्साह व जोश ठीक था। जनता पर हीरालालजी के भाषण का ठीक असर हुआ।

झुनझनू में जुलूस की जवरदस्त तैयारी। जनता में उत्साह व जोश खूब दिखाई दिया। सारा शहर बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया गया था। वहुत से आर्च वनाये गये थे। कई जगह निशान-नौवत वज रहे थे। स्त्री-पुरुषों का समुदाय उलट पड़ा। मेरी राय में, आज तक के जितने जलूस निकले व सभाएं हुईं उसमें, नं० १ झुनझनू, नं० २ जयपुर व नं० ३ मुकुन्दगढ़ का था। सभा ठीक हुई।

झुनझनू-सीकर, २१-९-३९

जुखाम का जोर। डा० ताराचन्दजी ने ठीक व्यवस्था की। गोड़े में व पांव में दवा वगैरा लगाई।

स्त्रियों की सभा में दो मिनट वोला।

जक़ात के वारे में मातादीन भगेरिया (चिड़ावावाले) तथा अन्य लोगों से बातचीत।

डा० ताराचन्द के यहां भोजन।

सीकर पहुंचे। स्वास्थ्य कमजोर, जुखाम व हरारत मालूम दी।

सीनियर अफीसर संतोषसिंहजी से मिले। सीकर नौकरी वालों के बारे में बातें।

उन्हें मदद करने को कहा। जकात व अकाल के वारे में व रावराजा के बारे में जनता की भावना कही।

सीकर, २२-९-३९

सीकर के मामले के कागजात देखे, आराम किया।

सीकर के आफिसर मिलने आये। अकाल जकात आदि चर्चा। रात को

सीनियर आफीसर आये। सीकर नौकरीवालों के बारे में देर तक बात-चीत, विचार-विनिमय।
आज सत्यदेवजी विद्यालंकार ने सीकर में जाहिर व्याख्यान दिया।

२३-९-३९

जुखाम का जोर कम हुआ व रात को नींद भी ठीक आई। सत्यदेवजी दिल्ली गये।
पुरोहितजी, रावराजा के मामले में व सीकर को वाजिब न्याय मिले इस मामले में दिलचस्पी लें, इस बारे में बातचीत।
भंवरलाल जैन दीवान ने रावराजाजी का सन्देश बताया।

२४-९-३९

वर्धा, गोला तथा लोसल जाने का प्रोग्राम निश्चित हुआ।
सत्यप्रभा ने अपनी दुःखगाथा थोड़ी सुनाई।
राधाकिसन के मकान के बारे में विचार-विनिमय, स्टेशन की ओर या कमरे की जगह में से।
सीकर के पुलिस से निकाले हुए लोग मिलने आये। सरकारी वकील से बातचीत।
काशी-का-बास में अकाल पड़ गया। सहायता करने का निश्चय।
श्री बी० सी० टेलर आई० जी० पी० जयपुर से ११ से १२॥ तक जयपुर राज्य-व्यवस्था, सीकर-पुलिस से अलग किये गये लोगों के बारे में जकात, रावराज, अवाल, झुनझनू जेल की खराबी ठिकानेवालों की ज्यादती, घूसखोरी वगैरा पर खुलकर चर्चा। इसके अलावा प्रजामण्डल पब्लीसिटी, परस्पर सम्बन्ध पर भी विचार-विनिमय।
सीनियर आफिसर सन्तोखसिंहजी से मिला।
रेडियो पर तुलसी रामायण सुनी।
श्री माधोप्रसाद गुप्ता असिस्टेण्ट सीनियर आफिसर व काशीप्रसाद मिलने आये, देर तक बातचीत।

२५-९-३९

खान बहादुर अब्दुल अजीज रेवेन्यू मिनिस्टर से ६॥ बजे मिला। सीकर के हटाये गये कर्मचारियों के बारे में तथा अकाल, जकात, रावराजा सा०

आदि विषयों के वारे में वातचीत। कल फिर मिलना है।

लक्ष्मी, शिवभगवान की वहन, अपने लड़कों को लेकर वर्धा रहेगी। इसे दस रुपया महीना सहायता देने का निश्चय।

२६-९-३९

फतेहपुर से भीमराजजी दूगड़, सीतारामजी पोद्दार, उमादत्त व सत्यदेव आये।

खान वहादुर अब्दुल अजीज रेवेन्यू मिनिस्टर से सीकर के मामले में ९ से १०॥ बजे तक दिल खोलकर वातचीत।

सीकर सर्विस के लोगों के वारे में ठीक परिणाम निकलने की आशा; अकाल व जकात के वारे में भी। उनसे जयपुर के वारे में भी खानगी वातचीत हुई।

सीकर सर्विस के लोग तथा किसान लोग मिलने आये।

रावराजा की ओर से राधामोहन व भंवरलाल मिलने आये। स्थिति कही। कल जाने की तैयारी।

श्री मंगलसिंहजी कुडवालों की ओर से मिलने आये।

जानकी व कमला का सीकर रहने का तय हुआ।

चौमू, जयपुर, २७-९-३९

सुबह दो बजे उठे। चार की गाड़ी से चौमू रवाना। साथ मे तेरह-चौदह लोग हो गये।

चौमू में जलूस निकला। ठीक उत्साह था। जाहिर सभा भी ठीक हुई। लोग खासकर बलाई लोग (बुनकर) वहुत ज्यादा संख्या में थे।

खादी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी बहुत ही अच्छे ढंग की हुई थी। कातनेवालों की सभा का दृश्य सुन्दर था।

चौमू से रात को १०॥ वजे करीब मोटर द्वारा जयपुर रवाना। लारी के कारण रास्ते में डेढ़ घंटा रुकना पड़ा। जयपुर १। वजे रात को पहुंचे। रास्ते में अशान्ति रही। चौमू से जयपुर का रास्ता बहुत खराब रहा।

जयपुर, २८-९-३९

जोबनेर ठाकुर व सामोद रावलजी वगैरा को टेलीफोन। श्री महाराज आज शाम को ६ वजे आने वाले हैं।

कपूरचन्दजी के घर गया। उन्हें साथ लेकर जोबनेर ठाकुर के यहां। पचीस

हजार मन अनाज जौ व गेहूं और मंगाने का निश्चय। श्रीनिवासजी (नाजम नीम-का-थाना), कपूरचन्दजी पाटणी व राजरूपजी टांक इन तीनों के मिलकर माल खरीदने व वेचने की व्यवस्था करने का निश्चय हुआ। उन्होंने मि० ब्राउन की शिकायत की । मि० विल कल चार्ज दे देगा। जयसिंहजी की सिफारिश तो वहुत हुई, उन्होंने कहा, पर मैंने नहीं सुनी। उनको कहना पड़ा कि अटलजी या अमरसिंहजी को प्राइम मिनिस्टर क्यों नहीं बना देते ?

जकात के लिए शेखावटी के लोगों का डेपुटेशन मिलने आया। उन्हें मेरी व प्रजामण्डल की नीति वताई।

सीकर राव राजा व राजकुमार की ओर से सखतासिंह मिलने आये। अकाल की हालत पर वातचीत।

चिरंजीलाल अग्रवाल के वकिंग कमेटी से उनके त्यागपत्र पर वातें। उन्होंने तो वचन दिया कि मैं जो काम उनसे लेना चाहूंगा वह करने को तैयार रहेंगे। जेल जाने तक की तैयारी रहेगी।

चिरंजीलाल मिश्र, पाटणी व हरिश्चन्द्रजी से वातें।

२९-९-३९

सर शीतलाप्रसादजी से वहुत देर तक वातचीत— सोसायटीज एक्ट, वचत कानून, मूलचन्द तिवारी, दीवान सर जगदीशप्रसाद वगैरा के वारे में। रामगढ़ हिन्दू कैदी, हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न, महायुद्ध, जिन्ना ही नीती वगैरा के वारे में चर्चा।

गीजगड ठाकुर से मिले। ठिकानेदार व प्रजामंडल के वारे में बातचीत। घनश्यामदासजी बिड़ला देहली से तीन बजे करीब पहुंचे। उनसे वातचीत। घनश्यामदासजी शाम को ठाकर मदनसिंहजी के यहां भोजन करने गये। कार्यकर्ताओं से जकात-डेपुटेशन, रामगढ़-डेपुटेशन आदि के वारे में बात-चीत।

३०-९-३९

जयपुर परिस्थिति के वारे में श्री घनश्यामदासजी विड़ला से वातचीत। घनश्यामदासजी की व मेरी मुलाकात के वारे में निश्चित उत्तर न मिलने से गड़वड़ी हुई व दौड़-धूप करनी पड़ी। आखिर परिणाम ठीक आया।

रामबाग जाकर अमरसिंहजी से मिला।

डा० दलजीतसिंहजी, हरनारायणजी पुरोहित आदि कई लोग मिलने आये।

श्रीनिवासजी (नाजिम) से व कपूरचन्दजी पाटणी से अनाज मंगाने व वेचने के वारे में व्यवस्था की चर्चा।

ठा० मदनसिंह आये। बाद में कुंवर अमरसिंहजी (चौमूवाले) मिलटरी मिनिस्टर भी मिलने आये। देर तक वातचीत।

१-१०-३९

प्रजामण्डल की वर्किंग कमेटी की वैठक हीरालालजी के घर ७।। से १० तक हुई। वहां रहे। घनश्यामदासजी से वातें। वनस्थली व रतनजी का ठीक परिचय व महाराजा के सम्वन्ध में बातें। सत्यप्रभा व सीतारामजी वनस्थली गये।

घनश्यामदासजी बिड़ला महाराजा से ११ से ११।। तक मिले। सन्तोष-कारक मुलाकात।

महाराज से मेरी १२ से १-५ तक मुलाकात हुई। कई विषयों पर बातचीत। खासकर सोसायटीज एक्ट, सेखावटी की जकात, अकाल की हालत, नये प्राइम मिनिस्टर की नियुक्ति, रावराजा सीकर, शिकारखाना, प्रजामंडल इत्यादि के वारे में सन्तोषकारक चर्चा। जयपुर की वनी हुई खादी उन्हें भेंट की। जोधपुर महाराज भी आ गये।

रावलजी, वैटिंग मिनिस्टर, खान वहादुर, जोवनेर ठाकुर आदि से भी वातें।

खानवहादुर से सीकर नौकरीवालों के वारे में शिकारखाने, पैमाइश, घन-श्यामदासजी की जमीन आदि की चर्चा। जोवनेर ठाकुर सा० से फैमिन फण्ड के वारे में बातें।

ठा० मदनसिंहजी (नवलगढ़) व घनश्यामदासजी विड़ला से मिले। घन-श्यामदासजी वनस्थली जाकर आये।

प्रजामण्डल वर्किंग कमेटी का काम।

२-१०-३९

हरलालसिंहजी व नेतरामसिंहजी से उनके जाट बोर्डिंग हाउस तथा अन्य

कठिनाइयों के बारे में बातचीत।
प्रजामण्डल की वर्किंग कमेटी न्यू होटल में हुई।
अचरोल ठाकुर श्री हरिसिंहजी (होम मिनिस्टर) से जकात के मामले में व उनके बारे में इधर मेरे मन में जो भाव पैदा हो गये थे उस बारे में स्पष्ट तौर से चर्चा।
ठाकुर मदनसिंहजी (नवलगढ़) मिलने आये। खानगी बातचीत।
ठाकुर गीजगड, पाटण से मिश्रजी व हीरालालजी के साथ देर तक बातचीत। सरदार-सभा व प्रजामण्डल के सम्बन्ध के बारे में विचार-विनिमय।
हीरालालजी शास्त्री व रतनजी से वनस्थली, जाट बोर्डिंग, जाट विद्यार्थिनी, किसान-पंचायत आदि के बारे में विचार-विनिमय।
'गांधी-जयन्ती' निमित्त आजाद चौक में जाहिर सभा। दो हजार की थैली प्रजामण्डल के लिए मिली। भाषण, 'बापू के जीवन से क्या ले सकते हैं ?' इसपर मन में विचार थे सो कहे।

दिल्ली, ३-१०-३९

सुबह अहमदाबाद मेल से दिल्ली पहुंचे। स्टेशन से बिड़ला-हाउस।
पंडित जवाहरलाल व मौलाना से मिलना। विनोद।
बापू से जयपुर प्राइम मिनिस्टर व वहां की हालत के बारे में बातचीत।
राजेन्द्रबाबू व जवाहरलालजी लार्ड लिनलिथगो वायसराय से करीब सवा दो घण्टे मिलकर आये। बातचीत का हाल सुनाया।
सुभाष बोस ने बैरिस्टर जिन्ना से बात करते समय बापू के चरित्र पर दोष लगाया। श्री जिन्ना ने यह बात अन्य मित्रों से कही। बापू से यह खबर जानकर दुःख व चोट पहुंची।
सर बर्ट्रेण्ड ग्लेन्सी को शिमला टेलीफोन किया। वह आज दौरे पर जा रहे हैं। दूसरे सप्ताह में देहली आने को हैं, इसलिए शिमला नहीं जाना हुआ।
रावराजा कल्याणसिंहजी (सीकरवालों) से देर तक बातचीत।
सर शादीलाल ने सर बर्ट्रेण्ड ग्लेन्सी को जो पत्र लिखा वह बतलाया। जयपुर दीवान के बारे में देर तक विचार-विनिमय।
चि० सुशीला व नरेन्द्रलाल पहुंचाने आये।

४-१०-३९

सत्यदेव व सुभद्रा आये। उनसे वर्धा व जयपुर रहने के बारे में बातचीत। सीकर से पर्स या सहायता के बारे में पूछताछ। सत्यमेव के खुलासे से सन्तोष हुआ।

रामजीभाई व जनार्दन वर्मा से बातचीत।

बापू से जयपुर के प्रोग्राम की चर्चा मार्च महीने में रखने का निश्चय।

सर जगदीश से जयपुर के दीवान के बारे में सन्तोषजनक बातें। वह देशी रियासत में जाना पसन्द नहीं करते। सर भोर भोपाल में हैं। अच्छे व योग्य हैं पर वह जायंगे नहीं। इनके अलावा ई० राघवेन्द्रराव, गोपालस्वामी ऐयर ये दो नाम उन्होंने पसन्द किये। वह सर बर्ट्रेण्ड ग्लेन्सी से बात करेंगे। वार (युद्ध) के बारे में उन्हें (सर जगदीश को) बापू की नीति पसन्द है।

जामिया वाले, केदारनाथजी गोयनका, रामगोपाल, सिद्धगोपाल, शान्ता, गीता वगैरा मिलने आये।

बापू के सामने मौलाना ने वायसराय से मिलने के बारे में इनकार कर दिया।

बापू को बुरा लगा। समझाया। मुझे तो मौलाना के कहने में सार मालूम हुआ।

बापू से शाम की प्रार्थना के बाद खानगी में अपनी कमजोरियों का पूरा चित्र खोलकर कहा। उन्होंने हिम्मत व उत्साह दिया।

घनश्यामदासजी के सामने भाई जुगलकिशोर से बातें। उन्होंने बीस हजार देना तो कबूल किया। फिलहाल में दस हजार, बाद में फिर १० हजार।

५-१०-३९

बापू से बातचीत। जुगलकिशोरजी व घनश्यामदासजी से बातें।

घनश्यामदासजी का आग्रह रहा कि मुझे अपने रहने का मुख्य स्थान जयपुर कर लेना चाहिए। बापू की भी राय यही रही, परन्तु पहले तो स्वास्थ्य का प्रश्न है।

जयपुर महाराजा, रावलजी, जोबनेर ठाकुर, सर शीतलाप्रसाद, ई० राघवेन्द्र राव आदि को पत्र लिखे व भिजवाये।

देवदास भाई ने सत्यदेवजी व सालपेकर के वारे में वात की।
पार्वती डिडिवानियां वीमार व दुःखी मालूम हुईं।
चतुर्भुजजी का पत्र पढ़कर दुःख व चोट। आंखें खुलीं। ईश्वरी महिमा अपार है; दोनों को थोड़ी सांत्वना दी।
शान्ता व रामगोपाल गाडोदिया के यहां सबों से मिलकर जयपुर-सहायता की वात की।
भाईजी के आग्रह के कारण 'लक्ष्मीनारायण मंदिर' प्रतिष्ठा होने के वाद देखा।
बापू वाइसराय से मिलकर आये। ग्रैंड ट्रंक से वर्धा रवाना। सेकंड क्लास से। बापूजी राजेन्द्रवाबू, सरदार, मौलाना, जवाहरलाल, कृपालानी साथ में। रास्ते में लोग दर्शनों के लिए आते रहे।

वर्धा, ६-१०-३९

भोपाल में श्वेव कुरेशी व उनकी स्त्री बापू से मिलने आये। श्वेव से सर जोसेफ मोर के बारे में पूछताछ।
रास्ते में खूव भीड़ हो जाती थी। दर्शन करनेवालों की।
वापू से व जवाहरलाल से अपने इलाज के वारे में वातचीत। वापू ने तो मलवारी मालिश के बारे में मना किया। वड़ौदा के माणिकरावजी तथा अन्य मालिश की भी ना कही। डाक्टरों का इलाज व एलोपैथिक इलाज भी नहीं करना। उनकी राय से या तो डा० मेहता का इलाज या दिल्ली-वाले महादेवभाई के परिचित वैद्य आनन्द स्वामी का इलाज करके देखने को कहा। जवाहरलालजी ने अपने चचेरे भाई, जो अभी योरप से आये हैं व शायद पीलीभीत में हैं, से पूछने का कहा। वापू की वायसराय से जो वातें हुईं उससे कोई सन्तोषजनक परिणाम आने की आशा नहीं मालूम हुई।
शाम को वर्धा पहुंचे।
डा० मेहता के इलाज के बारे में जयरामदासजी से बातचीत।
मैं मदालसा-श्रीमन के घर ठहरा। यहां ठीक आराम व शान्ति मिलना संभव है।
कमल, सतीश वगैरा आये। व्यवस्था के वारे में क्या-क्या तकलीफ होती है वह कहा। मैं तो मेहमान ही रहूंगा।

४-१०-३९

सत्यदेव व सुभद्रा आये। उनसे वर्धा व जयपुर रहने के बारे में बातचीत। सीकर से पर्स या सहायता के बारे में पूछताछ। सत्यमेव के खुलासे से सन्तोष हुआ।

रामजीभाई व जनार्दन वर्मा से बातचीत।

बापू से जयपुर के प्रोग्राम की चर्चा मार्च महीने में रखने का निश्चय।

सर जगदीश से जयपुर के दीवान के बारे में सन्तोषजनक बातें। वह देशी रियासत में जाना पसन्द नहीं करते। सर भोर भोपाल में हैं। अच्छे व योग्य हैं पर वह जायंगे नहीं। इनके अलावा ई० राघवेन्द्रराव, गोपालस्वामी ऐयर ये दो नाम उन्होंने पसन्द किये। वह सर बर्ट्रेण्ड ग्लेन्सी से बात करेंगे। वार (युद्ध) के बारे में उन्हें (सर जगदीश को) बापू की नीति पसन्द है।

जामिया वाले, केदारनाथजी गोयनका, रामगोपाल, सिद्धगोपाल, शान्ता, गीता वगैरा मिलने आये।

बापू के सामने मौलाना ने वायसराय से मिलने के बारे में इनकार कर दिया।

बापू को बुरा लगा। समझाया। मुझे तो मौलाना के कहने में सार मालूम हुआ।

बापू से शाम की प्रार्थना के बाद खानगी में अपनी कमजोरियों का पूरा चित्र खोलकर कहा। उन्होंने हिम्मत व उत्साह दिया।

घनश्यामदासजी के सामने भाई जुगलकिशोर से बातें। उन्होंने बीस हजार देना तो कबूल किया। फिलहाल में दस हजार, बाद में फिर १० हजार।

५-१०-३९

बापू से बातचीत। जुगलकिशोरजी व घनश्यामदासजी से बातें।

घनश्यामदासजी का आग्रह रहा कि मुझे अपने रहने का मुख्य स्थान जयपुर कर लेना चाहिए। बापू की भी राय यही रही, परन्तु पहले तो स्वास्थ्य का प्रश्न है।

जयपुर महाराजा, रावलजी, जोबनेर ठाकुर, सर शीतलाप्रसाद, ई० राघवेन्द्र राव आदि को पत्र लिखे व भिजवाये।

देवदास भाई ने सत्यदेवजी व सालपेकर के वारे में वात की।

पार्वती डिडिवानियां बीमार व दुःखी मालूम हुईं।

चतुर्भुजजी का पत्र पढ़कर दुःख व चोट। आंखें खुलीं। ईश्वरी महिमा अपार है; दोनों को थोड़ी सांत्वना दी।

शान्ता व रामगोपाल गाडोदिया के यहां सवों से मिलकर जयपुर-सहायता की वात की।

भाईजी के आग्रह के कारण 'लक्ष्मीनारायण मंदिर' प्रतिष्ठा होने के वाद देखा।

वापू वाइसराय से मिलकर आये। ग्रैंड ट्रंक से वर्धा रवाना। सेकंड क्लास से। वापूजी राजेन्द्रवावू, सरदार, मौलाना, जवाहरलाल, कृपालानी साथ में। रास्ते में लोग दर्शनों के लिए आते रहे।

वर्धा, ६-१०-३९

भोपाल में श्वेव कुरेशी व उनकी स्त्री वापू से मिलने आये। श्वेव से सर जोसेफ मोर के वारे में पूछताछ।

रास्ते में खूव भीड़ हो जाती थी। दर्शन करनेवालों की।

वापू से व जवाहरलाल से अपने इलाज के बारे में बातचीत। वापू ने तो मलवारी मालिश के बारे में मना किया। बड़ौदा के माणिकरावजी तथा अन्य मालिश की भी ना कही। डाक्टरों का इलाज व एलोपैथिक इलाज भी नहीं करना। उनकी राय से या तो डा० मेहता का इलाज या दिल्ली-वाले महादेवभाई के परिचित वैद्य आनन्द स्वामी का इलाज करके देखने को कहा। जवाहरलालजी ने अपने चचेरे भाई, जो अभी योरप से आये हैं व शायद पीलीभीत में हैं, से पूछने का कहा। वापू की वायसराय से जो वातें हुईं उससे कोई सन्तोषजनक परिणाम आने की आशा नहीं मालूम हुई।

शाम को वर्धा पहुंचे।

डा० मेहता के इलाज के बारे में जयरामदासजी से वातचीत।

मैं मदालसा-श्रीमन के घर ठहरा। यहां ठीक आराम व शान्ति मिलना संभव है।

कमल, सतीश वगैरा आये। व्यवस्था के वारे में क्या-क्या तकलीफ होती है वह कहा। मैं तो मेहमान ही रहूंगा।

७-१०-३९

नींद ठीक आई। थकावट कम हुई। रात को थोड़ी खांसी आई।

वर्किंग कमेटी की मीटिंग सुबह ९ से ११ तक व दोपहर को २ से ७॥ तक हुई कई मेम्बर मेरे जयपुर-जेल से छूटने के बाद पहली बार प्रेम से मिले। दोपहर को बापू व महायुद्ध के बारे में वर्किंग कमेटी की नीति के विषय में चर्चा, खुलासा।

बापू के जाने के बाद भी, चर्चा से मालूम दिया कि, बापू का समर्थन करनेवाले जयरामदास, देव व प्रफुल्ल ही रहे होंगे। राजेन्द्र बाबू भी थोड़े। सरदार, भूलाभाई वगैरा ठहराव के पक्ष में। याने बापू पूरी मदद करते रहें। बापू ने वायसराय से जो कहा उससे सरदार तो दुःखी भी मालूम हुए। वासन्ती मिलने आई। कौशल्या बीमार है कहा, आश्रम में उसे बहुत ज्यादा काम पड़ रहा है यह बताया। मुझे वासन्ती पर मदालसा के समान दया व प्यार आ जाता है।

८-१०-३९

कुमारी कौशल्या आश्रम में पढ़नेवाली छात्रा का आज सुबह देहान्त हो गया। होनहार व सुशील लड़की थी। मन में बुरा तो लगा। दुःख भी हुआ। कई तरह के विचार आते रहे; श्मशान वैराग्य !

श्री लक्ष्मण राजाराम अत्रे, वकील, भी, आज टायफाईड से चलते रहे। बुरा मालूम हुआ। देर से खबर मिली। पहले मिलती तो मिलना हो जाता। वर्किंग कमेटी ८॥ से ११ व १२ से २ तक हुई। बापू का खुलासा दोपहर की वर्किंग कमेटी में ठीक रहा। लड़ाई के समय अगर ब्रिटिश सरकार ने वर्किंग कमेटी की मांग मंजूर कर ली तो बापू का व्यवहार क्या रहेगा इसका खुलासा ठीक हुआ। बापू को दुःख तो खूब पहुंच रही है परन्तु उपाय क्या ? देशी रियासत की कार्यकारिणी की सभा जवाहरलालजी के सभापतित्व में हुई। वहां दस बजे रात तक बैठना हुआ। जवाहरलाल का स्टेटमेण्ट ठीक हुआ। मेरे बारे में भी जिक्र किया। वर्किंग कमेटी यह विभाग मुझे सौंपना चाहती है। बापू ने मुझे कहा था तब भी मैंने कहा था कि मेरी अभी तैयारी नहीं है।

दोपहर को सिर में दर्द था। शुक्ल ने सिर में तेलमालिश की। नींद

आई। इससे सिर हलका हो गया।
किशोरलालभाई ने मंजू की हालत कही। विवाह कर देते तो अच्छा था, उसे खूब चोट पहुंची है।
वर्धा में खूब चहल-पहल दिखाई देने लगी है।
जमियत उल् उलेमा की ओर से वर्किंग कमेटी में स्थिति का खुलासा किया गया।

९-१०-३९

वर्किंग कमेटी ८।। से ११।। तक हुई। बाद में आल इंडिया कमेटी नवभारत विद्यालय में २ से ८।। तक होती रही। वर्किंग कमेटी के युद्ध-संबंधी प्रस्ताव पर चर्चा। मेम्बरों ने तेईस संशोधन दिये। कइयों ने जवाबदारी से भाषण दियें।
गिरधारी-द्रौपदी-कृपलानी मिलने आये। द्रौपदी ने अपनी रामकहानी सुनाई। उसे दिलासा दिया। गिरधारी की तारीफ की व उसके गुण कहे।

१०-१०-३९

आल इंडिया कांग्रेस कमेटी सुबह ८ से ११।। तक हुई। वर्किंग कमेटी का युद्ध-संबंधी प्रस्ताव पास हुआ। १८८ के विरुद्ध ५८ मतों से। कुल सदस्य २४६ थे। दोपहर को दो से तीन बजे तक, एक घंटे में, काम समाप्त हुआ। सुबह जवाहरलालजी का अमेण्डमेण्टों के जवाब में व आखिर में ठीक, सुन्दर व प्रभावशाली भाषण हुआ। कांग्रेस अधिवेशन मार्च में होने का निश्चय हुआ। सीताराम व बसन्तलालजी से बातें। नरसिंहदासजी अजमेरवाले व गौरीशंकरजी, जानने की इच्छा न होते हुए भी, वहां की कई बातें सुना ही गये। आल इंडिया की बैठक में फ्रण्टियर के छोड़कर सब प्राइम मिनिस्टर व कई मिनिस्टर हाजिर थे।
सेगांव जाने की इच्छा थी, परन्तु सवारी का इन्तजाम न होने से जाना नहीं बना।
महिला-आश्रम में सब वर्किंग कमेटी के सदस्यों के साथ मिलकर साथ भोजन। ठीक समारोह रहा।

११-१०-३९

स्वयंसेवकों के संगठन के बारे में विचार-विनिमय।

वर्किंग कमेटी का प्राइम मिनिस्टरों के साथ विचार-विनिमय।
वल्लभभाई के साथ बापू के पास सेगांव। वल्लभभाई से जयपुर वगैरा की बातें। बापू सोये हुए थे। प्यारेलाल ने सुदर्शन अग्रवाल (हसनपुरवालों) की स्त्री रमा देवी का पत्र पढ़ाया, दुःख हुआ। दयाजनक।
बापू से स्टेट के मामलों पर वर्किंग कमेटी की थोड़ी चर्चा।
बापू स्टेट स्टैंडिंग कमेटी के साथ एक घंटा बैठे।
कांग्रेस सरकारों को किस प्रकार का रवैया अख्त्यार करना चाहिए उसपर विचार-विनिमय के बाद प्रस्ताव पास हुआ।
विधानबाबू ने दवाई लिखकर दी।
जवाहरलाल व राजेन्द्र बाबू का गांधी चौक में व्याख्यान हुआ।

१२-१०-३९

बाबा राघवदास, सुदर्शन अग्रवाल (हसनपुरवाले), सीतारामजी व हीरालालजी शास्त्री से बातचीत।
जवाहरलालजी, राजाजी वगैरा सुबह गये। बातें, विनोद। जवाहरलालजी से कहा कि 'आप बहुत लम्बा भाषण देने लग गये हैं; असर कम हो जाता है।'
भारती अम्बालाल भाई की लड़की बम्बई से आई।
बाला साहब खेर (बम्बईवालों) से वर्तमान स्थिति, कार्य मिनिस्ट्री, पूना, बम्बई, सतीश कालेलकर, सुशीला, गुप्त वगैरा के संबंध में विचार-विनिमय। अन्य कई लोगों से बातचीत; नागपुर से डेपुटेशन आया।

१३-१०-३९

सेगांव गये, हीरालालजी शास्त्री, सीतारामजी सेकसरिया, सीतारामजी पोद्दार, मदालसा के साथ।
बापू ने कहा कि डा० लक्ष्मीपति की राय लेना बहुत जरूरी है; उन्हें दिखाया।
कृष्णदास गांधी व राधा गांधी वगैरा मिले।
अग्रसेन जयन्ती निमित बहुत आग्रह होने के कारण सीतारामजी, हीरालालजी, आदि के साथ मोटर से नागपुर गये। हिन्दुस्थान हाउसिंग में ठहरे व नाश्ता किया। काटन मार्केट में अग्रवाल लोग ठीक जमे थे।

सभापति के नाते उन्हें कहना था सो कहा। सीतारामजी व हीरालाल-जी वगैरा भी बोले; दोनों पक्ष एक हो गये, कहा।
६॥ बजे करीव वर्धा पहुंचे।

१४-१०-३९

हीरालालजी शास्त्री, जेठालालभाई, सीतारामजी सेकसरिया आदि मित्रों से वातचीत। किशोरलालभाई से भी। काले, मोघे, अम्बुलकर भी मिले। वापू से मिलने सेगांव। भारती, जयरामदास साथ थे। डा० लक्ष्मीपति की रिपोर्ट पढ़ी। डा० मेहता की ट्रीटमेन्ट कराने की वापू की राय रही।
दुकान का कार्य। सीतारामजी पोद्दार वम्बई गये।
पवनार गये। विनोवा से वहुत देर तक वर्किंग कमेटी के प्रस्ताव पर वात-चीत। ठीक चर्चा हुई। भोजन वहीं पर किया। प्रार्थना से ठीक शान्ति मिली।

१५-१०-३९

रामेश्वरदासजी विड़ला से वम्वई फोन पर वातचीत। वह रुक जावेंगे।
मदन कोठारी को उसकी वेपरवाही की भूलें वतलाईं। उसने स्वीकार कीं। प्रयत्न करने को कहा।
जानकी का आया हुआ खानगी पत्र कमल को पढ़ाया। उसे जवाव दिया।
राजगोपालाचारी देहली से आये। उनके साथ वापूजी के पास सेगांव गये।
वह देहली में वायसराय से दो वार मिले, उसका हाल वहां सुनाया। उन्हें, कांग्रेस से झंझट न हो, इस वारे में, पच्चीस टके उम्मीद है। उन्हें तो आगे चलकर संघर्ष आता दीखता है। असेम्वली के प्रस्ताव में वायसराय ने थोड़ी दुरुस्ती वतलाई, वह स्वीकार हुई। उसके मुताविक सरदार वल्लभ भाई व श्रीकृष्ण, प्रीमियर विहार को, टेलीफोन कर दिये गए।
रात के एक्सप्रेस से जलगांव होते हुए, अमलनेर, धुलिया के लिए थर्ड में रवाना। चि० मदालसा, दामोदर, विट्ठल साथ में।

चालीसगांव, १६-१०-३९

जलगांव उतरे। सत्तू, पुरुषोत्तम दास की लड़की की आज भयंकर दुर्घटना हो जाती, अगर पैसेन्जर नहीं पकड़ता तो। गाड़ी चालू हो गयी थी।
मोटर से अमलनेर रवाना। ६। वजे करीव पहुंचे। कान्ती, कोटेचा के पिता

से मिले।
कान्ती का जवान छोटा भाई विवाह के बाद चल बसा।
प्रताप सेठ से मिले। उनसे जयपुर की स्थिति, वहां जाने, वनस्थली की संस्था देखना प्रजामण्डल के काम में मासिक सहायता देने आदि के वारे में वातें उन्होंने कहा कि वहां मार्च में आऊंगा तव सहायता व वनस्थली देख लूंगा। अभी नवम्बर में तो नहीं जा सकूंगा।
वर्धा के कामर्स विद्यालय की योजना उन्हें पसन्द आयी। विचार करके जवाव देने को कहा। इनकी इच्छा तो होती है कि इसे प्रताप कामर्स विद्यालय वनाया जाय।
नागपुर वैंक के शेयर खरीदने व डायरेक्टर होने की इच्छा तो नहीं। हां, डिपाजिट का ख्याल रखेंगे।
नडियाद कन्या-आश्रम को सहायता, रुकमणी के लिए लड़का आदि के विषय में भी वातें, मीलवाले वनावटी झूठी छाप लगा देते हैं, उन्होंने वत-लाया।
भोजन व आराम के वाद मोटर से धुलिया रवाना। वहां लक्ष्मी व श्री-राम से मिलना। वाद में गंगूवाई व श्री रामेश्वरदास भी आये। शालिग-रामजी वगैरा मिले। लक्ष्मी का वालक देखा। उसे व श्रीराम को समझाया। प्रतापसेठ भी वहां आ गये।
चालीसगांव गये। वहां से वम्वई तक सेकंड की दो टिकटें लीं। मदालसा की भी।

बम्बई, १७-१०-३९

वोरीवन्दर उतरे। प्रतापसेठ सरदारगृह गये। हुकमचन्दजी (इन्दौरवाले) भी मिले। देशपाण्डे के साथ मदालसा को लेकर विड़ला हाउस आये। शारदावहन व रामेश्वरदासजी मिले। जयपुर की वातें। रामेश्वरदासजी ने डा० वरजर (जर्मन) को वुलवाया। उसने भली प्रकार तपासा। सारी रिपोर्टें देखीं। अपनी राय वह कल लिखकर भेजेगा। डा० वेनगार्ड की राय भी वीकानेर से मंगा लेगा। ब्लड प्रेशर १७०-११५ रहा।
डा० जस्सा नेचर क्योर वाले ने भी मुझे व मदालसा को तपासा, ब्लड प्रेशर १६०-११० रहा।

प्रतापसेठ व रामेश्वरदासजी के साथ भोजन। कुछ मिल वाले धोखा देने का काम करते हैं व माल पर गलत छाप देते हैं, वगैरा की चर्चा।

डा० दास (होमियोपैथ आये)। उनसे पूरी बात नहीं हो सकी, वह देर से आये थे, इससे।

बच्छराज फैक्ट्रीज के बोर्ड की मीटिंग हुई। बच्छराज कम्पनी के बोर्ड की भी मीटिंग हुई। गणदेवी शक्कर मिल, बच्छराज कम्पनी में रख ली गयी।

शाम को श्री रामेश्वरजी के साथ भोजन। उनके परिवार के लोगों ने लड़ाई, कांग्रेस व हिन्दुस्तानियों के कर्त्तव्य के बारे में पूछ-ताछ की।

१८-१०-३९

सीताराम पोद्दार ने इन्दौर मालवा मिल के सम्बन्ध में बातचीत की।

बच्छराज फैक्ट्री, हिन्दुस्तान शुगर, हिन्दुस्तान हाउसिंग के बोर्ड की सभाएं हुईं।

मुकन्दलाल (लाहौरवाला) आया। उसे कह दिया कि तुम्हें जो कुछ कहना हो, रामजीभाई, जीवनलाल भाई व केशवदेवजी से बात कर लो। मुझे स्वास्थ्य तथा अन्य कारणों से रुचि व समय नहीं है।

सरदार से फोन पर बातचीत।

श्री नाथजी महाराज से देर तक बातचीत।

१९-१०-३९

कमल से बातचीत, व्यवहार के सम्बन्ध में।

श्रीनाथजी मिलने आये। डा० दास (हौमियोपैथ) से परिचय, बातचीत।

हीरालाल शाह व कोरा, भट्ट के तीसरे भागीदार आये।

सरदार वल्लभ भाई से मिला। वर्किंग कमेटी २२ को वर्धा में होने वाली है। पर मुझे वहां आने की जरूरत नहीं। प्रताप सेठ से वल्लभभाई को मिलाया। उन्होंने बनावटी कपड़े का हाल कहा।

पेरीन बेन, खुर्शेदबहन व भाग्यवती से थोड़ी बातें।

मुकन्द आयर्न की स्थिति थोड़ी समझी। रामदेव व रामनाथ पोद्दार मिलने आये।

गुलजारीलाल नन्दा से देर तक बातचीत।

पन्नू दानी, सीतारामजी पोद्दार, डा० दास, डा० रमणीकलाल (नेचरो, पैथ) डा० भोंसले। (मालिश करनेवाला), नाथजी, गुलजारीलाल नन्दा, जमनादास गान्धी, सुशीला पैई, रमाकान्त का भाई, भाग्यवती दानी, रामचंद्रजी वैद्य, दाउजी मेहरोत्रा वगैरा आये। स्वास्थ्य के बारे में तथा अन्य बातचीत।

श्री मावलंकर, डा० पुरुषोत्तम पटेल व उनकी स्त्री भी आई।

चि० गोपी (गजानन्द) के लड़के अशोक का जड़ूला (चूड़ाकर्म) व दुर्गा पूजा में शामिल। सब साथ में भोजन। सुभद्रा नेवटिया भी थी।

मुकन्द आयर्न की बोर्ड की सभा हुई, बिड़ला गेस्ट हाउस में। लाला शिवराज, किसनचन्द, वेदप्रकाश, रामजीभाई, जीवनलाल भाई, लक्ष्मणदासजी डागा, कमलनयन, केशवदेवजी नेवटिया, आबिद अली, जनार्दन वर्मा नारायणलालजी पित्ती वगैरा थे। लाला शिवराज का व्यवहार व प्रस्ताव समाधानकारक रहा।

नारायणलालजी पित्ती से रामेश्वरदासजी की गन्ने की अड़चन कही। वायसराय के बयान की चर्चा।

मदू गेस्ट हाउस में बैठी रह गई। मैं व कमल उसे छोड़कर स्टेशन आ गये। कमल की भूल ज्यादा थी। कमल वर्धा गया। दामोदर व विट्ठल मेरे साथ पूना आये।

डेक्कन क्वीन से शाम को पूना रवाना। स्टेशन पर शंकरलाल बैंकर मिले। रेल में शान्तिदास आसकरण, राधाकृष्ण रुइया आदि से बातचीत।

पूना में सुव्रताबाई, कमला, विनय वगैरा से मिलकर सुख मिला। रात को ११॥ बजे तक बातचीत—जयपुर, स्वास्थ्य, जुहू जमीन वगैरा।

पूना, २१-१०-३९

डा० दिनशा मेहता ने मुझे व मदू को पूरी तौर से ८॥ से ११ बजे तक तपासा।

शाम को ५ से ७। तक मुझे मालिश, स्नान व गोड़े में सेंक दिया। डा० मेहता को कहना पड़ा कि पस-फोकस का पता लगाना जरूरी है। दांत में या कान में या दूसरे स्थानों में हो सकता है। मदू का नाक का आपरेशन

न कराने का निश्चय हुआ।
सुव्रताबाई, रामनिवास, राधाकिसन से जुहू जमीन के बारे में बातचीत। इनका रवैया व विचार-पद्धति व्यावहारिक दृष्टि से, याने खुद के स्वार्थ (लाभ) की दृष्टि से भी समझदारी की नहीं रही। अपने को हानि न हो और दूसरे का लाभ हो जाय, इस तरह की वृत्ति की आशा रखना फिजूल है।
राधाकिसन के विवाह की चर्चा; मदन को जरूर विवाह में ले जाने का निश्चय हुआ। जनेत में बहुत कम लोगों को ले जाना।
रामकुमारजी बिड़ला (ग्वालियर वालों) का लड़का, डा० मेहता के यहां बीमार है। हृदय की तकलीफ है। इलाज चालू है। लड़का सुशील व अच्छा है।

२२-१०-३९

घूमते हुए मदालसा से उसकी स्थिति, खर्च आदि की व अन्य बातें समझीं। पत्र लिखवाये।
शान्तिदास आसकरण, मदनलाल जालान, मूलजीभाई मिलने आये। उनके साथ मेहता के अस्पताल में गये।
स्टीम बाथ, बाद में कोल्ड बाथ स्नान की ट्रीटमेन्ट ली। एन्टीफ्लोजेस्टीन गोड़े पर लगाया। मेहता के यहां आधा गिलास संतरे का रस लिया। शाम को थोड़ा खाया।

२३-१०-३९

प्रार्थना के समय सुव्रताबाई आ गई। भजन सुने। बाद में वह अपनी स्थिति कहने लगी।
मूलजी से उसके काम की व जुहू जमीन की हालत समझी। मदनलाल जालान से कृष्णगोपाल के बारे में तथा अन्य बातें।
सुव्रताबाई के साथ घूमे। मदन के प्रकरण में मुझे जो कष्ट पहुंचा आदि उसका खुलासा।
डा० दिनशा दांत के डाक्टर बट्ट के यहां ले गये। उन्होंने दांत के एक्सरे व दांत भली प्रकार देखे। डा० मेहता की तो स्पष्ट राय है कि दांत सब निकाल दिये जायं। अभी नहीं निकाले जायेंगे तो दो वर्ष तक जरूर चले ही जायेंगे। फिर जोखिम क्यों रखी जाये? जानकी का विचार आने से

थोड़ी कम हिम्मत होती है फिर भी दिनशा को कह दिया कि जैसी तुम्हारी इच्छा हो, वैसा करो।
वम्वई से धन्नारायण दानी व बाद में सौभाग्यवती दानी तथा रामचंद्रजी वैद्य एकाएक आ गये, धन्नू, पन्नू व भाग्यवती के फैसले के बारे में सलाह लेने। अंत में फैसला हुआ। सौभाग्यवती के लिए पच्चीस हजार रुपये जमा की व्यवस्था हो, जिससे उसे एक सौ रुपये महीना जिन्दगी-भर मिलता रहे। व जो जेवर रामरिच्छपाल व उसके पास है, वह उसे दे दिया जाये। जेवर करीव दस-ग्यारह हजार के हैं। अन्य बातें भी रात १० बजे रात तक होती रहीं।

२४-१०-३९

सुव्रतावाई से करीव अढ़ाई घंटे तक व्यवहार, ट्रस्ट, व्यापारिक दृष्टि आदि पर ठीक दिल खोलकर चर्चा व विचार-विनिमय।
डा० वट्ट (केनाडा) से डा० मेहता व मदू की उपस्थिति में डा० मेहता की राय के अनुसार चार दांत निकलवाये। एक दांत टूट गया। दांत निकालने के वाद गोड़े में हलकापन मालूम होने लगा।
सुव्रतावहन, कमला, विनय के साथ दो घंटे करीब पत्ते खेलते रहे।
सुव्रतावहन से वहुत जूनी व्यापार आदि की बातें व मेरा रामनारायणजी से जिस प्रकार सम्वन्ध आया, वह कहा।

२५-१०-३९

सुव्रतावहन से २।। घंटे वातचीत, उनके इलाज, सत्संग वगैरा के वारे में।
डा० तलवलकर (अहमदाबाद वाले) आये। उन्होंने मेरी वीमारी के लिए प्राकृतिक चिकित्सा के साथ-साथ डा० विधान के वताये हुए इन्जेक्शन भी लेने को कहा। अहमदावाद में एक होमियोपैथ डा० को यह वीमारी ६० वर्ष की उमर में हुई। दस वर्ष रही। वाद में इन्जेक्शन लिये। उससे ठीक लाभ पहुंचा। चलने-फिरने लगे। हाथ का पंजा भी ठीक हो गया। वह ८५ वर्ष के होकर मरे।
क्षय के वीमारों की चिकित्सा की योजना वताई। एक एकड़ जमीन में वीस झोंपड़ियां। एक झोंपड़ी डेढ़ सौ रुपये में पड़े, इस प्रकार वनवानी चाहिए। क्षय में पूरा आराम, खुली हवा, हवा भरना, पहाड़ की हवा, इस प्रकार

इलाज का कहा।
डा० दिनशा के साथ मकान का तय किया—छः महीने के लिए किराया ६०)। मोटर गैरज ५) में। सवलेट भी कर सकते हैं।
डा० मेहता ने रीठे के पानी में स्नान करवाया। बाद में सेक व पाउडर से मालिश की व दवा लगाई।

२६-१०-३९

प्रार्थना।
डा० वट्ट (दांत वाले) के यहां मेहता के साथ। उसने ऊपर के दांत का माप लिया।
डा० मेहता के नेचर क्लिनिक में एक बाजी शतरंज, भगवती बिड़ला के साथ।
रात भोजन के बाद पत्ते, लाडिस खेले चि० विनय अच्छा लड़का है।
जानकी की आने की खबर पढ़कर खुशी हुई।

२७-१०-३९

पत्र-व्यवहार, सुव्रतावहन के साथ घूमना। उनके जापान से व्यापार बन्द करने से रामनिवास को चोट पहुंची, यह बताया। उसके मन की स्थिति कही। उसे कहा कि रामनिवास से कह दो कि तीनों भाई मिलकर जो ठीक समझें, करें। तुम अपना हाथ खींच लो।
खान देश के विद्यार्थी मिले। सुव्रतावहन को डा० दिनशा मेहता ने तपासा। उनकी बीमारी का निदान किया। शिवाजी भावे आये। उन्होंने मेरी ट्रीटमेन्ट देखी। मालिश, स्नान, डायथर्मी १० मिनट, डा० मेहता ने गोड़े में तेल लगाया। शंकरराव देव का स्थान बाहर से देखा। वासूकाका जोशी से मिलकर आये। सुख मिला। ६४ वर्ष के वूढ़े, उत्साह व स्फूर्ति खूब है। उन्होंने सुबह तीन बजे से रात में सोने तक का अपना प्रोग्राम बतलाया। आज से बालाराम गवली, पूना के ड्राइवर, को चालीस रु० मासिक वेतन पर रक्खा।
रामनिवास बम्बई से आया। थोड़ी बातें। विनय के साथ थोड़ी देर खेला। केशवदेवजी नेवटिया की माता माटुंगा में १५ ता० को, शाम के पांच बजे चल बसी।

२८-१०-३९

राधाकिसन के विवाह के निमंत्रण का विचार। आज ही वम्वई जाने की मैंने सलाह दी।

सुव्रतावहन वगैरा सब घर के आज सवा तीन की गाड़ी से वम्वई चले गये।

वासूकाका जोशी से मिले।

वम्वई, २९-१०-३९

ट्रीटमेंट के वाद ट्रेनिंग कालेज गया। वहां आर्यनायकम, नरहरिभाई, आशा-बहन वगैरा मिले। सरला देवी (यूरोपियन) को जोर का बुखार १०५ डिग्री उसे डा० दिनशा मेहता के यहां भर्ती कराया। उसकी व्यवस्था। जानकी व मदन कोठारी वर्धा से आ गये।

शाम को ट्रेनिंग कालेज में शिक्षण परिषद थी, वहां गये। प्रदर्शनी देखी। खेर साहव व कृपालानीजी का भाषण सुना। कृपालानी ठीक वोले (अंग्रेजी में)।

वम्वई से रामेश्वर नेवटिया का फोन आया कि महाराज का जुहू में ऐरो-प्लेन से गंभीर एक्सीडेन्ट हुआ। पायलट गाडगिल मर गया। चिन्ता। डा० टी० ओ० शाह को फोन किया। वाद में रात की गाड़ी से ही वम्वई आने का निश्चय किया। सेकण्ड क्लास से रवाना।

वम्वई ३०-१०-३९

सुबह दादर ५।। बजे करीव पहुंचे। रामेश्वर नेवटिया स्टेशन आया। सामान मोटर में विड़ला हाउस भेज दिया। मैं सीधा अस्पताल गया। जानकी साथ में। जयपुर-महाराज के एक्सीडेन्ट का हाल जाना। स्थिति जोखमकारक नहीं दिखाई दी। महाराज पहचान नहीं सकते थे। उनके साथियों से मिला। डाक्टरों से सलाह, व्यवस्था देखी। आज इसीमें मिल कर आठ घंटे वहां लगे। शाम को अमरसिंहजी व डा० विलियमसन को जुहू से लेकर आया, वातचीत। डा० टी० ओ० शाह से मिला। इलाज की व्यवस्था। मुलाकातियों के वारे में बंदोवस्त वगैरा; देर तक वहां रहा। महाराज की छोटी वहन से, जो आज यूरोप से आई, वातचीत। श्री चंद्रपाल सिंहजी की स्त्री को सिगरट पीते देखकर थोड़ा बुरा लगा।

सरदार वल्लभभाई से मिलना। भूलाभाई भी वहीं थे। परिस्थिति पर विचार-विनिमय।

केशवदेवजी के यहां सुवह व शाम को गया। रात को बिड़ला हाउस में गरवा था।

३१-१०-३९

सुवह जल्दी ही के० ई० एम० अस्पताल गया। श्री महाराज सा० को देखना।

बुद्धपालसिंहजी व पृथ्वीसिंहजी को भी देखा। वातचीत।

श्री केशवदेवजी से दो घंटे तक उनकी परिस्थिति व हिसाब समझा।

श्रीगोपाल नेवटिया के साथ फिर के० ई० एम० अस्पताल। डा० शाह व विलियमसन से वातें। कुं० अमरसिंहजी से इलाज आदि की व्यवस्था व वातचीत।

सुव्रताबहन के यहां भोजन। सुशीला, राजेन्द्रलाल, मदन वगैरा साथ में। जानकी ने भी वहीं भोजन किया।

सरदार वल्लभभाई से मिलना, व्यवस्था आदि।

के० ई० एम० अस्पताल गया। कर्नल अमरसिंहजी को साथ लेकर जुहू आया। जयपुर की सारी स्थिति, प्राइम मिनिस्टर के स्वभाव आदि के बारे में देर तक विचार-विनिमय। पोलिटिकल रेजीडेन्ट के व्यवहार आदि पर चर्चा। उन्हें ताजमहल होटल छोड़ा।

१-११-३९

उमाशंकर दीक्षित अपने भाई को लेकर आया। उसकी नौकरी व काम की वातें।

श्री मुकन्दलालजी पित्ती व उनकी स्त्री राजकुमारीजी आयीं। विमला व गोपाल की सगाई की वातें कीं।

के० ई० एम० अस्पताल में श्री अमरसिंहजी, मिनिस्टर जयपुर, से महाराज के इलाज के बारे में वातचीत। डा० टी० ओ० शाह का इलाज चालू रखने के बारे में विचार-विनिमय। डा० विलियमसन से वातचीत। महाराज को करीब १२॥ बजे गवर्नर हाउस में ले गये।

मेरे पांव का दर्द जोर से शुरू हुआ। के० ई० एम० में डायथर्मी झीनाभाई

ने दी। रावलजी से बातचीत। डा० टी० ओ० शाह से देर तक बातचीत। पेरिनबेन व खुर्शेदबहन मिलने आयीं।
जैनाबहन (डा० रजब अली की स्त्री) व उनके सालिसिटर, मनचरशा, मिलने आये। डा० रजबअली के बीमे के रुपये ओरियंटल से मिलने के बारे में मि० रोमर, सालीसिटर, को फोन किया। वह वाजिब मदद करेगा
प्रहलाद व पन्ना आये। कृष्णाबहन सिंघानिया आईं। पन्ना ने खूब हंसाया। बाद में मूलजी, जमनादास, आबिद अली, सीतारामजी पोद्दार के साथ ब्रिज खेला।

२-११-३९

जमनादास गान्धी से मशीनरी लेने-बेचने की चर्चा।
शारदाबहन बिड़ला ने कहा कि शिवरतनजी मोहता अग्रवालों में सम्बन्ध करने को राजी हैं।
गवर्नमेन्ट हाउस में महाराजा जयपुर को देखने गये। महारानी उनसे मिल रही थीं, इसलिए सेक्रेटरी के आफिस में ठहरा। कुर्सी मंगाकर बैठा। वहीं पर राजा ज्ञाननाथ, प्राइम मिनिस्टर, से जबरदस्ती परिचय कर लिया। डा० विलियमसन से महाराज की तबियत का हाल पूछा व डा० टी० ओ० शाह से आखिर तक मदद लेने के बारे में कहा। बुद्धपालसिंह को पोली-क्लिनिक में भेजने के लिए भी कहा।
सरदार वल्लभभाई, जयरामदास व कृपालानी से मिला। बातचीत। रात को देहली से फोन आया। उससे तो सन्तोषकारक परिणाम की आशा नहीं दीखती।
राजा ज्ञाननाथ, जयपुर प्राइम मिनिस्टर, से ताजमहल होटल रूम नं २९९ में ३ से ४ तक खूब स्पष्ट बातचीत। उन्होंने कहा कि मेरे पास समय का अभाव होते हुए भी मैं आपसे मिला। मैंने भी कहा कि मैं भी समय निकाल कर आपसे मिला हूं। और भी खरी-खरी बातें हुईं। सोसायटीज एक्ट में सुधार करने की बात व निश्चय हो गया। वह उन्हें समझाकर कहा। विशेष आशा इनसे नहीं कर सकते। कुछ समय देखना होगा।
पूना रवाना।

पूना, ११-३-३९

डा० दिनशा ने मदालसा को तार नहीं बतलाया। इस कारण मोटर नहीं आई। छह आने में टैक्सी करके रामभवन गये। अस्पताल में चि० मदू को देखा। डा० दिनशा से बातचीत। विशेप चिन्ता का कारण नहीं बतलाया। मदू की स्थिति समझने के बाद भगवती बिड़ला व सरलाबहन को देखते हुए रामभवन वापस। भोजन के बाद थोड़ा आराम। जानकीदेवी से दोनों को लेकर व बाद में रहन-सहन, सेवा-वृत्ति वगैरा की चर्चा करने में मेरी भूल रही।

भारती अम्बालाल साराभाई मिलने आई। दोपहर को व बाद में रात को उसने दिल खोलकर अपनी सारी मन:स्थिति कही। कमल ने उसे मुझसे कहने व सलाह लेने को कहा था।

अप्पा साहब औंधवाले भी मिलने आये।

शाम को भारती की मौसी ताराबहन माणिकलाल भी थोड़ी देर के लिए आई थी। उससे भी किशोर व रीता के सम्बन्ध में थोड़ी पर साफ-साफ बातें कीं।

हरिभाऊ जोशी व सहस्रबुद्धे मिलने आये।

४-११-३९

लालजी मेहरोत्रा गोवा जाकर आये। रात को वापस बम्बई गये।

आज से डा० दिनशा मेहता के नेचर क्योर अस्पताल में दाखिल हुआ। डबल कमरा साढ़े बारह रुपये रोज से रखा।

ट्रीटमेन्ट—ऐनीमा, व रीठा-बाथ, स्नान, गोड़े व नीचे जोड़ पर गरम सेक, तेल की मालिश आदि दिनशा ने की।

आज से रस व फल तथा साग लेना शुरू किया। आज वजन सुबह में १९९॥। एनीमा व रीठा-बाथ के बाद १९८। हुआ। रेडियो व अखबार की खबरें सुनीं। बापू व जिन्ना आज वायसराय से फिर मिले। बापू वर्धा रवाना हुए। थोड़ी उम्मीद दिखाई देती है।

आशाबहन व आर्यनायकम मिलकर जुहू गये। आर्यनायकम् का आग्रह सरलाबहन को यहीं नेचर क्योर क्लिनिक में रखने का रहा। उनको कहना पड़ा कि इनके पिता गिरफ्तार हो गये हैं। इन्हें आप वापस भिजवा

देंगे तो बहुत चोट पहुंचेगी, आदि। यह नया बजट बढ़ा। करीब तीन सौ तो लग ही जावेंगे।

डा० मेहता का कहना था कि सब मिलाकर दस घंटे सोना चाहिए। रात को आठ व दिन को दो। मुलाकात व पत्र-व्यवहार बहुत कम कर देना चाहिए।

५-११-३९

नींबू गरमपानी लेकर बन्ड गार्डन घूमने गये। जानकी के साथ रेडियो सुना। जवाहरलाल ने दिल्ली सभा में कहा कि उम्मीद है कि लीग के साथ समझौता हो जायेगा।

मालिश, गरमपानी का स्नान, एनीमा। आज इतवार होने के कारण शाम को जो ट्रीटमेन्ट डा० दिनशा मेहता देते थे, वह बन्द रही। आज कुल मिलाकर १० घंटे सोया। साग, फलों का रस व फल लिये।

शिवाजी, बाबाजी, पन्नू दानी, हरिभाऊ फाटक, बाई वगैरा मिलने आये। शाम को प्रार्थना शिवाजी ने की।

रेडियो पर वायसराय का भाषण सुना। उससे तो ज्यादा आशा नहीं दिखाई दी। 'हरिजन बन्धु' पढ़ा।

डा० शाह को जयपुर महाराज के लिए बम्बई फोन किया। राजा ज्ञान-नाथ व विलियमसन से बातें हुईं, वह कहीं।

६-११-३९

थोड़ा घूमे, कोल्ड हाउस देखा। वहां तीन वर्ष के आलू वगैरा रखे हुए हैं। म्यूजियम देखा। शहद वगैरा खरीद कर लाये। मोसम्बी दो आने के हिसाब से ६ आने दर्जन थीं। मोटर रुक गई। धक्का दिया।

कुवलयानन्द (लानोली वाले) मिलने आये। उन्होंने कहा कि गोड़े की हड्डी में फरक हो गया है। इसका इलाज हमारे पास नहीं है। दाल मत खाओ और वायु पैदा करने वाले पदार्थ मत लो। दूध वगैरा ज्यादा लो।

शंकर राव देव, प्रेमा कन्टक, भाई कोतवाल, धोत्रे, पटवर्धन, चम्पालाल, नागोरी, सूरज, करवा वगैरा मिले।

श्रीमन्नारायण व उमा वर्धा से आये।

७-११-३९

रात को नींद ठीक आई। बोटेनिकल व बन्द गार्डन घूमकर आये। पत्र-

व्यवहार किया। ट्रीटमेंट ली।
रा० ब० हनुमंतराय, बाला सा० खेर, गुप्ते, जोशी वगैरा मिलने आये। दिन में व रात को पत्ते व शतरंज खेली। शाम की प्रार्थना के बाद थोड़ा घूमे।

८-११-३९

घूमते हुए पारसियों के दोनों श्मशान भली प्रकार से देखे व वहां के इंचार्ज श्री पंथकी ने समझाकर बतलाए।
सूर्यनारायण अग्रवाल इंजीनियर, भैंरूलाल गेलडा (उदयपुर वाले) के जमाई श्री नरगिसबहन कैप्टन, खुर्शेदबहन, सर गोविन्दराव मडगांवकर मिलने आये।
शाम को थोड़ा घूमे। प्रार्थना।

९-११-३९

डॉ० मेहता ने ट्रीटमेंट दी।
कल की पार्टी बोटेनिकल गार्डन में करने का निश्चय। श्री शुभराज (हैदराबाद-सिंध वाले) इस प्रकार के कामों के लिए मुखिया बनाये गये।

१०-११-३९

सुबह घूमते समय रामेश्वर नेवटिया से गोला मिल व बच्छराज कम्पनी के बारे में ठीक बातचीत हुई।
आज शाम को बन्ड गार्डन पार्टी के लिए रे मार्केट से फल खरीदे।
जानकी के कंजूसी वाले स्वभाव पर बहुत बुरा लगा। मेरे कुछ शब्दों से उन्हें भी बहुत दुःख पहुंचा। मैंने तो बाद में अपने क्रोध को संभाल लिया, परन्तु वह मेरे समझाने पर भी मेरे असली भाव को पूरी तरह नहीं समझ सकी, अथवा समझकर भी उसकी कदर नहीं कर सकी। इसका दोनों को विचार रहा।
ट्रीटमेन्ट रोज के मुताबिक डॉ० मेहता ने दिया।
क्लीनिक के मित्रों के साथ फोटो। शाम को बोटेनिकल गार्डन में क्लीनिक के सब मित्र व घर के लोगों के साथ ४॥ से ७ बजे तक नाश्ता, पत्ते खेलना, घूमना-फिरना व प्रार्थना। ट्रीटमेन्ट शुरू होने के बाद आज वहां शुभराज जी के आग्रह से और डा० दिनशा के कहने से थोड़ी-सी मिठाई, सेव व चिवड़ा

लिया ; बाकी फल खाये, सीताफल ज्यादा।
क्लीनिक में पटाखे छोड़ते देखे। डा० दिनशा वगैरा के साथ। बाद में ब्रिज, १०॥ तक।

११-११-३९

सुबह रामेश्वर से गोला-मिल के बारे में ठीक बातचीत। श्री गिल्डर को पत्र भेजा। उसके बारे में केशवदेवजी को भी सूचना भेजी। रामेश्वर से कहा कि गोला की ठीक व्यवस्था तुम्हारे वहां रहे बिना हो जानी चाहिए। गोला शक्कर बेचने की एजेन्सी नेवटिया ब्रदर्स को। उस बारे में अगर आनन्दकिशोर खुशी से व उत्साह से असिस्टेन्ट सेक्रेटरी का काम करने को तैयार हो, पूरी जिम्मेवारी से व बिना कुछ लिये, व मा० शिक्षा मण्डल को वार्षिक सहायता। बम्बई में जो खर्च लगता था, वह देने तैयार हो व श्रीकृष्ण का विचार नहीं करना हो तो, एक टका कमीशन, नहीं तो कमीशन घटाना पड़ेगा।
चि० श्रीकृष्ण बम्बई से आया।
जानकी को कल फल खरीदने की बातचीत से व उमा की घबराहट से जो चोट लगी, उसके समाधान का प्रयत्न।
दिन में व शाम को दिनशा ने ट्रीटमेंट दी।
हरिभाऊ फाटक, इन्दिराबाई सुबह मिलने आये।
वर्धा से, कमीशन साक्षी लेने खानखोजे व संभाजी आये।
परमानन्द व बलभद्र के दीवानी के मुकदमे में संभाजी आदि से बातें।
कसरत। देशी पहलवानों को पांच इनाम। घर मालिक के यहां फल वगैरा लिये।

१२-११-३९

भूत बंगला यरवडा रोड वाले को भली प्रकार घूमते हुए देखा। प्रो० त्रिवेदी के यहां गये। वह नहीं मिले। रे मार्केट से फल वगैरा लिये।
शाम को बहादुरजी, नरगिसबहन, खुर्शेद, क० सोनावाला मिले।
ट्रीटमेंट ली।
बम्बई से लक्ष्मीनारायणजी गाडोदिया व उनके मुनीम दोपहर को आये व रात को गये। हनुमान प्रसाद व श्री गोपाल नेवटिया भी मिलने आये।

रामेश्वर व श्रीकृष्ण नेवटिया यहीं थे। गोला शुगर की एजेन्सी तीन वर्ष के लिए, कमीशन पहले मुजब। आनन्द किशोर पूरा समय, जवाबदारी व उत्साह के साथ, विना वेतन असिस्टेन्ट सेक्रेटरी का काम करे।
मा० शिक्षा मण्डल को खुशी से डेढ़ सौ रुपया मासिक मदद करता रहे। आनन्द किशोर काम न करे या ठीक न करे तो एग्रीमेन्ट वदलने का हक रहेगा।
चि० शान्ता, श्रीनिवास व सुशीला रात को एकाएक आ गये। प्रोफेसर त्रिवेदी, उनकी स्त्री व लड़का मनुभाई मिलने आये।

१४-११-३९

घूमते हुए यरवडा का बंगला डा० दिनशा, गुलवहन, शान्ता व जानकी के साथ देखा। वापस आते समय डा० दिनशा के साथ घूमते हुए पैदल आये। मोटर से उमा, श्रीमन वगैरा जुन्नर (शिवाजी के जन्म-स्थान) गये। मि० वकील का मकान देखा।

१५-११-३९

मदालसा उदास हुई। उसके पास बैठकर प्रार्थना की।
घूमने—वोटेनिकल गार्डन। शान्ता, श्रीनिवास, सुशीला साथ में। रास्ते में खुर्शीदवहन भी साथ हुईं। शान्ता से उसके स्वास्थ्य, इलाज व पूना रहने तथा श्रीनिवास से व्यापार व वम्वई में काम सीखने आदि की वातें। खुर्शीदवहन से गनी, रोशन (रुस्तमजी फरदोनजी दखन हैदरावाद) के हाल। फिरोजा की वहन का गनी से विवाह होना निश्चित हुआ, यह वताया। मृदुला, इन्दू, भारती, खुर्शेद, सुभाष, जवाहर आदि की चर्चा। राजनीतिक थी।
आज मिलिटरी अस्पताल में एक्स-रे फोटो गोड़े वगैरा के लिये, ४॥ से ६। तक। वजन १९५ रहा।
हनुमंतरायजी, वम्बई से न० मास्टर का पत्र लेकर आये।

१६-११-३९

जानकी, नरगिस व खुर्शेदबहन के साथ घूमना। बातचीत महिला मंडल के संबंध में।
ट्रीटमेंट ली।

महेन्द्र प्रताप, नरगिसबहन, खुर्शेदबहन, वगैरा मिलने आये। महेन्द्रप्रताप ने गाना सुनाया। नरगिस व खुर्शेद के साथ मिसेस डा० वकील से किंग एडवर्ड अस्पताल में मिले।

१७-११-३९

साइकल पर घूमने का प्रयोग शुरू किया।

शाम को अनार का रस लिया, जिससे थोड़ी घबराहट पैदा हुई व वेचैनी मालूम दी। डा० मेहता ने पेट पर ठंडा कपड़ा व बर्फ रखा।

सिर की ओर से पलंग के पांव ऊंचे किये। बाद में दो गोली पानी में दीं। सादा ऐनिमा दिया तब जाकर शांति मिली।

रा० ब० हनुमंतरायजी मिलने आये।

मदू के लिए डा० मिसेज वकील को बुलवाया। उसने अस्पताल में रखने को कहा।

इस डाक्टरनी का स्वभाव जानकीजी को पसन्द नहीं आया।

महेन्द्र प्रताप ने प्रार्थना में व बाद में गायन सुनाये। अच्छे मालूम दिये। भाव भी ठीक था।

१८-११-३९

आज से नियमित साइकल चलाना शुरू किया, कम्पाउन्ड में ही। डा० दिनशा का कहना है कि इससे फायदा पहुंचेगा। आज शाम से टमाटर के रस पर रहना भी शुरू किया।

चम्पादेवी भारुका, पन्नालालजी का भतीजा, हरिभाऊ फाटक, इन्द्रदेवी व यरवडा मकान वाले मिलने आये। उनका मकान-दुरुस्ती में १८ हजार लगेंगे, उन्होंने बताया। पूरी दुरुस्ती हमारे कहे अनुसार करा देंगे तो, अढ़ाई सौ महीना भाड़ा पांच वर्ष तक व पांच वर्ष का हमारे ऑपशन की शर्त कही।

के० केसरू वकील (स्टेट दलाल) का काटेज महेन्द्रप्रताप के लिए भाड़े से लिया। बातचीत। वकील बम्बई में स्टेट दलाली करता है।

प्रभात फिल्म स्टूडियो की ओर घूमने गये।

कम्पाउण्ड में सायकल के इक्कीस चक्कर लगाये।

टमाटर व मूंग का सूप भोजन में लिया। संतरे चूसे।

शाम को संतरे का रस लिया।
बम्बई से व्यंकटलालजी पित्ती मिलने आए। बातचीत। पूना मिल चौदह लाख में। छः लाख का माल था। आठ लाख में गई।
विमल व यशवंत लेने आये। भजन सुनाये।
ग्लोब सिनेमा में सवा तीन बजे 'पुकार' फिल्म देखी। जानकी वगैरा दस लोग साथ थे। सिनेमा बहुत दिनों के बाद देखा। ठीक मालूम हुआ। आंखों में पानी भी निकला। नूरजहां का पार्ट ठीक दिखाया।

२१-११-३९

ट्रीटमेंट ली।
प्रताप सेठ (अमलनेर वाले) मिलने आये। उनसे व चि० मगन से मिलना। वे भी यहां सकुटुंब इलाज के लिए आये हैं। भंडारकर इंस्टीट्यूट रोड पर बंगला लिया है।
जानकीजी कल से सुस्त व नाराज हैं। पूरा कारण नहीं मालूम हुआ। मुझे अपने स्वभाव में काफी फरक करना जरूरी है। कई बार इन्हें मामूली व सीधी बात भी बरदाश्त नहीं होती। कम बोलने से भी सन्तोष नहीं होता व ज्यादा बोलने में शब्द पकड़ने के डर के कारण मुसीबत रहती है।
सर गोविंदराव मडगांवकर व रा० ब० जगताप मिलने आये। मडगांवकर पूना वालों की वृत्ति से नाराज हैं।

२२-११-३९

साइकल घुमाई तो गिर पड़े। हाथ में चोट आई। साइकल नई थी।
कृष्णाराव मास्टर गायनाचार्य मिलने आये। एक घंटे तक महेन्द्र प्रताप सहाय के शिक्षण के बारे में बातचीत। नागपुर बैंक के काम के लिए पूनमचन्द बांठिया आया।
घूमते हुए चतुर्सिंगी देवी की ओर गये। तालाब देखा।

२३-११-३९

घूमते हुए पांचों पांडव व जंगली महाराज की समाधि तक। वहां जाकर एक गरीब ब्राह्मण के घर जाकर उसकी स्थिति समझी। उसे दस रु० की सहायता। बासूकाका जोशी, चन्द्र शंकर से मिलते हुए मास्टर कृष्णराव के यहां। उन्होंने महेन्द्र प्रताप सहाय को गायन सिखाना आज से शुरू

किया। शाम को घूमते समय सर गोविन्दराव मडगांवकर से मिलने गये। वहां नरगिसबहन भी मिली।

पत्र लिखे। वापू को भी।

प्रताप सेठ आये। डा० मेहता ने तपासा, वातचीत।

२४-११-३९

शाम की प्रार्थना तक आज मौन व उपवास रखा। सुवह घूमने गये। वहां नदी के तट पर झाड़ के नीचे करीव एक घंटा विचार, चिंतन, अकेले।

आज शुभराज (सिंध-हैदरावाद वाले) व क्लीनिक के दूसरे मित्रों के साथ मिलकर जन्मदिन निमित्त फोटो वगैरा लिये, माला पहनाई। रा० व० जगताप, डा० दिनशा वगैरा ने भाषण किये। मेरा तो मौन व उपवास भी था। शाम को प्रार्थना के वाद मौन छोड़ा व उपवास भी। संतरे व सब्जी का सूप लिया। मित्रों का आभार माना।

२५-११-३९

प्रार्थना।

ट्रीटमेंट।

सुवह घूमते हुए चन्द्रशंकर शुक्ल के घर गये। हाथ-कागज के नमूने देखे। नेचर क्योर के वारे में प्रो० त्रिवेदी व चन्द्रशंकर से वातें। श्री हरिहर शर्मा मिले। हाथ के कागज की हिन्दी डायरी के वारे में कहा।

शाम को महावलेश्वर के रास्ते छः मील पर देवी के स्थान पर उतरकर घूमे।

प्रताप सेठ व मगनवावू मिलने आये।

२६-११-३९

तीन वजे खड्गवासला तालाव पर पार्टी के साथ गये। पत्ते खेले। राम मराठे व महेन्द्र प्रताप के गायन सुने। खेल-कूद। आज पूर्ण चन्द्रमा था। ठीक आनन्द आया।

मि० खान ने व्यायाम के कई खेल वतलाये। सव मिलकर १६ जने थे। ९॥ वजे घर आये।

सुवह प्रताप सेठ व मेहरचन्द से मिलकर उनकी व मगनवावू की तवियत के वारे में देर तक विचार-विनिमय।

२७-११-३९

ग्वालियर खादी भंडारवाले महाजन का भाई मर गया। उसके साथ उसके भाई के बच्चे व स्त्री को देखा। खूब हिम्मत रखी उन्होंने। आज तेरहवां दिन है।

खिड़की की ओर घूमकर आये। महेंद्रप्रताप सहाय ने कहा कि किदवई की सबसे ज्यादा व सम्पूर्णानन्द की दूसरे नंबर में, घूस लेने की यू० पी० में खूब चर्चा है व पुरावा भी मिल सकता है। बम्बई में नूरी के बारे में भी चर्चा है। मैंने उनसे कहा कि झूठी अफवाहें भी उड़ती रहती हैं।

रा० ब० जगताप की लेबर-स्कीम व शिक्षण-योजना सुनी। आदमी तो ठीक मालूम देते हैं।

२८-११-३९

सुबह प्रतापसेठ व मगनबाबू से मिलना हुआ। बातचीत। रा० ब० जगताप से बम्बई की सूर्योदय मिल के बारे में बातचीत। रेवरन्ड राठोड़ सालिसिटर के बारे में भी।

२९-११-३९

सुबह क्लब से डेकन कालेज तक पैदल घूमे। महेन्द्रप्रताप सहाय से सेवा व योग्य कर्म-मार्ग की चर्चा।

नाव में बैठकर संगम आये। शाम को भण्डारकर इंस्टीट्यूट की पहाड़ी की ओर घूमने गये।

प्रताप सेठ व मगनबाबू मिलने आये। दोनों की बीमारी के बारे में डा० दिनशा से बातचीत। यहां का वातावरण देखा। शाम को फिर प्रताप सेठ से मिला। घूमते समय मगन से बातचीत, शरीर वगैरा के संबंध में।

३०-११-३९

मगनबाबू व रामेश्वरजी (मुकन्दगढ़ वाले) मिलने आये। उन्होंने नये प्राइम मिनिस्टर राजा ज्ञाननाथ के हिण्डौन जाने और लोगों को जिला-परिषद के विरुद्ध भड़काने का काम किया, यह बताया। शेखावाटी में सात रोज की हड़ताल होने की संभावना बतलाई। हिण्डौन में जलूस ठीक निकला। जनता दस-बारह हजार जमा हुई थी, खास-खास लोग सौ के करीब आये थे।

शंकरराव देव आये। उन्होंने इलाहाबाद में वर्किंग-कमेटी का हाल थोड़े में सुनाया। प्रेमा कण्टक भी आई थी। वे लोग उदयशंकर का नृत्य देखने आये थे।

रात को ग्लोब थियेटर में उदयशंकर का नृत्य ९॥ से १२। तक देखा। दस मित्र लोग साथ में थे। आज पहली बार १२॥ बजे के करीब सोना हुआ।

१-१२-३९

रा०ब० जगताप ने सूर्योदय मिल (बंबई-ताड़देव) के बारे में कहा कि राठौड़ का पत्र आया है। पहले चार लाख कहते थे, अब चार से छः लाख कहते हैं। केशवदेवजी से मिल आये हैं। कमल का पत्र आया। वे कल पहुंचेंगे। ओंकारनाथ जी (अजमेरवाले) मिलने आये।

२-१२-३९

आज वर्धा से कमल, सावित्री, राहुल, गोगिया, १२.०५ की गाड़ी से आये। देखकर सुख मिला।

जानकी साथ में। उमा का विवाह मार्च तक कर देना। कमल की राय भी हुई।

मुलाकात—केदारनाथजी महाराज १० से ११ तक मिले।

३-१२-३९

सुबह यरवडा जेल के पास के कच्चे रास्ते डेकन कालेज के पीछे की सड़क तक घूमने गये, जानकीजी, लालीबाई, राहुल साथ में।

नाथजी से १० से ११ तक मनःस्थिति पर एकांत में विचार-विनिमय।

शाम को पार्टी लेकर करतज घाट। वहां पत्ते खेले। संतरे खाये। कच्चे व विकट रास्ते में नीचे उतरे।

४-१२-३९

जानकी व राहुल के साथ एम्प्रेस गार्डन की ओर घूमने गये। बाद में सावित्री, कमल आये।

शाम को पांच पांडव व पाषाण मंदिर देखकर आये। डा० दिनशा व महेन्द्रजी, सावित्री, कमल साथ में थे।

५-१२-३९

स्टीम बाथ लेते हुए चक्कर आ गये। बेहोश हो गया।

सिर में खून चढ़ गया था सो नीचे उतारा। डा० दिनशा ने गरम कपड़ों में सुलाया। कुछ शरवत वगैरा पिलाया व आराम दिया। दिन भर तवीयत नरम रही।

खुराक में केवल दस संतरे ही लिये।

वोटेनिकल गार्डन की ओर घूमने गये। राहुल व जानकी साथ में। वाद में सावित्री व कमल के साथ ठीक वातें। शाम को कमजोरी व चक्कर के कारण घूमना नहीं हुआ।

प्रो० त्रिवेदी के घर गये। उनकी स्त्री मिली। रणदिवे के घर अप्पा साहव (धुलियावाले) व नाथजी से मिले।

वम्वई से पत्र आये। बरेलीवाले राधाकृष्ण के ससुराल से राधाकृष्ण के साढ़ू की लाहौर से मोटर में आते हुए दुर्घटना के कारण मृत्यु हो गई। दुःख पहुंचा।

६-१२-३९

सुवह घूमते हुए वन्ड गार्डन में महेन्द्र प्रताप का गायन हुआ।

१२ वजे वर्धा से दामोदर का तार आया कि आशादेवी आर्यनायकम् का लड़का ववूनी कल शाम को एकाएक चल वसा।

तार पढ़कर दुःख व चोट पहुंची। शाम को सरलावहन को समझाकर कहा। वापू का तार भी मिला। आशावहन को तार-पत्र। वापू को पत्र लिखे। मन में थोड़ा विचार वना रहा।

८-१२-३९

डा० की इच्छा रही कि कुछ समय तक और संतरे पर रहा जाये तो ठीक है। इसलिए अभी कुछ समय तक रहने का विचार रखा।

सुवह प्रताप सेठ के वीमार हो जाने की खवर वावू (मगन) ने दी। वहां गये और थोड़ी देर बैठे। घूमना थोड़ा हुआ। शाम को विलकुल नहीं हुआ।

प्रताप सेठ को आज ६० वर्ष पूरे होकर इकसठवां चालू हुआ।

पोपटलाल शाह वगैरा मिलने आये। मुरलीधर भी। शाम को केशवदेव-जी व कमल वम्वई से आये।

नाथजी से करीब डेढ़ घंटा बातें। उनके जीवन का वृत्तांत सुना।

१०-१२-३९

करीब ४० लोगों की पार्टी के साथ पुरन्दरगढ़, जो पूना से पच्चीस मील है पैदल चढ़ना व उतरना। स्थान सुन्दर व रमणीक है। रास्ता भी ठीक है। ऊपर घास वाले के बंगले में ठहरे। पत्ते खेले, महेन्द्र प्रताप व राम मराठे के गायन। वाद में खेल-कूद। ठीक उत्साह व आनन्द रहा।

वापस लौटते में सासवड आश्रम देखकर आये। प्रेमाकंटक व भागवत वहां नहीं थे। जोशी थे। शाम की प्रार्थना के वाद केशवदेवजी से देर तक बातचीत।

११-१२-३९

आज से सिर्फ पानी पर रहने का निश्चय। हो सकेगा तो अगले सोमवार १० बजे तक पानी पर रहना है। बीच में डाक्टर छुड़ा ही दें तो दूसरी बात है। पानी पांच गिलास पिया।

शाम पारसियों की समाधि की ओर थोड़ा घूमे।

प्रताप सेठ व नाथजी से मिलने गये। नाथजी के साथ ठीक बातचीत। वाद में डा० हेडगेवार वगैरा आ गये।

कमल से वातचीत। केशवदेवजी सुवह वम्वई गये।

१२-१२-३९

सावित्री व राहुल के साथ घूमना।

रेहाना, अव्वास तैयबजी की लड़की से मिलना। भजन सुनना। महेन्द्र प्रताप ने भी सुनाया। कु० सरोजनी नाणावती व उसकी माता का स्वभाव ठीक मालूम दिया।

शाम को एम्प्रेस गार्डन घूमकर आये। जानकी व कमल, वम्वई सुवह ७-१० की गाड़ी से गये—राधाकृष्ण रुइया, रामगोपाल, व शशिकला के विवाह के लिए। सावित्री ने अखवार सुनाया।

नाथजी व प्रताप सेठ से मिलना। ९॥ से १०॥, तक पुनर्जन्म में नाथजी का विश्वास नहीं। यह उन्होंने समझाकर बतलाया।

१३-१२-३९

नींद रात में व दिन में भी ठीक आई। आज कल से ज्यादा उत्साह मालूम दिया। पानी ६ गिलास पिया। एनीमा व मालिश।

सुबह कैम्प की शाम ओर और को खिड़की की ओर घूमते हुए रेहाना व सरोजनी से मिले। रेहाना के भजन सुने।
श्री नाथजी व प्रताप सेठ से मिले। 'जीवन शोधन' में से,पढ़वाकर सुनना शुरू किया, ६।। से १०।। तक। वासूकाका, जोशी व प्रेमा कण्टक मिलने आये। सावित्री व मदनलाल ने अखबार वगैरा सुनाये। शाम की प्रार्थना के बाद 'सर्वोदय' पढ़ा, पत्ते खेले।

१५-१२-३९

सुबह वन्ड गार्डन घूमने गये—राहुल, महेन्द्र प्रताप साथ में थे। शाम को बादल ज्यादा होने के कारण घूमने नहीं गया।
नाथजी व प्रतापसेठ के साथ ६।।-१०।। तक रहा। 'जीवन शोधन' नाथजी ने पढ़कर सुनाया। पहले तुकाराम के दो अभंग सुनाये। वासूकाका जोशी भी आ गये। इलाज के संबंध में देर तक विचार-विनिमय होता रहा। सावित्री ने अखबार सुनाये, जिन्ना को जवाब तो मिल रहा है, और ज्यादा मिलना जरूरी है, मुस्लिम नेताओं की ओर से।
मेहरा जस्सावाला बम्बई गई। रात की गाड़ी से जानकी बम्बई से आई।

१५-१२-३९

नाथजी व प्रताप सेठ के पास। 'जीवन शोधन' ६।।-१०।। तक पढ़ा।
काका सा० से नानावती के बंगले पर मिले। बाद में वह तथा सरोजनी मिलने आये।
सुबह नाणावती के बंगले तक खिड़की व शाम को पारसियों के कब्रिस्तान की ओर घूमे। डा० मेहता भी साथ में थे।
आज रामकृष्ण वर्धा से व कमल बम्बई से आया।

१६-१२-३९

आज उपवास का छठा दिन है।
मोटर में वन्ड गार्डन में घूमना।
नाथजी व प्रताप सेठ के पास 'जीवन शोधन' ६।।-१०।। तक पढ़ा।
हरिभाऊ फाटक मिलने आये।

१७-१२-३९

घूमना—सुबह वन्ड गार्डन व शाम को आनन्दी के रास्ते। पहाड़ी पर ठहरे।

डा० मेहता वगैरा ने बन्दूक का निशाना लगाना वताया। दिमाग का व्यायाम। ६॥ से १०॥ तक नाथजी ने 'जीवन शोधन' सुनाया। रात को रेहाना ने सुन्दर भजन सुनाये। 'उठ जाग मुसाफिर' व मीरा के भजन। काका सा० प्रताप सेठ, प्रो० त्रिवेदी, मगनभाई पटेल वगैरा मिलने आये। चि० शान्ता वम्बई से आई।

१८-१२-३९

उपवास को आज पूरे सात रोज हो गये। गुरुजनों व मित्रों की उपस्थिति में १०॥ वजे संतरे के रस से उपवास छोड़ा।

दिन-भर संतरे का रस तीन-चार वार लिया। रात को सूप, साग व मूंग का लिया।

श्री नाथजी, काका सा० प्रताप सेठ व उनकी स्त्री, आचार्य भागवत, प्रेमा कण्टक, घर का पूरा परिवार, शान्ता, सरोजनी नानावती, रेहाना, वगैरा उपस्थित थे। रेहाना ने वहुत ही भावपूर्ण व सुन्दर ५-७ भजन सुनाये। वाद में गुलवेन के पास से व रेहाना के हाथ से संतरे का १० तोला रस सवों को प्रणाम व वन्दन के वाद, थोड़ा-सा निवेदन करके लिया। स्वाभाविक रूप से आज का सभारम्भ सुन्दर व उत्साह देने वाला हुआ। और लोगों ने संतरे लिये। कुछ लोगों ने भोजन किया।

१९-१२-३९

आज छः बार में डेढ़ रत्तल दूध लिया, यानी एक बार में १० तोला। चार बजे तक पतली टट्टी लगी। दो संतरे लिये व रात को पिसे हुए साग व मूंग का पानी और पपीता लिया। ठीक मालूम दिया।

नाथजी से मिले। बातचीत ही हुई। 'जीवन शोधन' उन्होंने प्रताप सेठ के साथ पढ़ लिया था।

डॉ० हंस राय जयपुर से आये। कमल सुवह वम्वई गया। व रात को आया। कमल, कालूराम व सागरमलजी से वर्धा संबंधी वातचीत हंस डॉ० राय से जयपुर की स्थिति समझी।

रेहाना व सरोजनी मिल गये, ६॥ से १०॥ तक नाथजी ने प्रताप सेठ के साथ 'जीवन शोधन' पढ़ा। वाद में नाथजी ने मुझसे बातचीत की। पढ़ते समय मेरी गैरहाजिरी रही।

२०-१२-३९

६॥ से १०॥ नाथजी व प्रताप सेठ के साथ 'जीवन शोधन' पढ़ा। बाद में नाथजी से चर्चा ।
शाम को रेहानाबहन ने प्रार्थना के समय भजन सुनाये। कई लोग भजन सुनने आये थे ।
रात को भेज पर खाने वाले ज्यादा लोग थे। रेहाना व सरोजनीबहन भी थी।
राव सा० पटवर्धन, अच्युत पटवर्धन व उनकी भाभी मिलने आये।

२२-१२-३९

रात को नींद थोड़ी कम आई।
नाथजी व प्रतापसेठ के साथ विचार-विनिमय, तुकाराम के अभंग।
पोपटलाल शाह मेहरेकर वगैरा मिलने आये।
जयपुर-महाराजा व प्राइम मिनिस्टर को सासायटीज एक्ट के बारे में तार भेजे, होम मिनिस्टर के ता० १३-१२ के पत्र के जवाब में।

२४-१२-३९

डा० गिल्डर को बम्बई फोन किया, मेरे साथ भोजन करने व सलाह करने के बारे में। वह रात को साढ़े आठ बजे भोजन करने आये। बाद में एक्स-रे वगैरा देखे। दांत निकालने की राय दी। देर तक विचार-विनिमय होता रहा।
ताराचन्द रामनाथ की दुकान गये, बाद में अस्पताल गये, डा० दिनशा के साथ। वहां गिल्डर समारंभ के सभापति थे। एक्स-रे डिपार्टमेंट का उद्घाटन हुआ।
डा० दिनशा से देर तक मदालसा के इलाज के बारे बातचीत। दोनों लेडी डाक्टरों को बुलाया।
प्रताप सेठ सुबह आये थे। शाम को प्रह्लाद, पन्ना व श्रीनिवास बंबई से आये। श्रीनिवास शर्मा से 'गोपी हृदय' सुना।
प्रार्थना में रेहाना ने भजन सुनाये।

२५-१२-३९

मदू को रात में १०५ डिग्री बुखार हो गया। कल से चिन्ता। सेप्टिक होने

का डर। उसके पास बैठे। डा० से सलाह। दोनों लेडी डाक्टरों को बुलवाया।

शाम को नरसापुर, महाबलेश्वर के रास्ते पर पूना से २५ मील के करीब एक अंग्रेज की स्टेट देखने गये। सृष्टि सौंदर्य सुन्दर है। घूमे। शाम को वापस लौटे। दिनशा मेहता वगैरा साथ में।

२६-१२-३९

नींद ठीक आई। बन्ड गार्डन तक पैदल जाकर आया। दो मील घूमा। शाम को भी बन्ड गार्डन पैदल जाकर आया। दूध ४८ औंस लिया। जादूगर गारोडि ने हाथ चालाकी का खेल दिखाया। सबों को पसंद आया। छः रुपये ले गया।

शाम की गाड़ी से हीरालालजी शास्त्री, हरलालसिंगजी व सन्तकुमार वकील जयपुर से आये। वहां की स्थिति समझी। प्राइम मिनिस्टर को पत्र भेजने पर विचार-विनिमय। झुंझुनूवालों ने वहां की जकात की हालत समझाई।

कोटपुतली वाले, जो एग्रीकलचर फार्म में काम करते हैं, मिलने आये। डा० माचवे (बम्बई वाले) अंध-छात्रालय के बारे में बात करने आये।

२७-१२-३९

बन्ड गार्डन घूमने गया।

सुबह १॥ घंटे करीब हीरालालजी शास्त्री से जयपुर की स्थिति पर विचार-विनिमय। राजा ज्ञाननाथ प्राइम मिनिस्टर के पत्र के मसविदे में थोड़ा फेरफार।

प्रताप सेठ व वासूकाका मिलने आये।

सावित्री, पन्ना, राम, प्रह्लाद, निवास पुरंदरगढ़ गये। दिन-भर वहां रहे। मदालसा को फिर थोड़ा खून गया, इससे चिन्ता हुई। जानकीजी का विचार इसे डा० पुरन्द्रे के पास बम्बई ले जाने का है। डा० पुरन्द्रे व आबिद अली को बंबई पत्र भेजे। पुरन्द्रे की राय मंगवाई।

चिरंजीलाल मिश्र व नेमीचन्द कासलीवाल बम्बई से आये। इन सबों से बातचीत, जयपुर की हालत जानी। सन्तकुमार वकील से जकात की हालत समझी। बापू का पत्र, राजकुमारी का लिखा हुआ,

आया—जयपुर स्थिति के बारे में। तार भेजा। पत्र का मसविदा तैयार हुआ।
प्रार्थना में शाम को रेहाना के भजन। जयपुर के मित्र शामिल थे।

२८-१२-३९

प्रार्थना। घूमते हुए बन्ड गार्डन पैदल गये-आये। हीरालाल शास्त्री से जयपुर के बारे में बातचीत।
प्रह्लाद, पन्ना, निवास, मिश्रजी, बम्बई गये। हीरालालजी व हरलालसिंहजी वर्धा गये। सन्त कुमार वकील दिल्ली गया। चि० मदालसा की तबीयत ठीक नहीं, बुखार १०३॥, थोड़ी चिन्ता। बम्बई रिपोर्ट भेजी, पुरन्द्रे से व कुमुद मेहता से सलाह करने के लिए। रात को आबिद अली का फोन आया। डा० पुरन्द्रे व कुमुद की राय में चिन्ता की कोई बात नहीं। मदालसा को बम्बई ले जाने की भी जरूरत नहीं। इससे थोड़ी चिन्ता कम हुई।
शाम को चतुसिंगी पहाड़ी के ऊपर घूमकर आये। डा० दिनशा व शान्ता साथ में।
नासिक से रामेश्वरजी बिड़ला का फोन आया।

३०-१२-३९

कम्पाउन्ड में ही घूमे। थोड़ा व्यायाम किया।
जयपुर से—कपूरचन्दजी का फोन आया। जयपुर अधिकारियों ने दमन की पूरी तैयारी कर ली है। मिश्रजी व हीरालालजी को वहां पहुंचते ही गिरफ्तार करेंगे। पहले झुनझुनू की ओर दमन करने वाले हैं।
आबिदअली व जोहरा बम्बई गये। सागरमलजी बियानी से उनके भावी काम के बारे में बातचीत। भगवती बिड़ला व रामनिवास ग्वालियर गये।
वर्धा से कमलनयन व हीरालालजी शास्त्री आये। बापू से जयपुर के बारे में जो बातचीत हुई, वह उन्होंने कही। हीरालालजी के साथ घूमने एम्प्रेस गार्डन गया।

३१-१२-३९

हीरालालजी शास्त्री से जयपुर स्थिति पर विचार-विनिमय। वह आज बम्बई गये।
रामेश्वरजी बिड़ला का फोन आया, तबीयत के बारे में। उन्होंने कहा कि

घनश्यामदासजी को सरकार व कांग्रेस से समझौता होने की पूरी आशा है।
जमनालाल सन्स की बोर्ड की मीटिंग हुई। बच्छराज जमनालाल का काम भी हुआ। चिरंजीलाल बड़जाते से बातचीत।

□ □

परिशिष्ट भाग

जमनालालजी अपनी डायरियों के नोंध—पृष्ठों में निजी, व्यापार-संबंधी तथा सार्वजनिक कार्य संबंधी जानकारी नोट कर लिया करते थे।

इसी प्रकार नित्य प्रार्थना के तथा याद रखने योग्य व आदरणीय पदों, दोहों आदि को भी लिख लिया करते थे। इस भाग में सन् १९३७-३८-३९ की डायरियों में लिखे गये उनके इसी प्रकार के नोटों व नोंधों का संकलन है।

परिशिष्ट १

(१)

सन् १९३७ में जमनालालजी पर जिन-जिन संस्थाओं, ट्रस्टों आदि की जिम्मेदारी थी, उनकी सूची उन्होंने अपनी इस वर्ष की डायरी में दी है। सूची निम्न प्रकार है :

ट्रस्टी

१. गांधी सेवा संघ
२. ग्राम उद्योग संघ
३. लक्ष्मी नारायण मंदिर
४. वच्छराज कोष ट्रस्ट
५. नवजीवन ट्रस्ट
६. नगीनदास ग्राम ट्रस्ट
७. गोसेवा ट्रस्ट
८. विले पारले राष्ट्रीय छावणी
९. भगिनी मंदिर ट्रस्ट
१०. रामनारायण ट्रस्ट
११. हरनंदराय कालेज ट्रस्ट
१२. कनखल ट्रस्ट
१३. श्रीनिवास ट्रस्ट
१४. बिड़ला कालेज ट्रस्ट
१५. चोरड़िया कन्या गुरुकुल ट्रस्ट
१६. बिहार सेवा निधि ट्रस्ट

खजानची

१. कांग्रेस
२. चर्खा संघ
३. कमल मेमोरियल
४. अभ्यंकर स्मारक
५. जामिया
६. हिन्दी प्रचार
७. भारतीय साहित्य परिषद

सदस्य

हिन्दू महिला मण्डल

सन् १९३८ में जमनालालजी ने उन ट्रस्टों व संस्थाओं की सूची दी है, जिनसे उन्होंने त्यागपत्र दे दिया था :

ट्रस्टी	
१. गांधी सेवा संघ	त्यागपत्र भेजा
२. महिला सेवा संघ	
३. अ० भा० ग्रामोद्योग संघ	
४. मा० शिक्षा मंडल	
५. लक्ष्मीनारायण मंदिर	
६. बिहार रिलीफ	
७. नवजीवन	त्यागपत्र भेजा
८. बिहार सेवा निधि	
९. कमला मेमोरियल	
१०. ग्राम्य से० स० बारडोली	त्यागपत्र स्वीकार हुआ
११. सत्याग्रह आश्रम साबरमती	त्यागपत्र भेजा
१२. बिरला शिक्षण	त्यागपत्र भेजा
१३. बजाज कमेटी बम्बई	त्यागपत्र
१४. विले पारले छावणी	त्यागपत्र
१५. भगिनी सेवा मंडल, विले पारले	त्यागपत्र
१६. कनखल धर्मशाला	त्यागपत्र
१७. हरनन्द राय कालेज रामगढ़	त्यागपत्र
१८. जलियानवाला बाग	
१९. श्री गांधी आश्रम मेरठ	त्यागपत्र, १-१०-'३८ को
२०. अभ्यंकर मेमोरियल नागपुर	
२१. रामनारायण रुइया ट्रस्ट	त्यागपत्र दिया व स्वीकार हुआ
२२. स्वराज्य भवन ट्रस्ट	
२३. सस्ता साहित्य मंडल	त्यागपत्र भेजा

२४. मद्रास हिन्दी प्रचार	त्यागपत्र भेजा

निजी ट्रस्ट

१. श्रीनिवास रुइया, बं०	त्यागपत्र दिया
२. गोपीबाई बिरला, बम्बई	त्यागपत्र दिया

खजानची

१. आ० इं० कांग्रेस	२-१०-३८ को त्यागपत्र दिया
२. अ० भा० चरखा संघ	३०-९-३८ को त्यागपत्र दिया
३. कमला मेमोरियल	
४. अभ्यंकर मेमोरियल	

डायरेक्टर्स

१. ब०-कम्पनी	सभापति
२. ब०- फैक्टरी	”
३. हि० शुगर	”
४. हि० हाउसिंग	”
५. मुकन्द आयर्न	”
६. बैंक आफ नागपुर	”
७. रामनारायण संस-डायरेक्टर+त्यागपत्र भेजा २३-११-३८ को	
८. सा. भवन प्रयाग	त्यागपत्र भेजा

परिशिष्ट २

इन तीन वर्षों की डायरी के प्रारंभ या अंत में जमनालालजी अपनी रुचि के पदों, दोहों, प्रार्थनाओं आदि को लिख लिया करते थे। उन्हें डायरी के सन् के हिसाब से नीचे दिया जा रहा है—

१९३७

परहित बस जिनके मन माहीं,
तिन्ह कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
परहित सरिस धरम नहिं भाई,
परपीड़ा सम नहिं अघ भाई ॥

०

हे प्रभो तू भला असत्यां तून सत्यांत घेऊन जा।
अंधकारांतून प्रकाशांत घेऊन जा।
मृत्यूंत अमृतांत घेऊन जा।

०

त्याग को तैयार हैं, श्रद्धा नहीं !
कष्ट का स्वागत करें, मौका नहीं।
मृत्यु से डरते नहीं, पर व्यर्थ है !
इन दलीलों में, कहो क्या अर्थ है ?

०

अरथ न धरम काम रुचि
गति न चहऊं निरवान।
जनम जनम रति राम पद,
यह वरदानु न आन ॥

०

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय।।

o

जिन खोजा तिन पाइयां, गहरे पानी पैठ।
हौं बौरी खोजन गई, रही किनारे बैठ।।

o

सन् १९३८

(हाथ का कागज, खादी की वाइंडिंग। ता० १ जनवरी से ३१ दिसंबर तक पूर्ण)

१. पू० बापूजी का चि० जमनालाल के नाम यरवडा जेल से ता० ७-३-२२ का पत्र सुन्दर अक्षरों में मूल गुजराती भाषा और नागरी लिपि में नकल।

२. प्रातः स्मरण—आश्रम भजनावली की प्रार्थना पूरी।

३. सायंकाल की प्रार्थना—'स्थितप्रज्ञ लक्षण' पूरे

४. राग-खमाज, घुमाली-वैष्णव जन तो तेने...

५. राग—पिलु, तीन ताल रघुबीर तुमको मेरी...

६. तुलसी बोध मौक्तिक:

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
पर पीड़ा सम नहीं अघ भाई।।

सुमति कुमति सबके उर बसहीं।
नाथ पुरान अगम अस कहहीं।।

जहां सुमति तहं संपति नाना।
जहां कुमति तहं विपति निदाना।।

धन्य सो भूप नीति जो करई।
धन्य सो द्विज निज धर्म न टरई।।
धन्य घरी सोई जब सतसंगा। धन्य जन्म हरिभक्ति अभंगा।।

साधु चरित सुभ सरिस कपासू। निरस बिसद गुनमय फल जासू।।

जो सहि दुःख पर छिद्र दुरावा। वंदनीय जेहि जग जस पावा ॥
जेहि के जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलत न कछु संदेहू ॥

परहित बस जिनके मन मांहीं। तिन्ह कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥
रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाय वरु वचन न जाई ॥
नहिं असत्य सम पातक पुंजा। गिरि सम होई कि कोटिक गुंजा ॥
सत्यमूल सब सुकृत सुहाये। वेद पुरान विदित मुनि गाये ॥

मो सम दीन न दीन हित। तुम समान रघुवीर।
अस विचारि रघुवंश-मणि। हरहु विषम भवपीर ॥

कामिहि नारि पियारि जिमि। लोभी के जिमि दाम,
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम।

१९३९

हृदय हेरि हारेऊँ सब ओरा।
एकहि भांति भलिहि भल मोरा।
गुरु गोसाइं साहिब सिय रामू।
लागत मोहिं नीक परिणामू ॥

—भरत

परिशिष्ट ३

बंबई में ता० १७ अक्तूबर १९३७ को जमनालालजी की अध्यक्षता में गुमाश्ता कान्फरेन्स हुई थी। उस संबंध में २३-१०-३७ के 'हरिजन' में संपादकीय टिप्पणी पठनीय है, जो नीचे दी जा रही है :

मुनीम-गुमाश्ते—हमारे भाई

जब ये पंक्तियां लिखी जा रही हैं, बंबई में सेठ जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में मुनीम-गुमाश्तों का सम्मेलन हो रहा है। सम्मेलन को भेजे एक संदेश में गांधीजी ने सम्मेलन के महत्व पर जोर डाला। उन्होंने कहा, "सम्मेलन की अध्यक्षता जमनालालजी जैसे व्यक्ति द्वारा करना, जिनकी नौकरी में कई मुनीम-गुमाश्ते कार्य करते हैं, एक महत्वपूर्ण बात है, महत्व-पूर्ण इसलिए कि जमनालाल जी के मन में सेठ और नौकर में कोई भेद नहीं, और उनके मुनीम-गुमाश्तों, रसोइयों, गाड़ीवानों व अन्य नौकरों के साथ परिवार के सदस्यों जैसा ही व्यवहार किया जाता है। वह जानते हैं कि उनकी तरह कर्मचारियों को भी आराम की जरूरत होती है, वह जानते हैं कि कर्मचारियों को भी छुट्टी की जरूरत होती है, जैसी कि स्वयं उन्हें होती है (और जो वह शायद ही कभी लेते हैं), वह जानते हैं कि कर्मचारियों को अपने बीवी-बच्चों के साथ सुविधा से रहने की आवश्यकता होती है—साफ और हवादार मकानों में, जहां वे अपनी और अपने बच्चों की शैक्षणिक व स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों की देखभाल कर सकें। और वह यह भी जानते हैं कि एक आम गुमाश्ते की कितनी दयनीय स्थिति है, जहां उसे बगैर छुट्टी के इतनी कम तनख्वाह में दस से तेरह घंटे रोज पसीना बहाना पड़ता है, छुट्टी मिल भी जाय तो उसको तनख्वाह कटानी पड़ती है, जहां दिन-पर-दिन उसका स्वास्थ्य गिरता चला जाता है; एक ऐसी जिंदगी जीता है जहां कोई खुशी नहीं, सुबह से रात तक जहां उसकी पिसाई होती है।"

०

गांधीजी ने अपने संदेश में सेठ जमनालाल बजाज की उपस्थिति व मार्गदर्शन में शांतिपूर्ण व आग्रहपूर्ण आंदोलन की आवश्यकता पर भी बल दिया।

—हरिजन, २३-१०-३७

अनुक्रमणिका

☐ जमनालाल बजाज-संबंधी
जीवनी-संस्मरण-साहित्य
☐

जमनालाल बजाज : रामनरेश त्रिपाठी

जमनालालजी : घनश्यामदास बिड़ला

श्रेयार्थी जमनालालजी : हरिभाऊ उपाध्याय

मेरी जीवन-यात्रा* : जानकीदेवी बजाज

जीवन-जौहरी : रिषभदास रांका

स्मरणांजलि : संपादक—काका कालेल

Jamnalal Bajaj : T. V. Parvate

रचनात्मक राजनीति : जमनालाल बजाज

बापू-स्मरण* : संपादक—रामकृष्ण बजा

श्रेयसाधक : संपादक—केदारनाथ

काकाजी, बापू, विनोबा : कमलनयन बजाज

* केवल चिह्नित पुस्तकें प्राप्य हैं।

खंड १ : सन् १९१२ से १९१५ तक
खंड २ : सन् १९२३ से १९२९ तक
खंड ३ : सन् १९३० से १९३३ तक
खंड ४ : सन् १९३४ से १९३६ तक
खंड ५ : सन् १९३७ से १९४२ तक

□ पत्र-साहित्य

१. गांधीजी के साथ पत्र-व्यवहार
(सम्पादक : काका कालेलकर)

- **पांचवें पुत्र को बापू के आशीर्वाद**
- **बापू के पत्र**
- **पांचमां पुत्रने बापुना आशीर्वाद**
- To a Gandhian Capitalist
(चुने हुए पत्रों का संकलन)

२. अन्य पत्र-साहित्य

- **पत्र-व्यवहार १** : विनोबाजी के साथ
- **पत्र-व्यवहार २** : राजनेताओं के साथ
- **पत्र-व्यवहार ३** : रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं के साथ
- **पत्र-व्यवहार ४** : जानकीदेवी बजाज के साथ
- **पत्र-व्यवहार ५** : अन्य कुटुम्बीजनों के साथ
- **पत्र-व्यवहार ६** : राज्याधिकारियों के साथ
- **पत्र-व्यवहार ७** : व्यापारियों और समाजसेवियों के साथ
- **पत्र-व्यवहार ८** : र[illegible]तक और समाजसेवियों के साथ